वर्ष 13, अंक 46-47, अश्विन - फाल्गुन 2078 (अक्टूबर 2020 - मार्च 2021)(संयुक्तांक)

20/- टाका

मिथिलांगन

मैथिली पारिवारिक त्रैमासिक

मैथिली रंगमंच विशेष

अन्तस्थ साक्षात्कार

Price : India Rs. 20.00, Nepal Rs. 30.00, Europe € 2.00, UK £ 1.5, US $ 3.00

मिथिलांगन पत्रिकाक प्रकाशित अंक

मिथिलांगनक प्रकाशित स्मारिका

2007, 2008, 2010, 2012, 2014, 2017

वर्षः 13, अंक : 46-47, अश्विन-फाल्गुन 2078, अक्टुबर 2020 - मार्च 2021 (संयुक्तांक)

मुकेश दत्त
संपादक

मैथिली नाट्यमंच : संक्षिप्त अवलोकन

श्रद्धेय मैथिलवृन्द
सादर प्रणाम
नव वर्षक अशेष मंगलकामना

काव्यक दू भेद- श्रव्यकाव्य अओर दृश्यकाव्य मे नाटक दृश्यकाव्यक उदाहरण अछि, जकर मंचन लोकक समक्ष होइत अछि। साहित्यक आन विधा जेना- उपन्यास, कविता, कथा, निबंध, रिपोतार्ज आदिक यथेष्ट आनन्द पढ़ि कऽ वा सुनि कऽ लेल जा सकैत अछि, मुदा नाटकक वास्तविक आनन्द रंगमंच पर अवलोकनक बादहिं प्राप्त कएल जा सकैत अछि। कालिदास सेहो कहने छथि **"काव्येषु नाटकम रम्यम"**। मैथिली साहित्यक मध्यकालकेँ नाटककाल कहल गेल आ एहि कालखण्डक नाटककेँ किर्तनिया नाटक, जे त्रैभाषिक होइत छल जाहिमे भाषा संस्कृत आ प्राकृत रहैत छल आ गीत मैथिली मे। एहि कालमे बेसी भाषिक नाटक लिखल गेल जे मिथिलांचल, आसाम, नेपाल आ बंगाल मे प्रचलित भेल। नाटकक तीनू धारा- किर्तनिया, नेवारी आ अंकिया एहि क्षेत्रमे उपलब्ध अछि।

मैथिली साहित्यक प्रथम इतिहासकार डॉ. जयकांत मिश्र किर्तनिया नाटककेँ 'नव चरित्र' कहने छथि। तऽ आधुनिक मैथिली साहित्यक सर्वश्रेष्ठ समालोचक आ हँसवृति हेतु प्रख्यात आचार्य प्रोफेसर रमानाथ झा एकरा 'किर्तनया नाच' कहने छथि। ज्योतिरीश्वरक 'धूर्तसमागम', विद्यापतिक 'गोरक्षविजय', उमापतिक 'पारिजातहरण' (सर्वप्रथम आ सर्वाधिक मुद्रित संस्करणवाला नाटक), रमापतिक 'रूक्मिणीहरण', लालदासक 'गौरीस्वयंवर' रत्नपाणि झाक 'उषाहरण' एहि कोटिक उपलब्ध नाटक अछि।

मिथिला आ नेपाल पार्श्ववर्ती क्षेत्र रहला कारणेँ सांस्कृतिक संबंधसँ आबद्ध अछि। नेवारी (नेपाली-मैथिली) नाटकक विषय वस्तु धार्मिक, पौराणिक प्रेमरसयुक्त रहल। ई नाटक सभ सरल, सुबोध मैथिली गद्य आ पद्यमे लिखल गेल। एक्के कथावस्तु आ नामसँ अनेको रचनाकार नाटकक रचना केलैन्ह, जेना- जगत्प्रकाशमल्ल आ भूपतीन्द्रमल्ल 'उषाहरण'। एकर अलावे जगज्योतिर्मल्लक 'विद्याविलाप', हरगौरी विवाह, कुंजविहारी; वंशमणि झाक गौरी दिगम्बर, महाभारत, रामायण आदि नाटकक रचना भेल।

मिथिलासँ बाहर आ आसाम क्षेत्रमे जाहि धार्मिक वातावरणसँ ओतप्रोत नाटकक रचना कएल गेल ओ अंकीया नाटक कहाओल। एकर भाषा मैथिली गद्य-पद्य आ ब्रजाबली छल। आसाम मे लिखल मैथिली नाटक 'उड़िया नाटक'क नामसँ प्रसिद्ध भेल। शंकरदेवक 'कालीयदमन', 'पत्नी प्रसाद', 'रूक्मिणीहरण', 'पारिजातहरण'; माधवदेवक 'अर्जुन भंजन', 'चोरघरा', 'कोटोरा'; गोपालदेवक 'जन्मयात्रा' आदि प्रमुख अछि। एकर मंचन आ प्रर्दशन धार्मिक अवसर पर होइत छल।

डॉ. जयकांत मिश्र अपन शोध प्रबंध 'ए हिस्ट्री ऑफ मैथिली लिटरेचर वॉल्यूम वन' मे किर्तनिया नाटकक नामे संबोधित केलैन्ह जे ई मैथिलीक सामान्य अध्येता मे प्रसिद्धि प्राप्त कऽ चुकल छल आ मिथिला स्थित नाटककेँ उपर्युक्त नामे संबोधित कएल जाए लागल, एकर विपरीत प्रोफेसर रमानाथ झा अपन 'प्रबंध संग्रह' मे एहि मान्यताक खंडन केलैन्ह।

आधुनिक मैथिली नाटक - पं. जीवन झाकेँ आधुनिक मैथिली नाटकक जनक मानल जाइत अछि। इएह सर्वप्रथम मध्यकालीन मैथिली नाट्य परंपराकेँ नवीन दिशा देलैन्ह, विशुद्ध मैथिली गद्यमे कथोपकथनक प्रयोग कऽ ओकर कथावस्तु मे नवीनता आनलैन्ह। आधुनिक मैथिली नाटककेँ निम्न पाँच भागमे बाँटल गेल अछिः-

1. सामाजिक समस्यामूलक
2. पौराणिक
3. ऐतिहासिक
4. प्रतीक
5. राजनीतिक

नाटक/रंगमंच किएक? - नाटक/रंगमंचक माध्यमसँ हमरा लोकनिकेँ व्यापक जीवनक झाँकि मिलैत अछि, नाटक जे प्रस्तुत वा प्रदर्शित करैत अछि ओहिमे व्यंजना होइत अछि। एहिमे चुनाओल कला बेसी परिलक्षित होइत अछि

आ ई मनोरंजन आ शिक्षणक कारण बनैत अछि।

नाटकक तत्व - आचार्य भरतक अनुसारे, "नाटक एकटा प्रयोगमूलक कला अछि। एकर कलात्मक सार्थकता तखने व्यक्त होइत अछि जखन एकर अभिनय कएल जाइत अछि। एहन कोनहु ज्ञान, कोनहु शिल्प, कोनहु विधा, कोनहु कला नञि अछि जकर प्रयोग नाटकमे नञि भेल होए।" एकर तीनटा आधरभूत तत्व मानल गेल अछि- 1. वस्तु वा कथावस्तु, 2. नेता वा पात्र अओर 3. रस। ओना नाटकक छह गोट तत्व होइत अछि- 1. वस्तु वा कथावस्तु, 2. नेता वा पात्र, 3. चरित्र चित्रण, 4. कथोपकथन, 5. उद्देश्य अओर 6. भाषा शैली वा रस।

प्रत्येक साहित्यिक रचनाक सदृश्य नाटकक सेहो दू पक्ष होइत अछि-

1. **भावपक्ष -** एहिमे वस्तु वा कथावस्तु, चरित्र चित्रण, कथोपकथन, उद्देश्य अओर रस सृष्टि आबैत अछि।

2. **कलापक्ष -** एहिमे अभिनय, दृश्य विधान, संकलन त्रय (नृत्य, गीत आ पृष्ठसंगीत), वेशभूषा आदि आबैत अछि।

आधुनिक मैथिली नाटकक उद्देश्य - प्राचीन कालमे नाटक राज-प्रसादक वस्तु छल, जकर उद्देश्य राजाकेँ तुष्ट करब छल। मुदा समयक संग एकर उद्देश्य बदलल आ एकर मूल उद्देश्य जनभावनाक अभिव्यक्ति भऽ गेल। आरंभमे आधुनिक मैथिली नाटकक उद्देश्य पाश्चात्य प्रणाली पर आधारित पारसी थियेटरक आगमनसँ मैथिली नाट्य प्रणाली दिस घटल लोकक रूचिकेँ दूर करब छल। मैथिली नाट्य परंपरा जाहिमे रंगमंचक कोनो आकर्षण नञि रहल, ओकरा प्रति लोकक रूचि घटि गेल। ओ रूचि जगौलैन्ह जीवन झा अपन अभिनव रीतिसँ नाट्य रचना कऽ कऽ।

आधुनिक मैथिली नाटकक विकास मे रंगमंचक योगदान - ओ स्थान जतय अभिनेता लोकनि अभिनयक प्रदर्शन करैत छथि, रंगमंच कहलाइत अछि। आधुनिक नाटकक प्रेरणास्रोत मैथिलीक रंगमंचे अछि। रंगमंच ओ स्थान अछि जतय नृत्य, नाटक, खेल आदि होए। ई दू शब्द **रंग** आ **मंच**क मेलसँ बनल अछि। **रंग** एहि द्वारे जे दृश्यकेँ आकर्षक बनाओत संगहिं अभिनयकर्त्ताक वेशभूषा आ सज्जा रंगीन होइत अछि, **मंच** एहि द्वारे जे दर्शकक सुविधा हेतु रंगमंचक तल फर्शसँ ऊँचगर रहैत अछि। दर्शकक बैसयकेँ स्थानकेँ प्रेक्षागार आ रंगमंच सहित समूचा भवनकेँ प्रेक्षागृह, रंगशाला वा नाट्यशाला कहल जाइत अछि। पश्चिमी देशमे एकरा थिएटर वा ऑपेरा नाम देल गेल अछि। मुख्यतः एकर प्रदर्शन मनोरंजन हेतु कएल जाइत अछि।

मानल जाइत अछि जे नाट्यकलाक विकास सर्वप्रथम भारतहिं मे भेल, भरतमुनि एकरा शास्त्रीय रूप देलैन्ह। भारत मे विभिन्न भाषामे रंगमंच कएल जाइत अछि, यथा- मराठी, बंगला, पंजाबी, हिन्दी आदि।

सुसंगठित आधुनिक मैथिली मंच सबसँ पहिने कलकत्ता मे सीताराम मंडल जीक प्रयाससँ 'मिथिला कला केन्द्र' नामसँ 1959 मे भेल। पुनः ओतहिये 1996 मे 'मैथिली रंगमंच' आ 1990 मे 'मिथि यात्री'क स्थापना भेल। तत्पश्चात पटना मे 1974 मे चेतना समिति, 1982 मे अरिपन, 1984 मे भंगिमा स्थापित भेल। एकर अलावे राजधानी दिल्ली मे मिथिलांगन, मैलोरंग, बारहमासा आदि सक्रिय अछि तऽ ग्रामीण क्षेत्रमे पिण्डारूछ नाट्य परिषद, नाट्य परिषद सरिसव पाहि आदि सक्रिय अछि, हालहिं मे सहदेव अभिनय संघ, बिसहत अपन 75म जयंती मनोलक।

एहिये विषयकेँ केन्द्र बना विशेषांक रूपेँ सजाओल गेल अछि एहि अंककेँ, संगहिं पूर्व अंक मे शुरू कएल गेल स्तम्भ आ अपन स्थायी स्तम्भक संग मिथिलांगनक दोसर **ई-पत्रिका** अपने सभहक आगाँ राखि अति हर्ष भऽ रहल अछि। आशा अछि अपने लोकनिकेँ **रंगमंच** विशेषांक रूपेँ **मिथलांगन**क नव पुष्प नीक लागत।

अपनेक
मुकेश दत्त

© मिथिलांगन, सर्वाधिकार सुरक्षित।

व्यवस्थापन अओर विपणन कार्यालय : आदर्श इंटरप्राइजेज, 4393/4, तुलसीदास स्ट्रीट, अंसारी रोड, दरियागंज, नई दिल्ली-110002
फोन : (011) 23246131/32, 41009940, फैक्स : 23246130
ई-मेल : adarshbooks@vsnl.com

संपादक : मुकेश दत्त
(समस्त संपादकीय कार्य पूर्णरूपेण अवैतनिक)

आवरण : रविन्द्र कुमार दास
डिजाइन आ सज्जा : संजीव कुमार 'बिट्टू'

मिथिलांगन मे छपल रचना/लेख इत्यादि मे व्यक्त विचार लेखक लोकनिक निजी विचार छैन्ह आ ई आवश्यक नहि जे ओ मिथिलांगनक नीति वा विचार इत्यादि केँ प्रतिबिम्बित करय।

सब विवादक निपटारा दिल्ली/नई दिल्ली स्थित सक्षम न्यायालय आ फोरम मे कएल जायत।

मिथिलांगन (पंजी.) संस्थाक दिससँ अओर लेल अभय कुमार लाल दास द्वारा ए-40, कैलाश अपार्टमेंट, प्लॉट नं. 2, सेक्टर-4, द्वारका, नई दिल्ली-110078, सँ प्रकाशित अओर आन्नद संस (इण्डिया), सी-87, गणेश नगर (पांडव नगर कॉम्पलेक्स), दिल्ली-92, मे मुद्रित।
सम्पर्कः 9910952191 (संपादकीय)
9312301160, 9810450229 (प्रकाशकीय)
ईमेल : **mithilangan@gmail.com**
वेबसाइट : **www.mithilangan.org**

शुल्क : भारत मे एक प्रति 20 टाका, वार्षिक 100 टाका मात्रा (डाक खर्च सहित)।

अनुक्रम

5 विमर्श

जल कृषि मे माछेटा नहि खाली पैसे-पैसा अछि - *सतीश कान्त (चुन्नू)* ...5
विकलांगता : स्वरूप आ समस्या - *डॉ संध्या कुमारी* ...8

9 लेख

मैथिल कर्ण कायस्थ - *सच्चिदानन्द लाल दास*

11 कविता

हमर मैथिली - *डॉ शेफालिका वर्मा* ...11
पावस ऋतु - *अर्जुन नारायण चौधरी* ...11
आइना - *बिनीता मल्लिक* ...11
फरेब - *देवानंद मिश्र* ...12
अप्पन मिथिला - *चंदना दत्त* ...12
भागि चलै छी - *आनन्द दास* ...12
गाम-घड़क बात - *सुरेश कंठ* ...13
आब नहि होए देरी - *डॉ प्रमोद झा 'गोकुल'* ...13

14 नवांकुर - कविता/कथा

हमर गाम - *आशीष 'प्रेम शंकर'* ...14
दहेज प्रथा - *बबली मीरा दत्त* ...14
प्रकृति - *सितांजली दास 'सित'* ...14
मातृत्व - *रीना चौधरी* ...15
कें चुका सकत गाए-माएक मोल? - *रतन कुमार रवि*...15

16 बीहनि कथा

मान सम्मान - *भुवनेश्वर चौरसिया 'भुनेश'* ...16
पंचकठिया - *कुमार मनोज कश्यप* ...16
कोर्ड - वर्ड - *सुभाष कुमार कामत* ...16
चीन्नीक लड्डू - *प्रभाष 'अकिंचन'* ...16
फेसबुकिया जिनगी - *कल्पना झा* ...17
किसान - *विनीता ठाकुर* ...17
बड़का बाबू - *पूनम झा* ...17
कनिये - *आभा झा* ...17

18 रंगमंच विशेष - आलेख

कें लिखत नाटक? - *प्रदीप बिहारी* ...18
कोना आत्मनिर्भर होयत मैथिली रंगमंच - *मनोज पाठक* ...20
मैथिलीक प्राचीन नाटकक मंचन : समस्या आ उपलब्धि - *डॉ. प्रकाश झा* ...22
मैथिली रंगमंचक ग्रामीण आ शहरी मंचन - *रूपक शरर* ...24
मैथिली रंगमंचक कलाकारक स्थिति - *मुकेश झा* ...26
मैथिली रंगमंचक वर्तमान परिस्थिति - *प्रो. महेन्द्र लाल कर्ण* ...28
मैथिली रंगमंच मे संगीत - *सुन्दरम* ...29
मैथिली रंगमंच मे नारीक भूमिका - *मुकेश दत्त* ...30
मैथिली रंगमंचक समाज पर प्रभाव - *ई. प्रकाश चन्द्र दास* ...32

नाटक 'सोन मछरीया'क दृश्य

34 रंगमंच विशेष - लघु/रेडियो नाटक

मृत्यु भोज - *संजय चौधरी* ...34
आब मानि जाउ ने - *डॉ. किशन कारीगर* ...37

40 रंगमंच विशेष - साक्षात्कार

महंथी छोड़ू समाजसँ जुड़ू तखने कलाकार भेटताह - छात्रानन्द सिंह झा 'बटुक भाए' - *डॉ. वन्दना कुमारी* ...40
बेटी-पुतोहुकें गार्जियने रंगमंच मे नहि आबय दैत छथिन - डॉ. प्रेमलता मिश्र 'प्रेम' - *डॉ. वन्दना कुमारी* ...46
सरकारी अकर्मण्यता आ मैथिलक उदासीनतासँ मैथिली रंगमंच बेहाल - रोहिणी रमण झा - *राजेश कर्ण* ...50
रंगमंचक माध्यमे नवतुरिया लोकनि अपन भाषा-संस्कृतिसँ जुड़ि सकैत छथि - संजय चौधरी - *मुकेश दत्त* ...53
मैथिली रंगमंच मे कियो जिम्मेदारी लेबा लेल तैयार नहि - डॉ. प्रकाश झा - *संजीव कुमार 'बिट्टू'* ...56
कठोर परिश्रमसँ अपन व्यक्तित्वक विकास रंगमंच लेल करी - मुकेश झा - *मुकेश दत्त* ...59

अनुक्रम

62 रंगमंच विशेष - परिचय
लोकक तानाकेँ अपन शक्ति बनेलौंह - विभा रानी - *संजय चौधरी* ...62
स्त्री पात्रक भूमिका निभेलासँ रंगमंच दिस बढ़ल झुकाब - राजेश कर्ण - *छवि दास* ...63

64 कथा
परिचय - *मिसिदा* ...64
सरोकार - *घनश्याम घनेरो* ...66
बुद्धिक तत्परता - *डॉ. दिप्ती प्रिया* ...69
पानक खिल्ली - *इरा मल्लिक* ...70

71 लघु कथा
पायदान पर वर्ष 2021 - *अरूण लाल दास* ...71
फोंफ - *ज्ञानवर्द्धन कंठ* ...71
प्रण - *कंचन कंठ* ...72
फोबिया - *भावना मिश्रा* ...72

73 खान-पान
खटगर-मिठगर घरक बनल व्यंजन - *बिशाखा दत्त*

75 सौन्दर्य प्रसाधन
सर्दी मे मेकअप - *संतोषी कर्ण*

76 पोथी समिक्षा
अंतर्मनमे उठल अविरल भावक अभिव्यक्तिः विमोह - *डॉ. रत्ना बनर्जी*

77 मिथिलाक धिया
पूजा प्रियदर्शनी आ अंतरा कुमारी - *मुकेश दत्त*

78 विचार मंथन
साइबर सुरक्षित राष्ट्र बनाऊ : अपन बच्चाकेँ साइबर योद्धा बनाऊ - *कमाण्डर (रि.) कौशल किशोर चौधरी*

80 विज्ञान मंच

81 बाल मचान
चित्रकला
बनु नवाब *(बाल गीत)* - *सोगारथ सोम*

82 सम्मान
पद्मश्री दुलरी देवी - *रविन्द्र कुमार दास*

84 श्रद्धांजलि

85 संवाद परिक्रमा

87 संस्था समाचार

88 चिट्ठी-पत्री

मान्यवर,

जाहि पाठक लोकनिक एक वर्षीय सदस्यता समाप्त भऽ रहल छैन्ह वा नव सदस्यता लेबऽ चाहैत छथि, हुनका लोकनि सँ सादर अनुरोध जे अपन सदस्यताक नवीनीकरण वा नव सदस्यता लेबाक हेतु 100 टाका (डाक खर्च सहित) व्यक्तिगत रूपेँ, मनी आर्डर, चेक, बैंक ड्राफ्ट वा नगद आदिक माध्यम सँ मिथिलांगन कार्यालयक पता पर अविलम्ब पठा दी। मनी आर्डर, चेक, बैंक ड्राफ्ट आदि MITHILANGAN नाम सँ बनाओल आ दिल्ली मे देय हेबाक चाही।

- पत्रिका प्रसार व्यवस्थापक, मिथिलांगन

जल कृषिमे माछेटा नहि, खाली पैसे-पैसा अछि

❑ *सतीश कान्त (चुन्नू)*

भारत देश मे मत्स्यपालन करीब 7 प्रतिशत वार्षिक दरसँ बढ़ि रहल अछि, जाहिमे सँ कुल उत्पादन 5.77 मिलियन टन मे सँ करीब 95 प्रतिशत मीठ पानिसँ आबैत अछि। बहुत रास परिवर्तन भेलैक अछि एहि क्षेत्रमे Induced प्रजनन आ पॉली कल्चरसँ (रोहू, भाकुड़ आ नैनी तीनू मिलाकऽ आ संगे चीनी कार्प (सिल्वर कार्प, ग्रास कार्प आ कॉमन कार्प)क अयला सँ उत्तरोत्तर वृद्धि भेलैक अछि। पश्चिम बंगाल आ आंध्र प्रदेश एहिमे सबसँ ऊपर अछि 3-6 टन प्रति हेक्टेयर प्रतिवर्षक उत्पादन कऽ कऽ।

एकटा अनुमान लगाओल जा रहल अछि जे 2050 वर्ष धरि समुचा विश्वक जनसंख्या करीब 9.8 बिलियन भऽ जेतेक आ तकरा प्रोटीनयुक्त भोजनक मुख्य वा सस्ता स्त्रोत जे माछ अछि, ओकरा पूरा केनाय बड़का चुनौती रहतैक। वर्तमान मे भारत चीनक बाद दोसर सबसँ पैघ माछ उत्पादन करयवाला देश अछि, मुदा दूनू देशक कुल उत्पादन मे बड्ड अंतर अछि। 1950-51 मे भारत जतय कुल उत्पादन 7.5 लाख टन छल से 2016-17 मे बढ़ि कऽ मात्र 11.5 लाख टन रहि गेल। प्रायोगिक खेती (Experimental Farming) मे जतय उत्पादन दर 8 टन प्रति हेक्टेयर रहल अछि, ओहिठाम फिल्डमे 5.5 टन प्रति हेक्टेयर होइत अछि, अंतर 2.5 टन प्रति हेक्टेयर अछि।

भारतकेँ एकटा विकाशशील देश रहला सँ एकमात्र सस्ता प्रोटीनक मुख्य स्त्रोत माछ अछि। एहिमे सब तरहक एमिनो एसिडक अलावा अत्यावश्यक फैटी एसिड सेहो होइत अछि, जाहिसँ आन माँसाहारी भोजनक तुलना मे बेसी सुपाच्य आ अपकार रहित होइत अछि।

बिहार-झारखण्डकेँ अलग भेलाक बाद बहुत रास जलक्षेत्र, पैघ जलाशय (Reservoir) झारखण्ड मे चलि गेलैक, मात्र 30 प्रतिशत हिस्सा बिहारकेँ भेटलैक। जतय धरि माछक पालनक सम्बन्ध अछि बिहार मे पोखड़ि (Pond), छोटा जलाशय (Lake), पैघ जलाशय (Reservoir), नदी, चौर, मोइन सब मिलाकऽ करीब 65000 हेक्टेयर मे पसरल अछि। राज्यमे 6.5 लाख टन माछक माँगक अपेक्षा मात्र 5.87 लाख टनक (2017-2018 मे) उत्पादन होइत अछि, ओतय कुल 600 मिलियन जीराक माँगक अपेक्षा मात्र 350 मिलियन जीराक उत्पादन होइत अछि। राज्यमे कुल 18 जीरा उत्पादन क्षेत्र छैक जाहिमे सरकारी क्षेत्रमे एकटा, प्राइवेट क्षेत्रमे चौदहटा आ कॉरपोरेट क्षेत्रमे तीनटा अछि। वर्तमानमे राज्यमे करीब 50-60 हजार मैट्रिक टन माछ प्रतिवर्ष आंध्र प्रदेशसँ आबैत अछि। आब एहिसँ अंदाज लगाओल जा सकैत अछि जे माछक व्यवसाय मे कतेक बेसी सम्भावना अछि आ संगहिं पैसा सेहो कतेक अछि।

मत्स्य व्यवसाय-कतेक तरहेँ कएल जा सकैत अछि?

माछक व्यवसाय मे कतेक रास क्षेत्र छैक जतय खूब पैसा कमाओल जा सकैत अछि, जेना-

1. जीरा उत्पादन आ नर्सरी पालन (Hatchery and Nursery) 2. पैघ माछ (व्यावसायिक साइज)क पालन (Grow-out) 3. मत्स्य संवर्धन (Fish processing) - रेडी टू कुक, रेडी टू इट 4. माछक भोजन उत्पादन (Fish feed prouction) आ 5. मार्केटिंग/ ट्रेडिंग। मुदा, एहि आलेख मे हम विशेषतः मत्स्य पालन (Grow out) पर चर्चा करब।

पैघ माछ (व्यावसायिक साइज)क पालन - आर्थिक लाभक आधार पर

1. विस्तीर्ण खेती (Extensive Farming), 2. अर्ध गहन खेती (Semi-Intensive Farming), 3. गहन खेती (Intensive Farming)

1. विस्तीर्ण खेती (Extensive Farming) - अपेक्षाकृत कम साफ गाम-घरमे पड़ल पोखड़ि जतय सालो भरि पानि जमा रहय, अपेक्षाकृत कम श्रम आ उर्वरक पूँजीक कोनो जरूरत नञि, इनपुटक

नाम पर मात्र जीरा आ प्राकृतिक भोजन (सूक्ष्म वनस्पति - Phytoplankton आ सूक्ष्म जंतु - Zooplankton)। एहन तरहक पोखडि़ मे बेर-बेर जाल चलाकऽ पोखड़ि मे पाहिलेसँ उपस्थित कीड़ा-मकोड़ा हानिकारक माछकेँ निकालि लेल जाइत अछि। एहि लेल 2000-2500 किलो महुआक खल्लीक उपयोग करबाक चाही। बादमे, 2-3 सप्ताहक बाद 250-300 किलो चुना प्रति हेक्टेयरक दरसँ पानिमे छिड़काव करक चाही। जाहिसँ पानिक pH केँ नियंत्रित कऽ पानि कऽ साफ रहय।

माछक प्रकार - एकल प्रकारक माछ (रोहू वा भाकुड़ वा नैनी) वा मिश्रित (रोहू-भाकुड़-नैनी) वा चीनी कार्प सेहो मिलाओल जा सकैत अछि।

जीराक संख्यां (घनत्व) - निम्न सँ माध्यम 2500-3000 पीस प्रति हेक्टेयर।

पालन अवधि - एक सँ डेढ़ साल।

व्यवसायिक साइज - मिश्रित 500 ग्राम सँ 1 किलो धरि 2-3 टन प्रति हेक्टेयर।

जीराक दाम - 2-5 रूपया प्रति पीस।

फसलक संख्या - 1।

प्रति हेक्टेयर एक फसल सँ करीब 2 सँ 2.5 लाख टाका (खर्चा लगा कऽ) कमाओल जा सकैत अछि।

2. अर्ध गहन खेती (Semi-Intensive Farming) - अपेक्षाकृत बेसी साफ, अपेक्षाकृत कनी बेसी मेहनत, जीरा, खाद (प्राकृतिक भोजनक उत्पादनक लेल), बिजलीक सुविधा, ऑक्सीजनक लेल पैडल व्हील एरेटर, पानिक गुणवत्ता जाँचक लेल किछ उपकरण।

माछक प्रकार - एकल प्रकारक माछ (रोहू वा भाकुड़ वा नैनी) वा मिश्रित (रोहू-भाकुड़-नैनी)।

पोखड़िक साइज - 9.5-1.0 हेक्टेयर, पानिक निकास आ भरय केर सुविधा।

बिजलीक सुविधा - ऑक्सीजनक लेल पैडल व्हील एरेटर।

जीराक संख्या (घनत्व) - मध्यम सँ उच्च (5-7.5 सेंटीमीटर साइज) - 10,000 पीस प्रति हेक्टेयर।

पालन अवधि - छह सँ आठ मास।

माछक भोजन (Fish feed) - 40-50 रू प्रतिकिलो, कुल भोजन 13-15 टन प्रति हेक्टेयर।

जीराक दाम - 2-5 रू प्रति पीस।

व्यवसायिक उत्पादन साइज - समान साइज 1 सँ 1.2 किलो प्रति पीस, 8 - 9 टन प्रति हेक्टेयर।

फसलक संख्या - 2।

प्रति हेक्टेयर एक फसल सँ करीब 12-13 लाख टाका (खर्चा लगा कऽ) धरि कमाओल जा सकैत अछि।

3. गहन खेती (Intensive Farming) - एकदम साफ, बेसी मेहनत, जीरा, बायोफ्लॉक (माछक मलकेँ प्रोटीन मे परिवर्तनक लेल), बिजलीक सुविधा, ऑक्सीजन डिफ्यूजर, ऑक्सीजन पाइप लाइन, लगातार पानिक सप्लाई आ पानिक गुणवत्ता जाँच हेतु किछ उपकरण। एहन तरहक खेती प्लास्टिक वा सीमेंटक टैंक मे कएल जाइत अछि वा छोट पोखड़ि मे सेहो। टैंक साइज लगभग 4 मीटर व्यास (diameter) धरि। एहन तरहक खेती मे कतेको तरहक टेक्टनोलॉजीक उपयोग कएल जा सकैत अछि, जेना- बायोफ्लॉक, पुनः परिसंरचनीय जलीय व्यवस्था (Recirculatory Aquaculture System वा रास सिस्टम), एक्वापोनिक्स (Aquapoinics), रेस वे (Flow-Through System) आदि। एहि तकनीक मे कार्बन आ नाइट्रोजनक अनुपातकेँ नियंत्रित कऽ कऽ माछक मलकेँ प्रोटीन मे परिवर्तित कएल जाइत अछि। एहन तरहक उत्पादन तकनीक मे बाहरी भोजन (formulated feeds) पर निर्भरता कम होइत अछि, मुदा करक लेल बहुत बढ़ियाँ प्रशिक्षणक जरूरत होइत अछि। उत्पादन Semi Intensive सँ दुगुणा-तिगुना लेल जा सकैत अछि, तदनुसार आमदनी सेहो। एहि लेखमे संक्षिप्त रूपेँ बायोफ्लॉक पर किछ जानकारी दऽ रहल छी।

बायोफ्लॉक मे मुख्यतः कैट फिश कएल जाइत अछि रोहू आ भाकुड़ (कतला) सेहो कएल जा सकैत अछि मुदा ग्रोथ कम होइत अछि।

माछक प्रकार - एकल प्रकारक माछ (पांगूस, मांगुर, सिंगही, विएतनाम कोई)।

टैंक साइज - 4 मीटरक व्यास आ 5 फीट ऊँचाई (diameter)।

पोखड़िक साइज - 0.5 सँ 1.0 हेक्टेयर धरि, पानिक निकास आ भरय केर सुविधा।

बिजलीक सुविधा - ऑक्सीजन डिफ्यूजर, ऑक्सीजन पाइप लाइन, पैडल व्हील एरेटर, ऑक्सीजन ब्लोअर।

टैंक निर्माण मे खर्चा - 35,000-40,000 रू. सभ मिलाक (पूरा पाइप लाइन आ ऑक्सीजन लाइनक फिटिंगक संग)।

जीराक संख्या (घनत्व) - 2000 पीस (5-7.5 सेंटीमीटर साइज) प्रति टैंक।

पालन अवधि - छह मास।

माछक भोजन (Fish Feed) - 40-50 रू प्रति किलो, कुल भोजन 2-3 टन प्रति टैंक।

बायोफ्लॉक निर्माणक लेल - चाउर वा गहूमक गुंडा, मोलासेस, नमक, प्रोबायोटिक्स, चुना।

जीराक दाम - 2-4 रू प्रति पीस।

व्यवसायिक उत्पादन साइज - समान साइज 800 ग्राम सँ 1 किलो प्रति पीस, 1800-1900 किलो प्रति टैंक।

फसलक संख्या - 2।

करीब 2.0-2.5 लाख टाका (खर्चा लगा कऽ) प्रति टैंक धरि कमाओल जा सकैत अछि।

4. एकीकृत मत्स्य पालन (Intergrated Fish Farming) - एहन तरहक व्यवसाय मे माछक खेतीक संगे अओरो चीजक खेती कएल जा सकैत अछि, जाहिसँ एकक प्रतिफल (बाय प्रोडक्ट्स) दोसर लेल आहार होइत अछि। एहिसँ मत्स्य उत्पादनक खर्चमे कमीक अलावे दोसरो उपजक दाम भेट जाइत अछि, जेना-

1. मत्स्य-मुर्गी पालन 2. मत्स्य-बतख पालन 3. मत्स्य-सुअर पालन 4. मत्स्य-सब्जी/फल खेती 5. मत्स्य-मखान खेती 6. मत्स्य-धान खेती 7. मत्स्य-बकरी/भेड़ पालन।

5. संसाधनक उपलब्धता

1. जीरा - मुख्यतः कोलकाता आ आंध्र प्रदेश ओना बिहार मे सेहो भेट जाइत अछि। स्पॉन - 3 दिन (6-7 मिलीमीटर), फ्राई - 25-20 दिन (20-25 मिलीमीटर), अंगुलिक (फिंगरलिंग) - 60-90 दिन (100-150) मिलीमीटर), एक वर्षिय (Yearing) - 7-9 मास (100-200 ग्राम)।

2. माछक आहार - आंध्र प्रदेश अओर कोलकाता सँ।

3. उपकरण - जाल, ऑक्सीजन/PH तापमान मापक यंत्र; टैंक निर्माणक लेल वायर मेश, तारपोलिन, पाइप फिटिंग, ऑक्सीजन ब्लोअर आ पाइप लाइन आदि कोलकाता आ मुंबई सँ।

6. सरकारी सहायता/प्रशिक्षण केंद्र

1. कृषि विज्ञान केन्द्र - केन्द्रीय कृषि अनुसंधान आ स्थानीय कृषि महाविद्यालयक मध्य एकटा कड़ी, नवीनतम तकनीकीक जानकारीक लेल।

2. FFDA (फिश फारमर्स डेवलपमेंट एजेंसी) - केंद्र सरकार द्वारा प्रायोजित जिला स्तर पर किसानकेँ तकनीकी जानकारी, ऋण आदि सहायताक लेल।

3. प्रशिक्षण संस्थान - लघु वा दीर्घ अवधीक लेल केन्द्रीय मत्स्य शिक्षण संस्थानक उपकेन्द्र चिनहट (लखनऊ), सोनीपत (हरियाणा), पावर खेड़ा (मध्य प्रदेश), काकीनाडा (आंध्र प्रदेश) आदिसँ प्रशिक्षण लेल जा सकैत अछि।

4. राज्य सरकार - जिला मत्स्य पदाधिकारी/विस्तार अधिकारी।

5. गैर सरकारी संस्था - बिहार विद्यापीठ, पटना।

लेखक केंद्रीय मत्स्य शिक्षा संस्थान, मुंबईसँ अंतर्देशीय मत्स्य प्रशासन आ प्रबंधन मे स्नातक कऽ 25 वर्षसँ मत्स्य पालन आ संवर्धन (Fish Farming & Processing)*क क्षेत्रमे देश-विदेशमे अपन पेशेवर सेवा दऽ रहल छथि आ सम्प्रति नेशनल एक्वाकल्चर ग्रुप, सऊदी अरब मे गुणवत्ता नियंत्रण विभाग मे वरिष्ठ प्रबंधक छथि। उपरोक्त विषय पर हुनकासँ* satishfish@gmail.com *पर व्यक्तिगत संपर्क कएल जा सकैत अछि।*

विकलांगता : स्वरूप आ समस्या

❑ डॉ संध्या कुमारी

विकलांगता अओर सकलांगता एकटा सापेक्षिक शब्दावली अछि। कोनो व्यक्ति पूर्णतः स्वस्थ नञि भऽ सकैत छथि, भले ओ बाह्य दृष्टिसँ कतबो स्वस्थ आ सुदृढ़ किएक नञि देखाय दैथ। प्रश्न उठैत अछि जे आखिर हम ककरा विकलांग मानि आ ककरा नञि? सामान्यतः शरीरमे कोनो कमीकेँ विकलांगताक परिधिमे राखल जाएत अछि। अर्थात् कोनो व्यक्तिकेँ शारीरिक वा मानसिक अपूर्णताक स्थितिमे ओकरा विकलांग मानि लेल जाएत अछि। समान्यतः मनुष्यमे निम्न प्रकारक विकलांगता पाओल जाइत अछिः-

1. चलय-फिरयकेँ विकलांगता (Locomotor Disability)
2. दृष्टि बाधिता (Blindness)
3. अल्प दृष्टि बाधिता (Low Vision)
4. श्रवण बाधिता (Hearing Impairment)
5. कुष्ठ गलित रोग (Leprosy)
6. बौद्धिक विकलांगता (Intellectual Disability)
7. मानसिक विकलांगता (Mental Illness)

विकलांगताक प्रकारमे किछु आन प्रकारक विकलांगता सेहो शामिल गेल अछि, जेना-

1. मांसपेशीय विकार (Muscular Dystrophy)
2. बौनापन (Dwarfism)
3. सेरेब्रल पैल्सी (Cerebral Palsy)
4. एसिड अटैक विक्टिम (Acid Attack Victim)
5. स्पीच एंड लैंग्वेज डिसेबिलिटी (Speech and Language Disability)
6. स्पेशिफिक लर्निंग डिसेबिलिटी (Specific Learning Disability)
7. ओटिजन स्पेक्टम डिस्ओडर (Specific Spectrum Disorder)
8. क्रॉनिक न्यूरोलॉजिकल कंडीशंस (Specific Neurological Conditions)
9. मल्टीपल सेलोरोसिस (Multiple Sclerosis)
10. पार्किन्सन्स डिजीज (Parkinson's Disease)
11. हीमोफीलिया (Haemophelia)
12. थैलेसीमिया (Thalassemia)
13. सिकल सेल डिजीज (Sickle Cell Disease)
14. मल्टीपल डिसैबिलिटीज (Multiple Disabilities)

विकलांगताक एतेक प्रकारक कारणेँ विकलांग व्यक्तिक समस्या सेहो भिन्न-भिन्न प्रकारक होइत अछि। जाति, परिवेश, लिंग, आर्थिक स्थिति आदिसँ सेहो विकलांगता कोनो-नञि-कोनो रूपेँ प्रभावित होइत अछि। एहिमे किछु खास प्रकारक विकलांगताकेँ छोड़ि दी, तऽ प्रायः विकलांग व्यक्तिमे सेहो सामान्य

मनुष्यक भाँति सोचय, समझय, महसूस करय आ कार्य करबाक क्षमता होइत अछि। विकलांग सेहो अपन समाजक अंग छथि। हुनको समान अधिकार आ अवसर पेबाक अधिकार छैन्ह। अपन संविधान अपना सबकेँ ककरो संग भेद-भावक इजाजत नञि दैत अछि। विकलांग व्यक्ति कोनो तरहेँ दोयम दर्जाक नागरिक नञि मानल जाएत, एहि तरहक प्रावधानक बादो विकलांगक संग अक्सर भेदभावक खबर देखय आ सुनयकेँ मिलैत अछि। इतिहास साक्षी अछि जे ओकर विभिन्न चरणमे विकलांग व्यक्तिकेँ लांछन, पूर्वाग्रह आ भेद-भावक दृष्टि देखल जाइत रहल। चूँकि विकलांगक कोनो वोट बैंक नञि होइत अछि, एहिसँ हुनक स्थिति आइयो हाशिये पर छैन्ह।

विकलांग व्यक्तिकेँ समान अवसर, अविष्कारक संरक्षण आ पूर्ण सहभागिता 1955 (जकरा जगह हालहिं मे संसद द्वारा विकलांगक अधिकार अधिनियम 2016 लेलक अछि)केँ कतेको दशक गुजर गेलाक बादो आइ धरि विकलांगक अधिकार, सम्मानजनक जिनगी, रोजगार आदिक प्रति सरकार आ समाज दूनू उदासीन अछि।

1995क अधिनियमक अनुसारेँ भारत सरकार आ राज्य सरकारक विभाग, सार्वजनिक क्षेत्रक उपक्रम, निगम आ स्वायत्तशायी निकाय (जाहिमे केन्द्रीय आ राज्य विश्वविद्यालय शामिल अछि) नौकरीमे ए., बी., सी. आ डी. संवर्गक विकलांगक लेल 3 प्रतिशत आरक्षणक प्रावधान कएल गेल। जाहिमे 1 प्रतिशत अस्थि विकलांग, 1 प्रतिशत दृष्टि बाधिता आ 1 प्रतिशत श्रुति बाधिताक हेतु आरक्षित कएल गेल। विकलांगक अधिकार अधिनियम 2016केँ द्वारा सरकारी नौकरीमे आरक्षणक सीमा चारि प्रतिशत कऽ देल गेल अछि, तैयौ आरक्षित पदक रिक्त संख्या बेसी नञि अछि।

अखन हालेमे भारतीय रेलवे मे लगभग ढाई हजार ग्रुप सी आ डी क नौकरीक लेल प्रवेश परीक्षा उत्तीर्ण विकलांग अभ्यर्थिकेँ कतेको चक्कर खेलाक बादो नियुक्ति पत्र तऽ दूर, एहि लेल आवाज उठाबय पर उल्टा हुनका बेरहमीसँ पुलिसक हाथे पिटबाओल गेल। एतय धरि जे विकलांगक अधिकारक लेल विकलांगता अधिकार कानून 2016क तहत स्थापित कएल गेल मुख्य विकलांगता आयुक्तक कार्यालय सेहो एहि मामला मे निष्प्रभावी रहल।

शेषांश पेज 75...

लेखिका जवाहर लाल नेहरू विश्वविद्यालय मे शोधार्थी आ विकलांगता विषय पर गहन ज्ञाता छथि।

मैथिल कर्ण कायस्थ

❑ *सच्चिदानन्द लाल दास*

ई सर्वविदित अछि जे **कायस्थ** श्रीचित्रगुप्त भगवानक संतान छथि। जखन बह्मा चारिवर्ण- ब्राह्मण, क्षत्रिय वैश्य आ शूद्रक सृष्टि कऽ लेलैन्ह तखन हुनका समक्ष ई समस्या उत्पन्न भेलैन्ह जे उक्त वर्णक लोकक कर्मक लेखा-जोखा कोना होएत? एहि समस्याक समाधानार्थ ब्रह्मा ध्यान मग्न भऽ गेलाह। ग्यारह हजार वर्ष धरि ध्यानमग्न रहलाक बाद हुनक कायासँ श्रीचित्रगुप्त भगवानक आविर्भाव भेलैन्ह। एकर प्रमाण भविष्य पुराण, गरूड़ पुराण, स्कन्द पुराण, देवी पुराण, श्रीकमलाकर भट्टरचित वृहद ब्रह्मखण्ड आ हर्षरचित नैषधीयचरित आदिमे अछि।

श्रीचित्रगुप्त जीक स्तुतिमे वर्णित अछि-

श्रिया सह समुत्पन्न समुद्रमथनोद्भव।
चित्रगुप्त महाबाहो ममाद्य वरदो भव।।

(हे लक्ष्मीक संग उत्पन्न होएवाला, हे समुद्र मन्थनसँ उत्पन्न होएवाला आ हे बड़का भुजावाला चित्रगुप्त आइ अहाँ वरदान देनिहार बनू।)

उपर्युक्त स्तुतिसँ ई सिद्ध होइत अछि जे श्रीचित्रगुप्त जीक जन्म समुद्र मन्थनसँ भेलैन्ह।

ब्रह्माक कायासँ उत्पन्न आ समुद्र मन्थनसँ उत्पन्न एहि विरोधाभासक एक्केटा समाधान अछि जे जहिना कल्पभेदसँ सूर्य चन्द्र आदि देव नाना रूपमे अवतरित भेलाह, तहिना चित्रगुप्त भगवान सेहो इन्द्र, वरूण आदि देवक समान विभिन्न रूपमे अवतरित भेलाह।

श्रीचित्रगुप्त भगवान चौदह यममे सँ एक यम मान्य छथि।

श्रीचित्रगुप्तजीक ब्रह्माजीक अनुमतिसँ एकटा विवाह धर्मशर्माक पुत्री इरावती आ दोसर विवाह सूर्यपुत्र श्राद्धदेव मनुक पुत्री सुदक्षिणासँ भेलैन्ह। इरावतीकेँ शोभावती अओर सुदक्षिणाकेँ नन्दिनी सेहो कहल जाइत अछि।

श्रीचित्रगुप्तजीक सन्तान बारह श्रेणीमे विभक्त छथि। जाहिमे एक सन्तान **'कर्ण'** सेहो छथि। **कर्ण** श्रीचित्रगुप्त भगवानक दूनू पत्नी मे सँ किनक सन्तान छथि? सेहो विवादास्पद अछि। अर्थात् एहि सम्बन्धमे मतैक्यक अभाव अछि।

हम बोकारो इस्पात-संयन्त्रक पुस्तकालय मे विद्यमान शोधित **'विश्व शब्द कोश'**क आधार पर **'कायस्थ कौन?'** (1902 ई. मे प्रकाशित) पोथीक रचना कएलहुँ। जकरा अनुसार कर्ण कायस्थ श्रीचित्रगुप्त भगवानक प्रथम पत्नी इरावती (शोभावती)क आठ पुत्र मे सँ एक छथि।

मिथिला-चित्र प्रवेशिका (भाग-1 आ 2)क लेखकद्वय कृष्ण कुमार कश्यप आ शशिवाला जीक अनुसारे कर्ण कायस्थ इरावती माताक पुत्र छथि मुदा ओ हिमवान छथि, जखनकि हमरा अनुसारे हिमवान अम्बष्ठ छथि आ चारूण कर्ण छथि।

खेराजपुर (दरभंगा) निवासी श्रीकमलधर दास जीक रचनाक अनुसार कर्ण कायस्थ नन्दिनी (सुदक्षिणा) माताक सन्तान छथि।

एवम प्रकारे देखल जाइत अछि जे कर्ण कायस्थक माता सेहो पृथक-पृथक दृष्टिगोचर होइत छथि।

ई सभहक मत छैन्ह जे प्रथम पत्नीकेँ आठ पुत्र आ दोसर पत्नीकेँ चारि पुत्र भेलथिन्ह। परञ्च नाम मे अन्तर अछि।

इरावती माताक पुत्र तीनू गोटाक अनुसारे

हमरा अनुसार	श्री कृष्णकुमार कश्यप-शशिवाला जीक अनुसार	श्री कमलधर दासजीक अनुसार
(1) चारू-माथुर	(1) चारू-दूरध्वज	(1) चारू-माथुर
(2) सुचारू-गौड़	(2) सुचारू-अम्बष्ठ	(2) सुचारू-गौड़
(3) चित्र-भटनागर	(3) चित्र-गौड़	(3) चित्रचारू-अष्ठाना
(4) मतिमान-सक्सेना	(4) मतिमान-निगम	(4) मतिमान-सक्सेना
(5) हिमवान-अम्बष्ठ	(5) हिमवान-कर्ण	(5) चारूस्त-वाल्मीकि
(6) चारूण-कर्ण	(6) चित्रा-अष्ठाना	(6) हिमवान-अम्बष्ठ
(7) चित्रचारू-निगम	(7) अतीन्द्रिय-वाल्मीकि	(7) चित्र-भटनागर
(8) अतीन्द्रिय-कुलश्रेष्ठ	(8) अरूण-कुलश्रेष्ठ	(8) अतीन्द्रिय-कुलश्रेष्ठ

सुदक्षिणा (नन्दिनी) माताक पुत्र तीनू गोटाक अनुसारे

हमरा अनुसार	श्रीकृष्ण कुमार कश्यप-शशिवाला जीक अनुसार	श्री कमलाधर दासजीक अनुसार
(1) भानु-श्रीवास्तव	(1) भानु-माथुर	(1) भानु-श्रीवास्तव
(2) विभानु-सूर्यध्वज	(2) चित्रभानु-भटनागर	(2) विभानु-सूरध्वज
(3) वीर्यभानु-वाल्मीकि	(3) विश्वभानु-सक्सेना	(3) विश्वभानु-कर्ण
(4) विश्वभानु-अष्ठाना	(4) वीर्यभानु-श्रीवास्तव	(4) वीर्यभानु-निगम

ध्यातव्य–

1. श्रीकमलधर दासजी अपन पोथीक रचना मे हमर रचना (क) कायस्थ कौन (हिन्दी) आ (ख) मैथिल कर्ण कायस्थक मूल गोत्र-प्रवर एवं विवाहक विध-व्यवहार (मैथिली 2005 ई.)केँ सहायक रूपमे दर्शने छथि। तैं हम हुनकासँ फोन पर पूछलियैन्ह जे अपने दूनू माताक सन्तानक आधार सम्बन्धी बात कहू। तकर उत्तर मे ओ कलैन्ह जे हम वाराणसीक एकटा पुस्तकालय मे देखलियैक।

2. कतेको घर मे विद्यमान श्रीचित्रगुप्त भगवानक फोटोक नीचा लिखल देखलहुँ जे वीर्यभानु (वाल्मीकि) आ विश्वभानु (अष्ठाना) माता इरावतीक अओर चित्रचारू (निगम) आ अतीन्द्रिय (कुलश्रेष्ठ) नन्दिनी माताक पुत्र छथि।

निष्कर्ष रूपमे इएह कहल जा सकैत अछि जे सर्वसम्मतिसँ इरावती (शोभावती)केँ आठ पुत्र अओर सुदक्षिणा (नन्दिनी)केँ चारि पुत्र मान्य अछि। दोसर श्रीचित्रगुप्त भगवानकेँ

बारह पुत्र छलैन्ह ताहिमे कोनो मतभेद नञि।

कर्ण कायस्थ दू प्रकारक छथि (1) गयावासी आ (2) तिरहुतिया। तिरहुतिया कर्ण मैथिल कायस्थ सेहो कहबैत छथि। एकर कारण निवास स्थान थीक।

तिरहुतिया अर्थात् मैथिल कर्णकायस्थ दू वर्गमे विभक्त छथि। प्रथम बड़का (उच्च मूलक) आ द्वितीय निम्न (गृहस्थ मूलक)। एहि विभाजनक आधार की? ई हमरा ज्ञात नञि अछि। ओना हम नरंगवाली भदवारि छी तै निम्न मूलक छी आ नरंगवाली आसीवाला उच्च मूलक होइत छथि। एहिसँ ई बुझना जाइत अछि जे निवास स्थान एकर आधार भऽ सकैत अछि। बड़का मूलवाला बत्तीसगामा कहबैत छथि। हुनक मूल आ डेरा निम्न प्रकार अछि-

मूल	मूलक अन्तर्गत संख्या	डेरा
1. बलाइन	02	सप्ताडेरा आ मधेपुर
2. बीयर	15	केउटी, तारालाही, मुर्तुजापुर, दड़िमा, कहुआ, डखराम, रवने, बहादुरपुर, बहेड़ा, आहील, खेराजपुर, धेरूख, बरहेत्ता, पचाड़ी आ हावीभौआर।
3. शीशव	02	मेहसाइर आ लोहना
4. कोठीपाल	02	राघोपुर आ हिरणी
5. नरंगवाली	02	सुपौल आ आसी
6. पकली	02	कृष्णपुर
7. बत्तिकबाल	01	सनकोर्थ
8. महुनी	01	लडुआरी
9. माण्डीळ	01	सुपौल
10. बसन्तपुर	01	जौंकी
11. अठहर	01	बसन्तपुर
12. गढ़कब	01	सिमरा
13. ओएब	01	लौफा
14. गढ़निधि	01	रतनाम

ध्यातव्य–

उक्त बत्तीस गाममे बलौरक नाम नञि अछि। हम पोथी लिखैक समय कतेको बलौरवासीसँ बात कएलहुँ, मुदा समीचीन उत्तर नञि भेटल। अंतमे हम अनुमान कएलहुँ जे जहिना 'लोहना' आब उजानक स्थान लऽ लेलक अछि तहिना बलौर सेहो कोनो आन स्थान लऽ नेने होइछ। किछु दिनक बाद एकटा बलौरवासी कहलैन्ह जे हमसभ 'आसी'क वासी छी। ई बात कतय धरि सत्य थीक हम नञि जनैत छी।

कायस्थ शब्दक व्याख्या -

काये तिष्ठति इति कायस्थः

'काय' शब्दक अनेक व्युत्पत्ति होइत अछि, यथा-

1. क + अय 2. क + आ + अय 3. का + आय

उपर्युक्त तत्त्वक आधार पर **'कायस्थ'** शब्दक अर्थ निम्न प्रकारसँ निकलैत अछि-

1. क (आत्मा) अयते (गच्छति) इति कायः

जे आत्मा मे विद्यमान अछि - ब्रह्माक कायासँ उत्पन्न (महाभारत मे पुलस्त्य मुनि आ भीष्मक संवाद पर आधरित)।

2. क (यम) आ (पार्श्वे) अयते (गच्छति)

ब्रह्माक आज्ञासँ यम केर सहायक (लेखक) रूपमे जाएवाला।

धर्माधर्म विवेकार्थे धर्मराजपुरे शुभे।
भविष्यति हिभोवत्स निवासं सुविनिश्चलम्।।

(महाभारत मे उल्लेखित)

3. का (दुर्गा) आयः (आगमन/पहुँच)

काम् (दुर्गाम्) आयः इति कायः

दुर्गा देवी पर आश्रित रहयवाला

सा माया प्रकृतिश्चण्डी चण्डमुण्डविनाशिनी।
तस्यास्तु पूजनं कार्य सर्वसिद्धि प्रदायकम्।।

(महाभारत पर उल्लेखित)

4. चि + धञ् = कायः - **आदेः चकार स्थाने ककारः।**

'चजोकुः घिण्यतोः' सूत्रसँ आदि चकारक स्थानमे ककार।

चीयते अस्मिन् अस्वस्थादिकम् इति काय :-

जाहिमे अस्वस्थादि वृद्धिकेँ प्राप्त करैत अछि से थिक **काया**। ओहि काया पर जे आश्रित रहैत छथि से **कायस्थ**।

एहि व्युत्पत्तिक दू भाव अछि- **प्रथम,** ई जे अपना पर आश्रित रहैत छथि अर्थात् पसीनाक कमाई खाइत छथि। **दोसर,** जे शारीरिक सुखकेँ प्रधानता दैत छथि से कायस्थ।

उपर्युक्त व्युत्पत्तिसँ ई स्पष्ट होइत अछि जे कायस्थक उत्पत्ति ब्रह्माक कायासँ भेल अछि।

दोसर, कायस्थ धर्मराजक दरबारमे धर्माधर्मक विवेचनकर्ता छथि अओर **तेसर,** ई जे कायस्थक देवी दुर्गा-चण्डमुण्डविनाशिनी छथि। **चारिम,** इहो भऽ सकैत अछि जे कायस्थ परिश्रम कऽ केँ जीवनयापन करयवला होइत छथि, संगहिं आराम पसन्द करयवला।

प्राचीन पुस्तक **कल्पद्रुम**क अनुसार **कायस्थ** आ **चित्रगुप्त** शब्दक व्याख्या एहि प्रकारेँ अछि-

***कायस्थ* - कायेषु सर्वभूतेषु अन्तर्यामी यथा तिष्ठति इति।**

(ब्रह्मकाये तिष्ठति मनुष्य विषेशः)

***चित्रगुप्त* - चित्र्यति पाप-पुण्यं - विचारात् चित्र्यति लिखति अत्यर्थः।**

चित्रणां जीवकृत पाप-पुण्यादि विचित्रणां गुप्त गोपनं रक्षणं भस्मात् इति।

निवेदन :- *हम 'कायस्थ कौन?' पोथीक दोसर संस्करण प्रकाशित करय जा रहल छी, जाहि बन्धुकेँ किछु सुझाव देवाक होए ओ अपन बहुमुल्य सुझाव दऽ हमरा उपकृत करि।*

लेखक भूतपूर्व व्याख्याता - संस्कृत, बोकरो इस्पात संयंत्र अओर कर्ण कल्याण परिषद आ राष्ट्रीय संस्कृत प्रसार परिषद, बोकारोक भूतपूर्व अध्यक्ष छथि।

हमर मैथिली

❑ डॉ शेफालिका वर्मा

मैथिली हमर मातृभाषा छी
यानी जे हम बजैत छी
सएह ने हम्मर भाषा,
माएक भाषा
एन्ने बाजी ओन्ने बाजी
एम्हर बाजि ओम्हर बाजी
एत्ते बाजी ओत्ते बाजी
अहीं बाजि तोहिं बाजि
हिन्नी बाजी हुन्नी बाजी
तोहर बाजी तोरे बाजी
ई तऽ हमर मातृभाषा छी।
भऽ गेलै चलि गेलै
भै गेलै तऽ की भेलै
तखन ई अंगिका बज्जिकाक
जनम कोना भेलै
ओहि समय हम बुझनुक रहितौं
सीतामढ़ी पूर्णिया कटिहार
भागलपुर मुजफ्फरपुर
सहरसाक बोली चिन्हतौं
तखन नै किछ कहितों!!
जन्म भेल भागलपुर मे
सासुर-नैहर भागलपुर जिला छल
फेर सहरसा जिला भऽ गेल
सुपौल-मधेपुरा अप्पन छल
सेहो आन भऽ गेल
पूर्णिया-कटिहारकेँ कोना भऽ गेल
सहरसा कटि-फटि खाली
सहरसा रहि गेल
मैथिली दरभंगा चलि गेल
मुदा,
दरभंगो नञि रहल अखण्ड
खण्ड-खण्ड भऽ गेल
एक्केटा दरभंगा जनैत छलौंह
आब अंग-भंग भऽ
मधुबनी-झंझारपुर बनि गेल
तखन
समस्तीपुर-सीतामढ़ी कतय चलि गेल
मुदा
मैथिली कतहु नहि गेल
जमाना बदलि गेल
मैथिली अपन अस्तित्व चिन्हबा मे
लागि गेलीह
रंग-बिरंगी नुआ सँ घेरल मैथिली
आब
जमानाक संग घुमि रहलीह
सौंसे नेपालकेँ अपन रंग मे
रंगि रहलीह
खूब ठस्सा सँ फेसबुकक पटल पर
अपन छटा पसारि रहलीह
नारी स्वातंत्र्यक दशा दिशा मे
अपन बाट अपनहिं खोजि रहलीह।

पावस ऋतु

❑ अर्जुन नारायण चौधरी

कारी कारी गगन मेघ सन
उमड़ल मनक विषाद!
एक वियोग अहीं कें सदिखन
पावस ऋतु उन्माद।
रिम-झिम रिम-झिम बूँद खसय
सन-सन बहय सुगंध बसात।
हमर हृदयक हाल नञि पुछू
नयन बसय बरसात!
कारी कारी मेघ...
पोखरि, डाबर, डीह, घरारी
देहि गेल बाढ़िक जोर
हमरो बान्हल धीरज टूटल
ढरकल आँखिक नोर!
कारी कारी मेघ...
टर टर टर बेंग बजै छै
झिंगुरो शोर मचाबै छै।
हमर हिया मे अचरज देखू
बरसो आगि लगाबै छै!
कारी कारी मेघ...

आइना

❑ बिनीता मल्लिक

आइ हमर आ आइना मे ठनि गेल
हम या तु जकाँ परिस्थिति बनि गेल।
जहन देखू चिढ़ाबैत अछि,
बनु सुंदर बनु सुंदर
बड़-बड़ाइत अछि।
स्वयं तऽ कलई कऽ चमकय,
हमरो लीपा पोती लेल उसकाबय।
हम छी प्रकृतिक पुजारी,
किएक ली नकली रूप उधारी।
देख हमर ई शान
आइना मुस्किईत बाजल
हे सखी!
कलई परांत अहाँक
रिफ्लेक्शन बढ़ैत अछि,
आर एहि ग्लैमर पर तऽ
दुनिया मजमा लगा
ताली बजबैत अछि।
बिनु पॉलिश अहाँकें
कें पूछत?
आइ हँसु काल्हि हमरहिं समक्ष
माथ झुका अहान कानब।
हम लगलौंह लड़खराय,
आ कदम लगल बहराय।
कि तहनहिं अंतसकें
आयल जोरदार आवाज,
लक्ष्य पाबय लेल लेमक
अछि लंबा परवाज।
किएक हिनुकासँ ओझराय छी,
हिनक झांसमे फँसए छी।
राखी भरोसा अपन बाजुक ताकत पर
ई लाली आ सफेदी तऽ ऊपरसँ सजाओत
मन राखु
आईना हरदम उनटे तस्वीर देखाओत,
आइना हरदम उनटे तस्वीर देखाओत।।

फरेब

❑ देवानंद मिश्र

आदति नहि, किछु असाध्य बीमारी अछि।
सत्य सँ एहने सन हमर किछु यारी अछि।

किछु रहल संग किछु छोड़ि देलक बाट मे।
नहि बाजी सत्य कतौ ओहि मे बुधियारी अछि।

रहलै तऽ सब दिन झगड़ा साँच आ झूठ केर।
जेना बूझू ई आजूक सहोदर भैयारी अछि।

छलै दूर करबाक हमरा, ओकर मोनक सपना।
तकरे ई सबटा सोचल तैयारी अछि।

उज्जर लेवास छलै देशक राजनेता सन।
भीतर वकील जकाँ हृदयक कोट कारी अछि।

देलियै तऽ संग डेग-डेग पर ओकर।
नहि बूझि सकलौंह ओ तऽ फरेबक बेपारी अछि।

अप्पन मिथिला

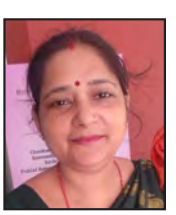

❑ चंदना दत्त

अछि प्राचीन नगर अप्पन मिथिला।
सौभाग्य हमर छी हम मिथिलावासी।।

भरल अनेक तीर्थ एतय, गामे-गाम विराजैत दैव जतय।
जौं घुमि सगरो हम प्रचार करी, पर्यटन स्थल रूपे विकास करी।।

लागत धरोंहि पर्यटक के, हैब हम स्वरोजगारक धनी।
आत्मनिर्भर गामे-गाम बनब, नहि हाथ पसारब मुम्बई दिल्ली।।

हे माय ज्वालामुखी, सुनु विनती हमर।
भागय काल, होए नव विहान, बनी हम मैथिल आत्मनिर्भर।।

भागि चलै छी

❑ आनन्द दास

गामे मे छी, तऽ चलु न, भोरे-भोरे खेत घुमि आबय छी।
महुआ गाछ पर कोयली संग, कुहु-कुहु बाजि आबय छी।
बथुआ साग आ छिम्मी बदामक, टुहि टुहि तोड़ि आबय छी।
खेते लागल अछि गाछि, किछु गाछक जरि कोरि आबय छी।
हे! केकरो नञि कहबय..., चलु हम अहाँ भागि चलय छी।

लार-पुआरक टाल पर बैसि, प्रेमरस सँ भरल गीत गाबय छी।
ओगरबाहाक मचानसँ, कच-कचरी आनि, खूब मोनसँ पाबय छी।
खेते होयत चलु, सरसोंक फूल आ गहुँमक बाली राखि चलय छी।
गहुँम आ धान, खेत परहक पान, एक खिल्ली खाइत चलय छी।
हे! केकरो नञि कहबय..., चलु हम अहाँ भागि चलय छी।

मरूआ तीसी खेत लागल, बैसि चुकटी सँ मीस आबय छी।
टिकुला आमक आ गिरल महुआ, गीन दस बीस उठाबय छी।
जौं खेत, जेबे करब, तऽ कैमरा मे रील सेहो भरा आबय छी।
रहय दियौ अहाँ, बैटरी छै पुरनके, हमहिं बदलबा आबय छी।
हे! केकरो नञि कहबय..., चलु हम अहाँ भागि चलय छी।

शहर जा कऽ देखेबय, दुटा फोटो खींच आबय छी।
पहिने छलहुँ गाम मे, आब फोटोये देखय आ देखाबय छी।
आऊ दोकन सँ, ताबैत हमहुँ किछु पौडर-सौडर लगा लय छी।
हरियर हरियर अहाँ आ खेत, टुनमा सँ फोटो खिंचा लय छी।
हे! केकरो नञि कहबय..., चलु हम अहाँ भागि चलय छी।

पहिने डबरा सँ पोखरि छल, आब तऽ पोखरि डबरा भऽ गेल।
पुल काठवला आब ब्रिज आ पुलिया टुटि रोड तगड़ा भऽ गेल।
जखन सड़कक जरूरत छल, तखनि कतेको जान चलि गेल।
आबे तऽ बनत सड़क गाम मे, जखनि पूरा गामे शहर चलि गेल।
हे! केकरो नञि कहबय..., चलु हम अहाँ भागि चलय छी।

जखन रूकयकेँ छल, तखन तऽ रूकबे नञि केलहुँ।
रहय दियौ, आब अहुँ, खूब नाम करै छी।
केकरो नञि कहबय, फेर सँ लोकसब गामक दर्शन करय छी।
चलु नऽ आब फेर सँ एक बेर, शहर वला गाम चलय छी।
हे! केकरो नञि कहबय..., चलु हम अहाँ भागि चलय छी।

गाम-घड़क बात

❑ सुरेश कंठ

पोथी-पतरा शहर मे रहि कऽ
कियो नहि ओकरा ध्यान सँ पढ़ैयै।
कि कहिऐ आब नेना-भुटका कें
हमरे आब ओ आँखि देखाबैयै।।

जखने गेलौंह परदेश पिया
देवता-पितर कियो नहि समझैयै।
बुढ़-बुजुर्ग जौं किछु बाजय चाहत
जुवनका सब नहि सम्मान करैयै।।

कलियुगक प्रचलन अछि अखन
गाम-घर मे सब नहि ठहरैयै।
70-72 वर्षक बीतलई भारत
अखनो सब किओ नहि पढ़ैयै।।

ईनार-पोखरक बिहंगम दृश्य
कम्मे लोक ओहिठाम स्नान करैयै।
पोखरि मे उपजल पुरनीक पात
कम्मे लोक ओहि पर भोजन करैयै।।

कीचर सँ निकलल कमलक फूल
ओ देखय मे कतेक नीक लगैयै।
पोखरि मे भरल मखानक खान
पूजा मे एकर प्रयोग कम्मे करैयै।।

एकरा बारे मे सब-कुछ पता अछि
मखानक खीर गम-गम करैयै।
कतेक बात सब अखने कहू
अखनो टूटल-फाटल अंगा पहनैयै।।

गामक हालत अखनो नहि बदलल
सुधरबाक आशा मे समय बितैयै।
सुधरवाक आशा मे समय बितैयै
सुधरवाक आशा मे समय बितैयै।।

आब नहि होए देरी

❑ डॉ प्रमोद झा 'गोकुल'

बनि हार विहार, बिनु लाज विचार
एकात्म प्रसार, सब केलौंह स्वीकार
तैयो भेटल अपमानक ढेरी
जे भेलै से भेलै आब नै होए देरी।

हम जोड़े मे बेहाल, तों तोड़े मे नेहाल
सहू कतेक काल? झुकाउ कतेक भाल?
ढीठ नहि सहब तोहर डिठौरी
जे भेलै से भेलै आब नहि होए देरी।

श्रम स्वेद सखेद, टघरय निर्बेद
हर कान्ह हर, हर काँख वेद
ई सान हमर नहि कमजोरी
जे भेलै से भेलै आब नहि होए देरी।

छीटलह बीया, फूटक भरि हीया
तीन तिरहुतिया, तेरह पाक दिया
चलत कतेक दिन ई अनहेरी
जे भेलै से भेलै आब नहि होए देरी।

दक्षिण मे छथि गंग, पूरब मे कौसिकी संग
पश्चिम गण्डकी तरंग, उत्तर मे हिम अभंग
दैह नहि तऽ लेबहु बलजोरी
जे भेलै से भेलै आब नहि होए देरी।

मिथिला अखण्ड, लेबहु रे प्रचण्ड
मगध मुस्दण्ड, सहब नहि तोर टण्ड
कतेक सहू? सह्य नहि बकथेरी
जे भेलै से भेलै आब नहि होए देरी।

हम शालीन सभ्य, तों आदि अपसव्य
सिखलौंह कौटिल्य, हमहुँ प्रत्यय तव्य
तैँ चलत नहि आब हेराफेरी
जे भेलै से भेलै आब नहि होए देरी।

हमर गाम

❑ आशीष 'प्रेम शंकर'

भारतक शान अछि गाम।
हमर अभिमान अछि गाम।
स्नेहक उद्यान अछि गाम।
तैं हमर प्रमाण अछि गाम।

प्रेमक भंडार अछि गाम।
सह-सह संचार अछि गाम।
नियमक सरकार अछि गाम।
बिनु गाँठ विस्तार अछि गाम।

दुःख मे आह अछि गाम।
रौद मे छाँह अछि गाम।
अन्हरियो मे राह अछि गाम।
वर्णन मे शाह अछि गाम।

लोकक सम्मान अछि गाम।
अंतिम संधान अछि गाम।
सत्यक अभिराम अछि गाम।
सबसँ गणमान्य अछि गाम।

संस्कारक लगान अछि गाम।
धर्मक बलिदान अछि गाम।
संगीतक तान अछि गाम।
अजगुत बखान अछि गाम।

निराधारक आधार अछि गाम।
कष्टक छुटकार अछि गाम।
प्रेमक मजधार अछि गाम।
स्वदगर प्रकार अछि गाम।

पुरहितक जजमान अछि गाम।
लुधकल लताम अछि गाम।
कोकिलक आह्वान अछि गाम।
मिठगर मिष्ठान अछि गाम।
विकल्प बिनु बाण अछि गाम।
धनुषक समान अछि गाम।
जीवनक खर्ची जोड़बा मे।
सगरो विरान अछि गाम।

अपन चिंता छोड़ि बैसल।
तैं हमर 'श्रीराम'अछि गाम।
स्वार्थ विहिन विभोर केलक।
तैं 'गार्गी'श्रीमान अछि गाम।

दहेज प्रथा

❑ बबली मीरा दत्त

सुन्दर भारत, सुंदर मिथिला,
सुन्दर एहिठामक लोग यौ।

एकटा प्रश्न सबसँ पुछय छी?
तकर जबाब चाहय छी यौ?
बेटा-बेटी एक सामान अछि
तखन किएक फर्क करय छी यौ?
एहि प्रश्न पर मंथन अहाँ करू
बैसी कऽ कनि विचारू यौ।
जते दुःख बेटा मे होइये
ततबे दुःख बेटी मे यौ।
एक्के समान शिक्षा दै छी
तखन दहेज किएक माँगै छी यौ?
सुन्दर भारत सुंदर मिथिला...

एकटा प्रश्न आर पुछय छी?
तकर जाबाब चाहय छी यौ।
लड़कीक ज्ञान किएक नञि पुछि?
दहेज प्रथा अहाँ हटाबु महाशय
दुनिया मे मिशाल बनि जाऊ यौ।
हृदयक वेदना अहाँसँ कहै छी
दहेज लऽ की करब यौ?
एहि कुप्रथाकेँ हटाबु यौ।
दहेज नञि लिय-दिय यौ।
एहन संकल्प सब कियौ लिय।
सुन्दर भारत सुंदर मिथिला...
नञि तऽ ई भार महिलाकेँ दियौ
कलजोड़ी मीरा कहै छथि यौ।
दहेज प्रथा हटा कऽ रहब
नारी मे एत्ते शक्ति यौ।
सब महिला हमरा संग बाजू
संकल्प हम करै छी यौ
हम नञि अपन पुतोहू सतायब
बेटी हुनका मानब यौ
मीरा केँ पूर्ण विश्वास अछि
दहेज प्रथा हटि जायत यौ।
सुन्दर भारत सुंदर मिथिला...

प्रकृति

❑ सितांजली दास 'सित'

केहन सुन्दर ई वन-उपवन,
बाग-बगीचा हरियर सन।

मधुमास बसंत जखन आयल,
नव पल्लव वृक्ष हरियायल।

आमक गाछी लीचीक बारी,
कटहर ओ लतामक डारी।

जामुन जिलेबी लटकल गाछ,
मन मे उठय अलगे हुलास।

लुबुधल महुआ मधुमय सुगंध,
कोशी कमलाक उठय तरंग।

कोईली करय अति अनघोल,
सुनय मे लागय सुन्दर बोल।

सांझ सबेरे चिड़ैय चुनमुन,
सुनि झुमय मन नाचय तन।

प्रकृतिक ई मधुर संगीत,
'सित'क मन बसंतक गीत।

मातृत्व

❑ *रीना चौधरी*

मातृत्व
स्निग्ध,
अथाह, अगम्य,
स्नेह सँ भरपूर
अपन कृतिक स्पर्श मात्र सँ,
स्निग्ध रससँ परिपूर्ण
एकटा अद्‌भुत अनुभूति,
वात्सल्य प्रेमक
अनुभव मात्रटा नञि।
एकटा जीवनकेँ
अपना सँ प्रकट करैत
गौरवान्वित क्षण अछि।
अपन कृतिकेँ
अपन कोर मे पाबि
हर्षित भऽ
ओह,
कतेक आह्लाद,
अपन हृदय सँ
साटि
हृदयक स्पंदन
केँ अनुभूति
प्रसव पीड़ाकेँ
धूमिल करैत
मन मस्तिष्ककेँ
झंकृत कऽ
मुखमंडलकेँ
दीप्त करैत
एक निश्छल, सौम्य,
मुस्कान
हाँ ईएह थिक
मातृत्व।।

कें चुका सकत गाए-माएक मोल?

❑ *रतन कुमार रवि*

हौ बाबू! गै किएक नञि बेच दैत छक? बूढ़ भऽ गेलै। पुतहुओ कहैत रहैत छह। माए तऽ सदिखन बड़-बड़ाइते रहैत छह। बेटा मंगरूक गप्प सुनि ठाढ़ ओकर माइयोक बोल फूटलै, “ठीके तऽ कहैत अछि बौआ। हमर बातकेँ तऽ अहाँ कहियो मोजरे नञि दैत छियै। गै बूढ़ भऽ गेल अछि, आब दूधो तऽ नञि दैत अछि। सदिखन बेमारे रहैत अछि। एकर सेवा-सुश्रुषा आ दवाई-दारूमे बेकारे खरचा होइत अछि। ऊपर सँ हमरो सबकेँ एकरा मे ओझरायल रहअ पड़ैयै। माल-जालक बेपारी कतेक बेर अपना ओहिठाम आ टोह लगा चुकल अछि मुदा अहाँक मोन नञि देखी हम सभ अहाँकेँ नञि कहैत छलहुँ।”

माए-बेटाक गप्प सुनी नेंगरू गम्भीर भऽ गेलै। गुमसुम रहि किछु काल अपन घरबाली आ बेटाक मुँह निहारैत रहल। नेंगरूक चुप्पीसँ उत्साहित भऽ मंगरू कहलकै, “बेसी बिचारैक बात नञि छै हौ बाबू। सभ करैत छै। बूढ़ गै पोसने की लाभ? बेपारी ताईक हम लऽ आयब। तखन तौँ ना नुकुर नञि करऽ लगीह।” घरबालियो घुड़की देलक, कहलकै - गोबर, करसी, घास, सेवा-सुश्रषा हमरा सबकेँ करय पड़ैत अछि। अपने तऽ भागले रहैत छैथ। रौ बौआ। बुढ़बाक फेर मे जनु पड़ऽ। कहियाक बुधियार छैथ ई? ताइक-तूकि कऽ दलालकेँ लऽ आबह। बेसी छह-पाँच नञि करह। बूढ़ गै पोसी कऽ की लाभ?

घरबालीक उपालम्भ आ बेटाक दबावसँ आहत नेंगरू लमगर साँस छोड़ैत बाजल, “ठीके कहैत छ दूनू माए-बेटा। हमहुँ तऽ बूढ़ भऽ गेलहुँ। हमरो दवाई दारू मे खरच बढ़ि रहल छ। नेकरी-चाकरी सेहो करय पड़ैत छ। हमरो कोनो दलालक हाथे बेच दऽ। हमर किडनी, गुर्दा आदि बेचि कऽ उ चिकन कैंचा कमाये लेते। तोहरो सबकेँ किछु टका हाथ लगी जेतह।”

नेंगरूक बात सुनी माए-बेटा सकपका गेलै। मंद स्वर मे माए कहलकै - की करबै बूढ़ बेमार गै कें खूँटा पर राखि कऽ? जेहे किछु कैंचा भऽ जाईत। बेटा ठीके कहैत अछि। बेच दियौ। जखन धरि गै ठीक-ठाक रहल ओकरा पोसय-पासै मे हम कोनो कोताही केलहुँ।

नेंगरूक जबाव छल - सेहे तऽ हम कहैत छियै। गै सँ तऽ हम सभ अखन धरि कतेक फायदा लेलहुँ। दूध पी देह बनेलहुँ, दूध बेची कैंचा कमेलहुँ, बछड़ा सँ खेती केलहुँ, गोबरसँ खेत पोसाइल, चिपरी गोइठा सँ भानस भेल, धूर तपलहुँ, बताऊ मंगरू माए। जते गै सँ लेलहुँ ओकर आधो हमसभ चुका सकल छी। ये मंगरू माए! हमहुँ बूढ़ भऽ गेलहुँ। अहुँ आब बूढ़ भेलहुँ। बेटा-पुतहु लेल हमहुँ दूनू आब गै जकाँ भार भऽ गेल छी। हमरा सभहक पाछांति हमरो बेटा-पुतहु एक दिन बूढ़ भऽ अपन बेटा पुतहु लेल बूढ़, बिमार आ बेकार भार भऽ जाएत। तखन की ओकर बेटा-पोताकेँ ओकरा सभ लेल ओहने भाव रखनाय उचित रहतै जेहन भाव अखन हमसभ अपन गै कऽ लेल रखैत छियै। गाए-माएक मोल कियो नञि चुका सकैत अछि। हम राजी नञि छी गै बेचय लेल। ओना आब अहाँ सभ मालिक छी, जे करू।

ई कही नेंगरू उठी कऽ विदा भऽ गेल खेत देखैला। गमछा कऽ कोर ओकर आँखि पर छल। घरबाली, बेटा आ पुतहु एक टक सँ नेंगरूकेँ जाईत देखैत रहल। उहो सभ अपन अपन आगत बूढ़ापा कऽ कल्पना सँ सिहैर गेल। गै कसाईक हाथ जाए सँ बाँचि गेल।

मान सम्मान

❑ *भुवनेश्वर चौरसिया 'भुनेश'*

काका यौ सुनै छी अहाँ।

हँ, किछ बाजबैं तखन नऽ बाजब।

ओ बाजल, "दू बच्चा केर बाप छी, मुदा आइ धरि ई नञि बुझऽ आयल जे ई मान-सम्मान कि अछि?"

काका बाजलाह - दूर बुरबक! फुस्सो बात केर मने नै बुझलैंह। कहियो कऽर कुटमैती गेल छलहिं।

ओ - हँ! घुरैत काल कपड़ा लत्ता आ टाका सेहो भेटल।

- हेतौ।

ओ - हँ, वएह दान मे मिललाहा चीज कपड़ा-लत्ता अछि मान अओर टाका अछि सम्मान।

ओ अप्पन माथ पकड़लक, आय हौ दैब!

पंचकठिया

❑ *कुमार मनोज कश्यप*

गामक सीमान पर अदौ सँ बँसबट्टी आ आमक गाछी तेहन झोंझगर-झमटगर छलै जे दिनो मे अन्हारे रहैत छलै। आ तैं निर्जन आ भयाओन लगैत छलै। दोसर, भरि गामक श्मसान भूमि वएह छलै। लोक शार्ट कट रस्ता हेबाक कारणे दिन मे ओहि बाटे आबै-जाईत तऽ छल, मुदा दुपहर आ राति मे केकरो गज्झा नञि अटै ओहि बाटे जाए कें! ई सभ लेकिन पुरान बात भऽ गेलै... आब नञि ओ गाछी छै आ नै मर्चराई! आब ओतय छै ईंटा भट्ठा।

भुल्लुरकाकाकेँ मुईला पर सुनय छियै जे उचित जगह नहि भेटबाक कारणेँ अपने बारी मे दाह-संस्कार करय पड़लै आ ताहू लै सरही आमक लकड़ी मात्र पंचकठिये लै जोगाड़ भऽ सकलै!

कोर्ड-वर्ड

❑ *सुभाष कुमार कामत*

सुधा चारि माससँ गर्भवती छथिन। हुनक पति मुन्ना, सुधाक स्वास्थ्यकेँ जाँच करेबाक लेल नीजी अस्पताल लऽ गेलैथ। डाक्टर सुधाक बीपी, सुगर आदिक जाँच करैत सोनोग्राफी (आल्टरासाउण्ड) सेहो करलक। रिपोर्टक इंतजार मे मुन्ना सुधाक संग प्रतिक्षाहाल मे बैसल छलाह। मुन्नाक देखैते

डाक्टर 'जय श्रीकृष्ण' बाजलाह, प्रतिक्रिया मे मुन्ना सेहो 'जय श्रीकृष्ण' कहलक। मुन्ना डाक्टरक कोड-वर्ड बुझि गेलाह। सुधा पढ़-लिखल स्त्री छथिन। अपन पतिक भाव बुझि गेलीह जे किएक अस्पताल आएल छल। मुन्ना मने-मन बड्ड खुश छल। तखने हॉल मे लागल टेलीविजन पर समाचार आएल- 'चार लड़कों ने मिलकर एक लड़की के साथ सामूहिक दुष्कर्म किया'। ई देखि सुधा बोम फारि कानय लगलीह आ अपन पतिसँ कहय छथिन, 'हम एकरा जनम नञि देबऽ चाही छी।'

चीन्नीक लड्डू

❑ *प्रभाष 'अकिंचन'*

भोरे भोरे सुन्दरकाकी अपन पोताकेँ तेल-कुड़ लगा जाति-पीचक लौकि-लौकि गाबैत छलीह... 'उठू बौआ धान जंकाँ, पान जंकाँ....'

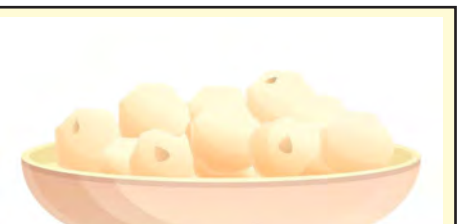

कि तखने लालकाकी अबिते तपाक दऽ बजलीह, "एं यै, सुन्दर बहिन! की इहो पोताकेँ लऽ कऽ एतेक अनघोल केने छथि? करिये करिलुठ तऽ छैन्ह..."

सुन्दरकाकी कहलखिन्ह, "से नञि कही गै, कारियो छै तऽ बेटा ने छै गै। इएह पढ़ि-लिखि कऽ हाकिम भऽ जेतै तऽ कतेको गोर छौंड़ीक बाप पएर पर खसतै। कहै छै जे... चीन्नीक लड्डू टेढ़ो भला।"

लालकाकी सकपकाइत अगल-बगल ताकय लगलीह।

फेसबुकिया जिनगी

कल्पना झा

रे कन्हैया! एक गिलास पानि देमय। कंठ सुखा रहल अछि।

मोबाइल मे आंगुर टिपैत कन्हैया खौंझाइत बाजल- "बाप रे बाप! अहाँकेँ कतेक पियास लागैत अछि। एखने तऽ देने छलहुँ पानि।"

"रे बौआ, हम आब कत्ते दिन पानि माँगय लेल बैसल रहबौ। दू-चारि दिन सएह ने।"

"दू-चारि दिन करैत-करैत दस वर्षसँ टहल करा रहल छी। लागैये अहाँक दू-चारि दिन कहियो नहि बीतत।"

माए डपटलैन्ह- बाबाकेँ एना नञि बाज, पानि नञि देबैन्ह तऽ कम-सँ-कम एहन बिष सन बात तऽ नञि कहियौन्ह। हमहीं आनि कऽ दैत छियैन्ह। पुतहु पानि लऽ कऽ अबैत ताधरि उमानाथ चौधरीक अचेत भऽ कऽ खसि पड़लाह आ फेर नहि उठलाह।

बूढ़ाक काज संपन्न भेला पछाति एक दिन कन्हैयाक माएक नजरि कन्हैयाक फेसबुक पोस्ट पर गेलैन्ह। बाबाक छवि संग कन्हैया लिखने छल, **Miss You Baba** आ ओहि पोस्ट पर तीन सयसँ बेसी लोकक RIP श्रद्धांजलि छल।

किसान

विनीता ठाकुर

रौ फेकुआ! आइ ई बुशर्ट, पेंट आ बाबरी सिट कऽ फेर कतयकेँ जतरा छै? बाबू बजलै।

फेकुआ- हौ बाबू, कते दिन रहबै गाम मे हमरा आउरक गुजर हेतै अहि खेती-बाड़ी पर?

बाबू- एं रौ? बिसैर गेलहि ओ दिन जखैन बम्बई-दिल्ली मे कोरोना एलै तऽ भूखले पेटे सबकेँ हाकिम सभ भगेलकौ आ लत्ते-पत्ते पएरे भगलैंह। तखन तऽ शपथ खेलैं आब घुरि कऽ नञि जैब परदेश, अपने गाम मे खेती करबय, किसान कहेबय। एतबे दिन मे सभ बिसरा गेलह, हेहर।

फेकुआ- हौ बाबू, तुहीं कहऽ एत्ते दिनसँ खेती कऽ कऽ तोरा कि भेटलह? सभटा नीक धान-चाउर बाहर जाइत छह बिचौलिया सभटा नफा लैत छह आ तोरा सबकेँ लागतो नहि भेटैत छह।

रौ बौआ से तऽ तौं ठीके कहैत छैं सरकार तऽ हमरा आउरक सुधिइयो नञि लैत अछि, जाए दहक। तौयो ओहि परदेशसँ नीक छी। विपत्ति मे तऽ फेन अपने गाम काज देलकौ।

बड़का बाबू

पूनम झा

पहिले जमींदारी होइत छल। जमींदार सभहक घर मे बंधुआ मजदूर रहय छल।

बड़का बाबू तऽ गामक जमींदार छलैथ। पुरखेसँ जमींदारी ठाट छलैन्ह।

जतेक नौकर चाकर छलैन्ह ओ सब सेहो पुश्त-दर-पुश्तसँ हुनका ओहिठाम काज करय छलैन्ह। नौकर-चाकर सब मुर्ख तऽ रहिते छल। मुदा आब समय बदलि गेल छल। आब नौकर-चाकर सब सेहो बुधियार भेल जा रहल छल।

एक दिन फुसिया (नौकर)क बेटा स्कूल ड्रेस मे अपन बापसँ किछु कहय लेल अंगना आयल। ओकरा स्कूल ड्रेस मे देखि ओकरे बतारी बड़का बाबूक पोता अपन माएसँ पुछलक- ऐं गे माए! ई रमणा सेहो स्कूल जाए छै?

माए- हँ रौ बौआ! आब सरकार सबकेँ पढ़य लेल कहय छै। बच्चा-बच्चाकेँ शिक्षित रहय कहय छै।

किछु देर चुप रहि ओ पुछलक- ऐं गै! जौं इहो सब पढ़ि लेतै तऽ पैघ भेला पर हमर सभहक काज केँ करतै?

कनिये

❑ *आभा झा*

बौआ हौ! काल्हि भिनसरे उठि जैहऽ! की छै काल्हि?

तिलासंकराति।

ओह! हम नञि मानै छी ई सब। अनेरे निन्न नञि तोड़िहैं।

बौआ, उठह नै, कनिये ओंठगन कऽ लै, काल्हि जितिया छै।

माँ, ई सभ अनेरूआ टिटिंभा तोहिं करय।

बौआ, एना अगरजित नञि बनऽ। संझुका अर्घक बेर नेपत्ता छलह, भोरका मे तऽ उठि जा, दीनानाथ सद्‌बुद्धि देथुन!

माँ, तोरा बूझल छौ नै जे हम साइंसक विद्यार्थी छी, एहि सभ पर हमरा आस्था नञि अछि!

आइं हौ! पीबि कऽ आयल छह?

माँ, आइ क्रिसमसक पार्टी छलै, ओहिमे दोस्त सभ जिद्द केलकै तऽ कनिये।

कें लिखत नाटक?

❑ *प्रदीप बिहारी*

मैथिलीए नहि भारतक आन-आन भाषा सभमे सेहो मौलिक नाटक लिखनिहार बड्ड थोड़ छथि। एखनहुँ साहित्यक आन विधाक अपेक्षा नाटक लिखनिहारक संख्या कम अछि। नाटक लिखनिहारक संख्या कम होयब चिन्ताक विषय थिक।

जौँ संख्या आ अभिलेखक दृष्टिए देखल जाए तऽ मैथिलीमे कम नाटक नहि लिखायल अछि, मुदा रंगमंचीय दृष्टिसँ बहुत रास नाट्य रचना फाइले धरि रहबा योग्य प्रतीत भेल अछि।

ई गप्प बरोबरि होइत रहल अछि जे रंगमंचक लेल नाटक होअय वा नाटकक लेल रंगमंच? एहि पर बहुत रास चिन्ता कएल गेल अछि। हमरा जनैत ई चिन्ता काल सापेक्ष अछि। से जौँ नञि, तऽ 'ध्रुवस्वामिनी'क मंचन एक समय एहि दुआरे नञि होइत रहल जे ई मंचीय नाटक नञि अछि, माने रंगमंचक दृष्टिकोणसँ नञि लिखल गेल अछि। मुदा हेबनि मे 'ध्रुवस्वामिनी'क कतोक सफल मंचन भेल अछि। मैथिलीमे सेहो बहुत रास एहन नाट्य रचना अछि जाहि पर मंचीय नञि होएबाक मोहर लागि चुकल आ चौपेतल पड़ल अछि। ताहि समय रंगमंचक अपन सीमा रहैक। आइ रंगमंचक कैनवास बड्ड विस्तृत भेलैक अछि। मैथिलीमे सेहो प्रतिभावान आ दृष्टि सम्पन्न रंगकर्मी छथि, जे एहि प्रकारक काज कऽ सकैत छथि।

मैथिलीमे मूल नाटक लिखनिहारक संख्या आँगुर पर गनल जाएबला छथि। जे केओ छथि, ताहिमे बड़ थोड़ छथि जे नाट्य-लेखनकेँ अपन लेखकीय प्रतिबद्धताक रूपमे स्वीकारने छथि। मैथिलीमे साहित्यक आन विधाक अपेक्षा प्रत्येक बरख कतेक नाटकक पोथी आबैत अछि, तकर स्थिति देखने सहजहिं नाट्य-लेखनक दारिद्र्यक अनुमान लगाओल जा सकैत अछि।

मौलिक नाट्य लेखनक अभाव कथा वा काव्य मंचनकेँ लोकप्रिय बनौलक

मौलिक नाटक नञि लिखल जएबाक वा नाटककारक उदासीनताक कारण ताकल जाएब आवश्यक सन भऽ गेल अछि। नाटककारकेँ नाट्य-लेखनक प्रति उदासीन होएबाक वा भऽ जएबाक लेल साहित्य आ रंगमंच दूनू उत्तरदायी अछि।

जहिया किछु नाटककेँ मंचनक दृष्टिए ओकरा अनुपयोगी मानि लेल जाइत छल, ओहू समय नाटककार उदास होइत छलाह। आइ नाट्य-संस्थाक अभाव भेल जा रहल अछि। गाममे नाट्य-मंचनक परम्परामे दिनानुदिन ह्रास भऽ रहल अछि। गाम सबमे आब नाटक कम खेलल जाइत अछि। जाहि पाबनि-तिहार सभहक अवसर पर नाटक खेलायल जाइत छल, ताहि पाबनि-तिहारमे आब भी.सी.आर. वा सी.डी. सँ मुम्बैया फिलिम देखाओल जा रहल अछि। नाटककार एहियो सँ उदास होइत छथि।

नाटक 'फुलपाथ'क दृश्य

ओना ग्रामीण रंगमंचक ह्रासक बहुत रास कारण भेल अछि। पारसी थियेटरक अवधारणासँ आधुनिक रंगमंचक अवतरण धरिक बहुत रास संदर्भ छैक, जे कारण बनल अछि। गामक बदलैत सामाजिक आ आर्थिक कारण सेहो एकटा कारण बनल अछि। शहरक चसक सेहो एकटा कारण कहल जा सकैत अछि, खाहे ओ सऽखे होअय वा मजबुरिये। ओना, एहि विषय पर गप्प एतऽ अभीष्ट नञि, तैँ एकरा एतहि छोड़ि नाट्य-लेखनक दायित्व पर चिन्तन करब बेसी समीचीन बुझाइत अछि।

नाटक लिखनिहारकेँ साहित्यक लोक रंगमंचक जीव मानैत छथि आ रंगमंचक लोक साहित्यक। ई एकटा विचित्र विडम्बना अछि। नाटककार झिझिर कोना खेलाइत रहैत छथि। कोनो नाट्यकृति तखने पढ़ल जाइत अछि, जखन ओकर मंचनक प्रस्ताव होइत छैक। कथा-कविता जकाँ नाटक आइयो नञि पढ़ल जाइत छैक। नाटककारकेँ नञि साहित्य दिससँ समुचित प्रोत्साहन भेटैत छैन्ह आ नञि रंगमंच दिससँ। रंगमंचक आजुक स्थिति तऽ ई बनि गेल अछि जे ओ (रंगमंच) कोनो नाटकक प्रदर्शन कऽ ओहि नाटककार पर उपकार करैत अछि।

एहि संदर्भमे हम हिन्दीक कथाकार-नाटककार सुरेन्द्र वर्माक चर्च करब उचित बुझैत छी। 'मुझे चाँद चाहिए'सँ जतेक प्रशस्ति/लोकप्रियता सुरेन्द्र वर्माकेँ भेटलैन्ह, ताहिसँ पूर्व करीब बारह गोट नाटक लिखने नञि भेटि सकलैन्ह। जखन कि नाटककेँ लोकसँ जुड़बाक सोझ विधा मानल जा रहल अछि।

हमरा लगैत अछि जे एहि हेतु हमरा

लोकनिक आलोचना पद्धति सेहो कम दोषी नञि अछि। आलोचना कर्म मे जे नामवरी लोक लागल छथि, जानि नञि किएक ओ लोकनि नाटकक आलोचना वा समीक्षाकेँ महत्वपूर्ण बात नञि मानि रहल छथि। या तऽ ओ नाट्यलेखनकेँ दोसर-तेसर क्लासक लेखन मानैत छथि या नाट्यालोचना हेतु अपेक्षित नाटक आ रंगमंचक दृष्टि स्वयंमे नञि पाबैत छथि वा आलोचनाक नामवरी रैंकक टॉप टेन मे अपन स्थान एकाध पायदान घुसकैत देखैत छथि।

दोसर पीढ़ीक जे आलोचनाकर्मी छथि, हुनक कहब होइत छैन्ह जे हमर बात कें मानताह? हम टॉप टेनमे कतहु रहबह, तखन ने किछु कऽ सकबह, भाए नाटककार! पहिने तऽ हमरा टॉप टेनमे तऽ पठाबह।

विचित्र भयाओन स्थितिक बीच जीबि रहल अछि नाटककार। ओ मात्र साहित्यिक भयावहताक बीच नञि जीबैत अछि, मंचीय भयावहता सेहो ओकर स्थितिकेँ दारूण बनबैत छैक।

नाट्यशास्त्र मे भरत नाटकक पहिल तत्व 'वस्तु'केँ मानैत छथि। 'वस्तु' माने भेल कथावस्तु। नाटकक कथावस्तु आ नाट्यलेख नाटककार गढ़ैत-बुनैत अछि। थियेटर मे नाटककारकेँ महत्वपूर्ण स्थान देल जयबाक चाही।

थियेटरक बारेमे आइ एकटा प्रश्न बरोबरि उठाओल जयबाक चाही जे थियेटर ककर? नाटककारक, कि निर्देशकक, कि अभिनेताक, कि नेपथ्यक रंगकर्मीक, आकि सभहक? समकालीन थियेटर पर नजरि खिरौने तऽ साफे झलकैत अछि जे थियेटर आर ककरहु नञि, मात्र निर्देशकक थिक। ओना आजुक बदलैत समय मे थियेटर जाहि तरहेँ अपन फ्रेमकेँ तोड़ैत नजरि आबि रहल अछि, ताहिसँ लगैम अछि जे थियेटर आब निर्देशकक हाथसँ बहार भऽ डिजाइनरक आँजुरमे जा रहल अछि। एहन स्थिति मे, थियेटर मे नाटककारकेँ ताकब बड्ड जरूरी बात बुझल जयबाक चाही।

आइ ओहि नाटककारक नाटकक मंचन भऽ रहल अछि जे कोनो-नञि-कोनो रंगमंचीय संस्थासँ जुड़ल छथि वा कोनो-नञि-कोनो निर्देशकक प्रिय पात्र बनल छथि वा स्वयं अपन नाट्यसंस्था चला रहल छथि। एहिठाम मैथिलीक किछु नाटककारक नाम लेब आवश्यक लगैत अछि, यथा- सुधांशु शेखर चौधरी, महेन्द्र मलंगिया आ अरविन्द अक्कू। हिनका सभहक नाटकक मंचन आन-आन संस्था सबमे सेहो होइत आयल अछि आ होइत रहैत अछि।

थियेटर आइ जाहि नाटकक मंचन कऽ रहल अछि, तकर नाट्यवस्तु प्रेक्षागृहमे दर्शक धरि अबैत-अबैत नामे लेल नाटककारक रहि जाइत छैन्ह। वस्तु निर्देशकक भऽ जाइत छैन्ह। निर्देशक जेना चाहैत छथि, प्रस्तुत करैत छथि। कथाक आत्मा वा लेखकक आत्माकेँ

नाटक 'फुटपाथ'क दृश्य

जे कचोट होइन। बहुधा ई देखल जाइत अछि जे जे नाटककार निर्देशकक संग अपन बात मनयबाक जोर दैत छथि, हुनका पर रंग-दृष्टिक अभावक मोहर लगैत छैन्ह वा अगिला बेर सँ हुनक नाटकक मंचन होयब बन्न भऽ जाइत छैन्ह। तैँ नाट्य लेखनक स्वरूप नाटककारक अनुसारे नञि, निर्देशकक अनुसारे निर्धारित होमय लागल अछि आ नाटककार 'फरमाइसी' नाट्य-लेखन शुरू कऽ रहल छथि।

बिहाड़िक दिशामे पीठ कयनिहार नाटककार फरमाइसी लिखब प्रारंभ करैत छथि। बिहाड़िक विपरीत छाती रखनिहार नाटककार एहि दंशकेँ भोगैत-भोगैत अपन विधा बदलि लैत छथि। रचनाकर्म तऽ स्वान्तः सुखाय लेल सेहो छैक। दोसर गप्प ई जे आन-आन विधा मे एहिसँ कम्मे मेहनति मे लोकप्रियता आ स्थापत्य भेटि जाइत छैन्ह। कोनो जरूरी छैक जे नाटके लिखथि?

मैथिली मे बहुत रास संस्था सभ अछि जे नाट्यमंचन करैत अछि आ नहियो करैत अछि। रंगमंचकेँ समर्पित संस्थाक एखनो अभाव छैक। आन-आन साहित्यिक आ सामाजिक संस्था सभ विद्यापति पर्व वा एहने सनक उत्सवीय आयोजन मे 'सांस्कृतिक कार्यक्रम' करैत अछि। एहन 'सांस्कृतिक कार्यक्रम' मे नाटक प्रायः नदारद रहैत अछि। एहन-एहन संस्था सबकेँ उदार होमय पड़तैक। अपन कार्यक्रममे नाटककेँ उदारतापूर्वक जगह देल जयबाक चाही। स्वाभाविक छैक जे बेसी-सँ-बेसी नाटकक मंचन होमय लगतैक, तऽ नाट्यलेखनक खगता बढ़तैक आ लेखक सब एहि विधा मे बेसी सक्रिय होइत देखयताह।

लेखक प्रख्यात स्तम्भकार, अनुवादक, रंगकर्मी अओर साहित्य अकादेमी पुरस्कारसँ सम्मानित साहित्यकार छथि।

कोना आत्मनिर्भर होयत मैथिली रंगमंच

❑ *मनोज पाठक*

आधुनिक मैथिली रंगमंच विगत पचास बर्षक यात्रा मे आइ धरि आत्मनिर्भर नञि भऽ सकल अछि। जौं इएह गति रहल तऽ अगिला पचास बर्ष धरि स्थिति एहने रहत। तथापि समन्वित प्रयाससँ स्थिति बदलल जा सकैये। ई प्रोफेशन आकर्षक बनि सकैये।

ई आलेख ओहि प्रवृत्तिकेँ चिन्हबाक आ चुट्टासँ पकड़ि सोझां रखबाक प्रयास अछि, जाहिसँ मैथिली रंगमंचक वर्तमान परिदृश्य बदलि सकय आ एहिसँ जुड़ल कलाकार आ गैर-कलाकार लोकनि अपन रोजी-रोटी चला सकैथ।

मैथिली रंगमंचक वर्तमान स्वरूपकेँ निम्न किछु वर्ग मे बाँटल जा सकैत अछि -

1. व्यक्ति विशेष आधारित संस्था आ रंगमंच।
2. संस्था आधारित रंगमंच।
3. वार्षिक चंदा अभियान आधारित रंगमंच।
4. सरकारी सहायता प्राप्त सीमित रंगमंचीय गतिविधि।
5. समान सोचवला किछु लोकक उद्यम पर आधारित अनियतकालीन रंगमंच।
6. वार्षिक पूजा वा विद्यापति समारोह सन आयोजन संग खोंसल रंगमंच।
7. टिकट बेचिक, खर्च निकालयबला रंगमंच। आदि

हमर संज्ञान मे एहिमे सँ कोनो फार्मेट एहन नञि अछि जे अपना संग जुड़ल नाटककार, निर्देशक, कलाकार, तकनीशियन वा आन कलाकारक पेट पोसबा मे सहायक होए वा बाल-बच्चाकेँ पढ़ेबा लेल फीस जुटा सकय आ कहियो काल पार्टी संग साल-दू सालमे सपरिवार हवाई यात्रा करा सकय।

एहि बातक कोनो लाभ नञि जे हम अहाँकेँ 1970क बाद पटना, दरभंगा, कलकत्ता, जनकपुर, जमशेदपुर वा दिल्ली मे होएबला रंगमंचक इतिहास देखाबी। संस्था सभहक आर्थिक माडलक विश्लेषण करी आ तकरा बाद ई साबित करी जे मैथिली रंगमंचक ई हाल किएक अछि? मूल समस्या एक नञि अनेक अछि। एहि समस्याकेँ उजागर करबा सँ सेहो कोनो लाभ हमरा नञि देखाइत अछि।

तखन एहि आलेखक औचित्य की? सिल्वर लाइनिंग कतय? यू. एस. पी. की?

इएह एहि आलेखक उद्देश्य अछि। अहाँ जाहि धैर्यसँ एहि आलेखकेँ पढ़ि रहल छी तऽ अवसरकेँ चिन्हबाक दृष्टि विकसित करू। रंगकर्मी अहाँ शौकिया बनय चाहैत छी वा प्रोफेशनल? सबसँ पहिने एकर खोजबीन करू। एहि लेल केओ दोसर नञि अपितु अपन विवेक सहायक होएत। रंगकर्म जीवटक काज अछि। एकटा टीमवर्क अछि। एकल व्यक्ति पर आधारित शो करबाक लेल सेहो पूरा टीम काज करैत अछि। तैं एकटा टीम केना बनत से रंगकर्मक पहिल अनिवार्य आवश्यकता अछि।

रंगकर्म स्थिर गतिसँ तखन चलि सकैये जखन एकटा नीक टीम बनाओल जाए। एहि टीममे रंगकर्मसँ जुड़ल सब क्षेत्रक लोक होएबाक चाही। सबसँ बेसी आवश्यक ई जे रंगकर्मक लेल जे राशि खर्च हेतैक से कतय सँ आओत? केना लगातार आओत? एहि पर गहन मंथन पहिने हेबाक चाही। जा धरि आर्थिक आधार लेल सुचिंतित पेनी नञि छनायत ता धरि ठीकसँ सफलता नञि भेटि सकैये।

एकटा नीक फंड रेजर जे अपन संस्थासँ कोनो अपेक्षा नञि राखय मात्र धन उपलब्ध कराबय आ नीक प्रस्तुतिसँ प्रसन्न रहय एहन देवता समान व्यक्ति बहुत कम होइत छथि। ईश्वरक कृपासँ जौं कोनो संस्थाकेँ एहन लोक भेटियो जाइथि तैयो एहन धन कुबेर हमरा एखन धरि नञि देखेलाह जे रंगमंचक वार्षिक वा अर्धवार्षिक आयोजनसँ बेसी धन अपन कलाकार दलकेँ उपलब्ध करबेने होथि आ एकरा संगे प्रत्येक कलाकारक आर्थिक आवश्यकताक पूर्ति सेहो कएने होथि।

एना मे साफ अछि जे रंगमंचसँ जुड़ल जे व्यक्ति छी हुनके अपन आर्थिक आवश्यकता लेल प्रयास करय पड़त। एकटा माडल ताकय पड़त आ एहि पर लागिकऽ काज करय पड़त।

सोशल मीडिया प्लेटफार्म एकटा एहन माडल बनिकऽ उभरल अछि जे तय समय मे लगातार काज केलासँ नीक आमदनी उपलब्ध

नाटक 'सोन मछरिया'क दृश्य

करेबा मे समर्थ अछि।

रंगमंचकेँ सोशल मीडियासँ जोड़ल जा सकैये। रंगमंचक विभिन्न क्षेत्रमे अभिरूचि राखयबला समान सोचक व्यक्ति जौं एकठाम आबथि आ एक तय कैलेंडर अनुसार प्रस्तुति पर मेहनत करथि तऽ बड्ड कम खर्च मे विशाल आनलाइन दर्शकवर्ग तैयार कएल जा सकैये। एक बेर जौं दर्शक तैयार भऽ गेल तऽ एहि दर्शकक अभिरूचि ओ डिमांड अनुसार शो बनि सकैये आ एकर प्रसारण आनलाइन प्लेटफार्मक संग तय समय पर प्रेक्षागृह मे सेहो आयोजित कएल जा सकैये।

प्रेक्षागृह मे मंचनक खर्च आनलाइन प्लेटफार्मक तुलना मे काफी अधिक होइत अछि। एहि खर्चक लागत तखने असूलल जा सकैये जखन कंटेंट, अभिनय, गीत-संगीत बड्ड नीक होए। कुल मिलाकऽ अपन ढौआ खर्च करैबलाकेँ संतोष हेबाक चाही जे पाइ असूल भेल।

जौं मैथिली रंगमंच ई संतोष उपलब्ध करेबाक दिस बढ़त तऽ निश्चिते आत्मनिर्भर होएत। एहिसँ जुड़ल कलाकार आर्थिक रूपसँ सशक्त होएताह। शौकिया रंगमंच, चंदा पर आधारित रंगमंच, सरकारी सहायता वा व्यक्ति

नाटक 'कुसहा बैह'क दृश्य

मात्र तीन-सँ-पाँच व्यक्तिक टीम सोशल मीडिया पर नीक दर्शक संख्या तैयार कऽ रहल अछि। अनेको भारतीय भाषाक संग मैथिली मे सेहो यू-ट्यूब पर विशाल दर्शक संख्या बला चैनल सब चलि रहल अछि। बहुत कम समय मे अल्प लागतसँ नियमित प्रस्तुति आ रोचक कंटेंट कमाउ संतान बनि उभरल अछि।

आब आवश्यकता अछि एहि आनलाइन दर्शककेँ प्रेक्षागृह मे अनबाक। जौं कंटेट नीक होए, प्रस्तुति दमदार हेबाक संभावना होए तऽ लोक अपन धन खर्च कऽ प्रेक्षागृह मे सेहो अयताह।

विशेषक कृपा पर आधारित रंगमंचसँ आगाँ बढ़ि पेशेवर मैथिली रंगकर्म लेल आकर्षक समय आबि चुकल अछि। आवश्यकता अछि एहि अवसरक दोहन करबाक, एहि पर काज करबाक। कें छी तैयार?

आउ हम सब मिलि एहि पर काज करी।

मैथिली रंगमंचक आर्थिक स्थिति सुदृढ़ करबाक लेल सोशल मीडियाक अतिरिक्त बाट ताकल जाए तऽ प्रेक्षागृहक छोट रूप हमर अहाँक घर-आंगन सेहो बनि सकैत अछि।

एक दिस जौं कोनो महानगरक भौगोलिक विस्तार पैघ छैक तऽ दोसर दिस महानगर मे एक छोट दायरा मे एहन टोल सभ सेहो छैक जाहिमे मैथिली भाषा-भाषी लोकक संख्या ठीकठाक छैक। जौं एहि लोकक अभिरूचिकेँ ध्यान मे राखैत नाटकक डिजाइन तय कएल जाए तऽ एकटा बजार मैथिली रंगमंच लेल विकसित कएल जा सकैत अछि। एहन कोनो सार्वजनिक स्थान जेना कोनो स्कूल, पार्क, मंदिर, समुदाय केन्द्र, आर.डब्लू.ए., सी.जी. एच.एस. कैम्पस वा कोनो परिसर रंगमंचक केन्द्र बनि सकैत अछि।

कोनो जरूरी नञि जे दू सौ, अढ़ाई सौ दर्शकबला प्रेक्षागृह वा ओपन एयर ऑडीटोरियम मे मंचन कएल जाए, मात्र पचास वा पचीस दर्शकबला रंगमंच सेहो भऽ सकैत अछि। हँ, एहि रंगमंचक कंटेट ओतुका दर्शकक डिमांड पर आधारित हेबाक चाही।

विवाह, मूड़न, उपनयन सन सांस्कृतिक आयोजनक संग जन्मदिन आ मैरेज डे पर रंगमंचक प्रस्तुति भऽ सकैत अछि। एहन परिवार ताकल जा सकैये जे एहि आयोजन पर होएबला खर्च उठयबाक सामर्थ्य राखथि। एहि प्रकारक छोट आयोजन मिलि कऽ सेहो कएल जा सकैत अछि।

कुल मिलाकऽ रंगकर्मीकेँ अपन बाजार अपने ताकि ओतय धरि प्रोडक्ट सप्लाई करबाक अतिरिक्त आर कोनो बाट एहन नञि अछि जे एकरा आर्थिक रूपसँ सुदृढ़ बना सकय। ई नञि सोचू जे हम रंगकर्मी लोकनि अपन बजार नञि ताकि सकय छी।

मैथिलीक पोथी-पत्रिका भले नञि बिकाय मुदा मैथिली भाषाक गायक एहि मिथककेँ नीक जकाँ तोड़लैन्ह अछि जे मैथिलीक बजार नञि अछि। जौं मैथिली गायक आ गायिका सेलेब्रिटी बनि सकैत छथि, मैथिलीक यू-ट्यूब चैनल लाभप्रद भऽ सकैये तऽ मैथिली रंगकर्म सेहो आर्थिक रूपसँ मजगूत बनि सकैये।

लेखक प्रख्यात रेडियो-टेलीविजन कलाकार, उद्घोषक, एंकर, स्क्रिप्ट लेखक अओर धर्म विज्ञानक ज्ञाता छथि।

मैथिलीक प्राचीन नाटकक मंचन : समस्या आ उपलब्धि

❑ डॉ. प्रकाश झा

मैथिली साहित्यक काल विभाजनक समस्यासँ सबगोटे परिचित छीहे। डॉ. जयकान्त मिश्रजीक अनुसार प्राचीनकाल वा आदिकाल 1600 ई. धरि, मध्यकाल 1860 ई. धरि आ आधुनिककाल 1860 ई. सँ अद्यपर्यंत अछि। एहि अनुसार जे नाटक जाहि काल मे रचल गेल से ताहि कालक कहाओत। बेसी नाटक मध्यकाल मे रचल गेल अछि, तेँ मैथिली साहित्यक मध्यकालक 'नाटककाल' सेहो कहल जाइत अछि। एहि कालखंड मे लिखल नाटककेँ 'किरतनिया नाटक' नामसँ संज्ञापित कएल गेल अछि। आलोचक लोकनि मैथिली नाटकक तीन धारा मानैत छथि। एहि तीनू धारा- किर्तनिया, नेवारी आ अंकीया नाटककेँ मिला कऽ लगभग सयटासँ बेसी नाटक उपलब्ध अछि।

हमसब जनैत छी, जे प्रथम आधुनिक मैथिली नाटकक रचना 1905 ई. मे पं. जीवन झा रचित सुंदर संयोगसँ भेल अछि। उक्त आलेख प्राचीन नाटकक मंचीय पक्षकेँ ध्यान मे राखि लिखल जा रहल अछि, तेँ प्रथम आधुनिक नाटकसँ पहिने रचित सभ नाटककेँ 'प्राचीन नाटक' मानि विमर्श कएल गेल अछि। अर्थ ई जे एहि आलेख मे प्राचीन नाटकक रूपमे आदिकाल आ मध्यकालीन दूनू कालावधि मे रचित नाटकक समावेश कएल गेल अछि।

देशक आजादीसँ पहिने प्रायः सभ भाषा मे आधुनिक रंगमंचक शुरूआत भऽ चुकल छल, मुदा सौंसे आधुनिक रंगमंच पारसी रंगमंचक प्रभावसँ बंचित नञि रहि सकल छल, ताहि समय रंगकर्मी लोकनि पुनः अपन भाषाक प्राचीन नाट्यपरंपरा, नाट्यरचना सभक पुनर्पाठ वा पुनर्प्रयोग प्रारम्भ केलाह संगहि शास्त्रीय संस्कृत नाटक यथा- अभिज्ञान शाकुंतलम, मृच्छकटिकम, मुद्राराक्षस आदि नाटकक मंचन नव-नव युक्तिक संग प्रारम्भ कएल। भारतक लगभग सभ क्षेत्रक रंगकर्मी, रंगनिर्देशक अपन प्राचीन नाटक पर गौरवबोध करैत ओकर पुनर्पाठ तैयार कऽ कऽ मंच पर अनबाक प्रयास करैत रहलाह। जाहिसँ हुनक प्राचीन नाटकक नव-नव आयाम पल्वित आ पुष्पित होइत रहल। हुनका सभहक प्रत्यक्ष प्रयास, अपरोक्ष रूपेँ हुनक रंगमंच, साहित्य आ समाजकेँ मजबूत करैत रहल। एहिठाम हमर मैथिली रंग निर्देशक पछुआ गेलाह, ई कही जे प्रारम्भो नञि केलाह। किछु प्राचीन आ संस्कृत नाटकक पुनर्पाठ, टीका-टिप्पण ी तैयारो भेल मुदा रंगकर्मी लोकनि ओहू प्रयासकेँ नकारैत रहलाह। जकर परिणाम नवपीढ़ी एखन धरि भोगि रहल अछि। जे मैथिली रंगमंच प्राचीनकाल मे सबसँ समृद्ध छल, से डोरि टूटि गेल आ हमर रंगमंच एखन धरि झखाइते रहि गेल।

वर्ष 1986 ई. मे डॉ. शशिनाथ झा 'विद्यावाचस्पति' अपन अथक प्ररिश्रमसँ 1300 ई. सँ 1900 ई.क बीचक उपलब्ध नाटक मे लगभग सोलहटा प्राचीन नाटकक संकलन मिथिला समाजक सोंझा रखलाह। कामेश्वर सिंह दरभंगा संस्कृत विश्वविद्यालयसँ प्रकाशित एहि पुस्तक 'मिथिला परंपरागत नाटक संग्रह'सँ हजारो शोधार्थी लाभ उठेलाह। मुदा, जाहि मैथिल रंगसमाजकेँ एहिसँ लाभ उठेबाक बेसी बेगरता छलैन्ह से वंचित रहि गेलाह। एखन धरि हमरा सभहक समक्ष सयटासँ बेसी प्राचीन मैथिली नाटक उपलब्ध अछि, जाहिमे मात्र चारि-पाँचटा नाटकक मंचन हमसभ कऽ सकलहुँ अछि। आश्चर्यक बात ई जे नेपाल जाहिठाम सबसँ बेसी मध्यकालीन मैथिली नाटकक रचना भेल, जाहिठाम मिनाप, जनकपुर (मिथिला नाट्य-कला परिषद) सन सशक्त संस्था अछि, ओहूठाम सँ पिछला 20-25 साल मे कोनो प्राचीन मैथिली नाटक मंचनक सूचना नञि अछि, ई हमर अज्ञानतो भऽ सकैत अछि मुदा तकर कम्मे चांस। मैथिली रंगसंस्था मे श्रेष्ठ भंगिमा, पटना सेहो मात्र एकटा प्राचीन नाटक पारिजातहरणक मंचन कऽ सकलाह अछि, तखन दोसर संस्थासँ की अपेक्षा राखल जाएत? अन्य संस्था सेहो मात्र धूर्त्तसमागम नाटक मंचित कऽ प्राचीन नाटक मंचनकेँ तिलांजलि दऽ देलाह अछि। मुदा तैयो ई सभ संस्था धन्यवादक पात्र अछि। बाँकी सब प्राचीन नाटक एखनो धरि किताबक पन्ने मे छपल रहि गेल अछि। आन कतेको तथाकथित स्वनामधन्य रंगनिर्देशक लोकनि मैथिलीक प्राचीन नाटकक मंचन मे अपन हाथ पकाकऽ देखार/चिन्हार नञि हुअऽ चाहैत छथि। पूर्व मे मैथिली नाटकक केंद्र रहल कोलकाता एहि मामला मे सहो चुप्पी सधने रहल। दरभंगा, मधुबनीकेँ तऽ कोनो बाते नञि हुए।

हालहिं मे एकटा प्राचीन नाटक प्रकाशित भेल अछि 'रामभद्रशर्माकृत हरिश्चन्द्रनृत्यं' (मल्लकालीन मैथिली नाटक)। मैथिली रंगकर्मीकेँ एहि बातकेँ गंभीरता सँ लेबऽ पड़तैन्ह, जे कोनो प्राचीन नाटक कतेक कठिनाइ सँ हमरा सभहक सोंझा आनल जाइत अछि। एक व्यक्ति श्री रमानाथ झा 'रमन'1973 ई. मे कतौ पढ़ल पाँति जे "भारतेन्दु हरिश्चन्द्रक लिखल नाटक 'सत्य हरिश्चन्द्र नाटक' पर 1651 ई. मे रचित 'हरिश्चन्द्र नाट्यम' (नृत्य) नामक मैथिली नाटकक प्रभाव अछि" तकर अंन्वेषण मे अपन जीवनक 46 वर्ष लगा, एहि पुस्तककेँ जर्मनी सँ 1991 ई. मे अनैत छथि। ओ पुस्तकाकार भऽ 2019 ई. मे हमरा सभहक सोझाँ अबैत अछि। प्रो. आनन्द मिश्रजीक कथनानुसार एहि नाटक मे उत्तर आ दक्षिण भारतीय

संगीत दूनू पद्धतिक प्रयोग भेल अछि। जे नाटकक विशालताक परिचायक अछि। जखन हमर हेरायल नाट्यकृतिकेँ जर्मनीसँ वापस आनि देल गेल अछि तऽ मैथिली रंगसंस्था आ रंगनिर्देशक लोकनिक ई कर्तव्य हेबाक चाही जे एकर मंचन वर्तमान स्वरूप मे राखि कएल जाए। आइ एहन घटना जौँ बांग्ला, मराठी वा आन कोनो भारतीय भाषा मे भेल रहैत तऽ ओतुक्का रंगकर्मी लोकनि एकर कतेको वर्जन तैयार कऽ कऽ समुच्चा देशक ध्यान अपना दिस खींच लेने रहितथि। मुदा, हमर भरोस अछि जे मैथिलीक बहुतो रंगनिर्देशक एखन धरि एहि कृतिकेँ मंचन करब सोचब तऽ दूर अध्ययनो नञि कएने हेताह। एहन स्थिति मे 'अन्हार घर साँपे-साँप' बनि रहि गेल अछि मैथिलीक प्राचीन नाटक।

डॉ. प्रेम शंकर सिंह 'मैथिली नाटक परिचय' नामक पुस्तकक प्राग्वाणी मे लिखैत छथि- "प्राचीन नाटक आधुनिक दृष्टिसे भनहिं महत्वपूर्ण नञि होए, परञ्च ओकर ऐतिहासिक महत्व अछि से निर्विवाद अछि।" हिनक एहि अर्धसत्य पाँतिकेँ सहारा लऽ कऽ बहुतो मैथिली रंगनिर्देशक रंगरूपी बेतरणी पार भऽ गेलाह। जखनकि वर्तमान समय मे लिखल जा रहल अधिकांश नाटकसँ बड्ड आगाँ अछि मिथिलाक प्राचीन नाटक, से अपन शिल्प मे, कथ्य मे आ रंगयुक्ति मे सेहो। आवश्यक अछि अपन प्राचीन नाटककेँ वर्तमान समय संग जोड़ि पुनर्लेखन कऽ मंचन कएल जाए। मानल, ई काज कठिनाह अछि, श्रमसाध्य अछि, मुदा प्राचीन आ आधुनिक मध्य सेतु बना मंचन करबाक बेसी बेगरता अछि।

मैथिली रंगमंच पर बेसी निर्देशक 'हल्लुक माटि बिलाड़ि कोरय'बला कहावत संग बिहाड़ि बनि हुहुआइत छथि आ एक-दूटा चलताऊ वा पूर्व स्थापित नाटकक मंचनकऽ वाह-बाही लूटि, कोनो आन फलदायी विधा दिस अपनाकेँ मोड़ि लैत छथि, आ जीवनपर्यंत ओहि चलताऊ नाटकक लेल स्वयं गढ़ल अविष्मणीय, अद्वितीय, अकल्पनीय, भूतो-न-भविष्यति आदि शब्दक माला पहिर कंठी जाप करैत रंगमंचक ऊँचका कुर्सी ग्रहण कऽ सुशोभित रहैत छथि। एहन चलताऊ रंगनिर्देशक मात्र स्वकेंद्रित पैघ-पैघ आलेख लिख सकैत छथि, जोर-जोरसँ भाषण दऽ सकैत छथि, मुदा प्राचीन नाटकक मंचन किन्नौनहि कऽ सकैत छथि। हँ, जौँ कियो करबाक प्रयास करैत अछि तऽ हुनका प्रोत्साहनक बदला हतोत्साहित जरूर कऽ सकैत छथि। फलतः एखनधरि मात्र चारि-पाँचटा प्राचीन नाटक मंच पर अवतरित भऽ सकल अछि। जेहो भेल अछि ताहि मे सँ ज्योतिरीश्वरक धूर्तसमागमकेँ छोड़ि सबटा कोनो मात्र एकटा निर्देशक द्वारा आ एक-दू प्रस्तुतिक बाद अकाल मृत्यु प्राप्त कऽ लेलक अछि, दीर्घकालीन उपस्थिति नञि स्थापित कऽ सकल अछि।

नाटक 'धूर्तसमागम'क दृश्य

बेसी नाटक मंडलीक कर्ता-धर्ता आ रंगनिर्देशक मैथिलीक प्राचीन नाटकक मंचन नञि करबाक प्रमुख कारण अर्थक अभाव आ कमजोर कथ्य होएबाक बहन्ना बना फारकति पाबि लैत छथि। मुदा, एहन कोनो समस्या हमरा नहि देखाइत अछि, बल्कि एकर ठीक विपरित आधुनिक नाटक मे ओकर मंच-विन्यास, प्रकाश-व्यवस्था आदि मे प्राचीन नाटकसँ बेसी अर्थक व्यवस्था करय पड़ैत अछि। एहि मे प्रायः पारंपरिक भेष-भूषाक उपयोग कएल जाइत अछि, मंच-विन्यास मे सेहो बेसी तड़क-भड़कक आवश्यकता नञि रहैत अछि। तैं अर्थक समस्या प्राचीन नाटकक मंचन लेल बेसी बाधक नञि हेबाक चाही। दोसर, कथ्यक स्तर पर सेहो मैथिलीक प्राचीन नाटक बहुत सशक्त अछि। उदाहरण स्वरूप 'धूर्तसमागम' एखनो समकालीन लगैत अछि। की, वर्तमान समाज चारूकात धूर्तक समागम सँ भरल नहि अछि? वर्तमान शासन व्यवस्थाक सम्पूर्ण सत्य, यथा जयशंकर प्रसाद जीक शब्द मे 'सत्ताक सुख मादक होइत अछि' विद्यापतिक 'गोरक्षविजय' मे समाहित अछि। जौँ 'मणिमंजरी' नाटककेँ वर्तमान समयक 'विवाहेत्तर संबंध'सँ जोड़िकऽ देखल जाए तऽ एहन प्राचीन नाटकक कथ्यक सोंझा वर्तमान नाटक पेटकुनिया लाधि देत। मुदा, एहि लेल नाटकक मंचनक तैयारी मात्र बीस दिनक नहि बल्कि बीस महीना करय पड़तैक। ताहि लेल असीम धैर्यक आवश्यकता होएत जकर घोर अभाव अछि।

मैथिलीक प्राचीन नाटकक मंचनक प्रमुख समस्या अछि सशक्त रंगसमूहक अभाव होएब। ओहन रंगसमूह जाहिमे रंगकर्मी दीर्घकाल धरि रहि सकैथ। जिनका पर निर्देशक द्वारा प्रयोग आ विश्वास कएल जा सकय।

शेषांश पेज 32...

साभार : घर-बाहर (अक्टुबर-दिसम्बर अंक)

लेखक सुप्रसिद्ध रंगकर्मी, मैलोरंग रेपर्टरी एवं प्रकाशनक संस्थापक निदेशक आ राष्ट्रीय नाट्य विद्यालय, नई दिल्लीक नाट्यशोध पत्रिका 'रंग प्रसंग'क सहायक सम्पादक छथि।

मैथिली रंगमंचक ग्रामीण आ शहरी मंचन

❑ *रूपक शरर*

रंगमंच चाहे कोनो भाषाक होए, एकर दूटा पक्ष 'लेखन' आ 'मंचन' सदिखन चर्चामे रहैत अछि आ से हेबाको चाही। एना नञि जे रंगमंचक गप होए आ हम-अहाँ ओकर मंचनमात्र पर चर्चा करैत अपन कर्तव्यक इतिश्री बूझि ली। जेनाकि एहि आलेखक शीर्षक अछि 'मैथिली रंगमंचक ग्रामीण आ शहरी मंचन' तऽ एतहियो रंगमंचक लेखन पक्षक चर्चा नितांत आवश्यक अछि।

आदि, मध्य आ आधुनिक तीनू कालखंड मे प्रायः बहुत रास लोकभाषामे नाटकक उल्लेख भेटैत अछि मुदा जखन एकर मंचनक गप करी तऽ मैथिल एहिमे सबसँ पछुआयल भेटताह। जेना कि अपना सबकेँ बूझल अछि जे सन् 1905ई मे पं. जीवन झा रचित सुन्दर संयोग नाटककेँ पहिल आधुनिक मैथिली नाटकक दर्जा प्राप्त अछि, ताहि हिसाबे एहिसँ पूर्व लिखल गेल सभटा नाटककेँ अपना सभ प्राचीन मैथिली नाटक मानि सकैत छी। आलोचकक मतानुसार मैथिली नाटकक तीन गोट शैली प्रमुख अछि- किर्तनिया, नेवारी आ अंकिया। एहिठाम एकटा गप उल्लेखनीय अछि जे तीनू कालखंड आ नाटकक तीनू शैली मिला कऽ लगभग दस दर्जन नाटक लिखित रूपमे उपलब्ध तऽ अछिए।

देशक लगभग सभ भाषा-भाषीक रंगकर्मी प्राचीन कालमे रचित नाटकक मंचन नव-नव प्रयोगक संग स्वतंत्रता पूर्वहिंसँ प्रारम्भ कऽ देने रहथि। हलाँकि हिनकर सभहक मंचनमे पारसी रंगमंचक प्रभाव स्पष्ट देखना गेल मुदा अहुमे मैथिल सभ पछुआएले देखल गेलाह। हँ, ई गप पुरजोर ढंगसँ कहल जा सकैत अछि जे मैथिली रंगमंच, जे कि ग्रामीण स्तर पर नितांत अर्थाभावमे आरम्भ भऽ शहरी स्तर धरि पहुँचल, से आइ धरि ओहि अर्थाभावमे जीबि रहल अछि।

मैथिल जखन ग्रामीण स्तर पर जीवन व्यतीत करैत छलाह तखन मनोरंजनक नाम पर किछु लोकगीत आ लोकनृत्यक समावेशक संग नाटकक मंचन प्रारम्भ भेल। आरम्भिक कालमे नाटकक मंचन हेतु कलाकार लोकनि आपसमे चंदा कऽ वा ग्रामीण स्तर पर चंदा केला उपरांत मंचन सम्पन्न करैत रहलाह। कहल जा सकैत अछि जे एखन एहि स्थितिमे थोड़-बहुत सुधार भेल अछि। नाटकक मंचनमे महिला पात्रक लेल कलाकारक चयन एकटा यक्ष प्रश्न बनि ठाढ़ भेल जे कमोबेश आइ धरि ओहिना मुँह बौने अछि। गाम-गाममे एहि समस्याक निदान इएह भेटल, जे जे पुरुष देखबा-सुनबामे सुन्दर होइथ, हुनका महिलाक भूमिकामे मंच पर आनल जाए। मैथिली रंगमंचक ई दशा, कोन दिशा तय करत, तकर जवाब किनको लग नहि छल। आइ जौँ ग्रामीण स्तर पर कोनो महिला कलाकार मंच पर अबितो छथिन तऽ हुनका वा हुनक समांगकेँ दू प्रकारसँ बात-कथा सुनाओल जाइत छैन्ह। पहिल- "इह, एना कत्तौ बेटी-धियाकेँ लोक नाटक-नौटंकीमे जाए देलकैयऽ!" "गै, तोरा सऽखो भेलौ तऽ नाटके खेलाईकेँ? पढ़ि-लिखि कऽ डाक्टर-इंजीनियर बनबें से नञि!" दोसर- "फलां बाबू अपन धिया-पुताक संग-संग अनको बच्चा सबकेँ बिगड़ि कऽ राखि देथिन!" "गै, एना जे दिन-राति नाटक खेलाइमे बेहाल रहय छी, से तोरासँ कोन लड़का बियाह करतौ?" मिथिलाक अधिकांश गाममे मैथिली रंगमंचक इएह दशा एखनहु अछि। हँ, एहिमे किछु गामक नाम अपवाद अवश्य भऽ सकैत अछि। अपना सभ दिसि, एकटा कहावत छै, ऽबात लिअऽ तऽ हमरासँ, आ टाका लेब तऽ हमर काकासँ!" मैथिली रंगमंचक लेल एकटा कहाबत बुनि लेल जाए तऽ बेसी नीक रहत, 'प्रोत्साहित होऊ विदेशीसँ आ हतोत्साहित होऊ पड़ोसीसँ'।

हमरा ई कहबामे कोनो अतिशयोक्ति नञि बुझा रहल अछि जे पलायनवादक शिकार देशमे सबसँ बेसी 'मैथिल' भेल अछि। मिथिलाक लोक रोजी-रोटी कमाय लेल पहिने मोरंग जाइ छल, बादमे कलकत्ता गेल आ तकरा बाद दिल्ली, बम्बई, मद्रास, बंग्लोर आ नञि जानि कोन-कोन प्रदेश आ विदेशमे मैथिल प्रवासी भेलाह आ से ओ सभ अपना संगे मिथिलाक सभ्यता-संस्कृति, पाबनि-तिहार, साहित्य आ रंगकर्म सहो लेने गेलाह। ई एकटा शुभकर्म आ नीक संकेत मानल जा सकैत अछि। एवम् प्रकारें परदेश मे सेहो मैथिली नाटकक मंचन प्रारम्भ भेल जकरा आजुक समयमे मैथिली नाटकक शहरी मंचन कहल जाइत अछि। आब अहीं सभ कहु जे, जौँ गाममे रहला पर ग्रामीण आ शहरमे रहला पर शहरी जीवन कहल जा सकैत अछि, तखन ग्रामीण आ शहरी मंचन किएक नञि? हँ, गप जखन रंगमंचक हएत, तखन एकरा फुटबै काल एकर दूनू विधा- 'लेखन' आ 'मंचन' पर विचार केनाय आवश्यक नञि अपितु अनिवार्य। तऽ स्पष्ट अछि जे मैथिली नाटकक मंचन ग्रामीण स्तरसँ शहरी स्तर धरि कोना पहुँचल। आब चुँकि मैथिलक दिन-दुनिया, बात-विचार आ रहन-सहन सभ बदलल तऽ एकर असर स्पष्ट रूपसँ मैथिली नाटकक मंचन पर सेहो देखल गेल। बात चाहे महिला कलाकारक भागीदारीक होए वा आपसमे चंदा कऽ नाटकक मंचनक।

ग्रामीण स्तर पर नाटकक मंचन एखनहुँ कर्तव्यक इतिश्रीक रूपमे सामने आबैत अछि। आब जेना बहुतो रास एहन गाम अछि जतए लगभग चारि-पाँच दशक वा ओहूसँ बेसीसँ मैथिली नाटकक मंचन होइत आबि रहल अछि मुदा सेहो सालमे एक बेरि। आब जखन गाममे लोक रहबे नञि करतै तऽ नाटक खेलतै केँ आ देखतै केँ? पाबनि-तिहारमे गाम आबयवला

सभहक लिस्ट तैयार रहिते अछि, व्हाट्सअप पर स्क्रिप्ट पठा देल जाइत अछि आ सभकियो अप्पन-अप्पन पाट कंठस्थ कऽ मंचनसँ किछु दिन पूर्व गाम आबि रिहर्सल करैत छथि आ जिनका अप्पन पाट याद नञि होइत छैन्ह, हुनका सभहक लेल 'प्रॉम्पटर' तऽ परंपरागत रूपसँ रहिते छथिन। हँ, 'पेट्रोमैक्स'क रोशनीमे प्रारम्भ भेल नाटक आब जेनरेटरक रोशनी धरि अवश्य पहुँच गेल अछि। किछु गाममे नाटकक मंचनमे आधुनिकताक समावेश सेहो भेल अछि मुदा तकरो नाम आंगुर पर गिनल जा सकैत अछि। कारण एखनहु संसाधनक अभावसँ मुक्त नहि भेल अछि मैथिली नाटकक ग्रामीण मंचन। शहरमे तऽ फंडक जोगर भइयो जाइत अछि मुदा नाटकक माला गाममे कें उठाओत? पहिने गाम-गाममे रामलीला होइत छल जकरा प्रारम्भमे प्रतिदिन माला उठाओल जाइत छल। माला उठेबाक आशय ई जे ओहि रोतुका सभटा खर्चा कोनो ग्रामीण वहन करैत छलाह।

मैथिली नाटकक शहरी मंचन पर जखन दृष्टिपात करब तऽ दू-तीनटा गप विशेष रूपसँ धियान खींचैत अछि। पहिल तऽ ई, जे मंचन पूर्णरूपेण व्यावसायिक प्रारूपमे होइत अछि जकरा लेल रंगकर्मी सभ नियमित रूपसँ कतेको दिन अभ्यास करैत छथि। दोसर जे महिला कलाकारक उपलब्तातामे सेहो सहुलियत अछि। अतबे नञि, नाटकक प्रस्तुतिमे नव-नव प्रयोग, नव शिल्पक रंग देखबामे सेहो अबैत अछि। एकर बहुत रास कारण भऽ सकैत अछि जाहिमे सबसँ प्रमुख अछि प्रवासी मैथिलक अपन भाषाक प्रति जागरूकता आ रंगकर्मी सभहक लेल संसाधनक उपलब्धता। प्राचीन काल वा मध्य कालमे रचित नाटकक मंचन, नव आयामक संग प्रस्तुत करबामे सेहो शहरी कलाकार आगू देखल जाइत छथि। ई कहब सर्वथा उचित जे परदेसमे रहला उपरांत अपन माटि-पानि आ भाषाक प्रति स्नेह अनेरे बढ़ि जाइत अछि आ तकर अनेकानेक उदाहरण प्रवासी मैथिल सबकें अपन दिनचर्यामे भेटैत छैन्ह। एहि सिनेहक फलाफल अछि जे आइ मैथिली रंगमंचक ग्रामीण मंचनसँ कत्तौ बेसी

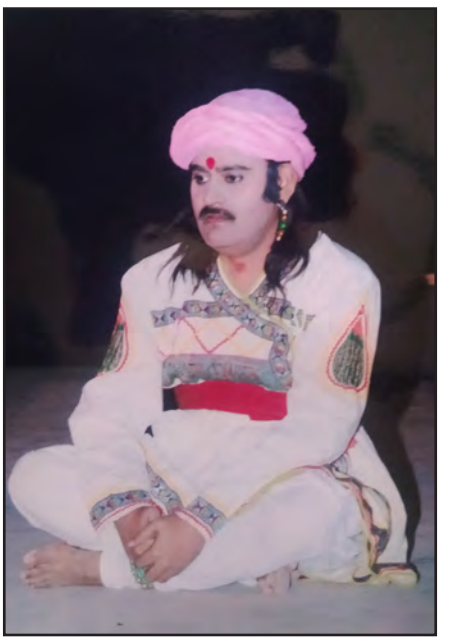

नाटक 'छुतहा घैल'क दृश्य

नीक स्थिति शहरी मंचनक अछि।

दरअसल मंचन चाहे ग्रामीण होए वा शहरी एकटा गप दूनूठामक लेल सोचनीय अछि, ओ ई जे 'पुरने नाटक खेला लैत छी।' एहि तरहक मानसिकता मैथिली रंगमंचकें कम-सँ-कम नव दशा-दिशा तऽ नञि दऽ सकैत अछि। एक दिस नव-नव नाटकक रचना आवश्यक अछि तऽ दोसर दिस ओकर मंचन अत्यावश्यक। आ एहि सबसँ ऊपर जे मैथिली रंगमंचक लेल एकटा सशक्त आलोचकक पीढ़ी तैयार होए, जिनका आलोचनाक मर्म आ धर्म दूनू बूझल होए। ई बात रंगमंचक तीनू विधा- लेखन, मंचन आ आलोचना पर लागू होइत अछि। एना नञि जे हुले लेले- हुले लेले मे सभ कियो लेखक-निर्देशक-आलोचक-कलाकार आदि बनि जाइथ आ नाटकक भऽ जाए बंटाधार! नाटकक नाम पर 'किछु लौल-किछु चौल' नञि भऽ कऽ तूँ हमरा सबकें 'तौल'बला स्थिति जखन बनत, तखन कहल जा सकैत अछि जे मैथिली रंगमंच आब एकटा सुखद आ समृद्ध दौरमे पहुँच गेल अछि।

लेखक हिंदी, मैथिली आ आन क्षेत्रीय सिनेमा, धारावाहिकक अभिनेता, लेखक, निर्देशक छथि।

मैथिली रंगमंचक कलाकारक स्थिति

❑ *मुकेश झा*

रंगमंच समूहक कला थीक। आन प्रदर्शनकला जेना चित्रकला, संगीत, नृत्य, मूर्तिकला आदि एकल भऽ सकैत अछि मुदा रंगमंच नञि। साहित्य आ आन प्रदर्शनकारी कलाक तुलना मे नाटक/रंगमंच बड्ड बेसी कठिन अछि आ एहिसँ संबंधित कलाकारक जीवन चुनौतीपूर्ण। आधुनिक मैथिली रंगमंचक सौसँ बेसी बरखक भऽ गेल अछि। मैथिली रंगमंच सदिखनसँ सामाजिक रूपसँ उपेक्षित रहल अछि आ रंगकर्मी तऽ उपेक्षित छैथे। अर्थाभाव एहि क्षेत्रक विडम्बना अछि। मैथिली मे तऽ नञिकेँ बराबर रंगकर्मी छैथ जे पूर्णतया रंगमंच पर निर्भर भऽ अपन जीवन यापन कऽ रहल छैथ। जे पूर्णतया रंगमंच पर निर्भर भऽ अपन जीवन यापन करय मे लागल छथि सेहो कोनो-नञि-कोनो आर काज कऽ कऽ अपन दालि रोटी चला रहल छैथ। मैथिली रंगमंचक ई त्रासदी रहल अछि जे ओ कहियो व्यवसायिक नञि बनि पाओल। ई रंगमंच पुरान तऽ अछि मुदा हमेशा शौकिया रहल अछि। किछु शौकिया लोक सब अपन-अपन थोड़ेक समय निकालि कऽ एहि लेल प्रतिबद्ध रहलाह अछि, जे स्वयं नौकरीपेशा वा कोनो आन व्यवसायसँ जुड़ल रहलाह अछि। शौकिया रंगमंचक कलाकार कतहुसँ प्रशिक्षित नञि रहला अछि, अपने सँ गुनिक बुझिकऽ, सिखिकऽ रंगमंच मे योगदान दैत रहलाह। बाद मे थोड़-बहुत कलाकार कोनो-नञि-कोनो संस्थानसँ रंगमंचक प्रशिक्षण प्राप्त कऽ किछु नाट्य संस्थाक संगे मिलिक सरकारी अनुदान पाबि कऽ एहि शौकिया रंगमंचक परम्पराकेँ तोड़ि व्यवसायिक रंगमचक श्रेणी मे अनबाक प्रयास केलाह अछि, जे ऊंटक मुहँमे फोरनसँ बेसी नञि अछि। कारण सरकारी अनुदान अन्तर्गत एकटा कलाकारक लेल मात्र 6 हजार टाका महिना मात्र आबंटित कएल जाएत अछि जाहिमे सँ सेहो किछु-नञि-किछु ओहि संस्थाक कर्त्ता-धर्त्ता चढ़ोंनाक रूपमे अपना जेबीमे घुसिया लैथ छथिन। किनको-किनको पूरा भेटबो करैत छैन्ह, तऽ मात्र 6 हजार टाकामे महिना काटब असंभव अछि। एहिसब परिस्थितिकेँ देखि युवा फिल्म आ टेलिविजन दिस मुखर होएत छथि मुदा ओहुठाम आशातित सफलता भेटब कठिन भऽ जाएत

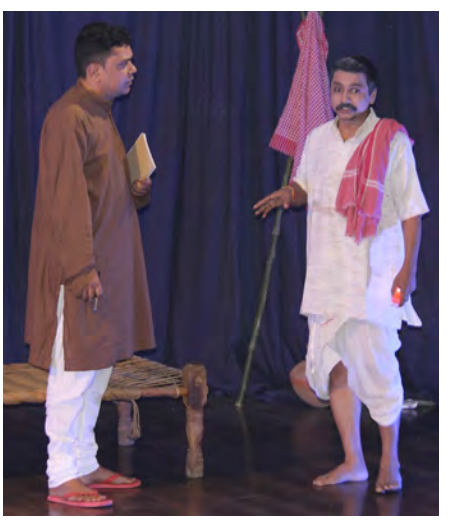

नाटक 'एक टुकड़ा पाप'क दृश्य

छैन्ह जकर अनेकों कारण अछि, जाहिमे प्रमुख कारण अछि उच्चारणक समस्या।

मैथिलीमे कोनो टेलिविजन चैनल नञि अछि आ फिल्म उद्योग सेहो लचरल जकाँ अछि। जौं कनी-मनि मैथिली मे फिल्म बनितो अछि ताहिमे बहुत रास त्रुटि आ भाए-भतीजावादसँ ग्रसित रहैत अछि आ अहुठाम जे सुच्चा कलाकार काज करबा लेल अबैत छथि हुनका समुचित मानदेय नञि भेटैत छैन्ह कारण एक तऽ फिल्मक बजट कम रहैत अछि आ दोसर हुनका लग मंगनीक कलाकार (भाए-भतीजारूपी) उपलब्ध सेहो रहैत छैन्ह। मैथिलीमे गिनतीक किछु फिल्मकेँ छोड़ि देल जाए तऽ बेसी संख्या ओहि फिल्म सभहक अछि जकर निर्माण अनुभवहीन लोक द्वारा बनाओल गेल अछि। हालकेँ समय थोड़ेक प्रशिक्षित निर्माता-निर्देशक मैथिली सिनेमाक रणमे फाड़ बान्हि उतरलाह अछि। जकर परिणाम अछि जे आन भाषाक समान्तर सोझा ठार हेबा योग्य काज भेल अछि।

एहि सबकेँ बादो रंगमंच हमेशा रोमांचक, चुनौतीपूर्ण, प्रेरणादायक आ सामजिक रूपेँ लाभप्रद रहल अछि, कारण समाजक रंगमंचसँ किछु-नञि-किछु भेटि जाएत छैक या तऽ मनोरंजन भेटि जाएत अछि या कोनो-नञि-कोनो प्रेरणा। मराठी, गुजराती, बांग्ला आ हिन्दी रंगमंचक तर्ज पर मैथिली रंगमंचक व्यावसायिकताक श्रेणीमे बड्ड कम प्रयास कएल गेल अछि। आन भाषाक रंगमंच पूर्णतयाक टिकट पर शो राखल जाएत अछि आ प्रस्तुति पर होमयवला खर्च सहित प्रस्तुति कमाई करैत अछि जकर सीधा लाभ कलाकार आ नाटकसँ जुड़ल लोककेँ प्राप्त होएत अछि मुदा ओत्तहि मैथिली रंगमंचक प्रस्तुति मंगनीमे होएत अछि। जौं टिकट पर शो राखल जाएत अछि, तऽ टिकट बेचब अत्यंत कठिन होएत अछि। बेसी लोक कोनो-कोनो रूपमे पासक जोगाड़ मे रहैत छथि। एहन स्थितिमे रंगमच कोना सुदृढ़ भऽ सकैत अछि से एकटा यक्ष प्रश्न अछि। युवा लोकनि एकर चमक-दमक देखि कऽ एहि क्षेत्रमे पदार्पण करैत छथि मुदा एहि क्षेत्रक आर्थिक स्थिति देखि वा कोनो दोसर रोजगार दिस विमुख भऽ जाएत छथि वा मुम्बईक बाट प्रस्थान कऽ जाएत छथि।

जा धरि मैथिली रंगमंचक कलाकारकेँ समुचित आर्थिक रूपेँ सबल हेबाक विश्वास नञि भेटत, ता धरि मैथिली रंगमंचक कलाकारकेँ एकठाम जमा केनाए असंभव काज थिक। नवतुरिया कलाकार अबैत छथि एक-दू गोट नाटक करैत छथि फेर कत्तऽ निपत्ता भऽ जाएत छथि कहब कठिन अछि। सशक्त संस्था सब लग सेहो कलाकारक अभाव देखना जाएत अछि, कारण लगभग सब प्रस्तुतिमे दू-चारिटा अभिनेता आन भाषा-भाषी कलाकार मैथिलीमे संवाद बाजबाक जदोजेहद

करैत देखना जाएत अछि आ मैथिल महिला कलाकारक तऽ अकाले अछि। किछु महिला कलाकारक निरंतरता छैन्ह मुदा जखन बेसी पात्रबला महिला नाटकक मंचनक बात आबैत अछि तऽ घरे-घरे डिबिया बारिकऽ हुनका लोकनिकेँ तकबाक प्रक्रिया शुरू भऽ जाएत अछि। पहिने तऽ निर्देशक एहने आलेखक चुनाव करैत छथि जकर मंचन हुनका लग उपस्थित महिला कलाकारक संख्या बले पूरा भऽ जाए।

जाहि समाजक कला, संस्कृति, रंगकर्म आ साहित्य जतेक मजगुत होएत अछि ओ समाज सब रूपे सबल रहैत अछि। कलाकारक अभाव चाहे स्त्री कलाकार होए वा पुरुष कलाकारक, दूर कएल जा सकैत अछि। मुदा एहि लेल मैथिली रंगमंचकेँ व्यावसायिकता दिस डेग पड़तैक। आन शहर, महानगर आ दिल्लीयोमे मैथिलीमे कतेको रास बड़का-बड़का कार्यक्रमक आयोजन होएत अछि, सेमीनार होएत अछि मुदा एहि दिशामे कहियो काज नञि भेल अछि। किछु नाट्य संस्था जिनक टर्नओवर चालीससँ पचास लाखक बीच अछि (ओहि संस्थाक अधिकारी स्वंय सार्वजानिक मंच पर कहैत छथिन), मुदा ओहि संस्थाक कलाकार सभहक आर्थिक स्थितिकेँ गणना आ मंथन आवश्यक भऽ जाएत अछि। संस्थाक टर्नओवर बढ़ने कलाकारक आर्थिक स्थितिमे सुधार नञि होएत अछि बल्कि संस्था आ ओकर अधिकारी आर्थिक रूपेँ सबल आ सफल होएत छथि।

संतोषप्रद अछि जे आधुनिक समयमे आन रंगमंचक जकाँ मैथिली रंगमंच मे तकनिकी रूपेँ सेहो मजगुत भेल अछि। थोड़-बहुत अभिनेता-अभिनेत्री कोनो-नञि-कोनो संस्थानसँ प्रशिक्षण पाबि एहि क्षेत्रमे आबि रहल छथि, जकर कारण प्रस्तुतिक गुणवत्तामे उत्साहवर्धक सुधार आयल अछि। सब तरहेँ सम्पन्न प्रेक्षागृहमे मैथिली नाटकक प्रस्तुति आह्लादित करैत अछि आ विश्व फलक पर मैथिली रंगमंचक आन रंगमंचक सोझा ठार करैत अछि। एशियाक सबसँ पैघ नाट्य महोत्सव भारत रंग महोत्सव (भारंगम)मे

नाटक 'जल डमरू बाजे'क दृश्य

मैथिली नाटक अपन प्रस्तुति दर्ज करा चुकल अछि। कतेको रास निर्देशक मैथिली संगे हिंदी रंगमंचमे सेहो प्रतिष्ठा पाबि चुकल छथि।

एतेक रास उपलब्धिक संग मैथिली रंगमंच अपन बाट पर डेग आगाँ बढ़ा रहल अछि, मुदा रंगमंच केनिहार कलाकारक आर्थिक स्थिति संतोषप्रद नञि अछि। एहि पर गहन मंथन, मनन आ चिंतनक आवश्कता अछि। बेगरता अछि मैथिली रंगमंचक समृधि आ निरंतरताक। निरंतरताक आभाव मैथिली रंगमचमे देखना जाएत अछि, निरंतरता तखने संभव भऽ सकैत अछि जखन रंगमंच केनिहार कलाकार आर्थिक रूपेँ सबल होएत, आ ई सबलता सरकारी अनुदानक बले संभव नञि अछि। अपन समाज जा धरि पूर्णरूपेण हस्तक्षेप आ सहयोग नञि करत ता धरि संभव नञि भऽ पाएत।

कतेको शहर-महानगरमे विद्यापति पर्व समारोह, मिथिला विभूति पर्व समारोह होएत अछि मुदा नाटकक नगण्यता ओहि मंच सब पर देखना जाएत अछि। जौं अनिवार्य रूपसँ एहि सब सम्मानित मंच सब पर नाट्य परम्पराक शुरूआत कएल जाए तऽ ई एहि दिशामे जोरदार पहल भऽ सकैत अछि। रंगरसिकक सेहो घोर अभाव अछि मैथिल समाज मे। एक घटनाक उल्लेख एहिठाम आवश्यक भऽ जाएत अछि। एक बेर हमर सभहक समूहकेँ रांचीमे नाट्य प्रस्तुति करबाक लेल आमंत्रित कएल गेल छल। विद्यापति पर्व समारोहक पावन मौका छल, हजारोक भीड़ छल, नाट्य प्रस्तुतिक अलावे गीत आ नृत्यक कार्यक्रम सेहो छल। लगभग ढेढ़ घंटाक प्रस्तुति शुरू भेल लगभग आधा प्रस्तुतिक बाद आयोजक आबि कऽ कहैत छथिन अहाँ लोकनि नाटक बंद कऽ दियौक नाटक बादमे कऽ लेब ता धरि नृत्य आ गीत होमय दियौक। हमरा लोकनिक कहब छल ई संभव नञि अछि। अंतमे हुनका लोकनि द्वारा हुटिंग, सिटी-पिक्की होमय लागल। नाटक बीचेमे स्थगित करय पड़ल। हमरा लोकनि मुहँ लटका कऽ दिल्ली घुरि एलौंह। कहबाक तात्पर्य ई जे मैथिल समाजकेँ नाटकक हिस्सक लगाबय पड़त तखने भोजपुरिया फूहड़ गीत-संगीत आ डीजेसँ घोर रूपेँ प्रभावित समाजकेँ साफ-सुथरा, सुन्दर आ स्वस्थ मनोरंजन देल जा सकैत अछि।

उपरोक्त सब गपक एक्केटा निष्कर्ष अछि, नाटकक प्रस्तुति हेबाक चाही। सफल, सुन्दर, साफ-सुथरा, प्रेरणासँ ओतप्रोत आ स्वस्थ्य मनोरंजन होयत रहय, निरंतर मैथिली रंगमंच होयत रहय। कलाकार समाज लेल होएत अछि, जौं समाज अपन थोड़-बहुत (आर्थिक, मानसिक आ शारीरिक) हिस्सा कलाकारकेँ प्रदान कऽ देत तऽ कलाकार बेसी जोशसँ मंच पर आओत आ समाज आ कला संस्कृतिकेँ अवश्य किछु-नञि-किछु दऽ कऽ जाएत।

लेखक मैथिली रंगमंचक-सिनेमाक वरिष्ठ अभिनेता-लेखक-निर्देशक छथि।

मैथिली रंगमंचक वर्तमान परिस्थिति

❑ *प्रो. महेन्द्र लाल कर्ण*

नाट्य-शास्त्र मे भरतमुनि कहैत छथि- "एहन कोनो ज्ञान नञि, शिल्प नञि, विद्या नञि, कला नञि, योग आ कर्म नञि जे नाटक मे नञि होए।"

न तज्ज्ञानं न तच्छिल्पं न सा विद्या न सा कला।
न स योगो न तत्कर्म नाट्यो यस्मिन दृश्यते।।

कहल इहो गेल जे काव्यमे दृश्यकाव्य श्रेष्ठ थीक, ओहिमे शकुंतलाकेँ सर्वश्रेष्ठ कहल गेल। ओ कालिदास तऽ मिथिलेकेँ छलाह, मिथिला मे तऽ इएह मान्यता अछि। जतए श्रेष्ठ साहित्य लिखल गेल, श्रेष्ठ चिन्तन भेल, जतुका बालक पाँचे वर्षक अल्पायुमे त्रैलोक्यकेँ जानि जाए छथि। आइ ओतुका स्कूलमे सांस्कृतिक कार्यक्रमक नाम पर गीत-संगीत प्रतियोगितामे बच्चा अश्लील, विकृत मानसिकताबला फिल्मी गाना पर वीभत्स-विद्रूप मुद्रा बनबैत अछि आ तथाकथित अभिजात्य-कुलीनवर्ग एकर दर्शक होइत छथि आ अभिभावकक प्रसन्नता देखय जोगर होइत अछि। दोसर, पूर्वमे विविध अवसर पर गामे गाम नाटकक आयोजन होइत छल जे विविध कारणसँ खास कऽ रोजगार वास्ते पलायनसँ आब गाम मे नाटकक आयोजनक जगह पर गीत-संगीत, आर्केस्ट्रा आ वर्तमान मे सस्ता मे बंगाली छौड़ीकेँ अश्लीलतासँ पूर्ण डांस होइत अछि।

इ स्थिति भयानक अछि किएक तऽ हम नाटक सन सशक्त माध्यमकेँ बिसरा देने छियैक। दिल्ली, कोलकाता, पटना, दरभंगा सन चारि-पाँच आर जगहकेँ छोड़ि दी तऽ मैथिली नाट्य प्रस्तुति देखहुँ मे नञि अबैये। गामों मे जे नाटक भइयो रहल अछि तऽ नाटक लेल जेहन प्रतिबद्धता आ समर्पणक आवश्यकता अछि, ओकर अभाव देखबामे अबैत अछि। किछु गोटे तऽ नाटक सिनेमा स्टाइल मे करय चाहैत छथि।

किछु लोक मैथिलीमे नाटकक अभाव अछि से मानय छथि जे सत्य नञि अछि। **ईशनाथ झा**क चिनीक लड्डू, फेरार; **गोविन्द झा**क बसात; राजा शिवसिंह केँ अंतिम प्रणाम आ रूक्मिणी हरण; **सुधांशु चौधरी**क भफाइत चाहक जिनगी, ढ़ैत देवाल, लेटाइत आँचर, पहिल साँझ, आ लगक दूरी; **महेन्द्र मलंगिया**क लक्ष्मण रेखा खण्डित, एक कमल नोर मे, जुआयल कनकनी, ओकरा आँगनक बारहमासा, कमला कातक राम लक्ष्मण आ सीता, काठक लोक, गाम नञि सुतैया आ ओरिजनल काम; सोमदेवक चरैवेति, **उदय नारायण 'नचिकेता'**क नाटकक नाम जीवन, एक छल राजा, नाटकक लेल, रामलीला, प्रत्यारवर्तन आ नो इन्ट्री मा प्रविश; **अरविन्द अक्कू**क तालमुट्ठी, आगि धधकि रहल छै, एना कतेक दिन, अन्हार जंगल, रक्त, आतंक, केँ ककर, पढ़ुआ कक्का अएला गाम, बाह रे हम आ बाह रे हमर नाटक, गुलाब छड़ी, राज्याभिषेक, अलख निरंजन; **ब्रजकिशोर वर्मा मणिपद्म**क झुमकी आ तेसर कनियाँ; **मन्त्रेश्वर झा**क प्रायश्चित, आ सौभाग्यवती भव; **उदयचंद्र झा विनोद**क उदास गाछक वसन्त; **रामभरोस कापड़ि भ्रमर**क एकटा आर बसन्त; **रोहिणी रमण झा**क अन्तिम गहना, राजा सलहेस; **कुमार शैलेन्द्र**क अग्निपथक सामा, वनदेवी पुत्र; भवनाथक लीडर; कुमार गगनक शपथग्रहण; **कमल मोहन चुन्नु**क नव घर उठे; **विनोद कुमार मिश्र बन्धु**क एकटा चिनमा; **छत्रानन्द सिंह झा**क सुनू जानकी आदिक संग **कुणाल**, **श्यामभास्कर**, **ऋषि वशिष्ठ** केर कतेको नाटक, एकांकी, लघुनाटक अछि, नञि अछि तऽ रंगमंच।

रंगमंचक बिनु नाटक लिखल तऽ जा सकैत अछि, मुदा जौँ ओकर प्रस्तुति नहि भेल तऽ ओ मात्र एकटा नाट्यलेख बनि कऽ रहि जाइत अछि। पाठ्य नाटक जकरा हम नाटक नञि कहि सकैत छियैक, किएक तऽ नाटकक लेखन बहुस्तरीय होइत अछि। पहिल बेर लेखक ओकरा लिखय छथि, तऽ दोसर बेर निर्देशक ओकरा पढ़लाक बाद अपना मोन मे लिखैत छथि। ओ तय करैत छथि जे कोन कलाकार सब एकरा नीक जकाँ खेला सकत। ओ तय करैत छथि जे दृश्यबंध कतय होएत, प्रकाश-व्यवस्था, वस्त्र ओ रूप-सज्जा केहन होएत। ओ तय करैत छथि जे सम्पूर्णता मे एकर मंचन कोना होएत। तेसर लेखन कलाकार अपना मोन मे करैत छथि, जे एहि चरित्रकेँ ओ कोना मंच पर साकार करताह। आ चारिम ओकर लेखन दर्शक करैत छथि, जखन हुनका वएह अनुभूति होइत छैन्ह जेहन लेखक हुनका करबाबय चाहैत छलाह। जकरा आचार्य लोकनि साधारणीकरण कहैत छथि, जकरा अरस्तु विरेचन कहैत छथि। तखने नाटकक सफलता थीक।

नाटक 'जगना हाल्ट'क दृश्य

एहि लेल कुशल लेखक, कुशल निर्देशक, कुशल अभिनेता-अभिनेत्री आ पूर्णता मे कुशल तकनीशियनक आवश्यकता होइत अछि।

नाटक मे कथा अवश्य होइत अछि, मुदा कथा नाटक नहि होइए। नाटककेँ रंगमंच पर प्रस्तुति नञि भेल तऽ ओ मात्र पुस्तकालय मे जगह छेकत। असल मे नाटक श्रमसाध्य अछि आ खर्चीला सेहो। सरकारी अनुदान वा आन सहयोग जाहि संस्थाकेँ प्राप्त भऽ रहल अछि ओ नाटक प्रस्तुति कऽ रहलाह अछि।

शेषांश पेज 33...

लेखक वरिष्ठ रंगकर्मी छथि।

मैथिली रंगमंच मे संगीत

❑ *सुन्दरम्*

रंगमंचमे दूटा शब्द निहित अछि। 'रंग' आ 'मंच'। मंचक माने होइत अछि, ओ सुगोचर जगह (स्टेज) जतय श्राव्यकलाक आ दृश्यकलाक प्रदर्शन होइत अछि। श्राव्यकलाक अन्तर्गत आबैत अछि- गीत-नादक संग सुर-सप्तक पर सुमण्डित विभिन्न वाद्ययंत्रक सुसंगति; तहिना दृश्यकलाक अन्तर्गत आबैत अछि कतेको तरहक वाद्ययंत्रक सुसंगति मे साधरण नाच-नाटक-नौटंकी सहित शास्त्रीय सुर-लय-तालसँ सुव्यवसित विभिन्न मुद्रामे नृत्य केर भव्य दृश्यक प्रदर्शन। दूनू श्रेणीक मैथिल कलाकारवृंद अपन कला-कौशलक रसात्मक प्रदर्शन करैत छथि। प्रदर्शनक माध्यमसँ दर्शक-श्रोतावृंदक मनोरंजन करैत छथि आ हुनक ज्ञानक श्रीवर्द्धन सेहो करैत छथि।

आब 'रंग' पर विचार करी। एतय रंगसँ तात्पर्य अछि कलाक प्रदर्शनक कालमे देश-काल-पात्रक अनुरूप विभिन्न रंग जेना- लाल, हरियर, पीअर, नील, कारी, आसमानी, बैगनी इत्यादि रंगसँ कलाकार लोकनि अपन-अपन पात्रक अनुसारे रंग-बिरंगी वेश-भूषा आ आभूषणादिसँ सुसज्जित रहैथ। तहिना मंच आ मंचक परिपार्श्व सेहो मोनकेँ आकर्षित करयवला रंग-बिरंगसँ नीक तरहेँ रंगल होए। इएह अछि 'रंगमंच'क परिभाषा आ 'रंगमंच'क औचित्य।

आब हम 'मैथिली रंगमंच मे संगीत'क महत्व पर किछु प्रकाश देमय चाहैत छी। विश्वक प्राचीनतम ग्रंथ 'ऋग्वेद'क कालेसँ अपन देश भरतवर्ष मे संगीत आ नाट्यकलाक विकास भेल अछि। तत्कालीन ऋषिलोकनिकेँ संगीतकला आ नृत्यकलाक सद्प्रेरणा प्रकृतिक सूक्ष्म अवलोकन, हृदयस्पर्शी अनुभूति आ ओकर गहन चिन्तनसँ भेटलैन्ह। एहि अनुभूतिक संगहिं-संग अति सतर्क कानसँ ओ लोकनि सुनलैन्ह जे गाछ-बिरीछक चर्मर-चर्मर ध्वनि लयात्मक स्वरक अभिव्यक्ति अछि। कीट-पतंग, चिरै-चुनमुन्नी, पशुक समूह आ मनुक्खक समाज केर सुखात्मक आ दुःखात्मक ध्वनि सेहो रागात्मक लयसँ बहराइत अछि। एहिसँ हुनकालोकनिकेँ अनुभवक संग गहन अनुभूति सेहो भेलैन्ह जे रंगक सुन्नर समन्वय, सुललित संगीत आ विभिन्न मुद्राकृतिक मूलस्रोत प्रकृतिये मे नुकायल अछि। फलतः एहि पर अनुसंधान करयवला मेधवी ऋषि लोकनिकेँ अपन साधन-क्रममे ध्वनि-विज्ञानक 'सा रे ग म प ध नि' आ नृत्यकलाक ताल-सुर-लय भरल मुद्रादि केर ज्ञान भेटलैन्ह। तत्पश्चात् मानवसमाज मे वएह लोकनि एहि विलक्षण ज्ञानकेँ गन्धर्वविद्याक नामसँ प्रचारित केलैन्ह।

हमर स्पष्ट मत अछि जे कुशल रंगकर्मी प्रकृतिप्रदत एहि विलक्षण दूनू विधाकेँ (अर्थात् नाटक आ संगीतकेँ) एकसँ दोसरकेँ पृथक-पृथक नञि कऽ सकैत छथि। प्राक् ऐतिहासिक काल केर विषय पर अनुसन्धन करयवला कतिपय विशेषज्ञ विद्वानक अनुसारे आर्यावर्त्त मे सर्वप्रथम भगवान शिव संगीत आ नृत्य दूनू विधाकेँ अपन दिव्य प्रतिभासँ प्रतिपादन कएलैन्ह। हुनकर कार्यकाल आइसँ लगभग साढ़े सात हजार वर्ष पूर्व मानल जाइत अछि, इएह समय पहिल वेद-ग्रन्थ 'ऋग्वेद'केँ अभिव्यक्तिक काल सेहो कहल जाइत अछि। प्राचीन वैदिक ग्रंथादि, पौराणिक साहित्य आ जनश्रुति सभ पर शोधकर्त्ता एकटा सुप्रसिद्ध विद्वानक अनुसारे शास्त्रीय संगीतक मूलसूत्र 'सा रे ग म प ध नि', सुर-सप्तक आ भिन्न-भिन्न तालक उद्गाता भगवान शिव छलाह। ई सभटा भारतवासीक लेल भगवान शिवक अमूल्य वरदान अछि। भगवान शिव स्वयं अपूर्व नर्तक सेहो छलाह, जे शास्त्रीय ताण्डवनृत्य आ तालनृत्यक प्रवर्त्तन कएलैन्ह आ हुनके प्रोत्साहन आ सहयोगसँ भगवती माँ पार्वति सहो लास्य-नृत्य अर्थात् शालीनतापूर्ण श्रृंगार-नृत्यक प्रवर्त्तन आ प्रदर्शन कएलीह। एहि अवदानक कारणेँ कृतज्ञ आर्यावर्त हुनक एक नाम रखलक भगवान 'नटराज'।

नाटक 'उगना हास्य'क दृश्य

सामान्यतः सम्पूर्ण भारतवर्ष आ विशेष रूपसँ मिथिलाक रंगमंच भक्तिभावसँ भरल शिव-गीत आ भगवती-गीतक मधुमय रसात्मक संगीतसँ ओत-प्रोत रहैत अछि। साहित्यक नवो रस यथा- श्रृंगार, हास्य, करुण, रौद्र, वीर, भयानक, अद्भुत, वीभत्स आ शान्त रससँ मैथिली साहित्य भरल-पूरल अछि।

शेषांश पेज 33...

लेखक दिल्ली हाईकोर्टक अधिवक्ताक संग संगीतकार-गायक छथि आ कतेको मैथिली नाट्य प्रस्तुति मे अपन संगीत दऽ चुकल छथि।

मैथिली रंगमंच मे नारीक भूमिका

❑ *मुकेश दत्त*

मिथिलाक परिवेश अओर एकर पहचान शुरूये सँ मातृसत्तात्मक (नारीसँ) रहल अछि, चाहे ओ वैदेही सीताक रूपमे होए वा गार्गी, मैत्रीय, भारती होइथ वा आधुनिक युगमे फाइटर प्लेन चलावयवाली भावना कंठ वा व्यावसायीक जहाज चलाबयवाली हिमानी दत्त। सब मैथिल ललना एकरा एकटा नव आयाम दऽ रहल छथि। गौर करबा योग्य बात अछि जे अखन धरि मिथिलांचल क्षेत्रकेँ मिलल सातो पद्मश्री (मिथिला पेंटिग लेल) मिथिलानीयेकेँ हुनक मिथिला कलामे योगदान लेल प्राप्त भेलैन्ह अछि। आनो पुरस्कारमे अखन धरि नाट्य लेखन लेल मात्र एक बेर 1991 मे रामदेव झा जीकेँ हुनक नाट्य संकलन 'पसीझैत पाथर' लेल साहित्य अकादमी पुरस्कार प्राप्त भेलैन्ह।

'मैथिली रंगमंचमे नारीक स्थान' सदिखनसँ कम रहल अछि। नाटककार स्त्री पात्र कम राखैत छलाह, जाहिसँ अभिनय मे दिक्कत नञि होए। रंगमंचक आरंभ मे पुरुषहीं स्त्रीक भूमिका निभाबैत रहलाह, ओकर बाद स्त्रीक भूमिका मे स्त्री तऽ एलीह मुदा ओ बेसी दिन धरि रंगकर्म नञि कऽ सकलीह। हमारा जनतबे अखन धरि कोनो प्रतिष्ठित महिला नाटककार नञि भऽ सकलीह आ नञि महिला निर्देशक। मैथिली रंगमंच मे महिला नाटककार, निर्देशक आ समालोचकक अभाव मैथिली रंगमंच मे नारीक स्थान पर प्रश्नचिन्ह लगाबैत अछि। एकर एकटा आलोचनात्मक विश्लेषण आ सारगर्भीत अध्ययन आवश्यक अछि।

1998 मे सर्वप्रथम दू गोट मैथिलानी श्रीमति सुभद्रा झा आ श्रीमति अहिल्या चौधरी मंच पर उतरलीह, मुदा ओ बेसी दिन धरि मंच पर नञि रहलीह। मैथिली रंगमंचक मंच पर अयलाक बाद एकरे भऽ कऽ रहि जाएवाली अभिनेत्री जे लगभग पचास वर्षसँ नियमित आ निरंतर अभिनय करैत, मैथिली रंगमंच मे आबयवाली महिला लोकनिक लेल प्रेरणास्रोत अभिभावक बनि एकटा खाम्ह रूपेँ ठाढ़ रहयवाली ओ छथि - श्रीमती प्रेमलता मिश्र 'प्रेम'। अपन एकटा साक्षात्कार मे कहने छलीह, "बेटी-पुतोहुकेँ गार्जियने लोकनि रंगमंच मे नञि आबय दैत छथिन।" एखनो हुनका लग एकटा प्रश्न अनुत्तरित छैन्ह जे 'कोना दोसरो महिलाकेँ नियमित मंच पर अटकाओल जाए?' (एहि अंकक साक्षात्कारसँ)

मिथिलांचलसँ बाहर जतय नियमित आ प्रमुखतासँ मैथिली नाटकक मंचन होए 1972-73 मे तकर सूत्रपात कएनिहार मे सर्वप्रमुख छलाह छात्रानन्द सिंह झा 'बटुक भाए'। हिनकहिं प्रयाससँ कतोक महिला कलाकार मैथिली रंगमंचकेँ भेटलैक। श्रीमती प्रेमलता मिश्र 'प्रेम'क निरन्तरता आ सक्रियता मे हिनक योगदानकेँ अनठाओल नञि जा सकैत अछि। रंगमंच मे मैथिलानीकेँ आनबाक हिनक प्रयासकेँ बिसरल नञि जा सकत।

नाटककार जे महिला विमर्श पर लिखलैन्ह ताहिमे जीवन झा (सुंदर संयोग), ईश नाथ झा (चीनीक लड्डू), गोविंद झा (बसात), काली कांत झा (सुधीर-कुसुम), कमल कांत झा (घटकैती), सीताराम झा (सुखायल डारी : नव पल्लव), बाबू साहेब (कुहेस), गुरुनाथ झा (कनिया पुतरा), यदुनाथ ठाकुर (दहेज), उत्तम लाल मंडल (इजोत), सुधांशु शेखर (लेटाइत आँचर, तिलक दहेज), रोहिणी रमण झा (अन्तिम गहना, किंकर्त्तव्यविमूढ़, टुस्सा आ बाँझी), महेन्द्र मलंगिया (छुतहा घैल, ओरिजनल काम, देह पर कोठी खसा दिय), कुमार गगन (शपथग्रहण), कमलानन्द विभूति (बिजुलिया भौजी) आदि प्रमुख अछि। आधुनिक रचनाकार मे अरविन्द अक्कू सेहो नारी-उत्कर्षकेँ आधार बनाय नाटक लिखलैन्ह।

मिथिलाक बाहर भऽ रहल रंगमंच मे दिल्लीमे मिथिलांगन संजय चौधरी जीक निर्देशन मे, मैलोरंग प्रकाश झा जीक निर्देशन मे, बारहमासा मुकेश झा जीक निर्देशन मे, हिन्द रंगभूमि निलेश कुमार दीपक जीक निर्देशन मे, कलकत्ता मे कुलाणजीक निर्देशन मे, नेपाल मे धीरेन्द्र प्रेमश्रीजीक निर्देशन मे, पटना मे चेतना समिति, भंगिमा आदिक रंगकर्म चलैते रहैत अछि। वर्तमान मे महानगरक रंगमंच मे नारी भूमिका कमोबेश सक्रिय बुझना जाइत अछि, तैयो महिलाक रंगमंच मे भागीदरी कम्मे देखल गेल अछि।

महिला कलाकारक रंगमंच मे अभावक निम्न कारण बुझाइत अछिः-

पहिल- महिला स्वयं, मिथिलानी साहस नञि कऽ सकलीह। तरूण-तरूणी रंगकर्मकेँ ओतेक महत्व नञि दैत छथि।

दोसर- सामाजिक व्यवस्था, महिला एहि क्षेत्र दिस डेग बढ़ेबासँ बाँचल रहैत दथि। ई विचारणीय अछि जे कला आ संस्कृतिविहीन समाज केहन होएत!

तेसर- नाट्य संस्था, नाट्यकर्मीक सम्बन्ध मात्र रंगकर्म धरि सिकुड़ि गेल अछि।

चारिम- पारिश्रमिक, एहि अर्थयुगमे कलाकारकेँ उचित पारिश्रमिक नञि मिलब।

पाँचम- आन भाषा-भाषी महिला कलाकारक पहल, दोसर भाषा-भाषी कुशल रंगकर्मीक मैथिली रंगकर्ममे प्रवेश मैथिल ललना लेल असहज अछि।

छठम- पारिवारिक बंदिश, मिथिलाक परिवेश बेटीकेँ एहि क्षेत्रमे अपन कैरियर बनेबा मे सकुचायल रहल। रंगमंचसँ जुड़ाब नारी आ हुनक अभिभावक लेल कनि कष्टदायक रहैत अछि।

सातम- निरंतरता, अनवरत प्रयासक बादो जे महिला कलाकार अयलीह ओ टिकलीह नहि, हुनक दोसराइत तैयार नञि भऽ सकलीह।

आठम- समय प्रबंधन, परिवारक सदस्यक संग तारतम्य बैसा, पढ़ाई-नौकरी आदिक निष्पादनक बादे कोनो महिला रंगकर्म करतीह।

नवम- शिक्षाक कमी, मिथिलाक नारीक

छवि एखनो पारम्परिक अछि। जतेक मिथिलानी आगाँ बढ़लीह हुनक प्रतिशत नगण्य अछि। ओ आगूओ बढ़लीह तऽ दोहरी मारि सहैत।

दशम- समाज मे कतिआयल, महिलाक कतिआयल होएबाक मुख्य कारण हुनकर आत्मविश्वासक अभाव अछि। बाप-पित्ती, पति आदिक धाखसँ चाहियो कऽ महिला आगाँ नहि बढ़ि पाबथि।

एगारहम- रिहर्सलक समय, एकटा नाटक लेल मास-डेढ़ मासक रिहर्सल आ ओहो रातिकेँ, महिलाकेँ आबय-जाय केँ असुविधा सेहो एकटा कारण बनल।

बारहम- उद्देश्यक पूर्ति, किछ लोक कोनो खास उद्देश्य लऽ कऽ आयल हेतीह जे पूरा नहि भेला सँ ओ रंगकर्म छोड़ि देलीह।

तेरहम- मीडिया (टीवी-सिनेमा) दिस झुकाव, आइ-काल्हिक स्थिति अछि लोक सब आयल दू-एकटा नाटक केलक आ टीवी-फिल्म मे भागि गेल। अखन ई बेसी भऽ गेल अछि।

चौदहम- कुमारि रहब, जतेक एलीह ओ सब कुमारि रहलीह। स्कूल-कॉलेज करैत नौकरी आ फेर विवाह-दान भऽ पति संग बाहर चलि गेलीह। जाहिठाम गेलीह ओतय रंगमंचसँ नञि जुड़ि पेलीह। अपन घर-परिवार, बाल-बच्चा सबमे ओझरा कऽ रहि गेलीह।

पनरहम- रंगकर्मकेँ बुझब, महिला रंगकर्मकेँ उचित रूपसँ नञि बुझि सकलीह। चाहे ओ महिला नाटककारक अभावक कारणेँ होए वा महिला निर्देशकक अभाव वा महिला रंगसमीक्षक अभाव।

एतेक समस्याक बादो महिला एहि क्षेत्रमे डेग बढ़ौलैन्ह, आब हुनका लोकनिकेँ परिवारक, अभिभावकक, पतिक, बाल-बच्चा सभहक सहयोग आ समर्थन भेटैत छैन्ह, ई एकटा सकारात्मक पहल आ सुखद संदेश अछि।

अखन जतय सम्पूर्ण विश्वमे महिला सशक्तीकरणक प्रभाव देखल जा रहल अछि, नारी-विमर्शक चर्चा भऽ रहल अछि। एहन स्थिति मे मैथिली रंगमंच मे मैथिल कन्याक अभाव पैघ चिन्ताक विषय अछि। एहन स्थिति मे अमैथिली भाषी महिला सेहो मैथिली बाजब सीखि मैथिली रंगकर्ममे लागल छथि।

रंगमंचमे आस्था राखयवाली त्यागी आ साहसीये परिवारक संग तारतम्य बैसा एहि क्षेत्रमे सफल भेलीह। कतेको महिला कलाकार एहि क्षेत्रमे अयलीह, किछु वर्ष रंगकर्म कएलीह, विवाह-दान भऽ सासुर बसी रंगमंचसँ विमुख भऽ गेलीह। कखनो किनको एहिमे बान्हि कऽ नञि राखि सकैत छी।

पहिने पुरुषे सब महिलाक भूमिका करैत छलाह, तेँ पुरुष संग कार्य करबा मे महिला

नाटक 'राजा सलहेस'क दृश्य

लोकनिकेँ कनि असोकर्ज होइत छलैन्ह, आब समय आ सोच दूनू बदलि गेल अछि। पहिले महिलाक मोन मे भय बनल रहैत छलैन्ह जे पता नहि समाज आ लोक की कहत? नारीकेँ जा धरि कोनो क्षेत्रमे जएबा लेल परिवार आ समाजक पूर्ण सहयोग नञि रहत ओ आगाँ कोना बढ़तीह। चाहे रंगकर्म होए वा आन कानो पेशा।

जतय धरि मैथिली नाटक मे नारीक छवि केर बात अछि तऽ ई कहि सकैत छी जे पहिने नाटकमे नारी एकटा समस्या वा समस्याक कारण छलीह चाहे ओ कोनो रूपमे होए- बेटी जन्म, महिलाक अशिक्षा, बेमेल विवाह, विजातीय विवाह, दहेज लेल विवशता, विधवा विवाह, विधवाक जीवनयापनक समस्या, अवैध सम्बन्ध, नारी-उत्पीड़न, परिवारक विघटनक सूत्रधार, नारी द्वारा नारीक प्रताड़ना आदि देखाओल जाइत रहल। समस्याजनित नारी स्वयं स्वयं ओकर समाधान खोजब मे असमर्थ छलीह। मुदा विगत किछु वर्षसँ मैथिली नाटक मे नारीक हस्तक्षेप स्पष्ट देखा रहल अछि आब ओ अपनाकेँ अबला नञि सबला मानि स्वयं अपन मुक्तिक बाट ताकैत छथि। तऽ ई निःसंकोच कहल जा सकैत अछि जे नारी-विमर्शक अनुगूंज मैथिली नाटक मे स्पष्ट परिलक्षीत भऽ रहल अछि।

हँ, रंगमंच मे महिला कलाकारक अभाव वा हुनक उदासीनता लेल जवाबदेह नञि तऽ पूरा-पूरी रंगमंचे अछि आ नञि महिले छथि। परिस्थिति आ अर्थ दूनू एकर समान रूपेँ उतरदायी अछि। समयक सदुपयोगसँ महिला कलाकारक अभावकेँ कम कऽ सकैत अछि। देखियौ कोनो महिला कलाकार अपन सम्पुर्ण पारिवारिक दायित्वक निर्वाह कऽ कऽ समय निकालि रंगकर्म करैत छथि, एहि बातक गम्भीरतराकेँ बुझबाक चाही।

एतेक सुविधा-असुविधा रहैतो मैथिली रंगमंचकेँ महिला कलाकार आइयो पर्याप्त संख्या मे नञि भेटि रहल अछि, किएक तऽ बच्चा सबकेँ हुनक गार्जियने नाटक नञि करय दैत छथिन। आन प्रोफेशन दिस बेसी झुकाव अछि। टी.वी./फिल्म दिस बेसी जोर अछि, लड़की सब आब कैरियरिस्ट भऽ कैरियर बनाबय पर बेसी जोड़ दैत छथि। वर्तमान मे विभा रानी जीक एहि क्षेत्रमे काज, सक्रियता आ कर्मठता नव पीढ़ी लेल आदर्श प्रस्तुत करैत अछि।

लेखक मिथिलांगन पत्रिकाक संपादक अओर ललित नारायण मिथिला विश्वविद्यालय मे एहि विषयक शोधार्थी छथि।

मैथिली रंगमंचक समाज पर प्रभाव

❑ *ई. प्रकाश चन्द्र दास*

मिथिला मे रंगमंच पर नाटकक मंचन प्राचीन कालसँ भऽ रहल अछि। नाटक मूलतः रामायण, महाभारतक कथानक पर आधारित, सामाजिक कुरीति संबंधित, युद्ध विषयक, समसामयिक विषय पर आधारित होइत अछि। मिथिलाक ग्रामीण क्षेत्रमे दुर्गापूजा, चित्रगुप्त पूजा आ आन त्योहारक अवसर पर मैथिली नाटकक मंचन एखनो यदाकदा होईत अछि। मुदा चलचित्र आ टी.वी.क प्रदर्शनक कारणेँ नाटकक मंचन अत्यधिक प्रभावित भेल अछि। तथापि युवावर्गक श्रम आ उत्साहक कारणेँ नाटक मंचनक कार्यक्रम आयोजित भऽ रहल अछि। संपूर्ण विश्व रंगमंच अछि, हमसब एकर कलाकार छी।

सबकेँ नचावधि श्री राम गोंसाई।
नाचथि नर-नारी मर्कट-मर्कटीक नाई।।

काव्य मे नाटक रम्य थीक।

रंगमंच पर अभिनीत नाटकक कथावस्तु संवाद, गीत, नटुआक नाच इत्यादि दर्शकक मानसपटल पर कतेको काल धरि अंकित रहैत अछि। नाटक चित्रकाव्य थिक। नाटकक कथावस्तु सँ जे दर्शकक मानस जाहि तरहक रहैत अछि ओहि तरह शिक्षा वो ग्रहण करैत छथि। नाटक समाजक दर्पण अछि। नाटक स्वच्छ तऽ दर्पण स्वच्छ।

ग्रामीण जनता किछु दिन धरि एकर चर्चा-परिचर्चा करैत छथि, तत्पश्चात् अपन रोजगार मे संलग्न भऽ जाइत छथि। कुशल नाटककार अपन संदेश दर्शकक मानस गंगा मे प्रवाहित करय मे सफल होइत छथि। नाटक जनजीवनकेँ प्रभावित करैत अछि। भारत मे भरत नाट्यशास्त्र/Dramaticsकेँ जनक छथि तैं हर प्राचीन संस्कृत नाटक मे भरत वाक्य शामिल रहैत अछि। यूनान मे नाट्यशास्त्र आदिकाल सँ विकसित अछि तैं पर्दाकेँ 'यवनिका' कहल जाइत अछि।

भारतवासी सुखांत आ Comedy नाटक बेसी पसंद करैत छथि। यूनान मे सुखांत वा दुखांत दूनू तरहक नाट्यक रचना आ मंचन होइत अछि।

रंगमंचसँ वंचित नाटककेँ जे व्यक्ति सद्शिक्षा ग्रहण करय चहैत छथि से सद्ज्ञान प्राप्त करैत छथि आ जे अश्लीलता सँ प्रभावित रहैत छथि ओ ओहने धारणा सिखैत छथि।

संत पुरुष सार संक्षेप गहि कऽ अपन ज्ञान गंगाकेँ समृद्ध करैत छथि।

मैथिली रंगमंचक एखनो प्रासंगिकता मिथिला मे अछि ई हर्षक विषय अछि।

नाटक 'सोन मछरीया'क दृश्य

लेखक सेवानिवृत अभियंता आ रंगमंच साधक छथि।

क्रमशः (पृष्ठ 23 सँ) ...

मैथिलीक प्राचीन नाटकक मंचन : समस्या आ उपलब्धि

आजुक अधिकांश रंगकर्मी उताहुल रहैत छथि । एक-दूटा नाटक केलाक बादे हुनका कोनो-नञि-कोनो मैथिली फिल्म/सिरियलक ऑफर आबि जाइत छैन्ह, ओहि चमक-दमकक लोभ मे अधकचरा रंगज्ञान लऽ, शायद कहियो नहि रिलीज होएबला सिलेमाक प्रोड्यूसर/निदेशकक पाछाँ लागि जाइत छथि। अंत मे नञि घरक होइत छथि आ नञि घाटक। एहन स्थिति मे कोनो निर्देशक मोन रहलाक बादो प्राचीन नाटक मंचनक रिस्क कोना उठा सकताह? प्राचीन नाटक अपेक्षाकृत अत्यधिक अभ्यास माँगैत अछि। एकटा अभिनेताकेँ जहिना शारीरिक भंगिमा तहिना संगीतक अभ्यास करब आवश्यक होइत अछि। आंगिक, वाचिक, आहार्य आ सात्विक चारूक समुचित उपयोग लेल दीर्घ अभ्यासक बेगरता होइत अछि। प्राचीन नाटकमंचन लेल निर्देशककेँ सेहो आवश्यक होइत अछि सुदृढ़ रंगदृष्टि, इच्छाशक्ति आ अपन परंपराक ज्ञान होएब संगहि एहि पर गौरव बोध होएब। बिना एकर प्राचीन नाटकक मंचन आरोप-प्रत्यारोपक आवरण पहिर मात्र आभासीय परिकल्पना बनि रहि जाइत अछि।

अंततः मैथिलीक प्राचीन नाटकक मंचनक उपलब्धि मात्र एतबे अछि जे दीर्घ नाट्य परम्पराकेँ अछैत एखन धरि मात्र चारिटा- धूर्त्तसमागम, पारिजातहरण, मणिमंजरी आ गोरक्षविजय नाटकक मंचन भऽ सकल अछि। प्रथम मंचन प्रायः 1987 ई. सऽ 2020 ई. धरि कुल 33 साल मे मात्र छटा निर्देशक एकर प्रयास कऽ सकलाह अछि। अहू मे निर्देशक कौशल कुमार दास, संजीव मिश्र, रवीन्द्र बिहारी राजू, अरविंद अक्कू मात्र धूर्त्तसमागमक निर्देशन केलाह। कुणालजी मात्र पारिजातहरणकेँ निर्देशित केलाह आ डॉ. प्रकाश झा तीनटा मणिमंजरी, धूर्त्तसमागम आ गोरक्षविजय मंचित केलाह अछि। कुल मिलाकऽ प्राचीन

नाटकक मंचनक संबंध मे एहन उपलब्धिकेँ घोर निराशाजनक कहल जाएत।

आइ बेगरता अछि जे हमसब अपन प्राचीन नाटकक माध्यमसँ मैथिली रंगमंचक संपूर्णताक अध्ययन कऽ ओकर आकलन करी। वर्तमान समय मे प्रायः प्रत्येक रंगप्रशिक्षण संस्थान मे आजुक रंगकर्मीकेँ अपन प्राचीन शैलीक प्रशिक्षण दिस विशेष ध्यान देबाक जोर रहैत अछि, तकरा बुझबाक आवश्यकता अछि। हमसभ मैथिली रंगमंचक जाहि निजताक खोज पिछला 60-70 सालसँ कऽ रहल छी, ओहिमे शास्त्रीय, लोकपरंपरा, यथार्थवादी आदिक आड़ि-धूरिकेँ छोड़ि अपन प्राचीन नाटकक सूत्र पकड़ि आगाँ बढ़ल जा सकैत अछि। एहि नाटक सभ मे परम्पराक प्रायः सभ तत्व शामिल अछि।

क्रमशः (पृष्ठ 28 सँ) ...

मैथिली रंगमंचक वर्तमान परिस्थिति

विद्यापति पर्व समारोह होए वा आन महोत्सव वा कोनो पर्व पर आयोजित होमयवला सांस्कृतिक कार्यक्रम एहियो मे आब नाटकक मंचन नञि होइत अछि। जे कियो संस्था अति उत्साही भऽ नाट्यमहोत्सव आयोजित करैत छथि, बाहरसँ नाट्यदलकेँ अपन प्रस्तुति देबाक लेल आमंत्रित करैत छथि ओहो नाट्यदलकेँ मात्र किराया भाड़ाक संग नाट्य तैयारीक नाम पर अत्यंत छोट राशि दैत छथि।

जखन की संगीतक कार्यक्रम मे लाखों खर्च करैत छथि। मिथिला मैथिली करयवला तमाम संस्थाकेँ एहि विषय पर गहन मंथन करय पड़त। ललित नारायण मिथिला विश्वविद्यालयक स्नातकोत्तर नाटक विभागक उपलब्धिकेँ चर्च कएल जाए तऽ एहिमे कोनो संदेह नञि जे ई विभाग बहुत हद धरि लेखक आ निर्देशक केँ तैयार कऽ रहल अछि। मुदा आश्चर्य अछि जे दोसर-दोसर राज्य आ आन भाषा-भाषी विद्यार्थी एतय एहि विभाग मे अध्ययन लेल आबैत छथि, मुदा मैथिली भाषी कम रूचि लैत छथि। खुशीक गप जे सरकारक ध्यान नाटक आ रंगमंच दिस जा रहल अछि। बी एड शिक्षाक पाठ्यक्रम मे नाटककेँ सेहो शामिल कएल गेल अछि मुदा कोनो बी एड कॉलेज मे नाट्य प्रदर्शन भेल होए एकर सूचना नञि अछि। सिद्ध इंततः सीबीएससी सेहो स्कूली छात्र लेल नाट्य प्रशिक्षण अनिवार्य कऽ देने अछि। जौँ एहि तरहेँ नाटककेँ रोजगारसँ जोड़ल जाए तऽ युवा लोकनिकेँ नाटक मे रूचि बढ़य लगतैन्ह आ मैथिली रंगमंच लेल ई नीक रहत।

क्रमशः (पृष्ठ 29 सँ) ...

मैथिली रंगमंच मे संगीत

तैं मैथिलीक कोनो नाटक केर सुसंस्कारित निदेशक आ संगीत-निदेशक अपन रंगमंच पर नवो रसक आनन्ददायी समिश्रणक संगमे आध्यात्मिक आदर्शक अमृतवाणीक रसवर्षा करैत छथि। तैं हम स्पष्ट रूपसँ कहय चाहैत छी जे मिथिलाक पवित्र सांस्कृतिक आ शुद्ध साहित्यिक परम्पराक अनुसारे कोनो संगीतकारक आ नाटककारक उद्देश्य तखने सफल मानल जाएत, जखनकि रसात्मक संगीतसँ आर मनमोहक दृश्यसँ क्रमशः श्रोतागण आ दर्शकवृन्द केर मोन, प्राण आ हृदय सात्विक आनन्दसँ आन्दोलित होइत रहय। आधुनिक रंगकर्मी एहि विधा मे मामूली संशोधनक संग एकर प्रदर्शन करैत छथि। ज्ञातव्य अछि, जहिआ सँ मधुर रसात्मक संगीतक सहभागिता मैथिल रंगमंच पर बढ़ल अछि, तहियासँ मैथिलीक लोकप्रियता दिन दूना, राति चौगुना बढ़ल अछि। ओना तऽ साहित्यक सभटा विधाक अपन-अपन गुण आ महत्त्व अछि, परञ्च मनोवैज्ञानिक सिद्धान्तक अनुसारे संगीतक प्रभाव तत्क्षण मानव मोन पर पड़ैत अछि। तैं तुलनात्मक दृष्टि, संगीत तीव्र गतिसँ जन-समाजमे पसरैत अछि। उच्च साहित्यक नाटक आ दस्तावेजी नाटक गम्भीर भाव-विचारक कारणेँ जन-समाजकेँ रूचिकर नञि भऽ पबैत अछि, जौं एहिमे सुमधुर संगीतक संयोग बैसाओल जाइत अछि तऽ ओकरो लोकप्रिय बनय मे समय नञि लगैत अछि। तैं संगीतक एहि गुणवत्ताकेँ देखिकऽ किछु मैथिल संस्था एहि दिशामे बहुत सक्रिय भेल अछि, यथा- मिथिलांगन, मैलोरंग, चेतना समिति, बारहमासा आदि। बिना कोनो झीझक आ संकोच के कहि रहल छी जे मैथलीक रंगमंच आइ अन्यान्य समर्थ भाषाक रंगमंच जेना कि बंगला भाषा-भाषीक रंगमंच वा हिन्दी भाषीक रंगमंचक समक्ष समतुल्य भऽ कऽ ठाड़ अछि। तखन एकटा दुःखक बात ई अछि जे मैथिली मर्यादा आ गौरवक उच्चतर शिखरक दिशा लऽ जाएवला रंगकर्मीक संख्या बड्ड कम अछि। तकर मुख्य कारण अछि जे कुशल कलाकारोकेँ उचित पारिश्रमिक नञि भेटैत अछि नञि समुचित आदर-सम्मान, तथापि कतिपय आशावादी मैथिल कलाकार अपन अनवरत त्याग-तपस्याक बलसँ सरकारक ध्यान आकृष्ट केलैन्ह अछि। संविधनक अष्टमसूचिमे सबतरहेँ विकसित भाषाक रूपमे मैथिलीकेँ संलग्न कएल गेल। एहि संदर्भ मे इहो उल्लेखनीय अछि जे 2008 ई. मे दिल्ली-सरकार द्वारा मैथिली-भोजपुरी अकादमी नामक एकटा स्वायतशासी प्रतिष्ठानक स्थापना कएल गेल। मैथिल समाज आ भोजपुरी समाज दिल्ली सरकारक हृदयसँ अभारी अछि। अकादमीक सहयोग पाबि कऽ मैथिली साहित्य, संगीत आ सांस्कृतिकेँ बहुमुखी विकासक अपूर्व अवसर भेटल अछि। मैथिल साहित्यकार, कलाकार, संगीतज्ञ आ रंगकर्मी अत्यन्त प्रोत्साहित भेलाह। आइ सभहक हृदयमे उज्ज्वल भविष्यक आशा चमकि रहल अछि।

आधुनिक रंगमंच मे सक्रिय सब संस्था जेना- मिथिलांगन, मैलोरंग, बरामासा, अछिञ्जल, मिलाप, अरिपन, भंगिमा, कला समिति, आंगन आदि अपन प्रदर्शनकेँ संगीतमय प्रस्तुति कऽ रंगप्रस्तुतिकेँ उत्तम बनाबैत छथि।

मृत्युभोज

❑ *संजय चौधरी*

दृश्य - 1

गीत :

देखू हे सखी विधनाक लिखल
देह पर टूटल पहाड़ यौ।
क्षणमे क्षणाक भेलै उजड़ल जिनगी
डूबल घर-परिवार यौ।।

(पार्श्वसँ 'राम नाम सत्य अछि'क आवाज गुँजि रहल अछि, किछु महिला जानकीकेँ सहारा दैत मंच पर आनैत छथि। जानकीक कानि-कानि कऽ हालत बड्ड खराब भऽ रहल अछि।)

जानकी : यौ आनंदक पप्पा... यौ हमरा छोड़ि कऽ कतऽ चलि गेलौं यौ, आब हमर सभहक की हेतई यौ? यौ सुनै नै छी यौ... यौ अहाँ किएक सुति रहलौं यौ... गे माय, गे माय... रौ बाप रौ बाप... आब हम नै जीबौ रौ लोक सब... गे दाई गे दाई.. हे भगवान, हमरा किएक नै उठा लेलौं... रौ दैबा रौ दैबा... हई छोड़ हमरा... छोड़... हमरो जाए दे... हमहुँ जैब हुनका लग...।

महिला1 : चुप भऽ जाऊ... की करबै... अहाँकेँ कनलासँ कि आनंद पप्पा घुरि एता, हे बौआ नञि... नञि एना करू...।

जानकी : आब हम जीब कऽ कि करबौ गे दाई...?।

महिला2 : अहाँकेँ जीबय पड़त... बच्चा सबकेँ लेल... अहाँ एना जुनि करू...।

(महिला सब जानकीक चूड़ी तोड़य लागैत छथि, एकटा महिला जानकीक सिंदूर पोछय लागैत छथि।) (फ्रिज)

दृश्य - 2

गीत :

उजड़ल सेनूर टूटल चूड़ी
छूटल सब सिंगार यौ।
सोंझा मे ठाढ़ भेल बेटा
निहारै उजड़ल सब संसार यौ।

(मंच पर अस्त-व्यस्त हालत मे जानकी बैसल अछि। तखने आनंद आ खुशीक प्रवेश। आनंद उतरी पहिरने अछि।)

खुशी : मम्मी गे, पप्पा कतऽ चलि गेलखिन्ह? पप्पाकेँ सब किएक जरा देलकै? भाएजी ई कपड़ा किएक पहिरने छथिन्ह?

(धीरे-धीरे जानकीक नजरि दूनू पर पड़ैत अछि, जानकी दूनूसँ लिपटि कऽ जोर-जोरसँ कानय लागैत अछि।) (फ्रिज)

दृश्य - 3

(किछु लोकसब मंच पर बैसल आपस मे गप कऽ रहल छथि। अछि आनंद आ जानकी बीच मे बैसल अछि)

गीत :

दुःखमे डूबल ई परिवार
ताहि परसँ समाजक वार।
परम्पराक आगाँ देखू
बेबस बेटा-माए लाचार।।

कक्का : भोज तऽ तोरा करहे पड़तऽ...।

आनंद : मरणोपरांत मृत्युभोज? कक्का मृत्युभोज खैल जैत अहाँ सबसँ? माएक हालत देखियौ... बुझा रहल अछि ईहो मरनासन पर बैसल अछि... हमर हालत देखू... हमर पढ़ाय-लिखाय अखन बाकीये अछि, बाबूकेँ मरलाक बाद एक साँझक भोजन कोना जुटाएब से मुश्किल बुझा रहल अछि... दुइयो दिन नञि भेल अछि बाबूकेँ मरला... अखन हुनक चिताक आगियो शांत नञि भेल अछि, एना मे भोजक एकोटा दाना अहाँ सबकेँ कंठसँ गिरल जैत? हम एहि मृत्युभोजक विरोध करैत छी, हम नञि कऽ सकब मृत्युभोज..।

कक्का : भोज नञि केलासँ कि ककरो मृत्यु नञि हैत?

आनंद : भोज केला पर की हमर बाप जीवित भऽ जेताह?

कक्का : आत्माक शांति भेटतो तोहर बापकेँ।

आनंद : जाहि समाजमे मृत्युभोज नञि होए छै ओकर सभहक आत्मा की भटकिते रहै छै?

कक्का : समाजमे प्रतिष्ठा बढ़ै छै....।

आनंद : मात्र तेरह दिनक प्रतिष्ठाक लेल हम बिका जाऊ?

कक्का : बौआ बाप एक्के बेर मरय छै... बेर-बेर नञि...।

आनंद : लोक बरबादो एक्के बेर होइत अछि.. बेर-बेर नञि...।

कक्का : जे बाप तोरा जनम दऽ कऽ.. पालि-पोशि कऽ एत्तेटा कऽ देलखुन्ह... ओहि बापकेँ मरला पर तौं भोजो नञि कऽ सकै छैं.... धिक्कार छौ तोरा पर...।

आनंद : धिक्कार तऽ अछि एहि समाज पर... जे बाट देखैत रहैत अछि, जे कहिया कियो मरय आ हम पाँच दिन भोज खाय।

कक्का : अंत मे समाजे काज दै छै बौआ।

आनंद : (किछु सोचौत) की सब करय पड़तै?

कक्का : कर्मकाण्ड आ पाँच दिनक भोज-भात।

आनंद : वाह रे परम्परा! जनमू तऽ एकटा भोज आ मरू तऽ पाँचटा भोज? (किछु सोचैत) कत्ते खर्च हेते एहि श्राद्ध आ भोज-भात मे?

कक्का : कम-सँ-कम दू लाख तऽ भैये जेतौ।

आनंद : तऽ दियऽ अहाँ सब हमरा दू लाख टाका। हम खुब धूम-धामसँ बाबूक मृत्युभोज करब।

कक्का : से...से...से... हमसभ किएक देबौ?

आनंद : हमर बाबूकेँ मरला दुइयो दिन नञि

भेल अछि, मुदा अहाँ सब चिन्हा गेलौंह।

कक्का : चुप रह नालायक...।

आनंद : किएक चुप रहू? हम नञि करब मृत्युभोज।

कक्का : (जानकीसँ) अहाँ चुप किएक छी? कहबै छी बड़का गामवाली... मुदा एक्को रती संस्कार नञि सीखौने छी अपन बेटाकेँ... एकरा एक्को रती अपन बापक इज्जतक ख्याल छै?

आनंद : काल्हिसँ हमसभ चौक पर बैस कऽ भीख माँगब तऽ हमर बापक इज्जत बैढ़ जेतैन्ह की? मरला पर लोकक शोक मनाओल जाइत अछि... मुदा अपन समाज भोज-भातमे लागल अछि।

कक्का : अपना हिन्दू संस्कृतिमे शोक मनाबऽ केँ कोनो परम्परा नञि अछि, लोकक प्रयास होइत अछि जे कोना शोकसँ बाहर निकलि आगाँक भविष्य खुशहाल बनाओल जाए। एहि लेल भोज-भातक आयोजन कएल जाइत अछि।

आनंद : जाहि समाजमे मृत्युभोज नञि होइत अछि, ओ सब की सब दिन शोकेमे डूबल रहैत अछि? एहन खुशहाली हमरा नञि चाही... आ नञि चाही एहन समाज...।

कक्का : तऽ ठीक छौ... बना ले अपन एकटा अलग समाज, हमसभ जाए छी। हई,चलै चल सब कियो।

आनंद : हँ... हँ जाए जाऊ अहाँ सब। नञि चाही हमरा एहन समाज, जे हमरा पिताक चिता पर बैसिकऽ मृत्युभोज खाएत।

कक्का : (जानकीसँ) रहु आब अहाँ अपन बेटाकेँ लऽ कऽ। हँ, हमसभ जाए छी। रौ, तों सब मुँह की तकय छैं... बारि दे एहन मलेच्छ लोक सबकेँ अपन समाजसँ... बारि दे एकरा सबकेँ गामसँ... बारि दे...।

सब : हँ, हँ, बारि दे एकरा सबकेँ, बारि दे... बारि दे... (शोर शराबा)।

जानकी : (चिचियाइत) बस करू अहाँ सब! बस करू... हमरा जीते जी वएह हैत जे हम चाहब... अहाँ सब जे कहबै से हेतै... भोज अवश्ये हेतै..। (फ्रिज)

दृश्य - 4

(जानकी आ आनंद बैसल बात कऽ रहल अछि)

आनंद : कहि तऽ देलही माँ, मुदा ओतेक टाका कतय सँ एत्तै जे भोज हेतै... बाबूक एक्सीडेंट भेलैन्ह... सबटा जमा-पुँजी हुनकर इलाजमे खर्च भऽ गेलै। तैयो हुनका बचा नै सकलौंह आब तऽ काल्हि अपना सब कतयसँ खायब तकरो उपाय नञि अछि।

जानकी : तौं चिंता नञि कर... कमला कातमे जे दू कट्ठा खेत बाँचल छौ ओकरा बेच दही।

आनंद : माँ तौं ई की कहि रहल छैं? इएह खेत तऽ आब एकटा सहारा छौ... ऊहो बिका जेतौ तऽ अपना सब खैब कतऽ सँ।

जानकी : बौआ... की करबिही... आखिर रहय केँ तऽ अछि अपना सबकेँ एहिये समाजमे... बेच दही ओहि खेतकेँ... आगाँ जे हेतै से देखल जेतै...। (फ्रिज)

दृश्य - 5

नऊआ : (घुमि-घुमि कऽ भरि गाम मे नोत दऽ रहल अछि) यौ फूल कक्का... यौ सोन कक्का... गै लबकी काकी... यौ लाल भैया... यै लाल भौजी... यै फूल काकी, आनंद बाबू अपन बापक मरयकेँ खुशीमे भोज कऽ रहल छथि। तेराईतक... नौह केशक... एकादशाक... द्वादशाक... आ कर्त्ता माछ-माउसक। पाँचो दिनक एक्के बेर सबजाना नोत देने जाए छी। मान-भगिनमानकेँ अलगसँ... सब कियो आबय जेबैय।

गीत :

मृत्युभोज मे स्वाद भरल अछि,
मरल देह सब नोचि रहल अछि।
बज्जर खसौ एहन भोज पर,
दुःखक नै कोई सोचि रहल अछि।।
मरल देह सब...

रंग-बिरंगक तीमन-तरकारी,
टुक-टुक ताकय पुत्र आ नारी।
एहन समाजकेँ दी बलिहारी,
गप-गप खाइये भरि-भरि थारी।।
पहुँच गेलौंह हम मंगल ग्रह पर,
ई समाज कतय पहुँचि रहल अछि...
मरल देह सब...

भेल तेराईत बीतल नौह केश,
एकादशा किछु अओर विशेष।
बीतल एकादशा बीतल द्वादशा,
कें पूछैयै घरक दुर्दशा।।
दिवंगतक आत्माक पाछाँ,
अपन शांति सब खोजि रहल अछि...
मरल देह सब...
मृत्युभोजमे स्वाद भरल अछि।

(गीत समाप्त, किछु लोग हाथ धो रहल छथि, गप कऽ रहल अछि। कोना मे जानकी आ आनंद हाथ जोड़ि कऽ ठाढ़ छथि... सब कियो हुनका सांत्वना दऽ दऽ कऽ जा रहल छथि।)

ग्रामीण : कक्का दही आ रसगुल्ला केहन लागल?

कक्का : धुर्र... एहनो कत्तौ दही आ रसगुल्ला भेलैये... एहिसँ नीक नञि करितै भोज... नञि छलै उपाय तऽ किएक केलक? कियो जबर्दस्ती केने रहय, जे करबे कर भोज... हमहुँ अपन बाबूक काजमे भोज केने रही... दस गाम देखने रहय... तों तऽ छलैंहें।

ग्रामीण : हँ... हँ ठीके कहलियै...।

(सभहक प्रस्थान)

(मंच पर जानकी आ आनंद चिंतित ठाढ़ अछि तखने कक्काक प्रवेश)

कक्का : भौजी अखन धरि तऽ सब किछु खुब नीक जकाँ भऽ गेल... आब रहि गेल कर्त्ता माछ-माउस। ई अंतिम अछि... बस ई भोज नीक जकाँ भऽ जैत तऽ जशे-जश अछि।

जानकी : मुदा बौआ? आब तऽ हमरा लग एक्कोटा फूटल कौड़ीयो नञि बाँचल अछि।

आनंद : कक्का... आब तऽ हमही-माए बेटा बाँचल छी... हमरे सबकेँ राँहि कऽ खा लियऽ।

कक्का : (तुनकि कऽ) क्षमा करब हमरा, एहि उमरमे आब धिया-पुतासँ बईज्जत भऽ रहल छी... हम चलै छी...।

जानकी : रूकू बौआ...।

(जानकी घरमे जाइत छथि घरसँ एकटा पोटरी लऽ कऽ आबैत अछि)

जानकी : लियऽ बौआ... एहिमे हुनकर देल मंगलसूत्र आ हमर माएक देल काड़ा अछि... आब ई हमर कोनो काजक नञि अछि... एकरे बेच कऽ भोजक व्यवस्था कऽ लियऽ... (कक्का पोटरी लऽ कऽ विदा होइत छैथ)

गीतः

बिका गेलै सब खेती बाड़ी... 2
बिका गेलै देखू कँगना...
यौ सून-सून लागै छै अँगना,
सून-सून लागै छै अँगना...2
बेटा ताकै बापकेँ देखू...2
कनिया ताकै सजना...
यौ सून-सून लागै छै अँगना...।

(जानकी आ आनंद अपन अँगना घरक निहारि रहल अछि... तखने एकटा डाकियाक प्रवेश)

डाकिया : (प्रवेश करैत) आनंद कुमारक घर इएह अछि?

आनंद : हँ... हँ... हमहीं छी आनंद कुमार, की बात?

डाकिया : अहाँक नामसँ चिट्ठी अछि।

(चिट्ठी दैत अछि आ प्रस्थान... आनंद चिट्ठी खोलि कऽ देखैत अछि)

जानकी : केहन चिट्ठी छौ बौआ?

आनंद : (माएक गला लागि कानय लागैत अछि) माँ हमर इंजीनियरिंग कॉलेजमे एडमिशनक लेल सेलेक्शन भऽ गेल।

(दूहूक खुशीक कोनो ठिकाना नै अछि। दुहूक आँखि खुशीक नोरसँ भरि जाइत अछि। अचानक आनंद दुःखी भऽ जाइत अछि।)

जानकी : बौआ! अतेक नीक जकाँ बाबूक श्राद्ध केलौंह, आ देखही ओकर फल।

आनंद : माँ, एहि पढ़ायकेँ पूरा करबा लेल कम-सँ-कम पाँच लाख टाका चाही। बाबूक श्राद्धमे पाँच लाखक खेत दू लाखमे बिका गेल! बाबू आ नानीक देल तोहर अंतिम निशानी मंगलसूत्र आ कड़ा सेहो बिका गेलौ। जे समाज बाबूक श्राद्धमे पाँच पैसाक मदति नञि केलक ओ हमर पाँच सालक खर्च कत्तऽ सँ उठैत? हम सब बर्बाद भऽ गेलौंह माँ, बाबूक सपना छलैंह... बेटा हमर इंजिनियर बनत... नाम करत... बाबूक सबटा सपना चकनाचूर भऽ गेलौ माँ। हमसभ बर्बाद भऽ गेलौंह... बर्बाद भऽ गेलौंह हमसभ...।

(माए-बेटा एक दोसरक गला लगा कानय लागैत अछि। तखने एकटा बीमा एजेंटक प्रवेश)

एजेंट : राम चंदर बाबूक घर इएह छियैन्ह?

जानकी : (नोर पोछैत) हँ, की बात? हम छी हुनकर पत्नी जानकी देवी आ ई हमर बेटा आनंद। अहाँकेँ छी?

एजेंट : हमर नाम अभय अछि। हम बीमा एजेंट छी। बड्ड दुःख भेल हुनका बारेमे सुनि कऽ। भगवान हुनकर आत्माकेँ शांति दैथि। (कागज निकालैत) लियऽ एहि पर साइन कऽ दियौ।

आनंद : ई कोन तरहक कागज अछि?

एजेंट : आइसँ दू मास पूर्व रामचंदर बाबू दस लाख टाकाक जीवन बीमा करेने छलैथ... ई ओहि बीमाक कागत अछि।

आनंद : मुदा हमरा बाबू लग तऽ दस लाख टाका तऽ छलैन्हे नञि?

एजेंट : दस लाखक बीमा करबय मे दस लाख टाका नञि देबय पड़ैत अछि... हुनका मात्र चारि हजार टाकाक एकटा किस्त देबय पड़लैन्ह। नॉमिनीमे अहींक नाम अछि (जानकीसँ) अहाँ एहिठाम साइन कऽ दियौ। चुँकि हुनक मृत्यु एक्सीडेंटसँ भेल छैन्ह, तेँ बीमा नियमक अनुसार अहाँकेँ बीस लाख टाका बीमा कंपनी देत।

(जानकी कागज पर साइन करैत अछि)

एजेंट : अहाँ अपन आधार कार्ड लऽ कऽ काल्हि जनकपुरी LIC ऑफिस आबि जैब। हाथो-हाथ अहाँकेँ टाका अहाँक बैंक खातामे जमा भऽ जैत।

(प्रणाम करैत प्रस्थान। दूनू माए-बेटाकेँ आँखि मे नोर... एक-दोसराक नोर पोछैत अछि)

आनंद : (दर्शकसँ) बाबूक करैल बीमाक पैसा से हम तऽ सम्हरि जैब... मुदा कतेको परिवार एहि मृत्युभोजक जालमे फंसिकऽ उजैड़ चुकल अछि, हम जे गलती केलौंह... अहाँ सब नञि करब... हाथ जोड़ि कऽ हम अहाँ सबसँ ई बिनती करैत छी... बंद करू ई मृत्युभोज... बंद करू...।

गीत :

मृत्युभोज बड़का अभिशाप,
एहिसँ पैघ नहि कोनो पाप।
मृत्युभोज जे सब खाइये,
जीबते जी नरक मे जाइये।
मृत्युभोज केँ बंद करू...

कोरस : बंद करू... बंद करू...।

(इति)

आब मानि जाउ ने

❑ *डॉ. किशन कारीगर*

परिचय पात :-

1. राजेश - नायक।
2. कमला - नायिका (राजेशक पत्नी - पाहीवाली)
3. मनोहर - राजेशक लंगोटिया दोस्त।
4. विमला - मनोहरक पत्नी (ठारहीवाली)
5. नीलू - विमलाक सहेली।
6. सोनी - नीलूक सहेली।
7. मदन - दोस्त

दृश्य-1

ध्वनी संगीत

कमला : (कनेक तमसाएल भावमे) मारे मुहँ धके आब बाट तकैत-तकैत मोन अकछा गेल। हिनका किछू अनबाक लेल नञि कहलियैन्ह कि एकटा आफद मोल लऽ लेलहुँ।

(तखने राजेशक प्रवेश)

राजेश : (दारूक निशा मे बरबराइत) हे यै पाहीवाली, कतए छी। यै एम्हर आउ ने, यै पाहीवाली।

कमला : (खूम खिसियाएल भाव मे) लगैत अछि जेना पूरा अन्धरा बजारे खरीदने आबि रहल छथि। तहि द्वारे अन्हराएल छथि।

राजेश : हे यै पाहीवाली अहाँ जुनि खिसियाउ, एकबेर हमर गप्प सुनू ने।

कमला : हम कि खाक सुनू अहाँकेँ तऽ हमर कोनो फिकिरे नञि रहैए।

राजेश : (निशा मे मातल गबैत अछि) भिजल ठोर अहाँकेँ...।

कमला : हे दैब रै दैब! अहाँक एहन अवस्था देखि तऽ हमर ठोर मुँह सुखा गेल आ अहाँ कहैत छी जे भिजल अछि।

राजेश : अहाँ फुसियाहीं केँ खंउजा रहल छी, गीत सुनू ने- प्यासल दिल ल...ल हमर...।

कमला : (खउंजा कऽ) हे भगवान एतेक पीबलाक बादो अहाँकेँ पियास लगले अछि तऽ हैए लिय घैलाक ठंढ़ा पानि...।

राजेश : (हँसैत बरबराएत अछि) अहुँ कमाले कऽ रहल छी, पहिने गीत सुनि लिय ने। कियो हमरा संगे भिंसर धरि रहतै तकरा हम करबै खूम प्यार ओ...हो...हो ओ..हो...हो।

कमला : आब कि खाक प्यार करब? आब एक पहर बाद भिंसरो भऽ जेतैए।

(राजेश गीत गबैत-गबैत सूतबाक प्रयास आ सिटी बजा रहल अछि।)

कमला : हे महादेव, एहेन गबैयाकेँ नीन्न दऽ दिऔय।

राजेश : आब हयिए हम नानीगाम गेलहुँ आ अहाँ अपना गामसँ जलखै नेने आउ।

कमला : अच्छा आब बूझनूक बच्चा जकाँ चुपेचाप कले-बले सूति रहु ने।

राजेश : ठीक छै पाहीवाली जौँ अहाँ कहैत छी तऽ हम सूति रहैत छी मुदा जलखै बेर मे हमरा उठा देब।

(राजेश सूति रहैत अछि।)

दृश्य-2

(चिड़ै-चुनमूनक चूँ...चूँ केर ध्वनी)

कमला : (राजेशकेँ उठाबैत) हे यै आब उठि जाउ ने, भिंसर भऽ गेलै।

राजेश : पाहीवाली अहाँ ठीके कहैत छी की?

कमला : ठीके नञि तऽ की झूठ। कनेक अपने आँखिसँ देखू, भिंसर भऽ गेलै।

राजेश : हँ यै ठीके मे भिंसर भऽ गेलै। अच्छा तऽ आब हम मॉर्निंग वॉक कऽ अबैत छी।

कमला : अच्छा ठीक छै तऽ जाऊ, मुदा जल्दीए घुमि कऽ चली आएब। ताबैत हम चाह बनाकऽ रखने रहैत छी।

राजेश : बेस तऽ आब हम घूमने आबैत छी। ओके बाई-बाई।

(राजेशक घरसँ प्रस्थान)

(पार्क मे बातचीत करबाक ध्वनी प्रभाव)

मनोहर : (दौगि रहल अछि आ हॉफि लैत) भाए, आई-काल्हि राजेश लंगोटिया देखबा मे नञि आबि रहल अछि।

मदन : (खैनी चुनेबाक पटपट) से तऽ ठीके मे भाए, हमरा तऽ बूझना जाइए जे ओ तऽ सासुर मे मंगनीक तरूआ तोड़ि रहल अछि।

मनोहर : से जे करैत हुए, मुदा भेट तऽ करबाक चाही।

मदन : (हड़बड़ाइत) हईए.. ए.. ई लियऽ नाम लैत देरी राजेश सेहो आबिए गेल।

(दौगल आबैत राजेशक प्रवेश)

मनोहर : (राजेशकेँ देखैत) ओई-होई हमर दोस की हाल-चाल छौ?

राजेश : हम तऽ ठीके छी भाए। तू अपन कहऽ की समाचार?

मदन : राम-राम यौ लंगोटिया भाए!

राजेश : (हँसैत) आहा... हा... हा... राम-राम यौ चिकनौटिया भाए।

मदन : मनोहरक हाल तऽ हमरासँ पूछू बेचारा चिंतासँ सनठी जकाँ सूखा गेल।

राजेश : कि भेलैए एकरा से कहब ने,कोनो दुःख-तकलीफ, आफद-विपैत?

मदन : (राजेशसँ) हमरासँ तऽ नीक तऽ ई अपने कहय, तखन तोंहो बूझिये जेबहक।

मनोहर : (उदास भऽ कऽ) भाए, कि कहियौ जहियासँ ठारहीवाली रूसिकेँ अपना नैहर चलि गेलैए हमरा तऽ एक्को कनमा नीक्के नञि लागैत अछि।

राजेश : किएक तूँ भउजिकेँ मनेलही नञि?

मनोहर : हँ, रौ भाई! कतबो मनेलियै मुदा ओ नञि मानलकै।

राजेश : से किएक, एहन कि भऽ गेलै, जे भउजी मुँह फूलौने ठारही चलि गेलखुन?

मनोहर : हमरा दारू पीबाक हिसक छल एहि द्वारे हमर ठारहीवाली सपत देलक, मुदा हमर हिसक छूटल नञि।

राजेश : (किछू सोचैत) हमरो पाहीवाली हमरासँ रूसल रहैत अछि, किएक तऽ ओकर फरमाईश जे पूरा नञि केलियै।

मदन : (खैनी चूनेबाक पट-पट अवाज) हा.. हा... हा... हम तऽ कहैत छी दूनू गोटे अपना-अपना कनियाकेँ मना लियऽ तऽ झगरे खतम।

मनोहर : अहाँ ठीके कहलहुँ मदन भाए। आब हम अपना ठारहीवालीकेँ मनाएब।

मदन : हर-हर महादेव तऽ झटसँ निकालू हमर सवा टाका दक्षिणा।

मनोहर : ओकरा आगाँ सपत खाएब जे आब हम दारूकेँ मुहँ नञि लगाएब।

राजेश : तऽ देरि किएक? चल ने ठारहीवाली भउजीकेँ मनेबा लेल अंधराठारही चलैत छी।

मनोहर : ठीके रौ भाए चल। मुदा जाएसँ पहिने तूँ अपना पाहीवालीकेँ फोन कऽ दहि।

राजेश : हँ, तूँ ठीके कहय छैं, हम एखने पाहीवालीकेँ फोन लगाबैत छी।

(मोबाइलसँ फोन लगेबाक ध्वनी प्रभाव)

स्वर : (महिलाक अवाज) हेलो।

राजेश : हम आइ घर नञि आएब। किएक तऽ हम मनोहर संगे ओकर सासुर जा रहल छी।

स्वर : अहाँकेँ तऽ एक्को रति हमर फरमाईश मोने नञि रहैए।

राजेश : पाहीवाली अहाँ जूनि रूसू हम अहाँ लेल किछू-ने-किछू अवश्ये नेने आएब।

स्वर : ठीक छै तऽ जाऊ, मुदा जल्दीए चलि आएब, बाई।

राजेश : बेस, तऽ बाई-बाई।

(फोन कटबाक ध्वनी)

राजेश : पाहीवाली तऽ मानि गेलैए, चल आब ठारहीवालीकेँ मनाबैत छी।

मनोहर : हँ... हँ... किएक नञि? जल्दी दौगल चल।

मदन : भ... भ... भाए हमर द... द... दक्षिणा।

(हँसैत-हँसैत मनोहर आ राजेशक प्रस्थान)

मदन : (हँसि कऽ) ई दूनू गोटे तऽ गेल ठारही, आब हमहुँ जाइत छी बाबूबरही अपना पंडिताइनकेँ भेट कऽ आबि। हें... हें... हें...।

दृश्य -3

(स्त्रीक जोरसँ हँसबाक आवाज, नीलू आ सोनी दूनू गोटे गीत गाबि हँसी-मजाक करय मे लागल अछि)

नीलू : (गीत गबैत) आबि जाऊ... एक्के बेर आबि जाऊ...।

सोनी : ककरा बजा रहल छीहि गे आ... आ... आबि जाऊ।

नीलू : (मुस्कि मारैत) ककरो नञि तोरा ओझा कें।

सोनी : (गीत गबैत) तऽ कहि ने सोझहा आबि जाऊ... एक बेर आबि जाऊ...।

(ताबैत मनोहर आ राजेशक प्रवेश)

नीलू : (दूनू गोटेकेँ देखी कऽ) दूल्हा बाबू आबि जाऊ... एक बेर आबि जाऊ।

मनोहर : अहाँ बजेलहुँ आ हम हाजीर। कहू की समाचार?

सोनी : ठीके मे गै बहिना! देखही गे, एहन धरफड़िया दूल्हा नञि देखल!

नीलू : प्रणाम यौ पाहुन। बाट मे कोनो दिक्कस तऽ नञि भेल ने?

मनोहर : दिक्कस कि खरंजा आ टूटलाहा पिच पर साइकिल चलबैत काल हार-पाँजर एक भऽ गेल।

सोनी : तऽ आब मजा आबि रहल अछि।

राजेश : मजा तऽ आबि रहल अछि, मुदा हमरा भउजीसँ भेट करा दितहुँ तऽ ठीक्के मे मजा आबि जेतै।

नीलू : अहाँकेँ नञि चिन्हलहुँ यौ हरबड़िया पाहुन?

राजेश : (हँसि कऽ) हा... हा... हमरा नञि चिन्हलहुँ हम अहाँक पाहुनक लंगोटिया दोस राजेश छी।

(सभ गोटे ठहक्का लगबैत)

सोनी : अहाँ कतेक नीक बजय छी। चलू ने घूमय लेल।

नीलू : हँ यौ पाहुन, चलू। चलू गाछी, कलम आ खेत-पथार सभ देखने अबैत छी।

राजेश : हँ... हँ किएक नञि। चलू ने तीनू गोटे घूमने अबैत छी।

(ठहक्का लगबैत तीनू गोटेक प्रस्थान)

मनोहर : वाह रे किस्मत! सासुर हमर मुदा मान-दान एक्कर। हाय रे, किस्मतक खेल!

(गीत गबैत विमलाक प्रवेश। गीतक ध्वनि - ***पिया परदेशसँ सनेश नेने ऐब यौ, पिया परदेशसँ पाजेब नेने ऐब यौ...***)

विमला : (आश्चर्यक भावसँ) अ... अ... अहाँ!

मनोहर : हँ, अहाँ बजेलहुँ आ हम हाजीर छी। कहु कुशल समाचार।

विमला : (रूसि कऽ बजैत) अहाँकेँ बजेलक कें? जाऊ हम अहँसँ नञि बाजब।

मनोहर : अहुँ तऽ कमाले करैत छी। देखू तऽ हम अहाँक लेल कि सभ अनने छी।

विमला : (आश्चर्य भावसँ) कि कि अनने छी हमरा लेल!

मनोहर : (प्यारसँ) ट...ट... टॉफी।

विमला : अहाँकेँ टॉफी छोरी अआरो किछु बजार मे नञि भेटल की?

मनोहर : जिलेबी सिंहारा तऽ किनने छलहुँ अहिं लेल मुदा बाट मे भूख लागि गेल तऽ अपने खा लेलहुँ।

विमला : (उदास भऽ कऽ) अहाँकेँ तऽ एक्को रति हमर चिंते नञि रहैयऽ।

मनोहर : चिंता रहैय तहि द्वारे तऽ आब हम दारू पियब छोड़ि देलहुँ।

विमला : (अकचका कें) ठीके मे!

मनोहर : हँ-हँ, हम सपत खेने छी जे आब हम दारू कहियो नञि पियब।

विमला : ई तऽ बड्ड नीक गप्प। आब हम किछु फरमाईश करी तऽ?

मनोहर : (हँसैत) अहाँ फरमाईश तऽ करू, हम पूरा अंधरा बजारे घर उठौने चलि आएब।

(तखने निलू, सोनी आ राजेशक प्रवेश)

नीलू : दीदी, दीदी चल ने आइ पाहुन संगे बजार घूमने अबैत छी।

मनोहर : हँ हँ चलू-चलू देरि भऽ जाएत। आइ अहाँ सबकेँ अंधरा बजार घूमा दैत छी।

(ठहक्का लगबैत सभहक प्रस्थान)

दृश्य-4

(बजारक दृश्य : बिक्रेता सभहक विभिन्न अवाज)

बिक्रेता : घड़ी लऽ लियऽ, रेडियो लऽ लियऽ।

बिक्रेता : (डूगडूगी बजबैत) हे धिया-पूता लेल डूगडूगी लऽ लियऽ डूगडूगी।

राजेश : भाए, हमरा एकटा रेडियो किनबाक अछि।

बिक्रेता : हईए लियअ ने एहिठाम भेटत, कम दाम मे नीक रेडियो।

मनोहर : लगैए तोहर दिमाग कतौ हरा गेलौह। घरमे टी. वी. छौ तैयो?

राजेश : (अफसोस करैत) भाए, तोरा केना कहियौ रौ।

विमला : कहु तऽ सी. डि., टी. वी.क युगमे कियो आब रेडियो किनैत यै!

राजेश : (हँसि कऽ) ई हमरा पाहीवालीकेँ पसीन तऽ छै, ताहि द्वारे तऽ किनि रहल छि।

मनोहर : तखन तऽ एखने खरीद ले।

राजेश : हे भाए, एकटा बढ़िया क्वालिटीक रेडियो दिहऽ।

बिक्रेता : ई लियऽ भाए साहेब।

राजेश : हईए ई लियऽ टाका।

मनोहर : तऽ चल आब चलैत छी अपना गाम, तोरा पाहीवालीकेँ मनेबा लेल।

नीलू : यौ पाहुन आ हमसभ।

राजेश : अहुँ सभ चलू ने हमर गाम-घर देखि कऽ घुरि चलि आयब।

सोनी : नञि यौ पाहुन, पहिने हमरा सबकेँ घर धरि छोड़ि दियऽ। फेर कहियो अहाँक गामक मेला देखय लेल हम दूनू बहिन आयब।

मनोहर : ठीक छै तऽ चलू अहाँ सबकेँ गाम पर दऽ आबैत छी तकरा बाद हमसभ अपना गाम चलि जायब।

विमला : ई भेल नऽ बुझनुक मनुक्खवला गप्प।

(ठहक्का लगबैत सभहक प्रस्थान)

दृश्य-5

(रसोई घरक दृश्य : कमला गीत गुनगुना रहल अछि, तखने राजेश, मनोहर, विमलाक प्रवेश)

राजेश : सुनू ने, सुनू ने, सुनि लियऽ ने हमर पाहीवाली सुनू ने।

कमला : हमरा अहाँक कोनो गप्प नञि सुनबाक अछि।

राजेश : हे यै जुनि रूसू, सुनू ने...सुनू ने।

कमला : कहलहुँ तऽ नञि सुनैत छियै।

राजेश : अहिंक सुनबाक लेल तऽ बजारसँ अनलहुँ। देख तऽ लियऽ।

कमला : (खिसिया कऽ) हम कि कोनो अहाँ जकाँ बहिर छी?

राजेश : (अफसोस करैत) पाहीवालीकेँ हम केना बुझाबियै जे ई कोनो फरमाईश केने रहैथ।

(विमला अओर मनोहर एक-दोसरासँ कनफूसकी करैत)

मनोहर : (विमलासँ) लगैये कमलाकेँ किछु बूझेबाक चाही।

विमला : कमला बहिन एतेक खिसियाएल किएक छी। हमरा तऽ कहि सकैत छी।

कमला : हिनका की कहियैन्ह बहिन! पहिल सालगीरहक दिन हिनकासँ किछु फरमाईश केने रहियैन्ह मुदा हिनका तऽ कोनो धियाने नञि रहैत छैन्ह?

विमला : कहु तऽ एतबाक लेल एहन खिसियाएब। पहिने देखियौ तऽ सही ओ अहाँ लेल कथी अनने छथि।

कमला : कथी इएहे ने अंधरा बजारक मेथी।

विमला : नञि यै बहिन, अहाँ एक बेर देखियौ तऽ सही।

कमला : (आश्चर्य भावसँ) हे भगवान, ठीके मे!

कमला : राजेशसँ हमरा लेल कथी अनने छी से देखाउ ने।

राजेश : हे भगवान, आइ अहाँ बचा लेलहुँ नञि तऽ आइ फेर सँ।

कमला : की भेल अहाँ कें?

राजेश : (हड़बड़ाईत बजैत अछि) अहाँ बैग खोलि कऽ देखु ने। हम कथि नेने एलहुँ, अहाँ लेल स्पेशल मे।

(बैग खोलबाक ध्वनि प्रभाव)

कमला : (हँसि कऽ) र... र... रेडियो! आब तऽ हम मजासँ कांतिपूर एफ.एम., जनकपूर एफ.एम., दरभंगा विविध भारती रेडियो सुनैत रहब।

राजेश : अहाँक मोन जे सुनबाक अछि से सुनैत रहु, मुदा आब मानि जाउ ने।

कमला : (रूसि कें) रेडियो तऽ अनलहुँ, मुदा हमर झुमका किएक नञि अनलहुँ?

मनोहर : हे भगवान, फेरसँ एकटा नबका मुसिबत तूहिं बचाबिहऽ!

राजेश : हे यै पाहीवाली, हम अहाँ लेल बरेलीवला झूमका सेहो अनने छी। आब मानि जाउ ने।

(सभ गोटे ठहक्का लगाबैत छथि। हँसबाक ध्वनि प्रभाव)

मनोहर : वाह-भाए मानि गेलहुँ। रूसल कनियाकेँ मनाएब तऽ कियो राजेशसँ सीखय।

(सभ गोटे एक संगे ठहक्का लगाबैत छथि)

समाप्त

महंथी छोडू समाजसँ जुडू तखने कलाकार भेटताह

❑ *डॉ. वन्दना कुमारी*

छत्रानन्द सिंह झा, माने बटुक भाए। मैथिली संसार कि आनो समाज हिनका **बटुक भाए** रूपेमे बेसी चिन्हैत आ आदर करैत अछि। वस्तुतः बटुक एकटा चरित्रक नाम थीक। आकाशवाणी, पटनाक प्रायः सबसँ लोकप्रिय कार्यक्रम 'चौपाल'क ई स्थायी चरित्र/पात्र छल, जे मैथिली बाजय छल। **चौपाल**क बटुक भाए मैथिली बजय। एहि पात्रकेँ स्वर देनिहार कलाकार/अभिनेता रहथि 'बटुक भाए', जे कालक्रमे हुनकर पुकारू नाम भऽ गेल, परिचित बनि गेल। तैँ बटुक भाए माने छत्रानन्द सिंह झा आ छत्रानन्द सिंह झा मने बटुक भाए। अपने रंगकर्मी-संस्कृतिकर्मी समाज मे ओ 'भाएजी'क आदरणीय संबोधन सेहो पबैत छथि जेठ-छोट, समकालीन-संगतुरिया सबसँ।

परञ्च बटुक भाए अर्थात् छत्रानन्द सिंह झा माने एतबे नहि। छत्रानन्द माने एकटा व्यंग्यकार- **काँट-कूस** आ **डोकहरक आँखि** सन पोथीक रचनाकार-व्यंग्यकार, **मिथिला मिहिर**क स्तम्भ लेखक, **एकटा गुलाबक लेल** काव्य-ग्रन्थ लिखनिहार कवि-गीतकार-गजलकार, **सीताहरण** नृत्य-नाटिकाक लेखक आ **सुनू जानकी**, **चाही एकटा शिव सिंह** प्रभृति लोकप्रिय नाटकक प्रतिष्ठित नाटककार, मैथिलीक एकमात्र नाट्य विषयक छमाही पत्रिका **भंगिमा**क पूर्व प्रबन्ध सम्पादक, रेडियो नाटकक प्रस्तोता आ रेडियोक चाकरीक सम्पूर्ण अनुभवकेँ लिपिबद्ध कऽ **मैथिली रेडिया नाटक** नामक उपयोगी पुस्तक देनिहार (**एहि विधाक मैथिली मे तऽ ई एकमात्र उपलब्ध पोथी थीक**)।

एतबे नञि, कलकत्ताक बाद पटना ओ शहर अछि (मिथिलांचलसँ बाहर) जतय नियमित आ प्रमुखतासँ मैथिली नाटकक मंचन होइए। 1972-73 मे तकर सूत्रपात कएनिहार मे सर्वप्रमुख छथि- बटुक भाए। ताहिसँ पहिने छिटपुट आ गोटपंगरा नाटक भेल सएह। बटुक भाएक अवलम्बन बनल पटनाक प्रसिद्ध संस्था **चेतना समिति**। 'विद्यापति स्मृति पर्व समारोह'क अवसर पर साल मे एकटा परिपाटी बनल। हिनकहिं प्रयाससँ कतोक महिला कलाकार मैथिली रंगमंचकेँ भेटलैक। श्रीमती प्रेमलता मिश्र 'प्रेम'क निरन्तरता आ सक्रियता मे हिनक योगदानकेँ अनठाओल नञि जा सकैत अछि। 1981-82 धरि ई क्रम चलल। एकाध बेर एहनो भेल एहि अभ्यन्तर मे जे एकटा पूर्णकालिक नाटकक स्थान पर पाँच-छओटा एकांकीक मंचन भेल। दू-एक बेर आनो अवसर पर नाटक प्रस्तुत कएल गेल। एहि एक दशक मे अभिनेताक अतिरिक्त संगठनकर्ताक मुख्य दायित्व हिनकहिं पर रहल। एहि प्रयासक उपलब्धि ई रहल जे पटना मे स्वतंत्र मैथिली रंगमंच आ नियमित रंगकर्मक वातावरण बनय लागल। 1976-77 मे एकटा प्रयासो भेल **रंगलोक** संस्था बनल। मुदा एक्के नाटकक मंचनक बाद ई बंद भऽ गेल।

1981-82 मे **नवांगन** आ **अपरिपन** बनल, फेर आयल **गर्दनीबाग कला समिति** (बाद मे ई **कला समिति** नामसँ गतिविधि कएलक) बटुक भाए **अपरिपन**केँ संग देलैन्ह। मोन नञि लगलैन्ह तऽ प्रसिद्ध नाट्य संस्था **भंगिमा**क स्थापना कएलैन्ह। लगभग 25 वर्ष धरि लगातार एकर अध्यक्ष/सचिव रहि एहि संस्था केँ अभिभावकत्व प्रदान कएलैन्ह आ एकरा एकटा राष्ट्रीय परिचय दियौलैन्ह।

एतेक दीर्घ अन्तराल मे इच्छा रखितो ओ नाटक तऽ कम्मे कएलैन्ह (कारण समयभाव, रिहर्सल तऽ साँझे मे होएत, जे आकाशवाणी मे **चौपालक** प्रसारणक समय रहैत छल), करबौलैन्ह खूब। एसगरे **भंगिमा** डेढ़ सय केर करीब प्रदर्शन अद्यावधि कएलक अछि। एहि सब मंचन मे ओ **नेपथ्यक अभिनेता** रहलाह।

भंगिमाक निर्देशक/अभिनेता किशोर कुमार झा कहलैन्ह, "भाएजी स्पष्ट कहथिन दू ग्रुप रहत संस्थामे एक, नाटक कएनिहारक आ दोसर, नाटकक व्यवस्था कएनिहारक। दोसर ग्रुप, जकरा ओ संगठन कहैत छथिन, केँ बेसी महत्वपूर्ण मानथिन। संगठन रहत तऽ नाटक तऽ कियो कऽ लेत। संगठनकेँ ओ बेसी प्रमुख श्रमसाध्य आ कठिन मानथिन। सब मंच पर उतरय चाहैय, ओहिमे ग्लैमर छै। संगठनक लोक

मानलैन्ह, कार्यकर्ता मानलैन्ह। हमसभ भने अगुआ कहियैन्ह-मानियैन्ह, एखनो मानैत छियैन्ह। भाएजी लग सब समस्याक जेना रेडीमेड निदान रहैत छैन्ह। कलाकार नञि अछि? महिला कलाकार घटैए? टाका नञि अछि? अथवा आन कोना समस्या, सबहक समाधान भाएजी चुटकी बजा करैत छथि।"

मैथिली रंगमंचक एहि शलाका पुरुष आ **नेपथ्यक अभिनेता**सँ समय निर्धारित कऽ 1 अप्रैल 2005कें दुपहरिया मे आकाशवाणी पहुँचलहुँ साक्षात्कार हेतु। प्रश्न सुनौलियैन्ह आ कहलियैन्ह रेकर्डिंग करब गप-सपक। ओ मना कऽ देलैन्ह, कहलैन्ह- "गप-सप मे सबटा बात नञि कहल होएत। आब बहुत रास बात मोनो नै रहैय। तैं हम लिखि कऽ जवाब देब। प्रश्नावली छोड़ि जाऊ।" हुनक 'आदेश' मानबाक अतिरिक्त हमरा लग कोनो विकल्प नञि छल, तहिना कएल। बीच मे दू-एक बेर तगादा कएलियैन्ह आ अंततः 14 अप्रैल 2005 कें हुनक लिखित साक्षात्कार प्राप्त भेल।

ई साक्षात्कार वस्तुतः **'नाटक आ नारी'** विषयक एकटा वृहद शोधक क्रममे कएल गेल छल। शोध-कार्य पूरा भऽ अपन निष्पत्ति प्राप्त कऽ चुकल अछि। मुदा ई साक्षात्कार अद्यावधि अप्रकाशिते छल। आब पन्द्रह वर्ष बाद एहि विशेषांक लेल ई उपलब्ध कराओल गेल अछि। पाठकगण कृपया एहि साक्षात्कार मे आयल तथ्य आ विचार आदिकें साक्षात्कारक तिथिक दर्पण मे देखबाक-गुनबाक कृपा करथि।

प्रस्तुत अछि एहि लिखित प्रश्नोत्तर पर आधारित साक्षात्कारक अविकल रूपः—

अपने स्वयंकें की मानैत छी- नाट्य संगठनकर्ता, नाटककार, अभिनेता, निर्देशक वा किछु अओर?

अभिनेता। आन कोनो कार्य- नाट्य लेखन, संगठन, निर्देशन नाटकसँ संबंधित ई सब कार्य वएह कऽ सकैत छथि जे मूल रूपसँ अभिनेता छथि। अभिनेता मात्र वएहटा नहि छथि जे रंगमंच पर विभिन्न प्रकारक भूमिका करैत छथि। नाटककार, संगठनकर्ता आ कि निर्देशक ई सब कियो 'नेपथ्यक अभिनेता' होइत छथि।

पटना मे मैथिली आ रंगमंचक न्यों रखनिहार मे अपने सर्वप्रमुख छी। एखन धरिक अनुभव आधार पर कहू जे महिला कलाकार जुटेबा मे कतेक कठिनता भेल आ की-की?

हम तऽ 1973सँ पटना मे नाकट शुरू केलौंह। पहिनहुँ पटना मे छोट-छोट नाटक वा नाटकक कोनो एक अंकक मंचन भेल करय। तखन हम अपनाकें सर्वप्रमुख कोना मानी? तखन हँ, एतबा हम मानैत छी जे मैथिली नाटक आ रंगमंचकें समकालीन बनयबा मे हमर प्रयासक लोक सरहाना कएलैन्ह। एहिसँ मंचन मे निरतंरता एलैक। आलेख चयन, रंगमंचक लेल उपयोगी उपकरण यथा- प्रकाश, वेश-भूषा, मेक-अप, सेट डिजाइन, आदिमे अर्थ प्रदान कएल गेल। रंगमंच सुविचारित आ पूर्ण अर्थवत्ताक संग आगाँ बढ़ल, ई प्रयास हमर अवश्य भेल।

महिला कलाकारकें जुटेबा मे कठिनता छलैक अवश्य, मुदा आजुक अपेक्षा कम। पहिने मैथिल बेसी मैथिल छलाह, कला-कर्म मे बेसी रूचि रखैत छलाह, तैं बुझौला-सुझौलाक बाद माए-बाप अपन धिया-पुताकें प्रसन्नतासँ नाटक मे भाग लेबाक अनुमति दैत छलथिन। आइ से नञि भऽ रहल अछि। अपन कला-संस्कृति विकास मे लोकक भागीदारी मे कमी आयल अछि। लोकक रूचि मे क्षरण आयल अछि। पहिने मैथिल कन्याकें रंगमंचसँ प्रेम रहैन्ह, अभिभावकक विरोधक आगाँ ओ मौन भऽ जाइत छलीह। आइ हुनका बेसी स्वतंत्रता छैन्ह, तैयो मौन। एकर अर्थ तऽ हम इएह मानैत छी जे मैथिल कन्या रंगमंच विमुख भेल जाइत छथि।

कि महिला कलाकारक अभाव मे अपनेकें दोसरो भाषा-भाषी महिला कलाकारक सहयोग लेबय पड़ल? जौँ हँ, तऽ हुनका संग कार्य करबा मे की-की दिक्कत भेल?

प्रश्नक पहिल भागक उत्तर **'हँ'** अछि। पहिने कम प्रयोजन छल, आइ बेसी भऽ रहल अछि। एकरा विडम्बने कहबाक चाही। पहिलुका अपेक्षा आइ मैथिल महिलाकें बेसी स्वतंत्रता छैन्ह। सामाजिक वर्जना महत्वहीन भऽ गेल अछि। पारिवारिक लगाम शिथिल भऽ गेल अछि। आइ सम्पूर्ण विश्वक संग मैथिल कन्या मे सेहो महिला सशक्तीकरणक प्रभाव देखल जा रहल अछि। नारी-विमर्शक चर्चा चारूकात भऽ रहल अछि। एहन स्थिति मे मैथिली रंगमंच मे मैथिल कन्याक अभाव पैघ चिन्ताक विषय।

तखन नाटक तऽ मरतै नञि। ई होइते रहत। तैं एहि अभावक पूर्त्तियो पेंच-उधारसँ होइते रहत। तखन भाषाक समस्या तऽ होइते छैक। लिखित शब्द आ उच्चरित शब्दक अंतरकें बुझबा मे आन भाषा-भाषीकें कनके असुविधा तऽ होएबे करैत छैक। ओना कलाकार कोनो भाषाक किएक नहि होए, कलाकार एहि भाषा संकटसँ अपनाकें बचा लैत अछि। एकटा बात कहू वन्दनाजी, नीक अभिनेता/अभिनेत्रीक लेल भाषाक संकट कोनो संकट नञि होइत छैक। इच्छाशक्ति सभहक संकटमोचक होइत छैक।

अनवरत आ अनथक प्रयासक बादो प्रेमलता मिश्र 'प्रेम'क दोसराइत अहाँ सब किएक नहि तैयार कऽ सकलहुँ? अर्थात् जेहो महिला कलाकार अयलीह ओ टिकलीह किएक नै?

रंगमंच लोहाक कारखाना तऽ थीक नञि जे 'अइरन ओर' भट्ठी मे देलियैक आ यथोचित निर्माण प्रक्रियाक बाद ओहिसँ लोहाक यथामाँग छोट-पैघ 'बीम' निकलि जाएत। रंगमंच छियैक तपोभूमि। एहिठाम तपस्या कएल जाइत छैक, साधना कएल जाइत छैक। रंगमंचक साधना वएह कऽ सकैत छथि जनिका रूचि हेतैन्ह, रंगमंच मे आस्था हेतैन्ह आ जे एहि लेल त्याग कऽ सकथि। आस्थेक दोसर नाम थीक प्रेम। प्रेमलताजी रंगमंचक साधना करैत छथि। ताहि लेल त्याग करैत छथि। समयक त्याग, धनक त्याग। त्याग साहसीये कऽ सकैत अछि। जकरा मे साहस रहैत छैक, सएह अपन परिवारक सदस्यक संग तारतम्य बैसा सकैत अछि। नौकरी करब,

पारिवारिक कार्यक निष्पादन आ अभिनय एक्के संग एतेक कार्य 'समय प्रबंधन' कएलासँ भऽ सकैत छैक। प्रेमलताकेँ रंगमंच मे आस्था छैन्ह, अभिनयसँ प्रेम छैन्ह तैँ परिवारक संग तारतम्य बैसयबा मे सफल भेलीह। बहुतो महिला कलाकार रंगमंच पर अयलीह, किछु वर्ष रहलीह, फेर विवाह-दुरागमन भेलैन्ह, सासुर बसय लगलीह। रंगमंचसँ विमुख भऽ गेलीह। मुदा बहुतो एहनो छथि जे पटना मे रहितो अभिनयसँ विमुख छथि। एकरा की कहबैक? रंगमंचक प्रति हुनक आस्था मे कमी आ कि साहसक अभाव? रंगमंचसँ कियो ककरो बान्हि कऽ नहि राखि सकैत अछि, जाहि कलाकारकेँ स्वयं रंगकर्म मे रूचि नञि रहतैक। समयक अभाव, पारिवारिक व्यस्तता ई सब तऽ मात्र बहाना थीक।

महिला कलाकारक अभावक अहाँ की-की कारण मानैत छी?

पहिल कारण महिला स्वयं छथि। रंगकर्मकेँ ओ लोकनि महत्वहीन मानैत छथि, समयक दुरूपयोग मानैत छथि। संगहि निरर्थक, एक्को पाएक आमदनी नञि। जखन कि एहि 'ग्लोबल एज' मे 'कैरियरिस्ट'क लेल रंगमंच एकटा महत्वपूर्ण उपादान अछि। आजुक समय मे भ्वाइस मार्केटिंग (Voice Marketing) क महत्व बड्ड बढ़ि गेलैक अछि। अहाँ अपन वाक् कलासँ कोनो उपभोक्ताक हाथेँ अपन उत्पादकेँ बेचि सकैत छी। अपन विचारसँ प्रभावित कऽ सकैत छी। नाटक ई अवसर प्रदान करैत अछि। एहन तरूण-तरूणी जे अपन कैरियर बनयबा मे लागल छथि, हुनका नाटक अवश्य करबाक चाहियैन्ह।

दोसर कारण अछि सामाजिक स्थिति। ओना सत्य कहल जाए तऽ आब ई कोनो कारण अछिये नञि। समाजक परवाहि जौँ रहितैन्ह तऽ मैथिलानी अभिनय विमुख होएबे नञि करितथि। कला-संस्कृतिविहीन समाज केहन समाज होएत! मैथिलानी से किएक नहि अनुभव करैत छथि?

तेसर कारण अछि नाट्य संस्था। नाट्यकर्मी लोकनि आब महंथी बेसी करैत छथि। समाजक संग उठब-बैसब छोड़ि देने छथि। सम्बन्ध मात्र रंगकर्म धरि सिकुड़ि गेल अछि। हम पहिने बेसी सम्पर्क रखैत छलहुँ खूब घूमी, परिचय बहुतो सँ छल। तहिया युवा छलहुँ, सामाजिक सरोकार छल। गाढ़ परिचय छल। सब कियो हमरा अपन बुझथि। तऽ हमरा संग अपना धिया-पुताकेँ पठयबा मे कोनो असौकर्य नञि होइन। विश्वासक सम्बन्ध छल। आब हम साठि वर्षक भऽ रहल छी। ओतेक घूमब पार नञि लगैत अछि। बंधन ढील भऽ रहल अछि। आन-आन आयोजक-रंगकर्मी एहि सामाजिक सरोकारकेँ महत्व नञि दऽ रहल छथि। महिला कलाकारक अभावक इहो कारण हमरा दृष्टि मे पैघे अछि। समाजसँ जुड़ला पर महिला कलाकारो जुड़तीह, ई हमर अनुभव कहैत अछि। उषा किरण खानक **चानो दाइ** मे सात-आठटा महिला आ प्रायः दूटा पुरुष पात्र अछि। एकर मंचन हम पचीस वर्ष (इस्वी ठीकसँ स्मरण नहि अछि) पूर्वे कएने रही। आइ जौँ एकर मंचन असंभव नहि, तऽ कठिन अवश्ये। ई हम कोना कऽ सकलहुँ?

चारिम कारण अछि पारिश्रमिक नहि देल जाएब। महिला कलाकारक अभावक ई पैघ कारण अछि। एहि अर्थप्रधान युग मे दू पैसा कमयबाक इच्छा सभहक अछि, महिलो चाहैत छथि। कलाकारकेँ पारिश्रमिक देबाक सामर्थ्य जहिया मैथिली रंगमंच जुटा लेत, तहिया महिला कलाकारक अभाव नञि रहतैक। आकाशवाणीकेँ मैथली भाषी महिला कलाकारक अभाव नञि अछि। अमैथिली भाषी महिला सेहो मैथिली साहित्य बाजब सीखि मैथिली नाटकक सफल कलाकार आकाशवाणी पटना मे छथि।

जतेक नाटक अहाँ कएलहुँ-करबौलहुँ, लिखलहुँ कि पढ़लहुँ वा देखलहुँ ताहि आधार पर कहू जे मैथिली नाटक मे नारीक केहन छवि आयल अछि? की ओ उचित आ यथार्थ अछि?

ई प्रश्न बड्ड झंझटिया जतेक नाटक कएलहुँ वा करबौलहुँ तकरा मोन पड़ब अत्यन्त कठिन अछि। पटना मे 31-32 वर्षसँ नाटकक क्षेत्र मे सक्रिय छी, एहि अवधि मे एक सय सँ बेसीये नाटक भेल हेतैक। सबकेँ मोन पाडू? हमर मस्तिष्कक 'मेमरी बॉक्स' घुना गेल अछि। पछिला दू-चारि वर्षक नाटक सब स्मरण अछि।

तथापि मोटा-मोटी एतबा तऽ कहले जा सकैत अछि जे पहिने नाटक मे नारी एकटा समस्या रहथि, समस्याक पैघ कारण रहथि। विवाहक लेल दहेजक टाका नहि जुटा सकबा मे विवश पिताक चिन्ताक कारण नारी। विधवाक भरण-पोषण ओ जीवनयापनक समस्या, अवैध सम्बन्धक संदेह समस्या, नारी-उत्पीड़न, परिवारक विघटनक सूत्रधार नारीयेकेँ देखाओल जाइत रहल अछि। समस्या भेल नारी, स्वयं समाधान नहि खोजैत छल। मुदा विगत पाँच वर्षसँ मैथिली नाटक मे नारी हस्तक्षेप स्पष्ट परिलक्षित भऽ रहल अछि। मैथिली नाटकक नारी आब अपनाकेँ अबला

नञि सबला मानय लागल छथि, अपन मुक्तिक बाट स्वयं ताकि रहल छथि। हमर नाटक **'सुनू जानकी'**, कुमार गगनक **'शपथग्रहण'** प्रभृति बहुतो नाटक अछि। अरविन्द अक्कू सेहो नारी-उत्कर्षकेँ आधार बनाय नाटक लिखने छथि। पचासक दशक मे गोविन्द झाक **'बसात'**क फुलेसरी नारी अस्मिताक प्रवर्त्तके थीक। हम ई निःसंकोच कहि सकैत छी जे नारी-विमर्शक अनुगूंज मैथिली नाटक मे स्पष्ट सुना पड़ि रहल अछि।

की महिला कलाकारक अभाव एकमात्र कारण जे मैथिली नाटक मे पुरुषक अपेक्षा कम संख्या मे नारी चरित्र आयल?

एकदम सँ से बात नञि अछि। जहिया पुरुषे नारीक भूमिका करथि, तहिया किएक नाटक मे नारी पात्रक कम समावेश कएल गेलैक। सत्य बात तऽ ई अछि जे पुरुष प्रधान समाज रहबाक कारण नाटक मे पुरुषक उत्कर्ष देखयबाक लेल नारी पात्रक प्रवेश तखने देखाओल गेलैक जखन ओकर आवश्यकता बुझेलैक। दोसर शब्द मे एना बुझू जे कथावस्तुक अनुरूपेँ महिला पात्रक हस्तक्षेप भेलैक। उषा किरण खानक **चानो दाइ** मे पुरुषसँ कतोक बेसी स्त्री पात्र अछि। तकरो मंचन भेलैक कि नहि? 12.04.2005केँ पटनाक कालिदास रंगालय मे दरभंगाक **'मिथि भारती'** द्वारा **'हल्ला गुल्ला'** नाटक प्रस्तुत कएल गेल, जाहिमे सब कलाकार महिले रहथि। हम स्वयं ई नाटक देखलहुँ। बिहार सरकारक आयोजन छलैक। हम निर्णायक रही।

समाज मे महिला कतिआयल छथि, ताहि लेल महिला स्वयं कतेक दोषी छथि?

समाज मे महिला कतिआयल छथि तकर मुख्य कारण हुनका मे आत्मविश्वासक अभाव अछि। पुरुषो वर्ग सहयोग नञि करैत छथि। आजुक स्थिति भिन्न अछि। तथापि बहु कम्मे पुरुष स्वेच्छासँ अपन बहु-बेटीकेँ आगाँ बढ़ेबा मे सहयोग करैत छथि। पहिने बाप-पित्ती किंवा पतिक धाखसँ चाहियो कऽ महिला आगाँ नञि बढ़ि पाबथि, आइ महिला ओहि लक्ष्मण रेखाकेँ पार कऽ रहल छथि। आत्मविश्वासे सँ से संभव अछि।

'कुलक मर्यादा'क परिभाषा सेहो आइ बदलि गेल अछि। देश-विदेश मे 'टेक्नोक्रैट' वा प्रबंधकक पद पर आसीन मैथिल कन्याक पिता गर्वसँ आब कहैत छथिन जे हमर बेटी-पुतहु एतेक 'डॉलर' कमाइत अछि। 'कुलक मर्यादा'केँ 'डॉलर' पराजित कऽ देलक।

पारिवारिक-सामाजिक बन्धन शिथिल करब स्वभाविकेँ लागैत छैन्ह। पछिला परिस्थिति किछु आर छल, चौहद्दी सीमित छल। आइ वैश्विक परिधि विशाल भऽ गेल अछि। एहि विस्तारित वैश्विक परिधिक लाभ महिलो उठा रहल छथि। एकरे कालचक्र कहल जैत अछि। तैँ कतिआयल रहब परिस्थितिक माँग छल। समय अपन चरित्र निर्धारित करैत अछि। असूर्यंपस्या नारी समयक माँग छल। समय बदलल नारी बदललीह। पुरुषो मे तऽ समयक परिवर्तन स्पष्ट परिलक्षित होइत अछि। नञि?

रंगमंच मे महिला कलाकारक अभाव लेल स्वयं रंगमंच कतेक जवाबदेह अछि?

पूरा-पूरी जवाबदेही नञि महिलाक अछि आ नञि रंगमंचक। परिस्थितिक बाध्यता ई प्रश्न ठाढ़ करैत अछि। रंगकर्मक निरंतरता एहि प्रश्नक उत्तरो भऽ सकैत अछि आ एहि समस्याक समाधानो। मैथिली रंगकर्मक की स्थिति छैक? पटना मे एकमात्र 'भंगिमा' छोड़ि वर्ष मे कैँ कतेक आ केहन नाटक करैत अछि से तऽ सबकेँ देखले सुनल अछि आ जेहो करैत अछि ताहिमे कतेक समय नाटकक गंभीर चिन्तन मे लगबैत छी? बेसी समय तऽ गपबाजीये मे नष्ट होइत अछि। नाटक पर गंभीरता सँ गप्प होएबाक चाही, रिहर्सल मे सब कलाकार समय पर उपस्थित होथि, समयबद्ध कार्य करथि, तखन एहि समस्याक अंत भऽ सकैत अछि। ई स्मरण रखबाक चाही जे पारिवारिक दायित्व निर्वहनसँ समय निकालि कोनो महिला नाटकक लेल अबैत छथि, ताहि समयक दुरूपयोग गंभीर नाटकर्मीक लेल असहनीय भऽ जाइत अछि। जौँ एहि पर ध्यान देल जाए तऽ महिला कलाकारक अभाव नञि रहत।

ई युग अर्थ प्रधान अछि। आर्थिक लाभक आशा सेहो महिलाकेँ रंगकर्म दिसि आकर्षित कऽ सकैत अछि। मैथिली रंगकर्म मे ई कहिया आ कोना संभव भऽ सकैत अछि से भविष्ये पर निर्भर अछि।

प्राध्निक ए.एन. कॉलेज, पटना मे मैथिली विभागक विभागाध्यक्षा छथि।

नाटक : किंकर्त्तव्यविमूढ़
(द्वितीय प्रस्तुति)

नाटक : डाकघर

नाटक : टुस्सा आ बाँझी

नाटक : उगना हाल्ट

नाटक : किंकर्त्तव्यविमूढ़
(प्रथम प्रस्तुति)

मिथिलांगनक नाट्य प्रस
नाटक : मुक्त पंछी

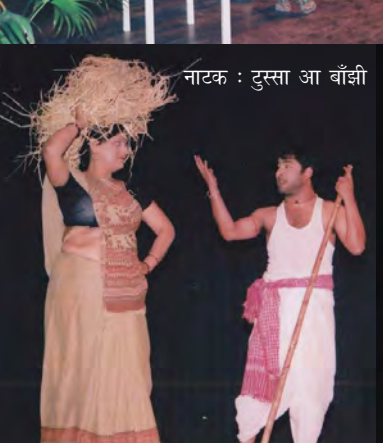
नाटक : टुस्सा आ बाँझी

नाटक : मुक्त पंछी

नाटक : सोन मछरीया
(द्वितीय प्रस्तुति)

नाटक : नहि लागय दुज्जन हासा

नाटक : नहि लागय दुज्जन हासा

नाटक : मुक्त पंछी

नाटक : डाकघर

नाटक : राजा सलहेस

नाटक : नैका बनिजारा

नाटक : नैका बनिजारा

दर्शक

नाटक : उगना हाल्ट

नाटक : छुतहा घैल
(द्वितीय प्रस्तुति)

नाटक : छुतहा घैल
(प्रथम प्रस्तुति)

तुति : एकटा सिंहावलोकन

नाटक : मुक्त पंछी

नाटक : कमरथुआ

नाटक : छुतहा घैल
(तृतीय प्रस्तुति)

नाटक : राजा सलहेस

नाटक : छुतहा घैल
(द्वितीय प्रस्तुति)

नाटक : किंकर्त्तव्यविमूढ़
(प्रथम प्रस्तुति)

नाटक : मुक्त पंछी

नाटक : नहि लागय दुज्जन हासा

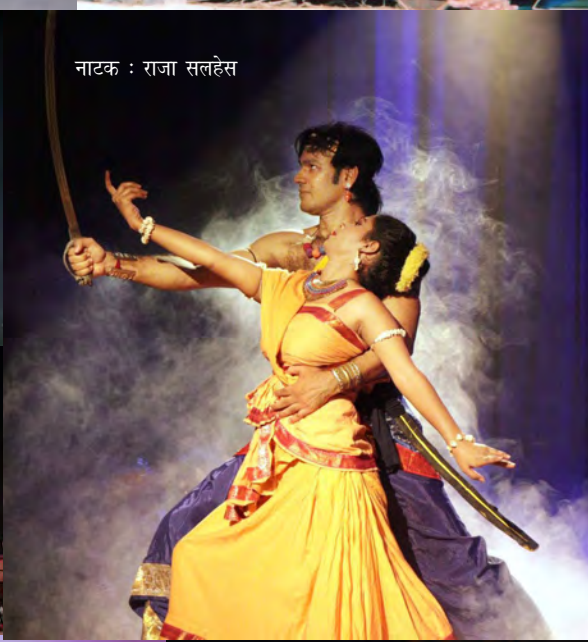
नाटक : राजा सलहेस

नाटक : नहि लागय दुज्जन हासा

नाटक : राजा सलहेस

दीर्घा

नाटक : वैसाख नंदन

नाटक : मुक्त पंछी

बेटी-पुतोहुकेँ गार्जियने रंगमंच मे नहि आबय दैत छथिन

❑ *डॉ. वन्दना कुमारी*

प्रसिद्ध नाटककार पण्डित गोविन्द झा हुनका मंच साम्राज्ञी कहैत छथिन। मैथिली रंगमंचक प्रायः पहिल अभिनेत्री छथि जे मंच पर अयलाक बाद एकरे भऽ कऽ रहि गेलीह। लगभग पचास वर्षसँ नियमित आ निरंतर अभिनयेटा कऽ रहल छथि। साल मे दू-तीन नाटक करिते छथि। अनुमानतः डेढ़ सय केर लगभग नाटक मे अनेक तरहक भूमिका कएलैन्ह। तैयो अपन अभिनयसँ असंतुष्ट छथि आ किछु नव, किछु परफेक्ट करबाक प्रयास मे लागल रहैत छथि। नाटक करबाक क्रम मे भारत आ नेपालक अनेक शहर आ गामक यात्रा कएलैन्ह आ नाटक प्रस्तुत कएलैन्ह। मैथिली रंगमंच मे आबयवाली महिला लोकनिक लेल जे प्रेरणास्त्रोत छथि, अभिभावक छथि।

लगभग पचपन वर्षसँ आकाशवाणी, पटनाक नियमित मैथिली नाटक कलाकार छथि। दर्जनसँ ऊपर हिन्दी-भोजपुरी टी. वी. धारवाहिक आ फिल्म मे सेहो अभिनय कएलैन्ह। जिनका पटनाक मैथिल रंगकर्मी माँ, माताराम, दीदी आदिक सम्बोधन दऽ आत्मीयता आ अपनत्व प्रदर्शित करैत अछि। जे स्वयं मे आब एकटा खाम्ह छथि, एकटा संस्था छथि। ताहि प्रखर अभिनेत्री **श्रीमती प्रेमलता मिश्र 'प्रेम'**सँ विस्तारसँ गप-सप भेल। एहि गप-सप मे कएक बेर ओ अतीत मे भोतिअयलीह भावुक भेलीह। कतोक बेर अपन प्रयासक सफलताक दर्प चेहरा पर चमकि उठलैन्ह। मुदा वर्तमानक चर्चा होइतहिं झूर-इमान भऽ उठलीह। हुनका समक्ष एखनो ई प्रश्न अनुत्तरित छैन्ह जे **'कोना दोसरो महिलाकेँ नियमित मंच पर अटकाओल जाए?'**अपन प्रयास आ प्रेरणासँ अनलैन्ह तऽ पचासेक करीब महिलाकेँ मंच पर, परञ्च साल-दू-साल चारि साल मे सब छोड़ितहुँ चलि गेलीह, स्थायी समाधान एखनो हुनकर चिंतनक केन्द्र मे अछि। एक अप्रैल 2005केँ कंकड़बाग स्थित हुनक आवास पर ई गप-सप भेल छल। एकर रेकर्डिंग कएल गेल।

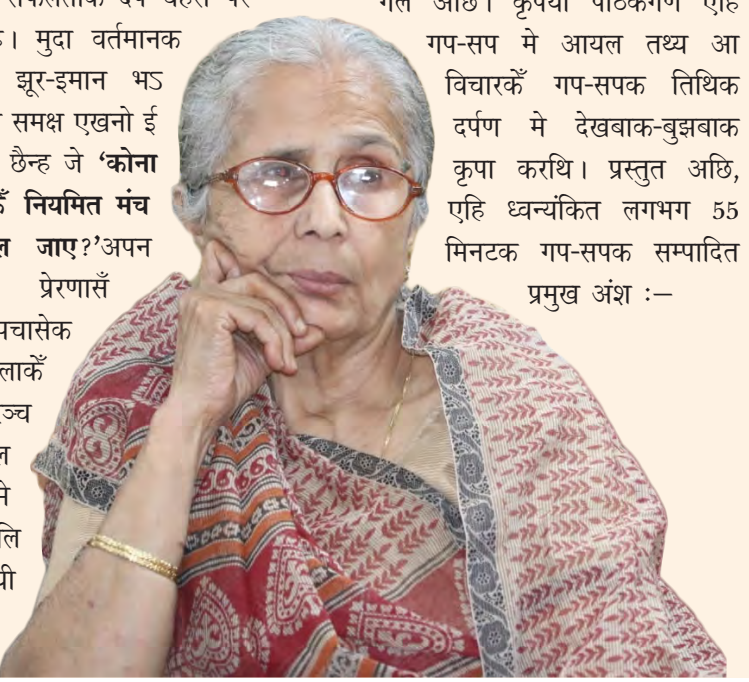

ई गप-सप वस्तुतः **'नाटक आ नारी'** विषयक एक वृहद शोधक क्रम मे कएल गेल छल। शोध-कार्य पूरा भऽ अपन निष्पत्ति प्राप्त कऽ चुकल अछि। मुदा ई अद्यावधि अप्रकाशिते छल। आब पन्द्रह वर्ष बाद एहि विशेषांक लेल ई उपलब्ध कराओल गेल अछि। कृपया पाठकगण एहि गप-सप मे आयल तथ्य आ विचारकेँ गप-सपक तिथिक दर्पण मे देखबाक-बुझबाक कृपा करथि। प्रस्तुत अछि, एहि ध्वन्यंकित लगभग 55 मिनटक गप-सपक सम्पादित प्रमुख अंश :—

1972-73 सँ अद्यावधि अर्थात् 32-33 वर्ष सँ पटनाक मैथिली रंगमंच मे अपने अभिनेत्रीक रूपमे निरन्तर सक्रिय छी। भारत आ नेपालक विभिन्न शहर आ गाम मे जो यदा-कदा सेहो अपने नाटक खेलयलहुँ। एहि अबाध रंगयात्राक सफलताक की रहस्य मानल जाए?

सफलता-असफलता बला बात हम अपने कोना कहू? ई बात तऽ हमर दर्शक-समीक्षक कहताह। तखन लगातार काज करैत रहि गेलहुँ, तकर संभवतः एकटा पैध कारण जे हम विवाहक बाद पटना अयलहुँ आ एखन धरि लगभग स्थायी रूपसँ एत्तहि रहि गेलहुँ। पतिक नौकरी पटने मे रहलैन्ह। हमहुँ शिक्षिका छी। पटने मे पोस्टिंग रहल। बाल-बच्चाक पढ़ाइ-लिखाइ एत्तहिये भेल। तैँ एक बेर जखन आबि गेलहुँ तऽ छोड़बाक वा बचबाक कोनो बहाना नञि छल। आन कियो नञि भेटल तऽ प्रेमलताजी तऽ छथिहे, पकड़ा जाइत रही। बाद मे उम्र बढ़ल, संगठन मे लागि गेलियै। तऽ उमरक लाभ सेहो, सबसँ पारिवारिक सम्बन्ध भऽ गेल। गार्जियन जकाँ आदर भेटय लागल।

जहिया नाटक मे अयलहुँ, मंच पर उतरलहुँ आ आइ धरि परिवारक सहयोग केहन भेटल? की कोनो विरोध वा असुविधा?

समाज आ परिवारक पूर्ण सहयोग रहल। से नञि भेटितय तखन कोना कऽ सकितहुँ? मंचसँ जुड़बाक सूत्र रहय - आकाशवाणी। अठमा वर्ग मे पढ़ैत रही तऽ विवाह भऽ गेल। जखन पतिक संग पटना अयलहुँ 15 जुलाई 1964केँ। एतय अभिभावक रहथि यात्री कका (जनकवि वैद्यनाथ मिश्र 'यात्री')। हुनका लग महेन्द्रू मे रही। वएह आकाशवाणी लऽ गेलाह,

ई कहि जे किछु-किछु लीख, नाटक मे भाग ले। वएह सबसँ भेट करौलैन्ह। ओ कहथिन, "घर मे बैसि कऽ की करबें? अपन पढ़-लिख आ इहो कर।" तऽ सएह भेल। आकाशवाणीसँ जुड़ि गेलहुँ। ओतय जे कलाकार सब रहथि से पहिने सँ चेतना समितिक मंचसँ नाटक करैत रहथि। मुदा महिला नञि रहैन्ह। पुरुषे सब महिलाक भूमिका करैत छलाह। तैँ वएह लोकनि कहलैन्ह मंच नाटक करबाक लेल। कहलैन्ह जे सब गोटे एतय करिते छी तऽ किएक नञि मंचो पर करी। ओहि समय मे आरो लोक सब (महिला) रहथिन। मुदा पता नञि हमरे किएक कहलैन्ह। भऽ सकैए आरो गोटाकेँ कहने हेथिन मुदा ओ सब नञि तैयार भेल हेथिन। हमरे पर जोर देने हेताह वा हम तैयार भऽ गेल हेबैन्ह। हमरा खूब घेरय केर प्रयास भेल। पतिक समर्थन रहय, भऽ सकैए हुनका भेल हेतैन्ह जे कका (यात्री जी) कहैत छथिन तऽ हम कोना रोकबैन्ह? मुदा हमरा ई भय मोन मे छल जे पता नञि समाजक लोक की कहत? अनका अधलाह लगतै। नाटक तऽ कऽ लेब, मुदा मंचसँ उरतला पर हमरा की रिएक्शन भेटत? बाट चलय देत लोक की नञि? ठाम-ठाम किछु बाजत? तकर भय छल तैँ साहस नञि कऽ रहल छलहुँ। मुदा जखन सब गोटे बड्ड जोर देलैन्ह तऽ लागल, चलऽ देखल जेतै जे हेतै से। भरिसक इएह होबक छलै। तैयार भऽ गेलहुँ आ मंचसँ जुड़ि गेलहुँ। परिवारक, पतिक, बाल-बच्चा सहबक सहयोग-समर्थन भेटल।

की लगैये जे जनकवि यात्रीक संरक्षण आ अभिभावकत्व नहि भेटल रहैत, तैयो अहाँ नाटक आ रंगमंचक गतिविधि मे आबि सकितहुँ?

ये बात कहि सकै छी। ततेक विराट व्यक्तित्व रहैन्ह कक्काक जे एकटा खाम्ह जकाँ ठाढ़ भऽ गेलाह। मुदा हम ताहूसँ पहिने रहिका हाई स्कूल मे जखन पढ़ैत रही तऽ नाटक वगैरह केने रहियै। सरस्वती पूजा, 26 जनवरी, 15 अगस्तक अवसर पर। हमर प्राधानाध्यापक रहथि आदरणीय श्री चन्द्रिका

प्रसादजी, श्री सीतानाथ बाबू आर दू-चारिटा शिक्षक छलाह। बहुत कार्यक्रम होए। तऽ रंगमंच तऽ हमर ओतहिये सँ शुरू भऽ गेल रहय। मुदा एतय पटना मे तऽ कका आबि कऽ ठाढ़ भेलाह जे 'ठीक छै करहऽ'। कक्केक कहला पर हम स्कूल मे पढ़ौनी शुरू केलौंह। वएह कहलैन्ह, "**घर मे बैसि कऽ की करबैं? किछु कर, अनेरे नञि बैस।**" स्त्रीगणकेँ विशेष रूपसँ कहथिन। सप्ताह मे एक दिन हमरा सबकेँ भानस नञि करय दैथि, कहथिन्ह- "आइ शोभा (यात्रीजीक ज्येष्ठ पुत्र शोभाकन्त झा) भानस करताह।" कक्का हमरा सबकेँ गरदनियाँ दऽ कऽ सिनेमा देखय पठबै छलाह। साँझ कऽ जबरदस्ती गंगाकात टहलऽ-घूमऽ पठाबथि हम, हुनकर बेटी उर्मिला आ भतीजी उषा किरण खान। उषा बहिन तखन एम.ए. मे रहथि। कॉलेज बंद होइन तऽ ओहो आबि जाइथ। हमरा सब केँ तहिया बड्ड अजूबा लगाय ई सब।

आकाशवाणीक कलाकार वा अधिकारी लोकनिक आग्रह पर जे अहाँ रंगमंच मे गेलहुँ, तकर की इहो कारण वा भय छल जे हिनका लोकनिक आग्रह नहि मानबैन्ह आ मंच पर नहि उतरब तऽ रेडियो मे नाटक करबाक मौका बंद भऽ जाएत? आर्थिको लाभ बंद भऽ जाएत?

ई तऽ हम अहाँ सँ अनहोनी गप्प सूनि रहल छी। एहि सब तरहक बात तऽ ओहि समय मे छलैहे नञि। कल्पनो नञि रहय ककरो जे रेडियो मे टाका लेल जाएब। आजुक हवा आ परिवेश अलग अछि। हमरा सभहक टाइम मे रेडियो ग्लैमर नञि प्रतिष्ठाक स्थान रहय। टाका नञि मर्यादक बात रहय। एतेक शालीनतावला माहौल रहय जे रेडियोक अधिकारी लोकनि कलाकारकेँ देवता बुझथिन। आदर-सम्मान भेटय। टाका सोचि कऽ तऽ हम गेलौ नञि रही।

आइ सेहो आ जहिया नव-नौतार रहल होयब तहिया विशेष रूपसँ, नाटकक रिहर्सल आ प्रदर्शन काल सहयोगी कलाकार लोकनिक, मुख्य रूपसँ पुरुष कलाकारक केहन व्यवहार रहैत छल? कहियो कोनो असुविधाक अनुभव भेल? कोनो कटु अनुभवक उल्लेख करय चाहब?

हमर संघर्षशीलता मे हमर सहयोगी कलाकारक बहुत पैघ योगदान अछि। हुनकेँ लोकनिक बलेँ जतय धरि पहुँचलहुँ से पहुँचलहुँ, जे छी से छी। एसगर तऽ किछु नञि कऽ सकैत छलहुँ। तखन समाजनक की कहब, लोक सब तऽ चुटकी लैए लैत अछि। ओना देखार मे तऽ नञि, मुदा... महिलेवर्ग मे कियो, किनको भौजी कहैत छियनी- तैँ, कियो सखी-बहिनपा छथि- तैँ। मुदा एहि सब बातकेँ कतेक ध्यान देबै? आगाँ बढ़ि गेलौंह तऽ पाछाँ तकनाए बेकार अछि। तैँ जे जे बजैत छथि, बाजथू। लागल रहलहुँ आ एखनो धरि लागले छी, सएह। हमरा कोनो असुविधा नञि भेल। आब हमरासँ अनका असुविधा

भेल होइन तऽ से भऽ सकैत अछि। हमरा तऽ सब पूर्ण तरहेँ सहयोग देलैन्ह।

आ ओ कटु अनुभवबला बात तऽ... एक बेर गामक रहिका हाई स्कूल मे नाटक होएवला रहय, तै मे खूब झमेला ठाढ़ भेल रहय। हमरो भूमिका रहय, सतखलाक दूटा लड़की रहय। ककरौरक दूटा लड़की रहय। रिहर्सल सब होइत रहय। लोक सबकेँ से पता लगलै, जे गामक लड़की सब पार्ट कऽ रहल अछि। धीरे-धीरे गल-गुल हुअय लगलै। हमरा से नञि बुझल छल। हम सब तऽ स्कूलो तेना जाए छलौंह जे हवो-बरसातकेँ पता नञि लगय। किताब-कॉपी काँख तर दबा, खूब बढ़ियासँ झांपि-झूपि कऽ चलि जाए छलौंह स्कूल आ छुट्टी भेल तऽ ओहि तरहेँ चुपचाप वापस घर। लोककेँ तऽ तैयो बुझले छलै जे हम पढ़े छियै। तऽ टोलेकेँ जे बाबू-भैया सब छलाह, बेसी पुरषाह सब, से सब नाक झांपि लै छलाह जे एह, हऽ हऽ हऽ, नाक कटा देलक ई। हमर पतिकेँ बजा केँ कहथिन, "विवाह भऽ गेलै, आब लऽ जइयो, बियाहल बेटी कतौ नैहर रहय, आब सासुर रहत। एतऽ अछि तऽ स्कूल जाइए, से नीक लगैयै? हमरा सबकेँ नञि नीक लगैयै।" जखन नाटकक बात अयलै तऽ हमरा बाबूजीकेँ आबिकेँ किछु गोटा कहलखिन, "ओकरा मना करियौ, नाटक नञि करय दियौ, ई नञि ठीक बात भेलै।" मुदा हमर बाबूजी कहलखिन, "जे करैयै, ठीक करैयै। जखन शिक्षक सब कहै छथिन तऽ ठीक छै, ई कोनो बेजाय बात तऽ नञि भेलै। स्कूल जाइयै, पढ़ैयै, तऽ एहू सब मे भाग लेबाक चाही। एहिमे अनुचित की भेलै?" माए-बाबूजी लोकक बात पर ध्यान नञि देलखिन। आब जै दिन नाटक रहय तऽ हम सब पहुँचलहुँ साँझ मे स्कूल। तैयारी भऽ गेल रहय। मेकअप सब भऽ गेलै। तखन किछु विद्यार्थीये सब शिक्षक सबकेँ कहलकैन्ह जे एम्हरक किछु लोकसब आइ उपद्रव करत, मारि-पीट करत, से सावधान भऽ जाऊ। तऽ मास्टर साहेब सब चिंतित भऽ गेलाह आ हमरा सबकेँ विदा कऽ देलैन्ह। हम सब नाटक नञि कऽ सकलहुँ। पछिला रस्ता सँ हमसब घुरि कऽ घर आबि गेलौंह।

कोनो युवती अथवा महिलाकेँ मंच पर अयबा लेल अहाँ कतेक प्रोत्साहित केलियै? हुनका आ हुनका परिवारकेँ कोना बुझबियै-सुझबियै?

रंगकर्म मे जखन जुड़लहुँ, तखन की जानय कोना भऽ गेलै, कोन संयोग जे हम संगठन मे सेहो खूब सक्रिय भऽ गेलियै। कलाकार सबकेँ एकट्ठा करू, घरे-घरे जाऊ। जाइ छलियै। पहिने बच्चेकेँ पुछियै- 'नाटक करबें?' बच्चा जौँ हँ कहलक तखन माए-बाप वा जे गार्जियन छथिन, तिनका कहियैन्ह- "नाटक करय दियौ। करय दियौ कोनो बात नञि। मैथिली रंगमंच मे पारिवारिक माहौल रहय अछि।" तऽ सबकेँ होइ जे अच्छा अहाँ छियै ने। तैँ जाहि नाटक मे हमर भूमिका नहियो रहै, तैयो हमरा जा कऽ रिहर्सल मे बैसय पड़ै, समय देबए पड़ै। ककरो घर हमर पहुँचि जाएब, सएह बड़का सर्टिफिकेट भऽ जाए। माने हम छियै तऽ भऽ गेलै। खाली एतबेटा आग्रह जे समय सँ लऽ जइयौ आ समय सँ पहुँचा दियौ। समय कम लगै, बस। ई तऽ सामान्ये बात भेल। ओहुना महिलाकेँ देरी भऽ जाए छै तऽ लोककेँ चिंता हुअय लागै छै। समय-साल नञि ठीक छै। पढ़ाइ-लिखाइ रहय छै, परीक्षा छै। ई वयस सेहो कनेक दोसर तरहक रहय छै। काल्हि विवाह-दान हेतै, तऽ कोनो एहन नञि बात होए जे कियो किछु कहय। ई समस्या तऽ सब लेल होए छै। कोनो नाटके लेल नञि होए छै। हमसब एकर व्यवस्था करियै। लड़की सबकेँ पहिने रिहर्सल करबा लियौ, पहिने विदा कऽ दियौ, कियो-नञि-कियो संगे जा कऽ पहुँचा दैक। एहिसँ गार्जियनक विश्वास हमरा सब पर बढ़य छल जे जेना कहलियैन्ह तहिना केलैन्ह। एना कऽ कऽ बहुत परिवार मे गेलियै। जा कऽ पहिने बच्चाक पता करियै आ जइयै तऽ कोनो सबठाम अनचिन्हार परिवार मे नञि ने, चीन्हल-जानल परिवार मे। अनभुआर लग जेबै तऽ हेतनि, बाप रे! की कहि रहल छथि? हमर तऽ सोझ बात रहय कोनो भय-अपमान नहिये छै, आ जे छै से तऽ सोझे सबकेँ देखा रहलैयै, सभहक सामने छै।

अहाँक एहि सुदीर्घ यात्रा मे कतेको अभिनेत्री आएल हेतीह, मुदा कियो मंच पर टिक नै सकलीह? दू-चारि साल बाद ओ निपत्ता किएक होइत गेलीह?

मूल कारण छै जे जतेक बच्चा सब आयल से सब कुमारि छलीह। दसवाँ-एगारहवाँ कि आइ.ए.-बी.ए. मे पढ़यवाली, तऽ फेर नौकरी भेलैन्ह तऽ दोसर ठाम चलि गेलीह। आ कि विवाह भेल तखन पति लग पटनासँ बाहर चलि गेलीह। जतय गेलीह ओतहु नाटक होइते हेतै से जरूरी नञि। एहन स्थिति मे पटने मे रहि रंगकर्म मे जुड़ल रहितथि से कोना संभव

छलै? अपन घर-परिवार, बाल-बच्चा, सासुर मे ओझरा गेलीह। एकटा इहो कारण भऽ सकय छै जे किछु गोटे इहो सोचि कऽ आयल हेतीह जे नाटक मे जायब तऽ हमरा ई भऽ जाएत, ई भेटि जाएत। माने खास उद्देश्यकेँ लऽ कऽ आयल हेतीह आ से पूरा नञि भेल होनि तैँ छोड़ने होथि, मुदा तकर संख्या अत्यंत कम। नहिये जकाँ। जानि बुझि कऽ कियौ नञि छोड़ने हेतीह।

आइ-काल्हि तऽ तेसरे बात देखि रहलियै खाली महिले नञि पुरुषो कलाकार सबमे एखन मीडिया (टीवी-सिनेमा) जे चलि गेलैयै फैशन, जे कोनो सीरियल मे काज करब, फिल्म मे जाएब। ओतय पहिने पूछै छै जे नाटक केने छी? तऽ ओकरा कहय लेल भऽ जाए छै, से ताहि लेल ओ नाटक मे अबैय। ओ कते दिन टिकत? हमरा सबहक टाइम मे ई सब कोनो बात नञि रहय।

आइयो पर्याप्त संख्या मे मैथिली नाटक ओ रंगमंचकेँ महिला कलाकार नै भेटि रहलैयै? एकर की-की कारण अहाँ मानै छियै?

बच्चा सभ तऽ नाटक करय चाहय छै, गार्जियने नञि करय दैत छथिन। वएह समाजक भयसँ। किछु उनट-बिनट भऽ गेलै तऽ? एखन तऽ आइ-काल्हि सुन्नाक स्थिति अछि। लोक सब अबैयै दू-एकटा नाटक केलक आ टीवी-फिल्म मे भागि गेल। पहिनहुँ भागै मुदा कारण दोसर रहय। हमसब सात-सात आठ-आठटा महिला कलाकारवला नाटक केने छी। डायरेक्टर सब पुरुष जकाँ महिला कलाकार चुनथि जे एहि नाटक मे एकरा रोल देबै एकरा नञि। एखन तऽ जे दू-एकटा छथि से आयातित। गैर मिथिला क्षेत्रक कलाकार। ओ आनो भाषा मे काज करय छथि, अपन लक्ष्य प्राप्ति मे सुविधा रहतनि तैँ मैथिली नाटक सेहो करैत छथि। मैथिल महिलाक अभाव भऽ गेलैय। कारण भऽ सकैयै जे शहरक वातावरण गड़बड़ चलि रहल अछि। टी.वी.-फिल्मक जोर छै। लड़कियो सब आब कैरियरिस्ट भऽ गेलै। पढ़ाई मे तेना भिड़ल छै जे एक मिनट समय ओ दूरि नञि करय चाहैत अछि। नाटक मे तऽ मास-डेढ़ मास रिहर्सल करय पड़तैक। आब बियाहो मे कमौआ कनियाँक डिमांड होबय लगलै, तैँ लड़कियो सब ठानि कऽ कैरियर बनाबय लेल फाड़ बान्हि लेलक अछि, इहो कारण अछि।

सुनल अछि जे नाटककार सुधांशु 'शेखर' चौधरी अपन नाटक सब मे अहाँकेँ देखिकेँ अहाँ लेल भूमिका लिखैत छलाह?

हँ, हमरो एकाध बेर कहने छलाह जे ई भूमिका हम अहीं लेल लिखने छी। ई अहीं कऽ सकैत छी। कारण जे तखन बेसी महिला कलाकार छलै कहाँ? गनल-गुथल एक-दूटा। ताहि मे हम हरदम उपलब्ध। दोसरक बारे मे संदेहो भऽ सकै छलैन्ह। एकटा बात आर भऽ सकय छै जे हम जाहि क्षेत्रक छी से हुनका नाटकक चरित्र मे सूट करैत हेबैन्ह। बाजब-भूकब, सभ्यता-संस्कार अनका सिखाबऽ पड़ैत। हमरा मे से सहजहिं भेटैत हेतैन्ह।

एखन धरि जतेक मैथिली नाटक अहाँ कएलहुँ वा देखलहुँ, कहू जे मैथिल नारीक केहन छवि सोझाँ आयल? जे आयल से कतेक उचित आ यथार्थ छैक?

ऊपरे-ऊपर कहबै तऽ नाटककार महिले किएक पुरुषोक जे छवि समाज मे देखैत छथि सएह लिखैत छथि। ओकरा कने नोन-मसल्ला लगा विशेषता दऽ पेश करैत छथिन। मिथिला मे नारीक छवि एखनो पारम्परिक अछि। नारी मे शिक्षाक कमी अछि, अशिक्षा बेसी अछि। कतेक मिथिलानी आगाँ बढ़लीह तकर आबादी मे प्रतिशत निकालू, कतेक हेतीह - नगण्य। जे आगूओ बढ़लीह से दोहरी मारि सहैत। परिवार देखू, तखन कैरियर देखू। नौकरी करू तैयो भानस करैयै पड़त, बच्चाकेँ तैयार करैयै पड़तै। ई मिथिले किए सौंसे देशक नारीक इएह स्थिति अछि। घर-बाहर दूनू लऽ कऽ चलय पड़य अछि। असल मे नारीक शक्ति आ सौन्दर्यो इए अछि। हमरा ई नञि नीक लगैयै जे घर-दुआरि, बाल-बच्चा छोड़ि झंडा उठा लेलौंह। गृहस्थीक केन्द्र अछि नारी। परिवारकेँ जोड़बाक कड़ी अछि नारी। ओ माथ पर आँचर लै तऽ से कोनो दबायल-पिछड़लक निशानी नञि अछि, ओ ककरो लेल सम्मान प्रदर्शनक ढंग अछि। मुदा आब तऽ परिधाने बदलि रहल अछि। साड़ी पहिरत तखन ने घोघ कि आँचर।

सरकारी अकर्मण्यता आ मैथिलक उदासीनतासँ मैथिली रंगमंच बेहाल

❑ *राजेश कुमार कर्ण*

मैथिली नाट्य लेखन मे पद्यात्मक रचना कऽ, लोक कथाकेँ अपन नाट्य लेखनक आधार बना जनमानसकेँ बिसरल लोक कथा आ सामाजिक विषयकेँ हास्य-व्यंग्य आ गीत-संगीतमय प्रस्तुतिसँ मोहित करयवला नाटककार छथि **रोहिणी रमण झा**। प्रस्तुत अछि हुनकासँ भेल दुरध्वनि वार्ताक किछु सारगर्भित अंश :-

नाटककारक रूपमे अहाँक शुरूआत कोना भेल?

1964 सँ नाटकक मंच पर छी। ओहि समय गामक मंच पर रही। 1965-66मे गामसँ पटना आबि गेल रही। 1974मे छात्रानन्द सिंह झा 'बटुक भाए', मुखिया जी सब गोटाकेँ मोन भेलैन्ह जे सरस्वती पूजाक दिन एकटा छोट-छिन नाटक कएल जाए। ओहिमे 'पिया जी'क गोलकनाथ मिश्रा छलाह, बटुक भाए छलाह, हम रही आ अओरो लोक सब छलाह। तऽ पहिल मंचन 1974 मे कंकड़बाग, पटनामे केने रही। 1979 मे नौकरी ज्वाइन करलाक बाद 1980 मे **चेतना समिति**सँ जुड़ाव भेल आ **अरिपन** नाटक संस्थासँ संपर्क भेल। ओहि समय हम एकटा कलाकार रही, नाटककर नञि रही। जखन नाटक देखऽ लगलौंह आ खेला लगलौंह तऽ देखलौंह जे जतेक नाटक ओहि समय अबैत छल सब एकटा समस्या मूलक नाटक रहैत छल, कोनो समस्या लिय माथ पर लऽ कऽ चलि जाऊ। ओहिमे हास-परिहासक कतौ जगह नञि रहैत छल, गीत-नादक बात नञि रहैत छल। हमरा कनि खराब लागल किएक तऽ गामक नाटकमे कनिक हास-परिहास होइत छेल, गीत होइते छेल। हम देखलौंह जे नाटकक स्थिति एहिठाम बदलल अछि। मोन भेल जे किएक नञि एकटा नाटक एहन लिखल जाए जाहिमे कनि हास-परिहास होए, इएह सोचि कऽ 1984मे हम नाटक लिखब शुरू केलौंह। किछु लिखबाक उपरांत अरिपनक डायरेक्टर रहैथ कौशल दास ओ देखला तऽ कहला एहनो कोनो नाटक होए छै, हम हतोत्साह भऽ गेलौंह आ छोड़ी देलियै। परञ्च किछु दिनक बाद ओ प्रशांत कान्त जी देखलैन्ह, पढ़लैन्ह आ कहलैन्ह जे अहाँ एकरा पूरा करू। तऽ पहिल नाटक 1986मे लिखलौंह 'अंतिम गहना' जे चेतना समिति मे मंचन केलहुँ, ओहिये ठामसँ शुरूआत भेल।

आगाँक सफर केहन रहल से बताऊ?

आंगन संस्थामे 'अंतिम गहना' आ 'सामा-चकेवा'क मंचन भेल आ अगिला नाटक 'राजा सलहेस'क मंचनक घोषणा भेल फेर 'लोरिक' सेहो लिखलौंह आ मंचन भेल। एकर अलावे जे नाटक लिखलौंह आ प्रकाशित भेल ओहिमे जट-जटिन, अंतिम गहना, राजा सहलेश, अधिष्ठाता, मृत्युंजया छल अओर अप्रकाशित रचना मे शम्यंतक, लोरिक-चन्द, टिम-टिमाइत दीप, सेहन्ता, किंकर्त्तव्यविमूढ़, बज्र, नहि लागय दुज्जन हासा, मोन पड़ैये, मोन पड़ैये-1, मैक्सीवाली भौजी आदि अछि जकर मंचन विभिन्न नाट्य संस्था द्वारा समय-समय पर कएल गेल अछि।

नाटककार सब गद्य नाटक बेसी लिखैत छथि, मुदा अहाँक झुकाव बेसी पद्य नाटक पर रहैत अछि, तकर की कारण?

हमरा शुरूसँ पद्यमे सरसता भेटल। पद्यमे शब्द पर विशेष जोर पड़ैत अछि, गद्यमे कम। हम बेसी वीर रसक पद्य पढ़ैत छलहुँ, साहित्यिक पद्य पढ़ैत छलहुँ, सुभद्रा कुमारी चौहानक 'झांसी की रानी' सब पढ़ैत छलहुँ। तऽ मन भेल जे पद्यमे लिखब तऽ बेसी बढ़िया रहत। अरिपन मे छलहुँ तऽ अंतर्राष्ट्रीय नाट्य समारोह होइत छल, ओहिमे नाटक लेखनक प्रतियोगिता सेहो होइत छल। 1984 मे जकरा दोसर स्थान आयल छल ओकर 1985 मे मंचनक विचार भेल। मुदा स्वर्गीय गजेंद्र नारायण चौधरी जे कोषाध्यक्ष छलाह ओ कहलैन्ह जे पद्य नाटक नञि होएत, पद्य मे कतौ नाटकक मंचन भेल! हुनकर कथन हमरा लेल चैलेंज बनि गेल। लोक कथाक एकटा धारा होइत अछि। सामा-चकेबाक मंचन भेल, मिथिलांगन सेहो एहि नाटकक मंचन केलक। पद्य नाटकमे बेसी जोर पड़ैत छैक ताहि हेतु हमर झुकाव ओहि दिस रहल अछि।

लोक नाटक आ सामाजिक नाटकक की विशेषता अछि?

विशेषता किछु नञि अछि। सामाजिक नाटक वर्तमान रहैत अछि, लोक नाटक

इतिहास रहैत अछि आ लोक कथाक विशेष अर्थ ई अछि जे कोनो विशेष व्यक्ति कोना अपन विशेष परिस्थितिक कारणेँ प्रसिद्ध भऽ गेलाह। सामाजिक कार्य करैत जखन निधन भेलैन्ह तऽ हुनका लोक देवता मानि लेलकैन्ह। जेना सलहेस सामाजिक कार्य करैक छलाह सभहक झगड़ा छोड़बय छलाह, सभहक कष्ट हरय छलाह तऽ ओ सामाजिक लोक भेलाह। ब्रह्मस्थान की अछि? ओ स्थान जकरा हमसभ बुझै छी जे मरलाक उपरांत ओ लोकक भलाई करताह, तहिना गहबर छल आ अछिये। सामाजिक ओ भेल जे समाज मे समसामायिक घटना घटैत अछि।

मैथिली रंगमंचक वर्तमान आ पहिलेक स्थिति मे की अंतर आइल अछि ? पहिने गामे-गाम नाटक होइत छल आब गाममे बहु कम नाटक भऽ रहल अछि।

पहिने जे गाममे नाटक होइत छल से मैथिली नाटक नञि होइत छल। 90% नाटक हिंदीक होइत छल, 90% कें 99% कहल जाए। 1% मैथिलीक होइत छल, एक-आधटा लेखक रहैथ आ 2-4टा नाटक छल।

ई कहल जा सकैत अछि जे ओहि कालमे मैथिली नाटक बहु कम उपलब्ध छल?

हँ-हँ ठीक बात। हमसभ 1964-65 मे नाटक खेलाइत रहि तऽ मैथिली नाटक भेटबे नञि करैत छल, ओहि समय मैथिल रंगमंच नञि छल। 80क दशकमे किछु-किछु आ 90क दशकमे मुख्य शुरूआत भेल। 1982-83 मे **अरिपन**क स्थापनाक बाद मैथिली नाटकक शुरूआत भेल।

तऽ ओहि समयकें मैथिली रंगमंचक शुरूआत कहल जा सकैत छैक?

पटनामे ओहि समय एकटा संस्था बनल आ साल मे 12 से 15टा नाटक होमय लागल। अंतर्राष्टीय नाटक समारोह एकर केन्द्रबिन्दु छल। वर्तमान स्थितिक बात कहि तऽ 1980क अपेक्षा हमसभ नाटक नञि कऽ रहल छी, करय छी एक-दूटा नाटक।

मतलब ई कहि सकैत छी जे 80-90क दशकक अपेक्षा अखन ह्रास भेल अछि?

कमजोर नञि बहु कमजोर भेल अछि। 80-90क स्थिति अखन जौं बरकरार रहैत तऽ मैथिली रंगमंच आइ बहु ऊपर रहैत।

एकटा प्रश्न मनमे उठि रहल अछि जे एकर मुख्य कारण की अछि? की नाटककार कम भऽ गेलाह? वा सरकारी ध्यान नञि रहल? जखनकि मिथिलाक प्रसार तऽ बहु नमहर अछि?

एकर मुख्य कारण जे पहिने अंतर्राष्ट्रीय समारोह होइत छल जाहिमे 5-7टा नाटक रहैत छल, सब विभागमे पुरस्कार देल जाइत छल। लोक पूरा मनोयोगसँ लागल रहैत छलाह। संस्था सबमे प्रतियोगिता रहैत छल। कलाकार सेहो खुब उपलब्ध रहैत छलाह, लेखक सेहो बढ़लाह। बादमे नाटक समारोह बंद भऽ गेल।

तऽ कि एकरा सरकारी उदासीनता कहल जाए?

सरकारी उदासीनता नञि अकर्मण्यता कहल जाए। हमसभ ओकरा सरकारसँ जोड़बाक प्रयासे नञि केलौन्ह। अरिपन आ भंगिमा छोड़ि कऽ कोनो संस्था रजिस्टर्ड नञि भेल आ सरकारसँ अनुदान लेबाक प्रयास नञि भेल।

जखन मैथिलीकें अष्टम अनुसूची मे स्थान भेटल तऽ सब जगह अकादमी खुजल। तऽ की ई कहि सकैत छी जे दिल्लीसँ पटना धरि ई बढ़िया काज कऽ रहल अछि?

अकादमी की काज करत तकरा विषय मे हम विशेष नञि कहि सकैत छी, कारण जे हम ओहिसँ विशेष नञि जुड़ल छी। मैथिली अकादमी अपन एकटा कोरम पूरा करैत अछि हम एतबा बुझै छी।

दिल्ली मे तऽ कतेको संस्थाकें अकादमी द्वारा नाटक करबाक मौका भेटल अछि।

दिल्ली मे तऽ भेल अछि मुदा पटनामे नञि देखल अछि। अकादमीक कार्य अछि सांस्कृतिक पथकें बढ़ावा देब, ओ तऽ खाली कोरम पूरा करय हेतु एक-दूटा किताब छापी दैत अछि।

मैथिली नाटकसँ मैथिली सिनेमाकें की अस्तित्व बुझा रहल अछि?

जखन मैथिली नाटकक अस्तित्व खतरामे अछि तऽ सिनेमाक बात तऽ जाए दियौ। पिछला साल तऽ कोरोनाक वास्ते कोनो संस्था मैथिली नाटक नञि केलक, ओना हमसभ लागल छी एकर उत्थान करि।

मैथिली रंगमंचमे स्त्री पात्रक कमी अखनो अछि की?

कमी बुझा रहल अछि तकर दूटा कारण अछि। एकटा कारण अछि अभिभावक सब अखनो धरि तकनिकी दृष्टिकोणसँ मानसिक

नाटक 'नहिं लागय दुज्जन हासा'क दृश्य

रूपसँ ओते सबल नञि भेलाह अछि जे अपन बच्चाकेँ जाए देथिन्ह। दोसर कारण हमसभ तकय नञि छियै। कलाकारक कमी हमरा पटना मे नञि बुझा रहल अछि, हमसभ ओहि ढंगसँ प्रयास नञि करय छि।

पटनाक अलावा अओर कतऽ केँ संस्था सब मैथिली रंगमंचमे काम करैत अछि?

मैथिली रंगमंचमे कलकत्ता किछु दिन काम करैत छल, एम्हर हुनको काम नञि चलि रहल छैन्ह। कमो बेस सब जगह इएह स्थिति अछि। नेपाल मे चलय छल राम भरोस कपाड़ि

नाटक 'सामा-चकेबा'क दृश्य

चलाबैत छलाह, महेंद्र मलंगिया जीक सेहो चलैत छेलैन्ह। अखन कतौ धूम-धामसँ नञि चलि रहल अछि।

मिथिलांगनमे अपने नाटककार आ कलाकार दूनू भूमिकामे रहलौंह, मिथिलांगन मैथिली रंगमंचक लेल कतेक समर्पित लागैत अछि?

मिथिलांगनक रंगमंच ठीक-ठाक अछि परञ्च कनेक आर तेज होमय पड़त। खुब सुन्नर काज कऽ रहल अछि मिथिलांगन। दिल्लीमे दोसर संस्था अछि मैलोरंग मुदा जतेक काज ओकरा करबाक चाही ततेक काज नञि भऽ रहल अछि। मिथिलांगन सेहो अनठेकल अछि मुदा एकरा आगाँ बढ़ेबाक चाही।

मैथिली रंगमंचमे काज केनिहार जे आर्थिक रूपसँ सबल नञि हेताह तऽ किएक जुड़ल रहताह?

ई जटिल प्रश्न अछि आ एहि तरहक जटिल प्रश्न मैथलियेटा मे नञि हिंदी मे सेहो अछि।

प्राश्निक वरिष्ठ रंगकर्मी छथि।

रोहिणी रमण झा

पिता : स्व. मंगनु झा
जन्मतिथि : 01.01.1950
शिक्षा : बी. एस. सी.
वृत्ति : (सेवानिवृत) वित्त प्रबंधक, बिहार स्टेट हाउसिंग को-ओपरेटिव फेडरेशन

मैथिली मे प्रकाशित रचना :

1. सामा-चकेबा (लोक कथा-पद्य), 2. जट-जटिन (लोक कथा-पद्य), 3. अंतिम गहना (सामाजिक-गद्य), 4. रजा सहलेश (लोक कथा-पद्य), 5. अधिष्ठाता (सामाजिक-गद्य), 6. मृत्युंजया (सामाजिक-गद्य)

मैथिली मे अप्रकाशित रचना :

1. शम्यंतक (चौरचन) (लोक कथा-पद्य), 2. लोरिक-चन्द (लोक कथा-पद्य), 3. टिम-टिमाइत दीप (सामाजिक-गद्य), 4. सेहन्ता (सामाजिक-गद्य), 5. किंकत्तर्व्यविमूढ़ (सामाजिक-गद्य), 6. बज्र (सामाजिक-गद्य), 7. नहि लागय दुज्जन हासा (सामाजिक-गद्य), 8. मोन पड़ैये (सामाजिक-गद्य), 9. मोन पड़ैये 1 (सामाजिक-गद्य), 10. मैक्सीवाली भौजी (सामाजिक-गद्य)

मैथिलीक सेवा लेल प्राप्त सम्मान :

1. अरिपन संस्था द्वारा आयोजित 'अन्तराष्ट्रीय नाट्य समारोह' वर्ष 1986 मे सर्वोत्तम चरित्र नायक आ आलेख हेतु।
2. चेतना समिति द्वारा वर्ष 1989मे आयोजित नाटक 'आतंक' हेतु सर्वोत्तम अभिनय लेल शैलवाला पुरस्कार।
3. अरिपन संस्था द्वारा आयोजित 'अन्तराटीय नाट्य समारोह' वर्ष 1986 मे सर्वोत्तम रूप सज्जा हेतु।
4. स्व. रविकांत चौधरी स्मारक नाट्य प्रतियोगिता वर्ष 1991 मे सर्वोत्तम मंच सज्जा हेतु।
5. बिहार प्रदेश राष्टीय छात्र संगठनक संस्कृतिक कोषांग द्वारा वर्ष 1996 मे मैथिली कार्य लेल 'कलाश्री' सम्मान।
6. बिहार कलाश्री परिषद द्वारा वर्ष 2007 मे 'लोहा सिंह शिखर सम्मान'।
7. प्रांगण नाट्य संस्था, पटना द्वारा वर्ष 2018 मे रंगकर्म हेतु 'परमरनन्द पाण्डे स्मृति सम्मान
8. चेतना समिति द्वारा वर्ष 2017 मे रंगमंचीय कार्य हेतु 'ताम्र पत्र'।
9. मैलोरंग, दिल्ली वर्ष 2019 मे उत्कृष्ट नाट्य लेखन लेल 'श्याम दरिहरे सम्मान'।

रंगमंचक माध्यमे नवतुरिया लोकनि अपन भाषा-संस्कृतिसँ जुड़ि सकैत छथि

❑ *मुकेश दत्त*

मैथिली रंगमंचकेँ राजधनी दिल्लीमे स्थापित करबा मे अहम भूमिका निभाबयबला, समकालीन मैथिली रंगमंचमे प्रयोगवादी धाराक एकटा सशक्त स्वर्ण हस्ताक्षर, हास्य-व्यंग्य आ गीत-संगीतमय प्रस्तुति लेल प्रसिद्ध, विगत चारि दशकसँ मैथिली रंगकर्मसँ जुड़ल, मैथिलीक अलावे राष्टभाषा हिन्दीक लेल कतेको नाटकक निर्देशन आ नाट्य रूपान्तरण केनिहार **मिथिलांगन**क रंगमंच प्रभारी, उद्घोषक, अभिनेता, निर्देशक **संजय चौधरी** जिनका हिनक मातृभाषाक लेल प्रेम मैथिली रंगमंचसँ बान्हि राखलक सम्प्रति **मिथिलांगन डिजिटल मंच**क लाइव शो आ **मिथिलांगन सुर संग्राम**सँ देश-विदेश मे ख्याति पाबि रहल छथि।

हिन्दी मे मुक्त पंक्षी, ठाकुर का कुआँ, धोखा किसको, अंधेर नगरी चौपट राजा अओर मैथिलीमे सामा-चकेबा, सोन मछरीया, नैका बनिजारा, उगना हॉल्ट, किंगकर्त्तव्यविमूढ़, टुस्सा आ बाँझी, छुतहा घैल, डाकघर, बैसाख नन्दन, फुटपाथ, नहि लागय दुज्जन हासा, राजा सहलेश, कमरथुआ आदिक सफल मंचनसँ प्रसिद्धि पाबि **संजय चौधरी** मैथिली रंगमंचकेँ एकटा नव आयाम देबामे लागल छथि। प्रस्तुत अछि हुनकासँ भेल भेटवार्ताक बिछल अंश :-

सर्वप्रथम 'मिथिलांगन डिजिटल मंच' अओर 'मिथिलांगन सुर संग्राम'क सफल संयोजन लेल हार्दिक शुभकामना।

(हँसैत) ई हमर नञि मिथिलांगनक समस्त टीमक परिश्रम आ परिकल्पनाक फल अछि। एकर पाछाँ लागल रहयवाला सभ लोकक मेहनत रंग आनलक। सुन्दरमजी, सरिता जी, निर्भय जी, राजेशजी, दीपाली जी आ समस्त पदाधीकारीगणक सहयोग आ समर्पणक प्रतिफतल अछि।

'मिथिलांगन डिजिटल मंच'क शुरूआत करबाक विचार कोना आयल?

लॉकडाउन मे घर बैसल रहि, कोनो काज छल नञि। खाली बैसल कछमछी लागय लागल। मनमे आयल घर बैसल कि करी? रंगकर्मी छी तऽ रंगकर्मक कीड़ा काटय लागल। लोकक मनोरंजन केना कएल जाए, एहि लेल कि करक चाही? इएह सभ सोचि मिथिलांगनक पदाधिकारीगणसँ बात केलौंह। हुनक सभहक सकारात्मकता, सहयोग आ प्रोत्साहन पाबि एहि दिश डेग बढ़लौंह। सोचलौंह जे आधुनिकताक सहारा लेल जाए, ओहिमे तऽ हम नील बट्टा सन्नाटा छलौंह। तऽ पुत्र मृत्युञ्जयक प्रशिक्षण आ देखरेख मे तकनीकी ज्ञान लऽ पहिले जुम पर, फेर फेसबुक लाइव पर एकर शुरूआत भेल। एकर एकमात्र उद्देश्य मनोरंजनक संग ज्ञानवर्द्धन आ विचारक आदान-प्रदान करब छल। कार्यक्रमक मिलल सफलता एहिमे कतेको स्तम्भकेँ जोड़ा देलक आ ई एकटा व्यापक डिजिटल मंच बनि गेल।

तऽ लोक जुड़ैत गेलाह, काँरवाँ बनैत गेल। 10 मई 2020केँ मिथिलांगन फेसबुक लाइव कार्यक्रम केर शुरूआत भेल जाहिमे कतेको तरहक स्तम्भ आ कार्यक्रम शामिल भेल, जेना- गागर मे सागर, घोघ तरसँ, बाल मचान, पेंटिंग प्रतिभा, रंग जगत, भनसा घरसँ, विविधा, सौंदर्य कला, विमर्श, टीम मिथिलांगन, गप-सरक्का, गीत-नाद, लोक विज्ञान आदि।

एकरा बाद 13 जुलाई 2020केँ एकरा फेसबुक चैनलक रूपमे सेहो मान्यता भेट गेल, अखन धरि कतेको डिजिटल कार्यक्रमक आयोजन कएल जा चुकल अछि।

हँ, एकटा बात अओर एहि कार्यक्रम मे सभ उम्रक, वर्गक, रूचिक लोकक विशेष ख्याल राखल गेल जे अति प्रसंशनीय आ कारगर रहल।

'मिथिलांगन सुर संग्राम'क प्रेरणा कोना भेल? एकरा सुचारू रूपसँ चलेबा लेल की सभ करय पड़ल? देश-विदेश मे अपन धाक जमा चुकल एहि कार्यक्रमक सफल संजोयन कऽ केहन परिलक्षित होएत अछि?

फेसबुक चैनलक रूपमे मान्यता भेटलाक बाद सभ कार्यक्रम एहि माध्यमे होमय लागल। एहिमे एकटा स्तम्भ छल **घोघ तरसँ,** जाहिमे मिथिलानी खास कऽ गृहणी सभ अपन प्रतिभा देखाबैत छलीह। एहिमे कतेको सुन्नर गायन करैत छलीह मुदा अखन धरि हुनका कोनो

मंच नञि मिलल छलैन्ह। हुनके सबकेँ एकटा मंच देबाक प्रयास अछि ई। **मिथिलांगन**मे शुरूये सँ नवोदित कलाकारकेँ मंच देबाक परंपरा रहल अछि।

एकरा सुचारू रूपसँ चलेनाय एकटा पैघ समस्या छल। अखनो अपन सभहक गृहणी तकनीकी रूपसँ ओतेक होशगर नञि छथि। एकर अलावे समूह बनेनाय, प्रतिभागीकेँ समूहमे बाँटनाय, संचालिका खोजब, जजक उपलब्धता तय करब, वोटिंगकेँ सुचारू बनायक, ओकर गिनती राखब, नेटक उपलब्धता ई सभ समस्या आयल मुदा मैथिलानीक हौसलाक आगाँ सब पस्त भऽ गेल। आब तऽ ई अपन कतेको सौपान पार कऽ अंत दिस अग्रसर भऽ गेल अछि।

आब एकटा रंगकर्मीसँ प्रश्न। अभिव्यक्तिक एहि माध्यम दिस अहाँक झुकाव कोना भेल?

नेनेकालसँ अपन गाम हरौली मे मंचित होएवला नाटककेँ देखैत छलौंह, ओतहिये सँ इच्छा जागल, मुदा ओतय अवसर नञि मिलल। शिक्षाक क्रममे पटना एलौंह, जतय पचमाक पाठ्यपुस्तकक एकांकी मे अभिनय आ निर्देशनक मौका मिलल। फेर गली-मुहल्ला स्तर पर काज केलौंह। रंगमंच पर औपचारिक पदार्पण 'आँगन'सँ 1987-88 मे प्रखर रंगकर्मी प्रशांतकांतक नाट्य निर्देशन मे रंगयात्रा प्रारंभ भेल। ओकरा बाद चेतना समिति, पटनाक कतेको नाटक मे अभिनयक अवसर मिलल।

अहाँ साहित्यक एहि विधाकेँ अपनेबा लेल कोनो विशेष प्रशिक्षण लेलौंह?

एहि क्षेत्रमे एबा लेल कोनो विशेष परिक्षणक आवश्यकता नञि अछि, किएक तऽ रंगमंच अपना-आपमे एकटा पाठशाले होइत अछि। कलाकारकेँ अपना मे उइह हेबाक चाही, एकरा लेल समर्पण आ लगन हेबाक चाही।

ओना हमरा पटनामे वर्ष 1991मे राष्ट्रीय नाट्य विद्यालय द्वारा आयोजित रंग विस्तार कार्यक्रमक दू मासक विशेष प्रशिक्षण कार्यशाला मे देशक ख्याति प्राप्त रंगकर्मी बी. बी. करात, रूद्र प्रताप सेनगुप्त, देवेन्द्र राज 'अंकुर', गुरुशरण सिंह, तापस सेन, भानुभारती आदिक सानिध्य मे निर्देशनक गुर सीखबाक सुअवसर मिलल।

अपन रंगमंचीय अनुभव बताऊ? किनका-किनका संगे काज केने छी आ किनका संग काज करबाक इच्छा अछि?

(मुसकाइत) हमर रंगमंचीय अनुभव बड्ड रोचक, दीर्घकालीन अओर सुखद रहल अछि जकरा एकटा साक्षात्कार मे समेटब कनि कठिन अछि। हँ, ई कहि सकैत छी जे अस्सीक दशकसँ अखन धरि पटना रंगमंचक जतेक रंगकर्मी भेलाह जेना हमर नाट्य गुरु

नाटक 'किंकर्त्यविमूढ़'क दृश्य

प्रशांत कांत, अरविन्द रंजन दास, रविन्द्र कुमार 'राजु', कुमार शैलैन्द्र लगभग सभहक संग अनुभव बाँटय केर अवसर मिलल। आब मात्र नवतुरिया कलाकारक संग काज करबाक इच्छा अछि।

शहरी आ ग्रामीण रंगमंचकेँ अहाँ केना देखैत अछि?

हमर माननाय अछि जे नाटकक जन्मे गाम-घर मे भेल अछि जे पसरैत-पसरैत शहरी भऽ गेल। रंगमंच शहरी होए वा ग्रामीण सभ एक्के होइत अछि अतंर मात्र साधन आ तकनीकक। रंगमंचक व्यवसायीकरण दूनू ठाम अछि, गाममे मंडलीक रूपेँ आ शहरमे थियेटर ग्रुपक रूपेँ।

अहाँ रंगमंचक व्यवसायीकरणक गप कहलौंह, तऽ कि एकर बाजारीकरण संभव अछि?

रंगमंचक व्यवसायीकरण तऽ ठीक अछि, मुदा हमरा हिसाबे एकर बाजारीकरण संभव नञि अछि। हँ, एकर उपाय अवश्ये खोजबाक चाही। एहि क्षेत्रमे रोजगारक असीम संभावना अछि, लोक प्रशिक्षण लऽ टी.वी., सिनेमा आदिक क्षेत्रमे खुब नाम कमा रहल छथि।

अहाँक हिसाबे मैथिली रंगमंचमे कोन तरहक स्क्रिपटक बहुलता आ कोन तरहक स्क्रिपटक न्यूनता अछि?

सभ भाषा सदृश्ये मैथिलीकेँ सहो अपन एकटा संस्कृति आ सभ्यता अछि। मैथिली मे स्क्रिप्टक कोनो कमी नञि अछि, सभ तरहक स्क्रिप्टक बहुलता अछि चाहे ओ लोक नाटक होए, किर्त्तनिया शैलीक नाटक होए वा आधुनिक नाटक स्क्रिप्टक भरमार अछि। कमी अछि तऽ ओकर मंचनक।

अहाँकेँ विशेष रूपसँ कोन नाटककार पसिन छथि?

सभ नाटककारक अपन-अपन शैली छैन्ह नाटक लिखबाक। हम जाहि नाटककारक नाटकक मंचन केलौंह ओहिमे अरविन्द अक्कू, रोहिणी रमण झा, महेन्द्र मलंगीया, गोविन्द

झा, प्रदीप बिहारी, कुमार शैलैन्द्र आदि छथि। ई सभ गोटे अपन विशिष्ट शैली लेल जानल जाइत छथि।

कुमार शैलैन्द्र दिल्लीक पृष्ठभूमि पर प्रथम नाटक 'उगना हाल्ट' एकटा नीक स्क्रिप्ट लिखलैन्ह जकर मंचन मिथिलांगन द्वारा 2008 मे हमरहिं निर्देशन मे भेल।

मैथिली रंगमंचसँ जुड़ल लोककऽ आगाँ विशेष रूपसँ कोन समस्या आबैत अछि?

एहि रंगमंचसँ जुड़ल सभ लोक लेल एक्केटा मुख्य आ पैघ समस्या अछि अर्थक। आर्थिक

समस्यासँ पार पेनाय रंगमंच लेल एकटा पैघ समस्या अछि। हलांकि आब सरकारी अनुदान मिलय लागल अछि जे किछ आश जगौलक अछि।

ई सभटा एकटा निर्देशके कें देखय पड़ैत अछि। लेखकक तऽ नाटक लिखि देलैन्ह, मुदा ओकरा मंच पर साकार करब निर्देशकक जिम्मेदारी भऽ जाइत अछि। वर्त्तमान मे नाटकक प्रोडक्शन कॉस्ट बड्ड बढ़ि गेल अछि। कलाकार, संगीतकार, मेकअप, मंच सज्जा, प्रचार-प्रसार, कौस्ट्युम, प्रकाश आदि सबकें एकत्रित कऽ संतुलन बना प्रदर्शन करब एकटा पैघ दायित्व रहैत अछि।

अहाँ संगीतमय प्रस्तुति लेल विशेष रूपसँ जानल जाइत छी। कि ओ स्क्रिप्टमे रहैत अछि वा अहाँक समायोजन रहैत अछि?

हँ, हमर सभटा नाटकक प्रस्तुति संगीतमय होइत अछि जकर श्रेय हम मिथिलांनक सांस्कृतिक प्रभारी, गायक, संगीतकार सुन्दरम जीकें दैत छियैन्ह। ओ सदिखन हमर मनक मुताबिक गीत-संगीत दऽ नाटक मे जान आनि दैत छथि।

देखियौ नाटक एकटा दृश्य-श्रव्यकला अछि। ई जा धरि सुमधुर आ रोचक नञि होएत ओ दर्शक कें नीरस बनाओत। नीरसकें सरस बनेबाक काज निर्देशकक होइत अछि। हम नाट्य प्रस्तुति मे एकर ध्यान राखैत छी। जौं स्क्रिप्ट मे पहिनेसँ गीत अछि तऽ नीक नञि तऽ दृश्यानुसार ओकर रचना लेखकसँ कराबैत छी।

रंगमंचक मंचन मे एकटा प्रश्न उठैत अछि जे कि निर्देशककें अभिनय करक चाही, कि नहि?

देखु कोनो व्यक्ति पहिने अभिनय करैत छथि तखने निर्देशन। निर्देशनसँ पूर्व हुनका अपना आपकें एकटा अभिनेताक रूपमे स्थापित करब आवश्यक अछि। ई व्यक्ति विशेषक रूचि आ क्षमता पर निर्भर करैत अछि जे ओ अपना-आपकें कोन रूपमे बेसी सक्षम बुझैत छथि।

हमरा विचारे अभिनयक भारसँ मुक्त भऽ निर्देशक बेसी नीक कऽ सकैत छथि, निर्देशककें अपनाकें यथासंभव अभिनयसँ फराक रहक चाही, किएक तऽ ओ अपनाकें नञि देखि पाबैत छथि। कतेक बेर कोनो कलाकारक अचानक पलायनसँ निर्देशककें ई अतिरिक्त भार सेहो उठाबय पड़ैत छैन्ह।

अखन अपने कहलौंह जे नवतुरिया संग काज करबाक इच्छा अछि, तऽ एहि दिशामे कोनो डेग उठेलौंह?

निश्चत रूपसँ, **मिथिलांगन** द्वारा समय-समय पर बालकार्यशाला अओर विभिन्न वर्कशॉपक आयोजन कऽ नवका पीढ़ीकें अपन भाषा आ संस्कृतिसँ जोड़बाक प्रयास कएल जाइत रहैत अछि। एहि दिशामे **मिथिलांगन** द्वारा हमर प्रयास अछि जे एकटा रंगमंडलक स्थापना होए। रंगमंच एहन माध्यम अछि जाहिसँ नवतुरिया लोकनि अपन भाषा-संस्कृतिसँ जुड़ि सकैत छथि। **मिथिलांगन**क प्रयाससँ कतेको बालक-बालिका मैथिली सीखि रहल छथि, जाहिसँ भाषा, संस्कृति आ रंगमंच तीनू समृद्ध होएत।

एकरा अलावे रंगमंचीय वर्कशॉप आ प्रशिक्षण द्वारा भारत मे जतेक आन नाट्य शैली अछि, जेना- मराठी, पंजाबी, गुजराती, बंगाली आदिक मंचनक जानकारी मिलत, ओहिमे भऽ रहल प्रयोगक जानकारी मिलत।

ओना बता दी जे मैथिली रंगमंचकें कोनो आन भाषासँ किछु लेबाक आवश्यकता नञि अछि। एकर कित्तनिया शैली दुनिया भरि मे विख्यात अछि जाहि पर हम बड्ड रास काज कऽ चुकल छी अओर किछ प्रभावी ढ़गसँ करबाक योजना अछि।

मैथिली रंगमंच मे कियो जिम्मेदारी लेबा लेल तैयार नहि

❑ *संजीव कुमार 'बिट्टू'*

प्रसिद्ध रंगकर्मी, शोधार्थी आ मैथिली रंगकर्मकेँ वैश्विक स्तर पर स्थापित करयवला; कतेको राष्ट्रीय-अंतराष्ट्रीय संगोष्ठीमे आलेख पाठ; मैथिली आ हिन्दीक महत्वपूर्ण पत्रिकामे नियमित शोधलेख लिखनिहार; पी.एच.डी.; नेट; संस्कृति मंत्रालय, भारत सरकारसँ सीनियर SRF (2016) आ JRF (2004) प्राप्त डॉ. प्रकाश झाक कुल चारि गोट पुस्तक 'महेन्द्र मलंगियाक सात नाटक (सम्पादित), 'महेन्द्र मलंगिया : व्यक्तित्व आ कृतित्व (सम्पादित)', 'रजिया सुल्तान - मैथिलीमे (अनूदित, प्रकाशन विभाग, भारत सरकार)', 'ज्योतिरीश्वर कृत धूर्तसमागम : प्रस्तुति, प्रक्रिया एवं परिणति (सम्पादित)' पुस्तक प्रकाशित छैन्ह। डॉ. झा 40सँ बेसी नाटकक निर्देशक कऽ चुकल छथि जाहिमे ज्योतिरीश्वरक 'धूर्तसमागम', विद्यापतिक 'मणिमञ्जरि', 'गोरक्ष-विजय' आ पं. जीवन झाक 'सुन्दर संयोग' शामिल अछि, संगहिं 50सँ बेसी नाटकमे अभिनय सेहो कएने छथि। 19म भारत रंग महोत्सव (2017)मे हिनक निर्देशित नाटक 'आब मानि जाउ' आ 20म भारत रंग महोत्सव (2019) मे निर्देशित नाटक 'धूर्तसमागम' चयनित आ मंचित छैन्ह। हिनका वर्ष 1996 मे 'स्वर्ण पदक', अभिनय लेल (ल.ना.मि. विश्वविद्यालय, दरभंगा, बिहार); वर्ष 2013 मे 'युवा रंगनिर्देशक सम्मान' (साहित्य कला परिषद, दिल्ली सरकार); वर्ष 2014 मे 'मिथिला विभूति सम्मान' (अखिल भारतीय मिथिला संघ, दिल्ली); वर्ष 2015 मे 'अरुण सिंहा स्मृति सम्मान' (प्रांगण, पटना, बिहार), वर्ष 2015 मे 'बिहार सम्मान' (कला, संस्कृति एवं भाषा विभाग, दिल्ली सरकार) सँ सम्मानित कयल गेल छनि। डॉ. झा सम्प्रति मैलोरंग रेपर्टरी एवं प्रकाशनक संस्थापक निदेशक, सुप्रसिद्ध रंग संस्था संभव, दिल्लीक अभिनेता आ राष्ट्रीय नाट्य विद्यालय, नई दिल्लीक नाट्यशोध पत्रिका 'रंग प्रसंग'क सहायक सम्पादक छथि। प्रस्तुत अछि रंगमंच विशेष अंक हेतु हिनकासँ लेल भेटवार्तांक किछु सारगर्भीत अंश-

अपन रंगमंचक यात्रक बारे मे संक्षिप्त मे बताबियौ?

हमर रंगमंचक शुरूआत हमर गाम सँ भेल। हमर पिजाजी चुँकि रंगमंचसँ जुड़ल छलैथ। गाम मे अपन रंग समूह छल आ पिताजी प्रोम्पटर रहय छलाह, ग्रामीण नाटक मे प्रोम्पटरे बुझु तऽ एक तरहसँ डायरेक्टर रहैत अछि। भरि-भरि राति हुनका लालटेन तर मे स्क्रिप्ट लिखैत देखैत छलीयैन्ह। जहियासँ होश भेल तहियासँ वएह सब देखैत एलौंह। एहि प्रकारे ओतऽ सँ पढ़ाई खतम केलाक बाद राजनगर एलौंह। राजनगर मे लाइब्रेरी मे नाटक होए छल, तऽ ओहि मे पार्टिशीपेट केनाय शुरू कऽ देलियै, अपने मोने जा-जा कऽ। तकर बाद मधुबनी एलौंह, कॉलेजक दौरान मधुबनी मे इप्टा सँ जुड़लौंह। एकरासँ जुड़लाक बाद कनी नाटकक परिदृश्यक जानकारी होबऽ लागल। फेर संजोगसँ एक बेर पता चलल राष्ट्रीय नाट्य विद्यालय के बारे मे। एकर परिक्षा देलौंह आ पटना मे एकटा वर्कशॉप होए छल संगीत नाटक अकादेमीक ओहि वर्कशॉप सँ जुड़लहुँ, ओतय सबसँ परिचय भेल। फेर ओतय सँ दिल्ली आबि गेलौंह। पहिले संगीत नाटक अकादेमी मे कनी दिन नौकरी केलौंह, फेर साहित्य कला परिषद् मे कनी दिन, तकर बाद फेर एनएसडी मे नौकरी भऽ गेल। तकर बाद देखलौंह जे चारूकात जतेक टीम अछि ताहिमे सबटा मैथिले सब छथि। फेर हुनका सबकेँ मिला कऽ एकटा संगोर केलौंह अओर फेर मैलोरंग बनेलौंह आ नाटक केनाय शुरू केलौंह। इएह छोट-छीन यात्रा अछि हमर।

अपना आपकेँ अहाँ कोन रूपमे (कलाकार वा निर्देशक) बेसी सक्षम आ सफल मानैत छी?

जखन हम अभिनय केनाय शुरू केलौंह तऽ हम अपनाकेँ पहिले वोहिये मे सक्षम मानैत छलौंह, मुदा जहियासँ निर्देशन मे एलौंह हमरा निर्देशने बेसी नीक लागैत अछि। अखन अभिनय कम करैत छी, करबो करैत छी तऽ हिन्दी रंगमंचमे खास कऽ देवेन्द्र राज अंकुर जीक संग।

ओना हमर व्यक्तिगत राय अछि जे जाहि नाटकक हम निर्देशन करी ओहिमे अभिनय नञि करी। कारण तखन हम दूनू विधाक संग इन्साफ नञि कऽ सकब।

एकटा कलाकार आ एकटा निर्देशकक द्वन्द्व कें अहाँ कोना मिटाबैत छी?

हमरा भीतर अखन ई द्वन्द नञि चलल अछि। कारण हम जाहि मैथिली नाटकक मंचन केलौंह ओहिमे निर्देशन केलौंह आ जाहि हिन्दी नाटक मे अभिनय केलौंह ओहिमे निर्देशन नञि केलौंह। तऽ हम अपना भीतर एहि द्वन्दकें पहिने मारि देने छी।

एहिना एकटा निर्देशक आ नाटकारक बीचक तारतम्यकें अहाँ कोना सोझराबैत छी?

ई प्रश्न मैथिली रंगमंच मे बेसी रहैत अछि। ओना हमरा एहि समस्यासँ कम जुझय पड़ल। देखियौ नाटकक प्रस्तुति मे निर्देशक निर्देशन दृष्टिसँ बदलाव अवश्ये करैत अछि। एतय दू बात अछि जौं अहाँक प्रस्तुति खराब भेल तऽ नाटककार बिफरी जेताह जे अहाँ हमर नाटककें खराब कऽ देलौंह, आ दोसर जौं प्रस्तुति नीक भेल तऽ वो कहताह जे हमहुँ इएह चाहैत छलौंह।

देखियौ प्रस्तुति नीक भेलासँ ई द्वन्द नञि रहैत अछि। हम जे सुधार वा बदलाव करैत छी ओहि पाछाँ हमर लौजीक रहैत अछि। जेना हम मलंगीया जीक नाटक वा नचिकेता जीक नाटक केलौंह वा रामेश्वर प्रेम जीक नाटक केलौंक तऽ ओहो सभ हमर प्रस्तुति आ बदलावकें सराहलैन्ह। हमर प्रयास रहैत अछि जे नाटककार जे विषय राखय चाहैत छथि हम ओहि विषयकें अपना नाटकक प्रस्तुतिमे

नाटक 'आज की तारिख में'क दृश्य

हाईट धरि पहुँचाबी।

टकराव तखन होइत अछि जखन लोक एक-दोसरा पर हावी होमय लागैत छथि। दोसराक अहमकें नञि छेड़बाक चाही, तऽ टकरावक समस्ये खतम भऽ जाएत। हमरा ई सभ नञि झेलय पड़ल।

अखन धरि कएल निर्देशन आ अभिनयमे सबसँ बेस्ट परफारमेन्स अहाँकें कोन लागैत अछि?

हमर सभ नाटक मंचनक समय बेस्ट रहैत अछि। हँ, काम करैत आयल अनुभवसँ स्वंय अहाँकें पिछला कएल काजमे सुधार लागत आ ओ आवश्यको अछि। किएक तऽ जौं कियो अपना आपकें पूर्ण कहैत छथि तऽ हुनका मे सृजनशीलताक गुनजाइस खतम भऽ जाइत अछि।

अहाँ अपना मे रंगमंचक सब विधाकें समेटने छी, तैयो अहाँ एकर कोन प्रभागसँ सबसँ बेसी संतुष्ट छी आ किएक?

चुँकि हम दूनू हिन्दी आ मैथिली रंगमंचसँ जुड़ल छी तऽ दूनूक हस्तक्षेप एक-दोसर मे बनल रहैत अछि। हमर सक्रियता दूनू भाषामे समाने अछि। जतय धरि मैथिली रंगमंचक बात अछि तऽ एतय नाटकक लेखन सँ मंचन भऽ गेलाक बाद ओकर सभ प्रक्रिया खतम, मुदा वैश्विक स्तर पर स्थिति ई अछि जे ओतय रंगमंच मंचनक बादे शुरू होइत अछि। एहन काज मैथिली रंगमंच मे अखन धरि नञि भेल अछि, हमर मन अछि एहि तरहक काज करबाक। नाटकसँ जुड़ल लेख, साक्षात्कार, कलाकार, लोक, टीम, संस्था आदिक समग्रता पर जोड़ आवश्यक अछि।

मैथिली नाटकक तीनू धारा (किर्त्तनिया, नेवारी आ अंकिया)क प्रचलन आ एकर उपलब्धि कें अहाँ कोना देखैत छी?

मैथिली नाटकक तीनू धारा जाहिमे किर्त्तनिया, नेवारी आ अंकिया आबैत अछि। एकरा संदर्भ मे हम इएह कहब जे अंकिया हमरा सबसँ बड्ड आगाँ निकलि गेल। जेना

नाटक 'धूर्तसमागम'क दृश्य

नाटक 'आब मानि जाऊ'क दृश्य

नेवारी नाट्य परम्परा नेपाल मे बचल रहल, किर्त्तनिया मिथिला मे रहल आ अंकिया आसाम चलि गेल। मुदा अंकियाक आगाँ बढ़य केर कारण रहल ओकरा मे भेल प्रयोग। अखनो ओकर बहुत रास टीम अछि जे परम्परागत आ आधुनिक ढ़ंगसँ मंचन कऽ रहल अछि। नेवारी आ किर्त्तनिया मे एकर अभाव अछि। वर्त्तमान मे हम आ कुणालजी एहि शैलीमे एक-दूटा मंचन केलौंह।

कियो मेहनत करय आ रिस्क लेबय नञि चाहैत छथि। मिनाप, जनकपुर आ कलकत्ताक टीम किर्त्तनिया नाट्य परम्परा आ एकर शैली पर काज कऽ सकैत छलाह। अंकियावला सभ अपन नाट्य प्रस्तुतिकेँ बड्ड हल्लुक बनेलक आ अपन मंचन जन-जन धरि पहुँचेलक, हमसभ एहिमे पाछाँ रहि गेलौंह आ अंकियावला आगाँ।

'रंगकर्मक रंगमंचीय तत्वक एकटा समग्र दस्तावेजीकरण हेबाक चाही।' एहि संदर्भ मे अहाँक कि विचार अछि?

हमर विचार अछि मैथिली रंगमंचक नाट्य कोष बनय, शब्दक कोष बनय, मैथिल कलाकारक एकटा सूची बनय, जतेक टीम नाटक कऽ रहल अछि ओकर, ओकर कलाकारक, संस्थाक, मंचनक आदि सभहक एकटा क्रमवार सूची तैयार कएल जाए। देखियौ कतेको लोक, कलाकार, रचनाकार एलाह आ अपन जिनगी एहि विधा लेल झोंकि देलैन्ह मुदा अखन हुनक कोनो नामोनिशान वा पहचान नञि छैन्ह।

एहि लेल एकटा रिसर्च सेंटर बननाय आवश्यक अछि। कतेको रचना अछि जकर अनुवाद आ सरलीकरण अखन धरि नञि भऽ सकल अछि, कतेको काज एहन भेल अछि जकर समुचित समीक्षा अखन धरि नञि भेल अछि।

ई मैथिलीक दुर्भाग्य अछि जे मैथिली नाटक पर लिखनिहार पढ़ल-लिखल लोक नाटक पर लिखैत तऽ छथि मुदा आइ पाँच-छह वर्षसँ मैथिली नाटक देखलैन्ह नहि। तऽ बुझु जे ओ एहिमे आयल बदलावकेँ कोना बुझताह। हुनका सबमे मना करबाक हिम्मत नञि छैन्ह। एक-दू गोटे छोड़ि कियो ई नञि कहताह जे हमरा एहि विषयक जानकारी नञि अछि। कियो जिम्मेदारी लेबा लेल तैयार नञि छथि जे हम गलत कऽ रहल छी। सब अपन अस्तित्वकेँ बचेबा मे आ अपनककेँ सर्वोपरि राखय मे लागल छथि।

मैथिली रंगमंच पर आन भाषाक आ आन भाषाक रंगमंच पर मैथिली प्रभावकेँ अहाँ कोना देखैत छी?

रंगमंचे नञि साहित्यक सभ विधा पर एक-दोसरक प्रभाव रहैत अछि आ हेबाको चाही। समाजक सभ प्रक्रिया पर एक-दोसरक प्रभाव आसानी सँ देखल जा सकैत अछि। मैथिलीक प्रभाव आन भाषाक रंगमंच पर आ आन भाषाक रंगमंचक प्रभाव मैथिली पर कि समुचा भारतक रंगमंच पर पारसी रंगमंचक प्रभाव देखल जा सकैत अछि। कारण ई अछि जे मैथिलीकेँ जतेक रचनाकार/साहित्यकार भेलाह ओ सभ मैथिली विषयसँ नञि रहि मैथिली मे रचना केलैन्ह, तऽ ओकर प्रभाव हुनक लेखनी पर भेनाय स्वाभाविक अछि, जौं एना नञि अछि तऽ किछ गड़बड़ अछि, जेना- हरिमोहन झा अंग्रेजीक प्रोफेसर छलाह, मायानन्द मिश्र हिन्दीक प्रोफेसर छलाह, तारानन्द वियोगी संस्कृत भाषासँ छथि, देवशंकर नवीन जे एन यू मे अनुवाद विभाग सँ छथि। परञ्च ई सभ गोटे मैथिली मे अद्भुत रचना केलैन्ह। तऽ कि हिनका सभहक लेखनी पर ओकर प्रभाव नञि रहल होएत? अवश्ये रहत। समकालीनताकेँ बना रखबा लेल एक-दोसरक गुणक लेन-देन आ प्रभावक हस्तांतरण आवश्यक अछि।

मैथिली नाटकक उपलब्धता पर अहाँ कि कहबै?

ई एकटा बिडम्बना अछि जे नाटकक जे गुण अछि से गुणसँ युक्त नाटक मैथिलीमे बड्ड कम लिखा रहल अछि। हमरा जनतबे एकर एकटा ई कारण भ सकैत अछि जे साहित्यक रचनाक जतेक विधा अछि ओहिमे नाटक लिखनाय सबसँ कठिन अछि। अहाँ देखियौ फेसबुक, व्हाट्सअप, ट्युटर वा ब्लॉग आदिमे जतेक लोक लिखैत छथि सभ कविता, कहानी, लेखसँ भरल अछि मुदा एक्कोटा नाटक नञि अछि, किएक? नाटक लिखबसँ मंचन धरि ढेरो समस्या अछि।

युवा रंगकर्मीक रंगमंच दिश बढ़ल झुकावकेँ देखैत अहाँ हुनका कि कहबैन्ह?

हम तऽ कहब जे बेसी-सँ-बेसी योग्य युवा रंगकर्म मे आबैथ। योग्य एहि लेल जे बिनु योग्यताकेँ कोनो क्षेत्रमे गुंजाइस नञि अछि। एहि फिल्डमे क्रियेटिव रहब बड्ड आवश्यक अछि। जतेक सृजनात्मक आ कर्मठशील रहताह हुनक भविष्य उज्ज्वल रहतैन्ह।

प्राशिनक रंगकर्मी आ रंगमंच साधक छथि।

कठोर परिश्रमसँ अपन व्यक्तित्वक विकास रंगमंच लेल करी

❑ *मुकेश दत्त*

'यात्री' मधुबनीसँ अपन रंगकर्मक आरम्भ करैत श्रीराम सेंटर फॉर परफार्मिंग आर्ट्र्ससँ दू वर्षक अभिनय प्रशिक्षण लऽ, 'मैथिलीक समकालीन नाटककार, निर्देशक एवं रंग संस्थाओं के कार्यों का अध्ययन एवं विश्लेषण' विषय पर संस्कृति मंत्रालय भारत सरकारसँ जूनियर फेलोशिप प्राप्त, साहित्य कला परिषद, दिल्लीक संग बाल कार्यशलाक पैघ अनुभव राखनिहार बरहा (मधुबनी) ग्रामवासी मुकेश झा मैथिली रंगमंचक दुनिया मे कोनो परिचयक मोहताज नञि छथि।

देशक जानल-मानल रंगनिर्देशक जाहिमे मुस्ताक काक, कीर्ति जैन, सुमन कुमार, देवेन्द्र राज अंकुर, लोकेन्द्र त्रिवेदी, महेन्द्र मेवाती, जे. पी. सिंह, संजय उपाध्याय, सतीश आनन्द, उत्पल झा, राजेश सिंह, रोहित त्रिपाठी, प्रकाश झा, दया प्रकाश सिन्हा, वशिष्ठ उपाध्याय, महेन्द्र मलंगिया आदिक संग कार्यक अनुभव राखैत दर्जन भरि नाटकमे निर्देशन कऽ चुकल छथि। हिनक निर्देशनमे मंचित भेल मुख्य नाटकमे अमली, एक और द्रोणाचार्य, एकादशी, चिट्ठी, देह पर कोठी खसा दिअ, ग्रामसेवीका, कश्मीर से, सदाचार का ताबीज आदि प्रमुख अछि। संगहिं सौसँ बेसी नाटकमे अभिनय आ ढेड़सयसँ बेसी नाटकमे मंचपार्श्वक अनुभव राखैत छथि।

साहित्य कला परिषद, दिल्ली सरकार द्वारा आयोजित युवा नाट्य महोत्सवमे बतौर निर्देशक भाग लेनिहार, श्रीकान्त मंडल सम्मान आ कुमार शैलेन्द्र सम्मानसँ सम्मानित मुकेश झाजी वर्तमानमे राजधानी दिल्लीक प्रमुख नाट्य संस्था बारहमासाक निर्देशक छथि। प्रस्तुत अछि हुनकासँ लेल भेटवार्ताक बिछल अंश :-

अपन रंगमंचीय जीवनयात्राक परिचय दियौ?

गामक मंचसँ रंगमंचक शुरूआत भेल अछि। हमर गाम मधुबनी जिलाक बेनीपट्टी अनुमंडलक अंतर्गत बरहा अछि। गाम मे काली पूजा, कृष्ण जन्माष्ठमी, छठि पूजा, कोजागरा, सरस्वती पूजनोत्सव पर नाटकक मंचन होएत छल, जाहिमे भाग लेबाक मौका भेटल। ओहि समय हम आर. के. कॉलेज मधुबनी सँ ग्रेजुएशन करैत छलौंह। कॉलेज मे एकटा नाट्यदल 'यात्री'क गठन भेल छल जकर प्रस्तुति 5 सितम्बरकेँ शिक्षक दिवस पर छल, प्रस्तुति देखबा लेल गेल छलौंह। प्रस्तुतिक उपरांत घोषणा भेल जे कियो यात्रीसँ जुड़य चाहैत छी से जुड़ी सकैत छी। हम ओहि दिन यात्रीसँ जुड़ि गेलौहं तकर बाद कॉलेज कम्पटिशन मे भाग लेबऽ लगलौंह संगहिं कोलकाता मे अंतरराष्ट्रीय नाट्य प्रतियोगिताक आमंत्रण यात्री नाट्य दल लग आयल छल। आमंत्रण स्वीकार भेल आ हमरा लोकनि काश्यप कमल लिखित नाटकक तैयारी चन्द्रिका प्रसाद जीक निर्देशन आ महेंद्र मलंगिया जीक देख-रेख मे शुरू भेल। नाटकक मंचन कोलकाता मे भेल वर्ष छल 2002 अओर नाटक बेस्ट प्रस्तुति आ बेस्ट निर्देशनक पुरस्कारसँ पुरस्कृत भेल। मनोबल बढ़ल, एहि क्षेत्रमे भविष्य देखा लागल। एहि क्रममे दिल्लीक श्रीराम सेंटर फॉर परफोर्मिंग आर्ट्स मे दू सालक अभिनय कोर्स मे नामांकन करेलौंह वर्ष 2003-05। मुख्यतया एहिठामसँ हमर व्यावसायिक रंगमंचक शुरूआत भेल। फेर कतेको संस्था संग मिली कऽ सौ सँ बेसी नाटक मे अभिनय आ एक सौ पचास नाटकसँ बेसी मे मंच मे भाग लेबाक मौका भेटल।

विभिन्न निर्देशकक संग कएल कार्यक अनुभव केहन रहल? कोन निर्देशक अहाँकेँ प्रभावित केलैन्ह?

श्रीराम सेंटर मे पढ़बाक क्रम मे कतेको रास निर्देशकक सानिध्य मे काज करबाक सौभाग्य भेटल जाहिमे मुस्ताक काक, श्रीवर्धन त्रिवेदी, सुमन कुमार, नीरज बहल, लोकेन्द्र त्रिवेदी, दिनेश खन्ना, सुरेश शेठी आदि। पास आउट भेलाक बाद कीर्ति जैन, संजय उपाध्याय, सतीश आनंद, राजेश सिंह, रोहित त्रिपाठी आ मैथिली मे प्रकाश झा जीक संग काज करबाक संयोग भेटल। सब निर्देशकक अपन-अपन कार्य शैली छलैंन्ह कियो अभिनय पक्षकेँ लऽ कऽ बेसी काज करैत छलाह, तऽ कियो डिजाइनकेँ लऽ कऽ बेसी चिंतित रहैत छलाह। सब निर्देशक कोनो-नञि-कोनो रूपमे प्रभावित करैत छैथ।

स्वयं जखन निर्देशन केलौंह तकर अनुभव केहन रहल?

हम जखन निर्देशनक मैदान मे उतरलौंह तऽ हम नीकसँ तैयारी केने छलौंह, माने हम अपन पहिल निर्देशनसँ पहिने अनेको निर्देशकक संग सहायक निर्देशक बनि काज कऽ चुकल छलौंह। मुदा तैयौ चुनौती तऽ सोझा मे छले। जखन हम श्रीराम सेंटर मे पढ़ैत छलौंह ताहि समय मे अपन सहपाठी सभहक संग जयशंकर प्रसाद लिखित एकटा कहानी छोटा जादूगरक मंचन स्वंयसँ नाट्य रूपांतरित

कऽ हिंदी भवन मे केने छलौंह वर्ष छल 2004। एहि छोट अवधिकेँ बहुत प्रशंसा भेटल छल, तकर बाद अपन सहपाठी सबकेँ संग मिलि कऽ कतेको छोट-छोट रचनाक प्रस्तुति हमर निर्देशन मे भेल छल। तकर बाद सुमन कुमार, मुस्ताक काक, प्रकाश झा, वशिष्ठ उपाध्याय आदिक संग बतौर सहायक निर्देशक कतेको नाटक मे काज करबाक संयोग भेल। हमर निर्देशन मे बेस चर्चित नाटक हृषिकेश सुलभ लिखित नाटक अमली जे कि 19 जनवरी 2016 मे श्रीराम सेंटर प्रेक्षागृह मे भेल छल, जाहि वर्ष हमरा साहित्य कला परिषद, दिल्ली सरकार द्वारा युवा निर्देशक सम्मान भेटल छल ताहि उपलक्ष्य मे एहि नाटकक मंचन करबाक मौका भेटल छल। अमली नाटकक कतोक प्रस्तुति भेल छल। मैथिली मे महेंद्र मलंगिया लिखित नाटक देह पर कोठी खसा दिअ, हरिमोहन झाक तीन गोट कहानी घरजमाई, तिरहुताम आ ग्रेजुएट पुतौहक मंचन एकादशी नामसँ केने छलौंह। एकादशीकेँ सेहो कतोक प्रस्तुति भेल छल। हरिमोहन झाक एकगोट कथा ग्रामसेविकाक नाट्य रूपांतरित कऽ कऽ सेहो मंचन करबाक सौभाग्य भेटल। हिंदी मे एक शंकर शेष लिखित एक और द्रोणाचार्य, स्वदेश दीपक लिखित काल कोठरी, हरिशंकर परसाईक कथा पर सुमन कुमार लिखित नाटक सदाचार का ताबीजक मंचन हमर निर्देशन मे भऽ चुकल अछि। बाल रंगमच मे निर्देशनकेँ सेहो पैघ अनुभव अछि, साहित्य कला परिषद् द्वारा वर्ष 2006सँ निरंतर ग्रीष्म कालीन बाल रंगमच कार्यशाला मे प्रत्येक वर्ष एक गोट बाल नाटक करबाक सुयोग होएत आबि रहल अछि। एहि क्रममे एकटा लोककथा पर आधारित बाल नाटक श्राप या वरदानक लेखन सेहो केलौंह अछि। जकर निर्देशन हम कतेको बेर कऽ चुकल छी आ आन-आन निर्देशक सेहो एहि नाटकक मंचन कऽ चुकल छैथ।

कोन काज बेसी आसन बुझायत अछि अभिनय वा निर्देशन? किएक?

रंगमंच अपना आप मे एकटा कठिन विधा अछि। शारीरिक आ मानसिक रूपसँ एहि विधा मे कठोर परिश्रम करय पड़ैत अछि। अभिनयक अलग परिश्रम अछि तऽ निर्देशनक लेल अलग परिश्रम छैक। अभिनेता जाहिठाम अपन चरित्र लेल सजग रहैत अछि, ओहिठाम निर्देशकक मोन मे नाटकक सब चरित्रक ग्राफ रहैत अछि। निर्देशक अपन भीतर बनल ओहि चरित्र सब लेल अभिनेता-अभिनेत्री संग जद्दोजहद करैत रहैत छथि आ अभिनेताक माध्यमसँ ओहि चरित्र सबकेँ आकर दैत अछि। अभिनयक कतेको आयाम होएत अछि। नाट्यकलाक ग्रन्थ नाट्यशास्त्रक रचयिता भरतमुनि अभिनयकेँ चारि भाग मे बाँटैत छथि आंगिक, वाचिक, आहार्य आ सात्विक। आंगिक अभिनय शारीरिक हाव-भाव आ गतिसँ सम्बंधित अछि, वाचिक अभिनयक सम्बन्ध अभिनेताक वाक कौशलसँ अछि, आहार्य अभिनयक अंतर्गत ओहि वस्तु सबहक वर्णन अछि जकरा अभिनेता इस्तेमाल करैत अछि आ अंत मे सात्विक अभिनय जकर सम्बन्ध अभिनेताक सत्व भावसँ अछि। एहि चारू अवयवसँ कोनो अभिनेता एकटा चरित्रक गठन करैत अछि आ निर्देशक एहि चारू अवयवक मिश्रणकेँ नियंत्रित करैत अछि। हमरा लेल अभिनय आ निर्देशन दूनू चुनौतीक रूपमे अछि। कोनो विधाकेँ हम कम नञि आँकि सकैत छी।

रंगमंच मे 'मंच पर' आ 'पार्श्व' एक-दोसराक सहयोगी आ पूरक होएत अछि। अहाँ एकरा कोना देखैत छियैक?

लगभग सौ सँ बेसी नाटक मे अभिनय कऽ चुकल छी आ लगभग दू सौ सँ बेसी नाटक मे पार्श्व मंच मे योगदान दऽ चुकल छी। मंच पर सोझ मतलब अछि अभिनय, मुदा मंच पार्श्व मे अनेको काज अछि जाहिठाम रंगकर्मी अपन भागीदारी दऽ सकैत छथि। ओहिमे प्रकाश परिकल्पना (संयोजन आ संचालन), रूप सज्जा, संगीत संयोजन आ संचालन, वस्त्र विन्यास, सामग्री संचयन, मंच प्रबंधन, प्रचार-प्रसार आदि भऽ सकैत अछि। हम कहि सकैत छी रंगमच सिखबाक लेल पार्श्व मंचक फराक-फराक विधा मे काज केनाए बेसी कारगर अछि।

अहाँ मैथिलीक अलावे आन-आन भाषाक रंगमंच सेहो केलौंह अछि ओकर अनुभव केहन रहल अछि?

मैथिली रंगमंचक अलावे हम हिंदी रंगमच मे काज कऽ रहल छी आ एकटा नाटक नेपाली मे केने छी। मैथिली अपन मातृभाषा अछि ताहि लेल एहि भाषामे बेसी सहजताक अनुभव होएत अछि। हिंदीक लेल मैथिली रंगमचक अपेक्षा बेसी मेहनत करय पड़ैत अछि कारण मिथिला वा बिहार प्रदेशसँ आबयवला अभिनेता आ अभिनेत्रीक लेल डिक्शन (उच्चारण)क समस्या रहैत अछि। शुरूआती दौर मे हमरो संग ई समस्या छल मुदा हिंदी रंगमचक लेल एहि समस्याक समाधान लेल अथक प्रयास केलौंह आ एहि समस्या पर विजय प्राप्त भेल। हिंदी रंगमंचक विशाल कैनवास अछि अपेक्षाकृत आन रंगमचक। ओना रंगमच मे भाषा बड्ड बेसी मायने नञि

नाटक 'पैघ नटकिया के'क दृश्य

नाटक 'गांधी ने कहा था'क दृश्य

राखैत अछि। एकटा शब्द छैक रंगभाषा, नाटक चाहे जाहि भाषा मे होइक मुदा एकटा रंग दृष्टि रखनिहार दर्शक नाटक ग्रहणक लैत अछि, जकर उदाहरणक रूपमे रतन थियमक मणिपुरी नाटक वा हबीब तनवीरक छत्तीसगढ़ी नाटककेँ देखल जा सकैत अछि। दर्शक एहि दूनू भाषासँ अनिभिज्ञ रहितो नाटकक पुरा आनंद उठाबैत छथि।

रंगमंचक ग्रामीण मंचन आ शहरी मंचनकेँ अहाँ कोना देखैत छियैक?

नाटक मंचन, नाटकक मंचन होएत अछि चाहे ओ ग्रामीण होए वा शहरी। ग्रामीण रंगमंच सिमित संसाधनसँ मंचित होएत अछि जखनकि शहरी मंचनक लेल कोनो संसाधनक अभाव नञि रहैत अछि। सुन्दर प्रेक्षागृह, लाजबाव प्रकाश व्यवस्था, बेहतर ध्वनि प्रभाव, नाटकक अनुरूप मंच सामग्री आदिसँ शहरी मंचनक प्रस्तुतिकेँ शानदार बनाओल जाएत अछि, ओहिठाम ग्रामीण मंचनक लेल अस्थायी मंच (चौकी वा सेट्रिंग)सँ तैयार कएल जाएत अछि, बाँस बल्ला पर पर्दा टांगि, सिमित प्रकाश व्यवस्था आदिक संग प्रस्तुति दर्शकक सोझा आबैत अछि। मुदा दूनू रंगमचक फार्मूला एक्के रहैत अछि। नाटक लेल आलेख, अभिनेता, निर्देशक, मंच आ दर्शक चाहबे करी।

महानगर मे मैथिली रंगमंचक स्थिति पर किछु प्रकाश दियौ?

वास्तव मे, आब मैथिली रंगमंच मात्र महानगर धरि सिमित रहि गेल अछि मुदा विगत साल भरिसँ कोविड 19क कारणेँ सेहो ठमकि गेल अछि। पहिने मिथिलाक गाम मे खूब रंगमंच होएत छल, दुर्गा पूजा, काली पूजा, सरस्वती पूजा, कोजगारा, छठि आदि अवसर पर निश्चित रूपसँ मैथिली नाटकक मंचन होएत छल मुदा ओ आब समाप्त भऽ गेल। पलायनक कारणेँ मिथिलाक लोक प्रवासी होएत गेल कलकत्ता, दिल्ली, बम्बई महानगर मे पलायन भेल। ग्रामीण रंगमंचक सेहो पलायन भेल। एक समय मे कलकत्ता (कोलकाता) मे खूब मैथिली रंगमंच होएत छल, तकर बाद पटना आ दिल्ली मे होमय लागल। वर्तमान मे दिल्ली मे मिथिलांगन, मैलोरंग, बारहमासा, अछिञ्जल आदि संस्था सब सक्रिय भऽ मैथिली रंगमंच लेल प्रतिबद्ध अछि।

रंगमंच सँ फिल्म दिस मुखर भऽ युवा अक्सर रंगमंच सँ दूर भऽ जाएत छथि, किएक?

रंगमंचक दायरा सिमित अछि, फिल्मक दायरा पैघ अछि। रंगमंच बहुत बेसी लोक धरि नञि पहुँच पाबैत अछि ओहिठाम फिल्म बहुतो लोक लग पहुँचैत अछि। फिल्म आर्थिक रूपसँ समृद्ध बनाबैत अछि तऽ रंगमंच नञि केँ बराबर अर्थ दैत अछि। तऽ रंगमंचसँ फिल्म दिस मुखर भेनाए स्वाभाविक अछि। मुदा ई कहनाय उचित नञि अछि जे रंगमचसँ फिल्म दिस मुखर भऽ युवा रंगमंचसँ दूर भऽ जाएत छथि। कारण हिंदी फिल्म आ रंगमंचक कलाकार चाहे नसीरुद्दीन शाह, परेश रावल, अनुपम खेर, यशपाल शर्मा, मुकेश तिवारी आदि निरंतर रंगमंच पर सक्रीय छथि। हँ, कहि सकैत छी जे मैथिली रंगमंचक एहन कोना चेहरा नञि आयल अछि जे फिल्म मे पैघ नाम होथि आ रंगमंचक लेल सक्रिय नञि होथि।

पहिने केँ अपेक्षा अखन रंगमंच तकनीकी रूपसँ बेसी समृद्ध भऽ गेल अछि, मैथिली रंगमंच मे अहाँ एकरा कोना देखैत छी?

नगर, महानगर मे मैथिली रंगमंच भऽ रहल अछि, जतय आन-आन भाषाक रंगमंच सेहो समानान्तर भऽ रहल अछि। कोलकाता मे जतय बंगाली रंगमंचक प्रभाव अछि आ मुम्बई मे मराठी ओतहिं पटना आ दिल्ली मे हिन्दी रंगमंचक प्रभाव देखना जाएत अछि। बंगाली, मराठी, हिंदी आदि रंगमंच पहिने सँ तकनीकी रूपसँ समृद्ध छल एहि कारणेँ मैथिली रंगमंच तकनीकी रूपसँ समृद्ध भेल अछि। नगर-महानगर मे मंचित मैथिली नाटक तकनिकी रूपसँ कत्तोसँ कमजोर नञि बुझाइत अछि। महागर आ नगर मे सब संसाधनसँ परिपूर्ण प्रेक्षागृह उपलब्ध रहैत अछि। सेटक लेल कुशल कारीगर भेटि जाएत अछि, प्रकाश विशेषज्ञ, ध्वनि विशेषज्ञ, कुशल मेकअप मैन सहजे उपलब्ध भऽ जाइत अछि।

एकटा युवा रंगकर्मीक, युवा आ नव रंगकर्मीक लेल की संदेश रहत?

एखन केर युवा बड्ड बेसी सजग आ बुधियार छथि। युवाकेँ बुझल छैक जे हमरा कि करबाक अछि? तखन बेसी युवा रंगमंचक सीढ़ी बुझि रंगमंच मे अबैत छथि जे बड्ड बेसी उचित नञि अछि। फिल्म आ रंगमंच दूनू फराक-फराक विधा अछि। फिल्मक लेल अलग पढ़ाई अछि तऽ रंगमंचक लेल अलग पढ़ाई अछि। फिल्मक तकनीक अलग अछि तऽ रंगमचक तकनीक अलग अछि। हँ, रंगमंच कएल कलाकार जौं फिल्म मे काज करैत छथि तऽ रंगमंचक फायदा हुनका फिल्मो मे भेटैत छैन्ह। जौं अहाँकेँ फिल्म मे जेबाक अछि तऽ बहुत बेसी समय रंगमंच मे देनाए उचित नञि अछि। हँ, एहि विधाक जनबाक आ अपन व्यक्तित्वक विकासक लेल थोड़ेक समय धरि रंगमंच मे पूर्ण निष्ठा आ इमानदारीसँ काज करब आवश्यक अछि। तकर बाद अनेको फिल्मक अध्ययन लेल संस्थान अछि ओहि मे नामांकन कऽ आगाँक बाट धरि। जौं रंगमंच मे अपनाकेँ समृद्ध करबाक अछि तऽ रंगमंचक पढ़ाई मे तन्मयताक संग आगाँ बढ़बाक चाही। रंगमंचक पढ़ाई लेल अनेको संस्थान, विश्वविद्यालय अछि। अंत मे, युवाक लेल जे एहि विधा/क्षेत्र मे कोनो शार्ट-कॉट बाट नञि अछि, चाहे फिल्म होए वा रंगमंच कठोर परिश्रम चाहबे करी।

लोकक तानाकेँ अपन शक्ति बनेलौंह

❑ *संजय चौधरी*

एकल नाटकक लेखन आ मंचन मे नव कीर्तिमान बना राष्ट्रीय स्तरक हिन्दी व मैथिलीक लेखिका, अनुवादिका, थिएटर-फिल्म कलाकार, पत्रकार, सामाजिक कार्यकर्ता, लोककला संवाहिका, प्रेरक प्रशिक्षक, कैंसर विजेता आ बहुआयामी प्रतिभाक धनी विभा रानी जीक बाइस गोट प्रकाशित किताब आ कतेको रचना हिन्दी आ मैथिलीक किताबमे संकलित छैन्ह। हिनक लिखल आ अभिनीत एकल नाटक मे- बालचन्दा, लाइफ इज नॉट ए ड्रीम, बिम्ब-प्रतिबिम्ब, एक नई मेनका (रमणिका गुप्ता), भिखारिन (टैगोर), चंदू मैंने सपना देखा (नागार्जुन), सामा-चकेबा, साध रोए के (मिथिलाक लोक पर आधारित), नौरंगी नटिनी (संजीव), सीता संधान आदि प्रमुख अछि।

मैथिलीक 3टा साहित्य अकादमी पुरस्कृत किताब 'कन्यादान' (हरिमोहन झा), 'राजा पोखरे मे कितनी मछलियां' (प्रभास कुमार चौधरी), 'बिल टेलर की डायरी' व 'पटाक्षेप' (लिली रे) हिन्दीमे अनूदित अछि। समकालीन विषय, फिल्म, महिला व बाल विषय पर गंभीर लेखन हिनक प्रकृति छैन्ह। मिथिलाक 'लोक' पर गहराईसँ काज करैत 2 गोट लोककथाक पुस्तक 'मिथिला की लोक कथाएं' व 'गोनू झा के किस्से'क प्रकाशनक संग-संग मिथिलाक रीति-रिवाज, लोक गीत, आदिक वृहत खजाना अछि हिनका लग।

कथा संग्रह 'बन्द कमरे का कोरस', 'इसी देश के इसी शहर मे' व 'चल खुसरो घर अपने' (हिन्दी) आ 'खोह सँ निकसइत' (मैथिली) मे छैन्ह। सात गोट प्रकाशित नाटक मे मैथिलीमे लिखल नाटक 'भाग रौ' आ 'मदति करू संतोषी माता' अओर हिन्दी मे 'आओ तनिक प्रेम करें', 'दूसरा आदमी, दूसरी औरत' आ 'अगले जनम मोहे बिटिया ना कीजो' प्रमुख अछि। हिनक अभिनित एकल नाटक 'मैं कृष्णा कृष्ण की' खुब प्रसंशनीय रहल अछि अओर हिनक लिखल नाटक 'दूसरा आदमी, दूसरी औरत' राष्ट्रीय नाट्य विद्यालय, नई दिल्लीक अन्तर्राष्ट्रीय नाट्य समारोह भारंगममे प्रस्तुत कएल जा चुकल अछि। नाटक 'पीर पराई'क मंचन देश भरिमे भेल अछि। 'आओ तनिक प्रेम करें'केँ 'मोहन राकेश सम्मान'सँ सम्मानित कएल गेल। 'अगले जनम मोहे बिटिया ना कीजो' सेहो 'मोहन राकेश सम्मान'सँ सम्मानित अछि। स्त्री विमर्श पर व्यंग संग्रह 'छम्मकछल्लो कहि' अओर कैंसरक अपन अनुभव पर दूगोट द्वि भाषीय काव्य संग्रह 'समरथ/CAN', 'क्यूँकि जिद है/MUST' आ एकटा नाटक 'पॉपकॉर्न ब्रेस्ट्स' अछि। मैथिली फिल्म 'मिथिला मखान' संग 'अनवांटेड'क गीत लेखनक संग हिनक नव मैथिली नाटक प्रस्तुति छैन्ह 'बलचन्दा' अओर पोथी अछि 'प्रेग्नेन्ट फादर' आ 'रहथु साक्षी छठ घाट'।

थिएटर आ आर्टमे अटूट विश्वास राखैत छथि। नियमित रूपसँ थिएटर आ आर्ट वर्कशॉपक अलावे कला आ रंगमंचक माध्यमसँ विविध विकासात्मक प्रशिक्षण कार्यक्रम सेहो आयोजित करैत रहैत छथि।

सम्मान - हिंदी आ मैथिली मे हिनक साहित्यिक, नाट्य, सामाजिक योगदान हेतु कतेको पुरस्कार आ सम्मान प्राप्त भेलैन्ह, जेना- कथा पुरस्कार(1999), घनश्यामदास सराफ साहित्य सम्मान (1999), डॉ. माहेश्वरी सिंह 'महेश' सर्वोत्तम साहित्य सम्मान (1999), मोहन राकेश सम्मान (2005), इंडियन ऑयन महिला उपलब्धि पुरस्कार, दू बेर सर्वश्रेष्ठ सुझाव पुरस्कार, प्रथम राजीव सारस्वत सम्मान (2009), व्यंग्य ब्लॉग लेखनक लेल प्रथम लाडली मीडिया अवार्ड (2009), 1 विंगी रत्नाकर सम्मान - भोपाल (2009), प्रथम व्यंग्य रचनाकार सम्मान (2009), साहित्यसेवी सम्मान (2011) सहसादेवी सम्मान - चेन्नई (2011), विष्णुदास भावे सम्मान (2011), महाराष्ट राज्य सरकार द्वारा सर्वोत्तम महिला नाट्य कलाकार (2011 आ 2013)। ई-शोध नाट्य लेखन सम्मान (2014), डॉ. अनिल मुखर्जी नाट्य सम्मान (2015),रासकला नाट्य लेखन सम्मान (2017), नेमिचन्द्र जैन नाट्य लेखन सम्मान (2019-20), रहथु साक्षी छठ घाट लेल मैथिल समाज, रहिका द्वारा किरण पुरस्कार (2021) आदि।

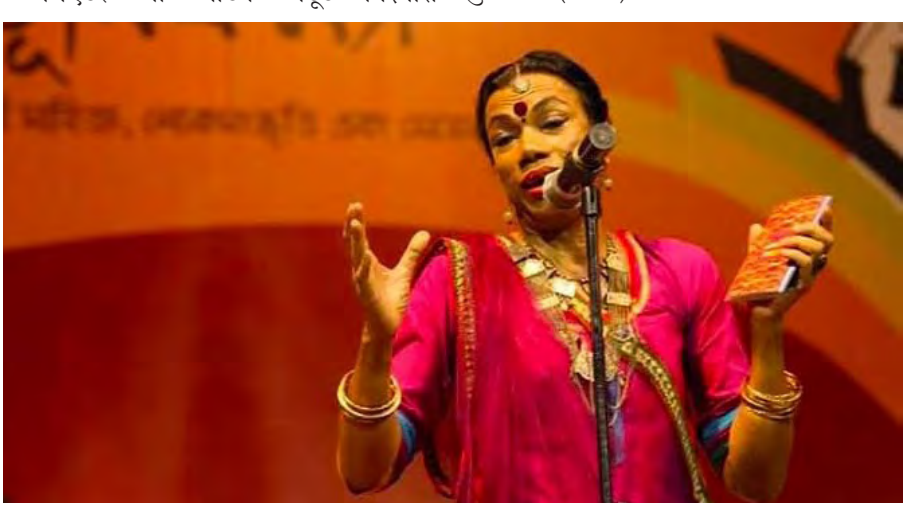

राखयवाली ई रंग जीवनक संग कला, रंगमंच, साहित्य व संस्कृतिक माध्यमसँ समाजक विशेष वर्ग लोकक बीच अपन सार्थक पहल

परिचायक वरिष्ठ रंगकर्मी, अभिनेता, निर्देशक अओर मिथिलांगनक रंगमंच प्रभारी छथि।

स्त्री पात्रक भूमिका निभेलासँ रंगमंच दिस बढ़ल झुकाब

❑ *छवि दास*

स्त्री पात्रक भूमिका निभाबैत रंगकर्ममे आयल मिथिलांगनक आजीवन सदस्य आ रंगमंच उप-प्रभारी, रंगकर्मी **राजेश कर्ण** मैथिली रंगमंचमे अपन एकटा पहचान बना चुकल छथि। कतेको नाटक आ दूगोट मैथिली धारावाक मे अभिनय कऽ चुकल अपन बितल दिनकेँ यादि करैत कहैत छथि, "यादि आबैत अछि गामक नाटक, कि समय छल। हमसभ दीवालीसँ छठि धरि अति उत्साहित रहैत छलौंह। नेनपन मे हमर परम मित्र छलाह लालकक्का, एकटा अभिनयमे हुनका गुण्डा सभ चाकु मारि देलक, समुचे खुने-खुनाम भऽ गेल, हम बड्ड कानलौंह। जखन ग्रीनरूममे हुनका चाह पिबैत देखलौंह तऽ चुप भेलौंह। एतहियेसँ अभिनय दिस झुकाब भेल। गामक मंचित नाटक आ स्कुल मे भेल नाटक सबमे लगातार तीन-चारि बर्ष धरि स्त्री पात्रक भूमिका निभेलौंह अपन रंगकर्मक शुरूआत केलौंह।"

आगाँ फेर अपन पिछला समय याद करैत कहैत छथि, "बादमे गामो मे नाटकक मंचन बन्न भऽ गेल। कैरियरक उहापोह मे दिल्ली एलौंह आ मिथिलांगन संस्थासँ जुड़लौंह। एक दिन ब्रह्मलीन आदरणीय अभय लाल दास जीक कहला पर एल.टी.जी. आर्ट गैलरीमे **सोन मछरीया** नाटक देखलौंह। ओ गामक नाटकसँ एकदम भिन्न छल, लाइट-साउण्ड इफेक्ट एकदम फिल्मे जकाँ लागल। गामक नाटक याद आबि गेल।"

अभय जीक प्रोत्साहन पर संजयजीक निर्देशनमे राजधानी दिल्लीमे पहिल बेर मैथिली नाटक लेल मंच पर सपत्नी उतरलाह, नाटक छल ब्रजकिशोर वर्मा 'मणिपद्म' जीक साहित्य अकादमी पुरस्कृत कृति **नैका बनिजारा**। एहिमे अपन कथासेनक भूमिकासँ विशेष चर्चा मे रहलाह आ अपन अलग पहचान बनेबा मे सफल रहलाह।

ओकर बाद सामा चकेबामे शाम्ब, छुतहा घैल (तीन बेर)मे गोणु झा, नहि लागय दुज्जन हासा मे विद्यापतिक एतिहासिक भूमिकाकेँ दर्शक लोकनि खुब सराहलैन्ह। किछु नकारात्मक भूमिका जेना- टुस्सा आ बाँझी मे मुनीम, राजा सहलेश मे चौधरमल आदिक संग फुटपाथ, सोनमछरीया, मुक्त पंक्षी, किंगकर्त्तव्यविमूढ़, उगना हाल्ट, कमरथुआ आदिमे चरित्र भूमिका सेहो केलैन्ह।

राजेश कुमार कर्ण

पिता - स्व. राघवेन्द्र लाल दास
जन्मतिथि - 02.05.1973
शिक्षा - बी. एस सी., बी. एड., एम. ए. (हिन्दी, राजनीति विज्ञान, इतिहास)
कार्यक्षेत्र - शिक्षक (टी.जी.टी. - प्रा. विज्ञान)
विशेष कार्यक्षेत्र - ए. एल. टी. (स्काउट)
रंगमंकर्मक अनुभव -

1. 1988 सँ 1991 धरि गामक मंचित विभिन्न नाटकमे स्त्री पात्रक भूमिका।
2. विद्यालय मे तीन गोट नाटकक निर्देशन।
3. दू गोट लघु नाटिकाक लेखन।
4. विद्यालय हेतु नुक्कड़ नाटकक लेखन आ निर्देशन।
5. डी. डी. बिहार पर प्रदर्शित धारावाहिक **पाहुन** आ **आब कहु मन केहन करैये** मे अभिनय।
6. मिथिलांगनक विभिन्न नाट्य प्रस्तुति जेना- नैका बनिजारा, सोन मछरिया, छुतहा घैल (3 बेर), टुस्सा बाँझी, किंकर्त्तव्यविमुढ़, उगना हाल्ट, सामा चकेबा, नहि लागय दुज्जन हासा, मुक्त पंक्षी, फुटपाथ, कमरथुआ, दादाजी, राजा सलहेस आदिमे भूमिका।

नाटक 'राजा सलहेस'क दृश्य

महान नाटककार रोहिणी रमण झा, कुमार शैलेन्द्र, अभिनेता भाष्कर, अनिल मिश्रा आदिक संग मंच साझा करबाक अवसर सेहो मिललैन्ह। निर्देशक संजय चौधरीक विविध आ बहुआयामी सोचकेँ अपन पात्रक भूमिकामे उतारी मैथिली रंगमंच लेल सदिखन समर्पित रहब आ माए मैथिलीक सेवा करब इएह कामना राखैत छथि राजेश कर्ण जी।

परिचायिका मिथिलांगन बालमंच अओर मिथिलांगन सुर संग्राम - बागमती समूहक संचालिका छथि।

परिचय

❑ *मिसिदा*

पंकज नाम छल ओकर, एकदम बिंदास, अपनहिं मे मगन, हँसमुख सेहो। पढ़य-लिखय मे तेज छल। बी.ए. मे पढ़ैते छल तखने ओकर माए-बाबक एकटा सड़क दुर्घटना मे स्वर्गवास भऽ गेल छल। ओ बेसहारा भऽ गेल छल। कहय छै नै, जकर केओ नञि रहय छै ओकर सर-कुटुम्ब सब बाप बनि जाएत छथि। सएह पंकज संग भेलै। पारिवारिक ताना-बाना, सुनि-सुनि ओ भीतरसँ टूटल जा रहल छल। जे ओकरासँ छोटो छल सेहो ओकरा पर अपन जुति चलाबयसँ पाँछा नञि रहय, मुदा पंकज सभटा सहैत गेलय।

किछु दिन बाद पंकज, गामे मे ट्यूशन पढ़ा कऽ बी.ए. परीक्षा पास कऽ कंपीटिशन केर तैयारी मे जुटि गेल। परिवारक लोक पंकज पर दबाव बनौने छल जे एक-आध बीघा जमीन बेच कऽ कोनो रोजगार-धंधा कऽ लए अओर हुनक सब केर तामीरदारी मे लागल रहय। पंकज सभटा बूझैत छल मुदा चुप छल।

पंकजक एकटा अभिन्न मित्र छल- राम जतन। एक दिन राम जतन पंकजकेँ कहलक, "रौ! तों कोन माटिक बनल छैं?"

"की भेलौ... एहन की?" पंकज, राम जतनक प्रश्न पर प्रश्न पुछलक।

"किएक एतेक सभहक बात सहैत रहैत छैं... केओ तोहर मान नञि राखै छौ... तैओ तौं ओकरे पाछाँ लागल रहैत छैं... अपन पहचान बना ने...?" राम जतन कहलक।

"हुँह... पहचान... हमर पहचान नञि अछि की? हम पंकज छी।" मुस्कुराइत पंकज बाजल।

"देख, हम सीरीयस छियौ... तौं किएक एतेक सोझ बनल छैं... घर मे केओ तोहर मोजर नञि दय रहल छौ... तैयो, सबकेँ आगाँ-पाछाँ करैत रहैत छैं...!" राम जतन बाजल।

"रौ, हम जे एतेक सोचैत रहब तखन हमर सभटा दाँत नञि झड़ि जेतय। तखन अनार कोना खाएब? बाजय दीहीन... चल... चौक पर... सुनै छियै ओतुका लौंगलत्ती बड्ड टेस्टी बनैत छै...!" पंकज बाजल।

"कहलियौ ने... हम सीरीयस छी?" राम जतन तमसाइत बाजल।

"ठीक... सीरीयस छैं... रौ, हम सभटा बूझय छियै... बाजि कऽ की हेतै? जखन पॉकेट मे टाका रहतै नऽ, देखिहैं सब हमर आगाँ-पाछाँ करैतै... बूझलै?" पंकज हँसैत राम जतन केर साईकिल पर बैसि चलि पड़ल चौक दिस।

"ले, ई हमरा हाथसँ लौंगलत्ती खो।" पंकज, राम जतनक मुँह मे लौंगलत्ती दैत बाजल "आइ, हमर रिजल्ट आबि गेलौ, हमर स्टेट बैंकक पीओ मे सेलेक्शन भऽ गेलौ।"

राम जतनक आँखिसँ खुशीक नोर बहय लागल ओ पंकजक हाथ पकड़ि कऽ एक्के बेर मे मुँह मे सौंसे लौंगलत्ती घुसा लेलक।

पंकज जखन पढ़ैत छल तखन ओ अपन बहिनक सासुर गेल छल, ओकर बहिनोय प्राइवेट कॉलेज मे प्रोफेसर रहैथ। साँझ मे पंकज, अपन बहनोई संग हुनक ड्राईंग रूम मे गप-सरक्का करैत छल तखनहिं फोनक घंटी टूनटूना लागल। पाहुन फोन उठौलैन्ह, "हँ! कें? ओहो... घनश्याम बाबू, कहू कोना कऽ हम मोन पड़ि गेलहुँ?"

"नीक बात... अच्छा आबू ने... हम घरे पर छी..." पाहुन बजलैथ अओर फोन राखैत पंकजसँ बजलाह, "अहाँ, भीतर चलि जाऊ, हमर किछ संगी सब आबि रहल छथि।" पंकजक मोन जेना कानय-कानय सन भऽ गेलय। ओ चुपचाप ओतय सँ अंगना मे आबि कऽ बैसि रहल छल।

आइ पंकजकेँ सभटा पिछला बात मोन पड़य लागलै। ओ राम जतनसँ बाजल, "हमर बहिनो सब कम नहि छलै... जखन हम ओकर सासुर जाइयै ओ हमर भागीन सबकेँ अपन आँखिक ईशारासँ हमरा लगसँ बईला दैय, जेना हम कोनो शराबी-जुआरी होइयै आ ओकर बच्चा सबकेँ हमर ई अवगुण लागि जेतै।" बजैत पंकजक कंठक आवाज जेना थरथरा गेलै। राम जतन पंकजक पीठ पर हाथ दऽ सोरहाबय लागल।

"तौं कहैत छलैं जे हम कोन माटिक बनल छी... जतन, हमर सहारा केँ छलै? हम जौं कोनो प्रतिकार करितहुँ तखन परिवार एकजुट कोना कऽ रखितियैक? परिवार एकजुट राखय लेल ककरो-नञि-ककरो स्वाभिमानकेँ ताक पर राखय पड़ैत छै। सबसँ निर्बल हम छलहुँ, हम अपनाकेँ ओहिठाम न्योछावर कऽ देलहुँ, परिवार टूटि नञि जाए।"

"चल, आइ हमरा दिससँ चाह भऽ जाए!" राम जतन पंकजकेँ बातसँ मोड़ैत कहलक। एहि बीच रामू काकाक छोटकी पोती रीना दौड़ल एलै आ कहलकै, "बनसाझावाला पीसा आयल छथिन।" कहि कऽ जेहने आयल छल तहिने पड़ा गेलै। पंकज राम जतनसँ कहलकै, "वएह प्रोफेसर साहेब!" कहैत चलि पड़ल अंगना दिसन।

पंकजकेँ देखतहिं पाहुन पंकजकेँ भरि पाँजि कऽ पंजियाबैत बजलैथ, "कहू, तऽ एतेक भारी खुशखबरी, हमरा सबसँ किएक नुकेलहुँ, हमसब कोनो आन आदमी छी की?" पंकज हुनका गोर लागैत बाजल, "नञि, हम नुकेलहुँ नञि। सोचलहुँ जे पहिल दरमाहा सँ सभहक लेल, मिठाई लऽ कऽ जेबै तखन कहबैन्ह। अओर कहू कोनाकऽ एलहुँ?"

"देखियौ तऽ, पुछैत छथि कोना कऽ एलहुँ। आँय यौ, हमरा सासुर मे पूछि कऽ आबऽ पड़तै?" पाहुन जवाब देलैन्ह। "हे, अहाँक बहिन कतेक मानैत छथि से तऽ बूझैते छियै।" गाड़ीसँ एगो झोड़ा निकालि कऽ पंकजक हाथ मे दैत बजलाह, "अहाँ लेल ई काजूक बर्फी पठौलैन्ह, लिय।"

"सनोजकेँ नौकरी लागल से बतेलहुँ नञि?" पंकज पुछल। पाहुन उदास भऽ गेलाह, बजलैथ, "की कहू बौआ, जेकरे पर

आस छल वएह धोखा दऽ देलक।"

"से की भेल?" पंकज पुछलक

"गाम पर आऊ, पलखति मे बताएब।" पाहुन बाजैत, गाड़ीसँ विदा भऽ गेलाह।

सनोज, दू भाए छल। बड़का मनोज, पढय लिखय मे बड्ड तेज छल। पंकजक बहिनकेँ अपन दुल्हा आ धनक बड्ड घमंड छल। ओ अपना सोझा किनको नञि मोजर दै, एक दिन किछु बात लऽ कऽ ओकरा मनोजसँ बाता-बाती भऽ गेलै आ मनोज राति मे जहर खा आत्महत्या कऽ लेलक। आब तऽ घरक माहौल एकदम बदलि गेलै। बहिन-बहिनोईकेँ सनोजक सभ जायज-नाजायज माँग पूरा करय पड़ैन्ह। सनोज अपन माए-बाबूसँ बेस फायदा उठाबय लागल। पंकज अपन स्थितिकेँ देखैत सर-संबंधी ओहिठाम गेनाए कम कऽ देने छल। बाहरे-बाहरे पता चललै जे सनोज मुंबई मे एलआईसी मे विकास अधिकारीक काज कऽ रहल अछि।

पंकजकेँ किछु दिन बाद, ट्रेनिंग लेल मुंबई जेबाक चिट्ठी आबि गेलै। ओ सोचल जे बहिनसँ सनोजक पता- ठीकाना लऽ लेत छी, जखन पलखति भेटत सनोजसँ भेट-घाँट कऽ लेब। ओ अपन बहिनक सासुर लेल विदा भऽ गेल।

भोरके ट्रेन पकड़ि पंकज विदा भऽ गेल बनझासा लेल। बजारसँ किछु फल लऽ बहिन ओहिठाम पहुँचि गेल। बहिन-बहनोई पंकजक खुब आदर-सत्कार केलैन्ह, ओतेक पहिने कहाँ केने छलाह? पंकज मनहिं मन सभटा बूझैत छल।

एहि बीच चर्चा उठि गेल सनोजक। सनोजकेँ मोन पाड़ैत पाहुन बजलाह, "हम अहाँ आ अपन दूनू पुत्र मे कहियो भेद नञि राखलहुँ भगवान हमरा कोन पापक दंड देलैन्ह जे हमरा जिबतहिं एगो बेटाक कर्म करय पड़ल।" कहैत पाहुन आ बहिनक आँखि नोरसँ भींज गेल।

पंकजकेँ हुनक बात पर हँसियो आबय आ दुःख सेहो होए। ई सब कहिया हमरा अपन बेटा बूझलाह? ओ सब अपन पुत्रक व्यवहारक जे वर्णन केलाह ओहिसँ पंकजकेँ

बूझा गेलै जे मुंबई मे सनोजसँ भेट-घाँट केनाए व्यर्थ अछि। जे अपन माए-बापकेँ नञि भेल ओ माम केँ की हैत? सांझ मे ओ अपन गाम लेल विदा भऽ गेल। बहिन आ पाहुन बड्ड जोर देलैन्ह जे आइ भरि रूकि जाऊ, काल्हि चलि जाएब, मुदा पंकज तैयारीक बहन्ना बना गाम घुरि आएल।

रसे-रसे समय बीतैत गेलै। पंकजक विवाह लेल कन्यागत सभ आबैत रहय। पंकजक काका गुमाने टेढ़। बड़की काकी कहैत छलीह जे ओकर मसियौत बहिनक छोटकी बेटी बड्ड कामकाजू अछि ओकर जौं पंकजसँ विवाह भऽ जेतैक तऽ ओ घर सम्हारि लेतैक। सब अपनहिं स्वार्थ मे। पंकजक बहिन सेहो अपन चचिया ससुरक बेटीसँ पंकजक विवाह नियारने छल। कुल मिला कऽ सौंसे परिवार पंकज लेल नीक कन्या देखि नेने छलैथ, बाँकी छल तऽ एहि कन्या मे सँ एगो फाईनल कऽ पंकजक विवाह केनाए।

एक दिन रमेश्वर काका पंकजकेँ फोन केलैथ जे किछु आवश्यक काज अछि, जल्दी गाम आबु। बैंक मे ओतेक छुट्टी कतय? खैर, तीन दिनक छुट्टी मे पंकज गाम आबि गेल। काका-काकी सब अपनहिं एहिठाम पंकज लेल भोजन-भातक व्यवस्था केने छलैथ। साँझ मे रामेश्वर काका पंकजसँ बजलैथ, "हमसभ तोहर विवाह लेल चिंतित छी। हमसभ किछु लड़कीक फोटो छाँटि कऽ राखने छी आ बनझासावाला पाहुन सेहो एगो लड़कीक फोटो पठौने छथि। आब एहि फोटो सबमे कोन पसिन छह बताबऽ, जाहिसँ हमसभ तोहर विवाह कऽ निश्चिंत भऽ जाए।"

"इएह आवश्यक काज छल, जकरा लेल हमरा बजेलहुँ? हम एखन विवाह नञि करब, जहिया मोन हैत कऽ लेब, हमरा विषय मे कोनो चिन्ता-फिकीर जुनि करू।" पंकज तामससँ लाल होईत बाजल।

"की बजलियै? जखन मोन हैत तखन अपन विवाह कऽ लेब? केँ करत, कोन कन्यागत पूछत?" रामेश्वर काका सेहो तमसा कऽ बजलैथ, "अहाँ कोन खानदानक छी पता अछि? अहाँक बाबा-परबाबाक नामसँ इज्जत अछि, बूझलहुँ की नै, की परिचय अछि अहाँक?"

"ठीके बजलहुँ काका! बाबा-परबाबा धरि सिमटि गेलियै, नञि? आगाँ तऽ अहाँ सभहक नाम नहिए चलल? की हेतै पुरखाक नाम बेचि कऽ? जतय ककरो माए-बाबू मरि जाइत छथि, ओकर संतानकेँ अपना लेल एगो टहलू बना लेल जाए? की, केलहुँ यै हमरा लेल जे एतेक फिकीर अछि? कहियो एक टेम भोजनो करौलहुँ? हम अपने बर्तन-बासन कऽ भोजन करी, पढ़ाई केलहुँ। कतेक संग देलहुँ? कहैत छी जे बाबा-परबाबाक नाम... यौ काका, हमर आब अपन परिचय अछि। एतय सँ आब हमर परिचयसँ हमर खानदानक नाम चलतै। बुझलहुँ ने?" कहैत पंकज ओहिठामसँ चलि गेल अपन संगी राम जतन ओहिठाम।

सरोकार

❑ *घनश्याम घनेरो*

अब अपनाकेँ सुरक्षित आ सक्कतिगरि सन लगैत हेतह... भोजन-भात, कपड़ा-लत्ताक कोनो दिक्कत तऽ नञि छह ने? हमरा उबारि दऽ आब..., क्षमा... माफ करह...। कोना कहियह जे पपियाहा बिर्रो दुहु गोटेकेँ नचा घुर्मा लगौने छल... दोख, पाप, प्रायश्चित आर बहुतरास बात, सब तोरो मोन हेतौक... बाढ़ि लोककेँ नञि चिन्हैत छैक, से जे होयतैक तऽ वएहमे लहासो नञि दहैतैक!

बड़का टब, पातील आ लोहियाकेँ मगन भऽ माँजैत जाए आ उपरोक्त शब्द सभ ओकरा कानकेँ कुकुआ दैत छैक। सुन्न भेल पाथरक मूर्ति सन जेना बौकी छू देने होइक! ता मे अनाथालय दलमलित भऽ गेलै- "देखही अखबार!" पुष्पा ओकरा पंजियाबैत कहलकै- "पुलिसबाला हाकिमक फोटू! तगमा लटकल, तोरे सैल्यूट करै छथुन। वएह ने तोरा अतय नोकरी दियौने रहथुन।" ओ साड़ीमे हाथ पोछैत फोटूकेँ पोछलक। करेज थिरे नञि होइक। अनचोके चिकरा गेलै- "जय हिंद!" सैल्यूट लेल जे हाथ उठल रहैक ताहि हाथसँ अपन नोरक बान्ह बनबऽ लागलि मुदा बहुतरास नोरक बुन्न अखबारक फोटूकेँ गिलाह कऽ देने रहैक।

सात खिड़की तै पर हुलकैत सातटा वैश्या। छऽटाकेँ मुँहक रूक्खी हुलसगर मुदा सातम खिड़की छैक उदास-फिफरियाएल। तखनो ओहि खिड़की पर ओकर हाजिरी रहैक ओहिना जेना वैश्यावृत्तिक धंधामे होइत छैक। अंकठल मोनसँ जेना हँसैत होए इशारा एहन जेना रीझल पत्नीकेँ पति लग अयबाक स्वीकृति दैत होए।

वएह खिड़कीक उनटा भाग, सड़कक कातमे एक लाइनसँ होटल, शराब आ चाह-पानक दोकान सभ छैक। एतुक्का अड्डाबाजी टाइमपास लेल प्रसिद्ध सेहो छैक। एहि शहरक विकास पंजाब लेखा भेल जाए छै। सटले नेपालक बॉर्डर जे छैक। नव संसाधन हुलकलैए- ड्रग्सक धंधा। आब तऽ चरमपर पहुँचि गेल छैक। अखबार रंगल अबैत छैक सभक घर। जनता एकबेरि एहि समाचार पढ़ि अपन-अपन गिरेवांकेँ अबस्से हँसोतथि अछि। प्रतिफल ककरा संग की हादसा भेलैक- चोरी, डकैती, बालात्कार, हिंसा, लुटपाट इत्यादि।

मुंहारि साँझ भऽ गेल छलै। छबो खिड़की बेरा-बेरी मुना गेलै। मने गांहिक सब पटि गेल हेतैक। कोंटाबाला खिड़की ओहिना उद्दाम छै। बनौआ हँसी संग हुलकी-बुलकी दैत एकटा छौंड़ियाहे सन स्त्री। गाहिंक ताकमे औनेबाक असफल प्रयास करैत हो जेना।

अतेक अंटकरसँ जे अध्ययन करैत छल तकर नाम छैक- चंद्रसेन। ओ होटलसँ बाहर भेल। सिकरेट सुनगौलक आ पहुँचि गेल सातम खिड़कीक मुँहथरि पर। जिंजिर खटखटौलक तऽ केबाड़ खुजलै। छौंड़ी मुस्किएलै- 'आऊ-आऊ!' चंद्रसेन आगू बढ़ैत बाजल- की नाम छह?

- जमीला बानो।

- शराबक इंतजाम हेतह ने?

- हुकुम, बाबू!

चंद्रसेन जमीलाक पहुँची पकड़ि लग बैसौलकै। ऊपरसँ नीचाँ धरि भरि पोख देखलकै- "मड़कांकौर किए लगै छह? उमेरसँ पहिने झखरब नीक नहि। जकर देहे सम्पति होए।" जमीला पहुँची छोड़ाबैत बाजल- बाबू! की कहू, पनरहिया लागल अबैत छैक, गांहिक नदारथ। जे रहय घरक भाड़ामे चल गेल। दू साँझसँ एकसांझे बुझु। पेटमे दाना रहय तखन ने मोन हर्खित देखाय गाहिंककेँ!"

सिग्नेचर शराबक डिब्बा उनारैत चंद्रसेन हुकुम देलकै जमीलाकेँ- "पहिने अपन भोजनक प्रबंध करह, देह बेजान तऽ बाहुपाश हलकान!" आ पाँच सौकेँ दूटा नोट बलजोरी मुट्ठीमे कोंचि देलकै। "अरे! हँ, दू-तीनटा मिनिरल वाटरक लेल सेहो कहि दहक जे पहुँचा जाएत।"

जमीला अपन घघरा झारैत ठाढ़ि भेलि आ वृत्तमे नचैत अयना लग आयल। ओकरा अपने मुँहक सुर्खी अपने नञि सोहैल रहय मुदा तैयो फेरसँ अपन जुड़ा सरियौलक। नुका कऽ जे इत्र लगाबैत छल से चंद्रसेन देखि लेलकै। शराबक निशाँ घरमुहाँ भेल जाइत छैक- "जमीला तों सुन्नरि छैं, आ, आ ने! पहिने खो, सक्कतो। हम पड़ेबौ नञि आइ। फुसि कहलियौ, तीन दिन तोरा संगे छियौ, खो, भरिपेट खो। ले पानिक बोतल, छाक भरि पी। दू घंटाक बाद संगे शराबो पीबिहें...।"

भोजनोपरांत जमीला सकक्ता गेल, अंगैठीमोड़ लैत झुमैत चंद्रसेन लग सटियाएल मने ठोंठ शराब सँ तऽर करबाक होए तहिना- "बाबू! एक पैग हमरा हाथसँ।" चंद्रसेनकेँ जेना अन्हरजाली केओ नोचि देने होइक, हपुसाएल कहलकै- "एक नहि दू पैग! हम तोरा ठोरकेँ आ तों हमरा ठोरकेँ सिक्त कर। शराब आ शबाब... दुनिया निफिकीर! हँ, कने लग आ, तोहर नाक छुबा।" जमीला खुश अछि- "हमर जुआनी भांड़मे जाउक मुदा मालदार मस्त गाहिंक हाथ तऽ लागल। ऐंठि ले जमीला! महिनाभरिक कमाइ।" बाहुपाशमे समटैत जमीला चंद्रसेनकेँ ठोर तरसँ गिलास उझकाबय लगलै।

"नाक तोहर सुरेबगर नञि छौक जमीला मुदा ई छोकटी सोनाक नथुनी तोरा कटाहि बना देने छौक। ई तोहर नाकक पोड़ाकेँ हुलसबैत अछि हमरा। बड्ड सुन्नरि बड्ड नीक।" चंद्रसेन बेहोश भेल पड़ल अछि आ जमीलाक मुँह अपन हाथसँ झपने छैक। जमीला अपन मुँह परसँ चन्द्रसेनक हाथ उठबैत कहलकै- "बाबू! ई नथुनी हमर कॉलेजिया यारक देल अछि, एकरे बदनामी कोठा देखौलक। बीचमे दू धर्मक बान्ह रहैक जेना कमला नदीक दू बान्हक बीच ढ़ठिया देने छैक समाज आ सरकार। ओकर सिनेहमे जे भसियाएल रही, ओहन अल्लाहकेँ सुमरैमे नञि कहियो धियान लागल रहय। जो रे अपाटक! हमरा की? तौँ पुतोफला... दब्बू, बेहया! तहियाकेँ बाद

ओकर सन अनमन सिनेह नेने बाबू अहींक पदार्पण भेल, अहुँक ओहने मीठ बोल अछि। भीतरूका घबाह, हिरदयक फोंडाकेँ बहा दैत अछि... उसास, हल्लुक... तृप्त मोन... आह!"

चन्द्रसेनक भऽक खुजलै- "देह टूटैय, दोसर ठाम कतौ सुता दे जमीला! बटन ब्लाउजक ककरा लेल खोलैत छह? हम होशमे नञि छियौ, जमीला! निशाँमे लोक राकस भऽ जाए छै। तोहर मुँह हमरासँ नोंचल पार नञि लागत। निशाँ खहड़ऽ लागल आब, सुता दे!" जमीला कालीनपर सँ दोसर कोठलीमे पाड़ि एलय आ केबाड़ भिड़ा देलकै।

गेट खटखेटलय, बिलैया खोलि देलकै। मने, दोसर गंहिक रहैक- "आइ नहि दोसर राति कहियो! अखन बर्दियाएल छी। देख ने रूखसानाकेँ, ओइ कता सँ तेसर हन्ना। साइत ओकर खेल उसरि गेल हेतै। कहलकै जे! अतेक दिन नाग गेल तखन हमरा लेले ज्यारिए नञि उठ, एकरे कहै छै- घर दही तऽ बाहरो दही!" बिलैया ठोकैत जमीला आपिस भेल। कालीन साफ करैत घर ओरिया नेने छल। किदन फुरेलै ओ चंद्रसेनबाला हन्नाक केबाड़क नहए सँ अलगैलक। विस्मित होइत चेहाल, "आंय!" ओकरा भेलै जे गाहिंक पलंग तर खसल हेतै मुदा सेहो अंटकर हुसि गेलै। चद्दरि सेहो नहि छलै पलंगपर। ओ पएर-हाथ पीटैत, नोरे-झोरे भेल चिकरलै- "भूत! भूत!!"

किचेनसँ आवाज एलै- "जमीला! हम अतय छी। आ देखि ने, तोरोसँ सुन्नरि, झुंडमे आ देखि।" जमीला कीचेनक टाइल्स पर सँ चंद्रसेनकेँ पंखुरा पकड़ि खींचि खसा देलकै- "बाबू! ओम्हर नहि ताकू। ओ सभ बिसपीपरी अछि, टुइस लेत, लूटि लेत। पुलिससँ पकड़ा देत।" चंद्रसेन जमीलाक घेंटमे बाँहि फंसा कहलक- "पहिने हमरा ठाढ़ कर। जाए दे, पुलिस... लफड़ा... बस्स एतबे आर किछु नञि ने? पैग पर पैग, पटियाला पैग आ हमरा लूटलें नञि, जेबी ओहिना भारी, हाथक घड़ी, गरदनिमे सोनाक चेन किछु नञि सोहेलौ? जो गे बकलेलही! तोरा प्रेम करय नञि आबै छौ। देखि, तोहर कपारमे आइ कतेक टाका लिखल छौक, निकालि ले। चोरबत्ती छौ तऽ सीढ़ीपर इजोत देखा।"

जमीला मोचरल रूपैयाकेँ सरियाबैत बाजल- "एतेक रूपैयाक भागी हम नञि छी बाबू! एक गाहिंक बड्ड खुश तऽ पनरह सै... पाँच सै सँ घिसियाबैत नओ सै-हजार पर तऽ ओकर सभहक पुरखो फिस्स!" चंद्रसेन जमीलाक बले सीढ़ीसँ उतरैत कहलक- "बानो! सुहृदयसँ धंधा नञि हुहुआइ छै। गाहिंककेँ कनैठी देनाए सीख! ओकर फुसियाही बातमे रीझ नञि, ओकरा रिझो, अपन काज सुतार। आधा घंटाक फिलिममे ब्लैकसँ कीनल टिकिस माफिक धंधा कर। सभटा रूपैया तोहर... फेर अयबो काल्हि... ककरो नञि ओटिया लीहें... खिड़की निमुन्न होना चाही... बस्स! आब जो ऊपर, रोड पर नञि आ, लोक नोंचि लेतौ, उड़ा लऽ जेतौ... जो! नहि होए छौ तऽ बंगलिया भरूआकेँ हाक दही ने, रोड टपा देत!"

जमीला असोथकित भेल कोठलीमे पएर दैत खिड़की दिस दौगल। खिड़कीसँ हुलकैत अछि। लैम्प पोस्टक प्रतिबिम्ब संगे एकटा आर छाँह छैक... मने वएह तऽ ओकर गांहिक छैक? घनेरो प्रश्न ओकरा ओझरा देने छैक, हठात ओ खिड़की भिड़ा ओत्तहि लुद दऽ बैसि गेल।

ठिकाठीक नओ बाजल छल। भुटकुन जलखै पैक कएने कोठापर पहुँचल। जमीलाक घर उद्दाम देखि सकपकाएल। हुलकैत अछि तऽ देखलक बेसुध भेल जमीला ऊँघराएल अछि। जेना कपार फूटल होइक, लेहूक थक्का गालपर आबि जमि गेल छै। ई सभ देखि भुटकुनकेँ दिनेमे तरेगन सूझय लगलै। होटलक रेहल-खेहल भुटकुन! खून-मर्डर तऽ होटलक सराप छै। से सबसँ वाकिफ अछि भुटकुन! ओ मोबाइलसँ होटलक मैनेजरकेँ कहलकै- "सर! 503 नंबर रूममे फोन ट्रांसफर करू। जुलुम भऽ गेलै।" मैनेजेर गारिसँ होलियाबैत कहलकै- "ई स्सार जतए जाएत ओतय आगि लगओत। थम्म ने सार! इएह-इएह!!"

- हेल्लो सर! जमीला तऽ अचेत भेल पड़ल अछि। ककरा दियैक जलखैक पाकिट?

- भुटकुन! तों ओतयसँ हिल नञि, जमीलाक मुँहपर पानि छींट, लगले कंपाउंडर पठाबै छियौ, हुड़थुड़ो नहि।

मरहम-पट्टी भेलैक जमीलाक तऽ भुटकुन मुँह-कान पोंछैत बाजल- "डनियाही नहितन! गे! तोरो औरीमे चानि फूटौव्वल किएक होए हौ? गाहिंक लेल एना कि, उपराचौड़ी करय छिही तों सभ? रौ बहिं! ले कान ऐंठि कऽ उठा-बैठी करय छियौ जे आब तोरा औरीकेँ आर्डर सप्लाई करबौ। गे भगलाही! ओ जे साहिब छै होटलमे टिकल से तोहर भतार छौ की? ले जलखैक पाकिट, वएह पठौने छथुन। भरि इच्छा खो, पूड़ी-तरकारी आ कड़कड़ जिलेबी!" जमीला अनमुनाहे पुछलकै- "रे भुटकुन! कें?" जमीलाकेँ देबालमे अड़बैत भुटकुन कहलकै- "आरौ बहिं! अनठौनी मौगीकेँ नखरा हजार! सभटा चाटि पोछि कऽ खो बहिं, नै तऽ एक सै रूपैया गच्छलहा टिप्स पानिमे चल जाएत। साहिबक हुकुम छै जे तोरा खुआ देबौ तखनहिं फेर होटलमे पएर देब, हुँ! चल बहिं खो ने हबड़-हबड़!"

कलौकेँ बेरा भऽ गेल तऽ चंद्रसेन भोजनक पॉकेट नेने कोठापर आयल। नहुएसँ फुसफुसाएल- "जमीला!" जमीला दर्द सहाज करैत नितराइत उतारा देलकै- "आऊ ने बाबू! केबाड़ ओहिना ओंगठाएल छै।" चंद्रसेन तखन चकरा गेल जखन ओकर नजरि जमीलाक माथ दिस गेल। लाल टुहटु रूइयामे जेना टिंचरमे सानल आ उज्जर झलफांफी कपड़ासँ माथ बान्हल रहैक। मुँह तेलसँ चपचप जेना प्रसूता होए। साइत हड़बड़ा कऽ भुटकुन जमीलाक माथमे तेल उझिल चानि रगड़ने होए तहिना।

जमीलाक लगिच होइत चंद्रसेन ओकर माथ सोहराबैत पुछलक- "एना क्षणमे क्षणाक कोना भऽ गेलै?" चन्द्रसेनकेँ जमीला पंजियाबैत बाजल- "सौतिनियाँ डाहि कतौ गाम गेलै, अखने! दियादक सुख दियादकेँ कहिया सोहेलै? रतुका अहींक पटसुन्नरी सभ पटकि-पटकि घायल केलक अछि। हम नुकाओ कऽ हन्नामे गाहिंककेँ ढूकाबी तखनो तऽ ओकरा सबकेँ पुरखाही गन्ह लागि जाए छै। बाबू! अहीं कहू जे जुआनीक हुसलहा तऽ ई भोगिया भोगिते छी तैपर सँ ई छब्बो हमरा लुधकल रहैत अछि। कहैत छलि जे देहक बले ई जिनगी नञि खेपेतौ, टका हँसोथैकेँ छौ तऽ

हमरा गिरोहमे मिज्झरा जो, ड्रग्सक पॉकिट जिले-जिला टपो!"

"चल उठ! देह झाड़। कलौ कऽ ले, बड्ड आगूक बात नञि सोच, जे छौ सेहो हाथसँ चल जेतौ।" चन्द्रसेन दुलारेसँ कहने रहय। जमीला दूटा थारी सँठलक। चन्द्रसेनकेँ आगू घुसकाबैत बाजल- "बाबू! अहाँ जे कहय छियै आगूक नञि सोच से की ठीक भेलै? वेश्यावृत्ति तखने आगू मुँहे हेतै जखन पुरुषक माथा काज करतै ने। तकरा ई छब्बो दूरि करय पर लागलि अछि। नव-नव विकास एकरे कहैत छैक जे लोक आब गामो-घरमे ड्रग्सक लोकनियाँ भऽ जाए? उ जे रूखसाना आ ब्यूटी की जानय गेलै जे ड्रग्स देह आ माथ दूनूकेँ सुन्न कऽ दैत छै। जुआनीमे छौंड़ा सभ लोथ भऽ जेतै तऽ कोठापर कुकुर भूकतै!"

"बाबू! खा लिअ पहिने तखन फेरसँ विचार करबै तऽ जे मारि-गारि खा कऽ अपना कोठलीमे पड़ल छी से नीक आ की ओकर सभहक दिनचर्या नीक छै?" चन्द्रसेनक सिकरेट मिझा देलकै आ लगले जमीला पानक डलियासँ लगल पान आगू बढ़ा देलकै। चंद्रसेन विदा होइत कहलक- "पेन किलर लैत रह! फरिच्छा कऽ कह, साँझमे आर दोसरकेँ तऽ नञि न्योतने छें? साँझमे फेर एबौ।" जमीला दुपट्टाक कोर चिबबैत बाजल- "धुत जाऊ, बाबू!" ई बात सुनि चन्द्रसेन मुस्किएल तऽ जमीलाकेँ मोन भेलै आ नितराइ, नाची, ठुमकी मुदा ता चन्द्रसेन रिक्शापर बैसि विदा भऽ गेल रहय।

"पएर रे तौं रंग, आँखि रे तौं सुरमा, नऽह रे तौं अलता आ हाथ रे तौं मेंहदी! लिअ बाबू! आब तऽ खुश! सोलहो श्रृंगारसँ फिट! आइ नञि कोनो लाथ लगबय देब बाबू, हियामे साटि लेब। बइमान हम नहि छी बाबू, जतेक बेसी टाका ओहिसँ बेसी प्रेम। आजुक हमर प्रेम अहाँकेँ बताह बना देत, ई राति असगरूआमे आर तेसर नञि!" खिड़की पर बैसल जमीला निशाँमे भसियाइत चंद्रसेनक बाट जोहैत छल- "धुर जो! आठसँ उप्पर भऽ गेलै, आब बाबू कखन एबै, श्रृंगार उखराह भेल जाए, आब कखन? आउ ने!"

काल्पनिक प्रेममे जमीला बताहि भेल अछि, ओ हारि-थाकिकेँ कालीनपर ऊँघरा गेल, मने आँखि लागल जाइत रहय। दस सँ ऊपर भेलै तऽ केबाड़ ठकठकेलै। जमीला आँखि मिरैत उठल आ बिलैया सरकौलक- "बाबू! अहाँ नीक लोक नञि छी, अहीं लेल बेकल, सएह पड़ाइत फिरथि! एहनो लोक की लोक होइ छै? ऊँ, भक आऊ ने जल्दी!" चंद्रसेन जमीलाक मुँह बन्न करैत खिड़की लग लऽ गेल- "देखि-देखि! छब्बो कार लग छओटा पटसुन्नरी। ले बलैया! छब्बो फुर्र!" जमीलाकेँ ई दृश्य नञि सोहेलै। चंद्रसेनकेँ छाती मुकियाबैत कहलक- "हुँ, अहींक सावित्री सभ तऽ छलीह, हम तऽ पहिने कहि देने रही जे पाक साफ नञि छी। अबलाहि छी तऽ छी, से तऽ जिनगीभरि रहब, तकर माने की? छोड़ि नञि देब बाबू अहाँकेँ ओहिना।"

जमीलाक बात संशयमे ओझरौने जाए चन्द्रसेनकेँ, ओ पासा फेकलक- "ई झोरा ले देख, की अनलियौक अछि तोरा खातिर? हमरा लग हमरे पसिन्नक श्रृंगार। दूटा जुट्टी, छोटकी टिकुली, नथुनी, नाकमे छोटकी बुट्टा आ हमर आनल वस्त्र, बस्स!" जमीला एक बेर डेरायल अबस्स मुदा अनचोके की बुझलकै ओ से नञि जानि भभा-भभा हँसय लागल- "अच्छा बाबू! सब हेतै अहीं पसिन्नक। पहिने एक-दू पैग...।"

पियर सलवार, कारी समीज पहिरि जमीला दोसर कोठलीसँ आबि चन्द्रसेनक आगू चुक्कीमाली बैसल। ओकरा देखतहि चन्द्रसेन उखरि गेल- "पड़ो एतयसँ, छाती दुपट्टासँ झाँप। फेर बर्बाद करत।" जमीलाक छाती बज्जर होइत गेलय, झोरासँ दुपट्टा निकालि छमकैत आयल- "आब भेलै नञि संत बाबू?" चंद्रसेन फेर हड़कलै- "पएर उद्दाम? खैंक घोंपेलौ तखन? जो चप्पल पहिरि!" जमीला फेर झोरामे हथोड़िया मारलक, बाटाक हवाई चप्पल हाथ एलय। "समीज-सलवार अतेक महग आ चप्पल हवाई?" चन्द्रसेन सनकि गेल- "पनरह बरख पहिने दसमामे इएह नञि पहिरैत छलैं। बइमान बनौने रहैं आ अखन सैंडिल कीनि दियौ, सतबर्ता बनु हम। कहै छियौ इएह पहिरि ठाढ़ि हो, भरि पोख निहारय दे, बस्स! आर किछु नञि जमीला आर किछु।"

जमीला अखाहि जकाँ चंद्रसेनकेँ देखै छै निर्लोभ। चंद्रसेनकेँ पाँखुर पकड़ि उठबैत जमीला बाजल- "बाबू! आब देखियौ नऽ हमरा?" चंद्रसेन कहलक- "सावधान!" आ पाछासँ ओकर जुट्टी तिरैत कहलक- "इस्स!" जमीला आंगुर देखबैत कहलक- "बाबू! एतय अहाँसँ गलती भेल।" आश्चर्यसँ देखैत चन्द्रसेन पुछलक- "से की?" जमीला चंद्रसेनक नाक हिलाबैत कहलक- "इस्स, तऽ हमर चन्दर नञि कहने छल, कहने तऽ हम रहियैक।"

कतेक दिन बाद जमीलाक भेदिया भुटकुन चन्द्रसेनकेँ फोन केलक- "साहेब! काल्हि जमीला दोसर जिला पकड़ि लेत। भेट करब तऽ...।" चन्द्रसेन ओम्हरसँ उतारा देलक, "कहि दियही जे काल्हि भोरे एबय।"

नओ बजे भुटकुन जलखैयक पॉकिट नेने चन्द्रसेन संग कोठापर पहुँचल। भूत बंगला भेल छल कोठा। सभटा सील्ड कएल कोठली। वस्तुतजात फेकल-फाकल, नंढ़-बंढ़! जमीलाक कोठली उद्दाम, एकटा बड़का मोंटा तैपर ओलरल जमीला जेना नव जिनगी केहन हेतैक तकर सपना देखैत होए। चन्द्रसेन मुँहसँ अनायास खसलै, "से बात!" जमीला थिर छल, सन्न। ओ नञि चाहैत अछि जे पुरान घा फेरसँ बघतियार होए। चंद्रसेन कठुआ गेल, जांघ लोथ भऽ गेल होए जेना। देबाल पकड़ि बैसि गेल गुमसुम। भुटकुन दूनूक तंद्रा तहस-नहस करैत कहलक- "रौ बहिं! रूसा-फूलीमे जिलेबी नञि मसुएतै गे जमीला! जाइयो कालमे सुहृदय मुँहे साहेबकेँ विदा करहुन ने गे। ठीके कहय हइ जे नाच-गानावाली आइ धरि ककरो नञि भेलै आ नञि कहियो हेतै। कहलकै जे! खो बहिं, आब नञि जएबामे लेट होए तहिना!"

डिक्कीमे जमीलाक मोटरी रखैत भुटकुन चंद्रसेनकेँ आदेश दैत कहलक- "ल जाऊ जमीलाकेँ साहेब आ 44 नंबर पाया परसँ गंगामे ठेलि देबय।" चन्द्रसेन टिप्स दैत कहलक- "अच्छे सएह करबै।" चलैत कारमे जमीला अनुनय कएलक, "चन्दर इएह करू, अहाँ हाथसँ मोक्ष भेटय एहिसँ उत्तम मृत्यु दोसर नञि।" जमीलाकेँ भरि बाटमे कत्तौ नञि नदी देखेलै आ नञि कोनो पुल। ओ अनाथालयक मुँहथरि लग पहुँचि गेल छल।

बुद्धिक तत्परता

❑ डॉ. दिप्ती प्रिया

"पिंकु उठु बौआ देखु, कत्ते नीक रौद भेलैये।" माँक आवाज सुनि नेना पिंकु पेंगुइन जकाँ एक्के छलांग मे खिड़की पर पहुँच गेल।

अहाँ, छः माससँ एहि रौदक आशा ताकय छलौह! माँ जल्दीसँ जलखै दे, हम रौद मे खेलाय लेल जैब।

हँ, ले नऽ बौआ।

ट्रिन-ट्रिन, "पिंकु-पिंकु" नेना-भूटका संगी सब शोर पारय लागल।

हाँय-हाँय जलखै खतम कऽ पड़ेलै पिंकू।

पिंकू चल आइ चंद्रमणि फूल तोड़ि आनय छी, रौद भऽ गेने कालि धरि फूल मौला जेतैक।

मुदा ऊ तऽ बड्ड दूर टापू पर अछि आ ओतय सर्द तूफान आबतै अछि।

हे! डरपोक आइ रौद भेलैया, आइ तूफान थोड़े ऐतैक।

कनी सोचैत पिंकू माँससँ आज्ञा लऽ लेलक। माँ, मामाजीक पठाओल नव तकनीकीवाला घड़ी पिंकूक हाथमे बान्हैत कहलैन्ह, "जौं कोनो परेशानी होऊ, तऽ ई ललका बटन दाबि दियैन्हे तऽ पापाजी तोरा लग तुरंत पहुँच जेथुन।"

'हँ' मे मुड़ी डोलबैत पिंकू दौड़ल अपन पेंगुइन संगी सब लग। खेलाईत-धुपाईत आधा घंटाक चहल-कदमीक बाद टापू देखाय लागल। चारूकात बर्फे-बर्फ जेना पहाड़ी सब उज्जर बर्फक चारद ओढ़ने नुका-चोरी खेलाइत होए।

दोसर कात पाताल लोक जाइत झीलक ऊपर बर्फक परत जेना ओहि रस्ताकेँ सबसँ नुकाबयकेँ ठनने होए। फर्नक बड़का-बड़का गाछ जेना दौड़कऽ अखन धप्पा कहि देत। "हे, देखही चंद्रमणिक फूलक क्यारी उज्जर पहाड़ीक गहना जकाँ लगैत अछि। कतेक नीक एकदम देव लोकक दृश्य लगैत अछि।" एकटा बाजल।

"रे पिंकू की सोचय लगलै, चल ने फूल तोड़य छी। मुदा फूल तऽ बड्ड दूर मे छै।"

'हा-हा-हा' सब ठहक्का माड़ि हँसय लागल।

"एकरा छोड़ राजु!" नमहर, मोट-सोट भीखू राजूसँ कहलक, "पिंकू एते दूर एलौ सएह 1 लाख।" आ सब संगी ठहक्का मारि हँसय लागल।

कनी लजाइल पिंकू सोचय लागल ई सब हमरा डरपोक किएक कहैत अछि? आ कनी-कनी डेग बढ़ाबय लागल। सब एक्के बेर चिचिया ठठल, "कत्ते रासे फूल" सच्चे चंद्रमणि फूल बड्ड सुंदर छल। एकदम उज्जर आ कने तिरछा देखु तऽ नील रंगसँ धारी बनल छल। छोट-छोट फूल हाथमे मोती सन लागैत छल। ई जाड़मे फूलाइत अछि आ एक-दू दिन रौद भेला पर मौला जाइत अछि। सब बच्चा फूल तोड़ि अपन जेब भरि लेलक।

दूपहरिया भऽ गेल छल। सबकेँ भूख लागल। राजू बाजल, "चल आब अंगना चल।" आकि तेज गड़गड़ाहटक आवाज सुनेलै। डरे तऽ सबकेँ जेना पएर जमि गेल। "आब की करब भीखू? अपना सब तऽ टापुक दोसर छोर पर आबि गेल छी।" एकटा बच्चा पुछलक।

"क-क-क कि हेते, अ-अ-अ-अपना सब दौड़क टापू पार कऽ जेबै। आब गप नञि भा...ग...नै तऽ..." धमकाबैत भीखू दौड़ल। डरल बच्चा सबमे हड़कम्प मचि गेल, सब गिरैत-पड़ैत दौड़ल।

"हा...हा..." गुड़कैत टिंकूकेँ सम्हारैत पिंकू कहलक "ओड़िया कऽ नीचा बर्फक परत बड्ड पातर अछि, कनियो चोटसँ बर्फमे दरार पड़ने झीलमे अपना सब डुबि जैब।" चारू दिस अफरा-तफरी मचल छल। ऊपर सर्द तुफान नीचा गहींर झील। बच्चा सब जान-प्राण लगा कऽ दौड़ रहल छल, आ कि फर्ण गाहक एकटा डारि आगुए मे खसल। फेर तऽ बेरा-बेरी कतेको ठाड़ि खसल। एकटा तऽ पूरा गाछे खासि परलै। डेरायल धिया-पुता नोरायल आँखि कनैत-खिजैत दौड़ैत छल कि एकटा ठाढ़ि पिंकूक माथे मे लागल। ओकरा आँखिक आगाँ अन्हार भऽ गेल। जोरक आवाज सुनि टिंकू पाछु देखलक तऽ देखैत अछि पिंकू बेहोस भेल खसल अछि। भीखू बाजल, "छोड़ एकरा भाग।" टिंकूक मोनमे टीस उठल "नै, पिंकू हमर जान बचौने छल।" सोचैत आगाँ बढ़ै लेल पाछु घुमल आ कि एकटा बड़का बर्फक टुकड़ा ओकरा सब पर खसल। भीखू त' पैघ आ हट्टा-कट्टा छल एक्के छलांग मे ही टापूक सिरा पर पहुँच गेल।

कुहरैकेँ आवाज सुनि पिंकूक आँखि खुजल, होश आबिते ओकर होश उड़ि गेल। टिंकू, रिंकी, डिंपी, शालु, मंगु, दीनु आ राजु सब बर्फक नीचा दबल छल। पिंकूक माथसँ खून बहि रहल छल। जाड़सँ देह जकड़ि गेल छल, तइयो ओ हिम्मत केलक। माँ कहैत छथि मुश्किलमे साहस, हिम्मत आ संयमसँ काज लेबाक चाही। खुन पोछि सबकेँ बर्फसँ निकालय लागल। फर्नक पात तोड़ि, रस्सानुमा धारि बनौलक, कनी खुड़-खुड़ तऽ छल मुदा पकड़ल जा सकैत छल। ओकर दिमाग सुब तेजीसँ चलि रहल छल।

बड़का डारिकेँ धकेल कऽ लग अनलक। मझुलबा सन ठाढ़िकेँ जमा केलक आ सब संगीकेँ ठाढ़ि बढ़बैत कहलक, "आब अपना सब घर पहुँच जाएब, बस एहि साख पर अपना सबकेँ सवार भऽ एहि ठाढ़िसँ बेरा-बेरी साखकेँ नाव जकाँ खेबाक अछि। हमरा तीन गिनते नावकेँ खेबनाय शुरू कऽ दिहेँ। एक...दू...तीन।"

बस सब खेबनाय शुरू कऽ देलक, सरर..।

पिंकूक हाथ आ माथसँ खून बहैत छल, मुदा ओ हिम्मत नै हारलक। सभहक मनोबल बनौने रहल आ डारिकेँ टापूक छोर पर पहुँचा देलक।

पिंकूक पापा आ राजू-डिंपी सभहक पापा ओतय पहुँच गेलाह जखन पिंकू रस्सी खोलि सबकेँ उतारि रहल छल। बच्चा सबकेँ हाँय-हाँय कम्बल-रजाई ओढ़ाओल गेल। राजू पिंकूकेँ पकड़ि कानय लागल, "हमरा माफ कऽ दे, हम तोहर मजाक उड़ेलियौ। आइ तोंही हमर सभहक जान बचौलैंह। आइ तौं नञि रहिते तऽ हमसब कियो नै बचितौं।"

पिंकू अपन साहस, सूझ-बूझ आ संयमसँ सभहक संग सुरक्षित घर पहुँच गेल। सबसँ ओकरा शाबासी आ बधाई भेट रहल छल। असंभव संभव भऽ गेल। पिंकू जेबसँ चन्द्रमणि फूल निकालि सोचय लागल लोक शक्तिमान शरीरक बनावटसँ नै, वरन् सही समय पर साहस आ सूझ-बूझसँ काज लेबा सऽ होइत अछि। संगठनमे अद्भुत शक्ति होइत अछि आइ बड्ड किछ सिखलौह। वास्तव मे ओ योद्धा अछि जे अपन कमीसँ लड़ि, परिस्थितिसँ जितैत अछि। ओ आब बुझि गेल छल जे ओ डरपोक नञि अछि।

पानक खिल्ली

❑ *इरा मल्लिक*

नघंबर - दिसंबरक दुपहरियाक समय, गुनगुना रौद। बात नब्बेक दशकक अछि। रमाक पति सुरेशजी सदर अस्पताल मे सर्जन छलाह। हुनकर ड्यूटीक कोनो समय निर्धारित नञि छल। कखनो इमर्जेंसी केस आओल आ डाक्टर साहब तैयार भऽ अस्पताल निकलि जाइथ। छोट गृहस्थी रहैन्ह। ओहि गृहस्थी मे बूढ़-बुजर्गक आशीर्वादक संग छोट बच्चाक कलरव मौजूद छल। सब सदस्यमे एक खुशीक रंग भरल छल।

ओहि परिवारमे रमाक ददिया सासु-ससुर (महेंद्र जी), अपन सासु-ससुर (कुलदीप जी), रमा, रमाक पति सुरेश आ दूटा नेना छल- मनु आ हर्ष। कुल आठ आदमीक परिवार। गामसँ एकटा बहिया टुनाय सेहो करीब आठ-नौ सालसँ डाक्टर साहेब एतय काज करैत छल। डाक्टर साहेबकेँ कोठी लग एकटा कोठलीवाला मकानक घरमे अपन तीन गोटेक समांग रहैत छलाह। भरि दिन टुनाय काम-धाममे सुधाक हाथ बटाबैथ आ बजारक सौदा ओसूलकेँ सेहो सम्हारि दैथ। फेर सांझ मे अपन परिवारक संग समय बितबैत छलाह। छल तो ओ बहिया मुदा डाक्टर साहेबकेँ दादा-दादी आ माँ-बाबूजी ओकरा घरक समांग मे गिनथिन। बेर-कुबेर, हारी-बिमारीमे टुनायकेँ बुजुर्गक बड्ड भरोस छल, टुनाय दूनू प्राणीकेँ।

रमाकेँ अपन गृहस्थीसँ बड्ड सिनेह छल। भोरे उठैत सबकेँ चाह-बिस्कुट संग भोर सोहनगर बनबैथ। सबकेँ दिनचर्या बाँटल छल। ददिया ससुर फौज सँ रिटायर्ड छलाह, हुनक सक्रियता देखि नवतुरिया सब हैरान रहैत छल। खुब चुस्त आ खुशमिजाज लोक। पूरा घर खुश आ स्वस्थ छल। रमाक दूनू बच्चाक अपन चारू दादा-दादीक संसर्गमे खुब नीक पालन-पोषण भऽ रहल छल। रमा अपन घरक भीतरवाला अंगनामे दूटा चौकी लगा देने छलखिन आ लगमे एकटा छोट सनक टेबुल आ चारिटा कुरसी सेहो लागल छल। सब कियो दिनमे खाना खेलाक बाद घंटा-दू घंटा ओहि मीठ रौद मे बैसैथ। ओहि समय डाक्टर साहेब सेहो उपस्थित रहैत छलाह कनिको समय लेल। एतय सुरेशक दादी छ खिल्ली पान लगाबथिन। हरियर कचोर टटका

पानक पात। ओह! रमा पानक पात देखिते ओकर हरितवर्णी रंग सँ लुबुधा जाएथ। ठाढ़ भऽ कऽ अपन दादिया साउसक पान लगाबैक समस्त प्रक्रियाकेँ बड़ स्थिरचित्त धऽ देखैथ रमा रानी। हुनका लगैन जे इएह तऽ जीवन अछि। जीवनक रहस्य परत-दर-परत हुनका आँखिक आगाँ स्वतः उद्घटित होएत जाइन्ह। हुनका अपन सासु पर बड्ड प्यार, आवेश भऽ जाइन। ददिया साउसकेँ दुपहरिया भोजनक उपरांत ई नित्यक काज छल, शौक आ सिनेह सँ परसल पानक खिल्ली। पानक पत्ता पर बड्ड लगन सँ ओ चून पसारथिन, कत्थक बुकनी ताहि पर ओतबे हिसाब सँ धरथिन आ सुपाड़ीक महीन कतरा। पुतहु एकटा डिब्बामे पहिने सँ तैयार रखथिन। ओहि सुपाड़ीक कतरा जतन सँ छिटथिन। अपने घरमे तैयार गुलाबक पंखुड़ी सँ तैयार सुगंधित गुलकंद देथिन। फेर एकदम सधल कलाकार जकाँ पानक सुरेबगर गिलौरी तैयार कऽ सबकेँ हाथमे देथिन। पूरा घर पानक सुआद आ सिनेहक सुगंध सँ सरोबार भऽ जाइन। घरक सब सदस्य स्वाद, सिनेह सँ भरल पान खाइत छलाह आ एक दोसरक लाले-लाल ठोर देखि मोने-मोन खुश भऽ जाइथ। आइ नञि जानि दादाजी अनचोकेमे बाजि उठलखिन। देखैत छियै कुलदीप! सुरेश, हर्ष आ मनु अहँ सुनु आ बुझियौक। ई छोट सनक पानक गिलौरी अपनामे कतेकटाक रहस्य छिपेने अछि। अहाँ कहु कि असगर पान आ कि चून, कथ वा सुपाड़ी गिलौरीकेँ एतेक स्वादिष्ट आ चटकदार लाल रंगमे बदलि सकैत छल? असगर किनको मे ई सामर्थ्य नञि जे पानक स्वादक संग सुंदर रंग सेहो प्रदान करत। तहिना परिवार होएत अछि। पानक पातकेँ घरक बुजुर्ग बुझु। जहिना हमसब सदस्य चून, कथ, सुपाड़ी, गुलकंद सदृश अपन-अपन प्रेम, सौहार्द एक-दोसरक परवाह आ सामंजस्य बनेने रहैत छी, तैं एकटा सुंदर गरिमामय आ आदर्श परिवारके निर्माण करैत छी। सब चीजक उपस्थित रहब जरूरी अछि आ ओहियो सँ जरूरी बात अछि जे उचित मात्रामे उपस्थिती अति सुंदर परिणाम दैत अछि। दादाजीक बात सुनि सभहक मोनक खुशीक दीप एक्के संग जगमगा उठल।

एतबे मे कतहु दूरसँ रेडियो पर गीत बाजि उठल, सभहक लाल रंगल ठोर मुसकिया उठल-

हँसि-हँसि पनमा
खुआओल बेइमनमा!
खुआओल बेइमनमा!!!

पायदान पर वर्ष 2021

❑ *अरूण लाल दास*

नववर्ष 2021 पायदान पर अछि। भोर होएक देरी अछि। राति बारह बजे धरि बच्चासँ बूढ़ धरि सब एक-दोसरकेँ नव बर्षक शुभकामना देबामे व्यस्त रहत। जुआन जहानकेँ तऽ फुटानी किछु कहल नञि जाए।

लालचंद धीरेसँ अपन दोस कोमलकेँ मैसेज केलक **'दोस काल्हिक की प्लान बनेलहुँ?'**

सिरहानासँ मोबाइल निकालि लालचंद कोमलक जबाव इनबाक्स मे पढ़बा मे व्यस्त भऽ गेल। पढ़य लागल-

"दोस काल्हि कतऽ जैब, की करब से की कहू? एखन किछु नञि कहि सकैत छी। दिसंबर मे बौआक इसकुलक फीस करीब चौबीस सौ रूपैया तीन महीनाक भरबाक छल, नञि भरि सकलौंह। जाड़ मे एकहकटा सभहक सुइटर खरीदबाक छल सेहो नञि भऽ सकल। एकहिंटासँ काज चला लैत छी।

काल्हि कहुना-नञि-कहुना एको किलो माछ-माउस किनहे परत। माउस कम-सँ-कम आठ सौ टाकासँ मुँह नै बाजत। किछु-ने-किछु तऽ लेबही परत, नञि तऽ बच्चा सब टुकुर-टुकुर मुँह ताकत। फेर तकर नून-मसाला जोड़ू, पिआज-लहसुनक भाव तऽ देखिते छियै अकाश लागल अछि।

जौँ कतौ घुमहुँ जैब तऽ टेम्पूक खरचा ऊपरसँ। लौटती मे ओहो टेम्पू अनाप-सनाप पाइ लेत। कहू एकटा प्राइभेट नौकरीमे कत सँ ई सब जूमत, की-की करू? कहुना-कहुना दिन खेपाइत अछि। भाइ! अहींसँ कतेक आशा करू। पहिलको पैंच अहाँक सधा नञि सकलौंह एखन धरि।"

लालचंदकेँ पढ़ैत-पढ़ैत माथ गरम भऽ गेलै। सोचलक धौर जाए दिअह। एखन आब एक जनवरीक स्वागत कएल जाए। दोसकेँ सपरिवार निमंत्रण दऽ अपने ओहिठाम भोजन करेबैन्ह आ अपने कलमबाग मे भोजन बना एकटा छोटछिन कविगोष्ठीक आयोजनमे समय नीकसँ कटि जैतै। एक जनवरी धूमधामसँ मनायल जैत।

फोंफ

❑ *ज्ञानवर्द्धन कंठ*

बाबा, ई समधि ककरो सूतऽ नञि देताह। एना कहुँ फोंफ काटय लोक?

हौ, एहि अकलबेरामे त्रिन पड़ब कोनो नैनटा उपलब्धि नञि बूझह। समधि स्वयं तऽ समाधिस्थ छथि, परञ्च दलान भरिक समाजकेँ जागृत करबाक सुकाज कऽ रहल छथि।

बाबा, अहाँ उछन्नरकेँ सुकाजक संज्ञा दऽ रहल छियैक?

देखह, ई सभ सापेक्ष शब्दावली भेलह। केँ कोन रूपेँ फोंफकेँ ग्रहण करैत छथि, ताहि पर संज्ञा निर्भर करैत अछि। एहि दलान पर केओ कवि एहिमे कविताक आह्वानक अनुभूत कऽ लेताह। प्रगतिवादी लोकनि पहाड़क अंतर चीड़ि कोनो झरना निःसृत हेबाक नाद सुनताह, तऽ अध्यात्मवादी परम सत्ताक आनंद-अनहदक। जनवादी लोकनिकेँ एहिमे शोषण-दमनक विरुद्ध शंखनादक स्वर सुनाय देतैन्ह, तऽ वीर रसक कविकेँ हुँकार ध्वनित हेतैन्ह। संगीतज्ञ लोकनि फोंफक वैविध्यपूर्ण आरोह-अवरोहसँ कतोक राग-रागिनी निकालि सकैत छथि। हास्यकार लोकनि ओहि सुरसँ कतेको बिम्ब बना-सुना पेटमे बग्घा लगा देताह। स्वास्थ्य विज्ञानी लोकनिक लेल ई अध्ययनक सुन्नर हेतु भऽ सकैत छैन्ह। ओ पता लगा सकैत छथि जे श्वास-प्रक्रियाक रोकावटसँ फोंफ कटबाक क्रिया कोना जन्म लैत छैक, ओकर की-की कारण आ निवारण छैक आदि-आदि। मोटापा कोना कम करी आ कोन-कोन आसन-प्राणायाम करी, ई सभ योगशास्त्री बुझा सकैत छथुन। ओना कतिपय योगशास्त्री लोकनि अपन व्यापार बढ़ेबाक अवसरक रूपेँ सेहो एहन-एहन प्रसंगकेँ पकड़ि प्रभूत सफलता हासिल केलैन्ह अछि। डाइटिसियन एहि हेतु भोजनक दैनिक रूटीन बनाकऽ प्रस्तुत कऽ सकैत छथि। फोंफ कटनिहार समधि स्वयं तऽ अनाशक्त योगी जकाँ संसारसँ निर्लिप्त भऽ अपन भावमे निमग्न छथि, मुदा फोंफक विविध ध्वनि-तरंगसँ सबकेँ आप्लावित केने अछि। एहिमे लोकक धैर्य, संवेग-नियंत्रण आ संस्कारक परीक्षण सेहो कएल जा सकैत अछि। फोंफ कटनाए अपना देशक विशिष्ट पहिचान सेहो अछि। निर्वाचित जनप्रतिनिधिगण कतोक जनसरोकारक विषयकेँ बिसरि फोंफ काटि खूबे त्रिन गाबै जाए छथि। बाबू-अधिकारी लोकनि कतोक संचिका दाबि फोंफ कटैत रहैत छथि। कतोक आंदोलन सरकारी फोंफक भेट चढ़ि स्वाहा भऽ जाइत अछि। हँ, कखनो इहो भऽ जाइत अछि जे तीव्र फोंफक स्वर कर्णगत भेलासँ फोंफकटनिहारक अपनो त्रिन टुटि जाइत छैन्ह।

बाबा, एतय लोकक त्रिन जे खराप भऽ रहल अछि, से किछु-कोनो बात नहि?

से तऽ हिमक्षेत्र, बालुकाक्षेत्र, सिन्धुक्षेत्र आदिमे देशक प्रहरी लोकनि सेहो जागल रहि अपन त्रिन खराप केने रहैत छथि। तकर चिंता भेलौह? महामारीक उन्मूलन हेतु कतोक अनुसंधानी लोकनि राति-दिन एक केने छथि, तकर फिकिर भेलौह? हौ, अपन कष्टसँ आगाँ दृष्टि लऽ जेबाक चेष्टा करह। तैयो तोंहू फोंफ काटऽ चाहैत छह तऽ भंडारघरसँ तूर आनि कानमे ठूसि पड़ि रहह। हौ, कोन समस्याक समाधान नञि छैक?

प्रण

❑ *कंचन कंठ*

"हे गे माए! आब कतेक औरी चले के है? हमरा गोर दुखाइयै।" बुचनी रौंदमे लोहछैत बाजल।

"गे नुनु, हे बौआ! चलु एखनी तऽ बरा दूर है गाम" समतोलिया बच्चाकेँ परतारैत बजलै।

बच्चा लेल तऽ ओकर कोढ़ करेज फाटि रहल छल। कतनो दुःख बेमारी बझलै ओ कहियो बच्चाकेँ बुझऽ नञि देलक।

अपने बरू पानिए पी कऽ रहि जाए बुचिया लेल किछु जोगार तऽ कैये लै छल। ओकरा बुझल छलै 'छोटा परिवार सुखी परिवार' तऽ कतबो सासु-ननदि बात-कथा कहलकै दोसर बच्चा नञि केलक। इएह एकटा बढ़िया छै। एकरे पढ़ायब-लिखायब, किछु बनायब। कत्ते

रास सपना ओहि बच्चा लऽ कऽ देखने छलै दूनू परानी! तैं तऽ चलियो आयल रहय एतय! गाम मे टंगघिच्चियो तऽ कम नञि होइत छैक!

समतोलियाक घरबला लोकक कहला पर गामसँ बंबई आबि गेल छल। केतनो नेहोरा-मिनती केलकै अपन देस-मुलुक छोड़िकय नञि जाएब, ईहेँ रहय कुच्छो-न-कुच्छो काम-धंधा कऽ कऽ गुजर कऽ लेब। ओ कनि-मनि पढ़लो छलै आंगनबाड़ीमे कामो धऽ लेने छल।

मुदा शहरक चकाचौंधक आगाँ ओकर घरबला नञि मानलक चलि आयल एहिठाम। दिनक ठेकान नञि रातिक! ओहो संग देबय लागल, बच्चा मे माएसँ सियब-काटब सिखने छल से गुण काज ऐलै, गुण कतौ अकारथ जाए।

आब ई महामारी! कियो ककरो देखैबला नञि। काम बन्न भऽ गेलै। मालिको कत्ते दिना बैठाकय खुएतै।

भुखले रहला पर, कष्टमे परला पर तऽ मायै याद अबै छै सबकेँ, देश-विदेशसँ लोक घुरि रहल अछि। ई मजूर सबकेँ केँ पुछय?

ओकरा सभ लेल जहाज, उड़नखटोला,हमरा आर केँ केँ देखैया?

ओकर घरोबलाक बुद्धि एलैहन, हे बरहमबाबा! हे दुर्गा मैया! हे बानेसरी! नीके-ना गाम-ठाम पर पहुँचा दिय तऽ घुरिकय नञि ताकब!

हँ... हँ.... आब सएह हेतैक! दृढ़ निश्चय सौं ओकर देह सतर भऽ गेल आ चालमे तेजी आबि गेल।

फोबिया

❑ *भावना मिश्रा*

हम पहिने नदी, तालाब आदिमे डुबकी नञि लगा सकैत रही, हमरा पानिक फोबिया छल। पानिमे जाएसँ बड्ड डरैत रही आ पानिमे डुबकी लगाबे केँ लेल तऽ हम सोचियो नञि सकेत छलौंह। बड्ड घुटन होएत छल, हम एहि घटना धरि कहियो पानिक भीतर माथा नञि डालने छलौंह।

ई गप तखन केर अछि जखन हमर मनन तीन बरखक छल। हम ओकरा स्वीमिंग क्लास मे डालि देलियै। मनन अपन बहिनक संग स्वीमिंग सीखय लागल। मस्तीक संग मनन स्वीमिंग करैत छल आ फ्लोटरक संग स्वीमिंग सीखैत छल।

एक दिन मनन मस्तीक संग स्वीमिंग करैत छल कि अचानक ओ फ्लोटर खोलिकेँ स्वीमिंग करबाक प्रयास करय लागल, आ ओ डूबय लागल। हम ओकरा देखि कऽ तुरंत पानिमे कूदि गेलौंह आ मनंनकेँ पकड़बाक प्रयास करस लागलौं। नै जानि कतयसँ ऐतेक आत्मबल आयल हमरा मे जे हम मननकेँ पकड़ि कऽ सीढ़ी धरि आनि लेलौंह ता धरि हमरा मदति लेल बहुतो लोक आबि गेल छल। सब बाजय लगलाह, "भगवान बचा लेलखिन्ह।" ओहिमे कियो बजलै- "रौ बौआ! लगैयै माए मनसँ जीतिया केने रहौ।" सब कियो हमर प्रसंशा करय लागल।

हमरा ओहि दिन पूरा विश्वास भऽ गेल जे एकटा माएकेँ जखन अपन बच्चा पर कोनो संकट आबि जाए तऽ ओ किछ कऽ सकैत अछि, ई फोबिया तऽ छोट सनक गप भेल।

संताने लेल हमसभ जीतिया करैत छी, एक माए अपन बच्चाक लेल किछुओ कऽ सकैत अछि।

खटगर-मिठगर घरक बनल व्यंजन

❑ *बिशाखा दत्त*

1. मखानक बर्फी

सामग्री :-

दूध - 9 लीटर
मखान - 1/2 किलो
खोवा - 250 ग्राम
किसमिस - 10-12
काजू - 10-12
बादाम - 11-11
इलायची - 1 छोटा चम्मच
चीनी - 100 ग्राम
घी - 2 बड़का चम्मच

विधिः-

पहिले किसमिस, काजू, बादामक छोट-छोट काटि लिय। फेर एकटा कड़ाहीमे घी गरम

करू आ ओहिमे मखानकेँ 2 मिनट धरि भुजू। भुजलाक बाद ठंढा भेला पर महीन-महीन सन मिक्सीमे पाउडर बना लिय।

कड़ाहीमे दूधक 1/4 भाग धरि गाढ़ कऽ लिय। पाकल गाढ दूधमे पिसल मखान पाउडर, खोवा दऽ कऽ दूधकेँ नीक जकाँ मिलाऊ। नीकसँ मिलेलाक बाद 10 मिनटक ठंडा होए दियौ। ठंडा भेलाक बाद चीनी पाउडर, किसमिस, काटल काजू, बादाम नीकसँ मिलाऊ। एकटा थारीमे कनी घी लगा ओहिमे एकरा पसारि लिय। ऊपरसँ कनी आर काजू, बादाम, इलाइची पाउडर दऽ सजा लिय आ मनचाहा बर्फीक आकारमे काटि लिय। भऽ गेल मखानक बर्फी तैयार।

2. मीठका नीबूक आचार

सामग्री :-

नींबू - 1 किलो
चीनी - 250 ग्राम
लाल मिरचाइ पाउडर - 2 छोट चम्मच
जीर - 1/2 छोट चम्मच
गुड़ - 1 कपक टुकड़ा
नून आ हींग - स्वादानुसार

विधि :-

नीबूकेँ साफ पानीमे धो कऽ ओकरा मनचाहा आकारमे काटि लिय।

नींबूमे मिरचाइ-नून लगा कऽ रौदमे 4-5 दिन धरि सुखा लिय। 4-5 दिन रौदमे सुखेलाक बाद ओहिमे सब सामाग्री जीर, गुड़, चीनी, हींग, नून दऽ खुब नीकसँ मिला लिय। मिश्रण कें तेज रौदमे 10-12 दिन लगातार सुखा लिय। अहाँक नीबूक अचार तैयार अछि।

3. सोयाबीन-मेथी पत्ताक मढरी

सामग्री :-

सोयाबीन - 50 ग्राम
मैदा/आटा - 150 ग्राम
सूजी - 50 ग्राम
तेल - 50 ग्राम (खास्ताक लेल)
अजवाइन - 1/2 छोट चम्मच
मेथीक पत्ता - 100 ग्राम
तेल/रिफाइंड - फ्राइ करबा लेल

विधिः-

सबसँ पहिले सोयाबीनकेँ 10 मिनट धरि सादा पानीमे भिजा लिय। फेर हाथसँ दबाकऽ सोयाबीनमे सँ पानी निचौड़ लिय।

मैदा/आटा आ सूजी कऽ एक संगे मिलाकऽ चाइल लिय। मैदा-सूजीमे नून, मोयन, अजवाइन दऽ मिला लिय। मेथीक पत्ताकेँ नीक जकाँ साफ कऽ उसनि लिय।

सानल मैदाक आटामे सोयाबीन, उसनल मेथी पात मिला कऽ आटाकेँ नीकसँ साइन लिय। सानल आटाक छोट-छोट मढरी बेल कऽ ओहिमे चाकूसँ कट लगा गरम तेलमे धीमी आँच पर फ्राइ कऽ लिय। ठंडा भेलाक बाद मठरीकेँ एयर टाइट डिब्बामे भरि कऽ राखि लिय, मठरी तैयार अछि।

4. पालकक पापड़

सामग्री :-

चाउरक आटा - 250 ग्राम
नून - स्वादनुसार
जीर - 1 छोट चम्मच
लाल मिरचाइ पाउडर - 1 छोट चम्मच
पालक - 50 ग्राम
तेल - 2 चम्मच ।

विधि :-

एकटा बर्तनमे तेज आँच पर पानी गरम कऽ लिय, गरम पानी मे धीरे-धीरे चाउरक

आटाकेँ नीकसँ मिला लिय। पालककेँ धो कऽ उसनि लिय आ मिक्सीमे पीस लिय।

गरम पानीमे मिलल चाउरक आटामे पिसल पालक, नून, जीरा आ लाल मिरचाइ पाउडर दऽ नीकसँ फेंट लिय।

प्लास्टिक शीट पर पापड़केँ गोल-गोल पसारी लिय आ 2-3 दिन तेज रौदमे सुखा लिय। पालकक पापड़ तैयार भऽ जाइत।

5. मिक्स अचार

सामग्री :-

आलू - 1 किलो
खीरा - 1/2
गाजर - 1/2
मूरइ - 1/2
हल्दी पाउडर - 2 चम्मच
लाल मिरचाइ पाउडर - 3 चम्मच
रैंची (राई) - 2 चम्मच
साबुत धनिया - 2 चम्मच
सौंफ कुटल - 3 चम्मच
तेतैर (इमली)क पल्प - 2 चम्मच
मेथी कुटल - 2 चम्मच
एसिटिक एसिड - 2 छोट चम्मच
नून - स्वादनुसार
सरसो तेल - 1 कप

विधि :-

आलूकेँ धो कऽ उबालि लिय। खीरा, गाजर, मूरइकेँ नीकसँ साफ पानीमे धो कऽ पातर लम्बा-लम्बा काटि लिय।

एकटा अलग बर्तनमे उसनल आलुकेँ छिल्का हटा कऽ लम्बा-लम्बा काटि लिय।

सब काटल आलु, खीरा, गाजर, मूरइकेँ मिक्स कऽ रैंची, लाल मिरचाइ पाउडर, नून, तेतैरक पल्प हल्दी मिलाक तेज धूपमे 1-2 घंटा सुखा लिय।

कड़ाहिमे तेल गरम कऽ लिय। गरम तेल मे सौंफ, मेथी हल्का लाल होए धरि भुजी लिय। ओहि गरम तेल सब सामग्री सब मिलेलाक बाद हरियर धनिया अ एसिटिक एसिड मिक्स कऽ लिय। तैयार अछि झट बनाऊ - चट खाऊ, अचार खेबा लेल।

6. काँच हड़ैद-आदी-गुड़क लड्डू

सामग्री :-

गुड़ - 250 ग्राम
आदि - 200 ग्राम
काँच हड़ैद - 100 ग्राम
काजू, किसमिस, बादाम - 1-1 चम्मच (कतरल)
नमक - चुटकी भरि
अजवाइन - 1 चम्मच
घी - 3 चम्मच

विधि :-

आदी आ काँचा हड़ैदकेँ धो कऽ साफ कऽ लिय। फेर ओकरा कद्दुकश कऽ लिय।

कड़ाहीमे घीकेँ गरम कऽ कऽ धीमा आँच पर काजू, किशमिश आ बादामकेँ हल्कासँ भुजु आ अलग कऽ लिय।

फेर कड़ाही मे घीक संगमे कद्दूकश कएल अदि-हल्दीकेँ नीकसँ भुजी लिय। भुजलाक बाद

ओहिमे गुड़, अजवाइन, चुटकी भरि नून मिला लिय। बाद कतरल काजू, किसमिस नीकसँ मिलेलाक गोल-गोल लड्डू बना लिय। तैयार भऽ गेल जाड़क मौसममे सभहक लेल फायदेमंदे लड्डू।

सर्दी मे मेकअप

❑ *संतोषी कर्ण*

श्रृंगारसँ पहिने त्वचाकेँ श्रृंगार लेल तैयार केनाय बड्ड जरूरी अछि, एहि लेल निम्न वस्तुक आवश्यक अछिः-

1. cleasing milk
2. toner
3. moisturiser

सबसँ पहिने cleasing milkकेँ हाथ पर लऽ कऽ समुचा मुँह पर लगा circular motion मे massage करू, ओकरा बाद tissuकेँ हलका भिजा कऽ पुरा चेहरा नीकसँ साफ करू- खास कऽ नाकक दूनू कात। एतय गंदा बेसी रहैत अछि, ऊ साफ नञि भेलासँ foundation ओतय जमा भऽ जैत जे भद्दा लागत। cleasingकेँ 30 सेकेण्ड रूकलाक बाद toner हाथमे लिय आ समुचा मुँह पर थपथपा कऽ लगा लिय, एहिसँ चेहराक रोमछिद्र छोट भऽ जैत आ श्रृंगार करबामे आसानी रहत। आब फेर 30 सेकेण्ड लेल रूकु। आब लिय moisturiser पुरा चेहरा पर नीकसँ लगा लिय। आब चेहरा पर आँगुरसँ हल्का हाथे circular motion मे उँहम करू। circular motionमे massage करय छी तऽ चेहरा पर natural glow आयत, foundation ठीकसँ इसमदक हैत आ स्कीनकेँ hydrate सेहो करत। जौं श्रृंगार करयसँ पहिने एहि तरहसँ चेहराकेँ तैयार करैत छी तऽ make up productक कोनो दुष्प्रभाव नञि हैत चेहरा पर आ make up सेहो खुब नीकसँ हैत।

सर्दीमे त्वचा बेसी dry भऽ जाइत अछि, ताहिसँ Make up सँ पहिने त्वचाकेँ मेकअप लेल तैयार केनाए बड्ड जरूरी होइत अछि। सबसँ पहिले skin clean करू फेर toner लगाऊ ओकरा बाद serum (oil bace) लगाऊ, तकरा बाद moisturise। ई सब लगेलाक बाद eye make up कऽ लियऽ। eye make up कऽ मेहरून वा गुलाबी कऽ सकैम छी। सर्दीमे ई दूनू रंग खुब प्रभावित करैत अछि। eye make-upक बाद चेहरा पर primer लगाऊ, एहिसँ make up बेसी देर धरि टिकत। एकरा बाद लगाऊ colour correcter, चेहरा पर जौं कारी दाग-धब्बा वा कारी घेरा (dark circle) अछि तऽ

orange corrector लगाऊ, जौं ताजा दाना वा pink spots अछि तऽ green corrector लगाऊ, जौं चेहरा पर चोट अछि तऽ yellow corrector लगाऊ। ध्यान देब जे corrector ओतय लगाबय जतय एहन दाग-धब्बा होए। correctorक ऊपरसँ concesler लगाऊ नञि तऽ corrector देखैत। एहिकेँ ऊपर स्किन टोनसँ मिलैत foundation लगाऊ। beauty blenderकेँ हल्का भिजा कऽ blend केलासँ foundation नीकसँ blend हैत। याद राखु जतेक नीकसँ foundationकेँ blend करब ओतेक नीक चेहरा देखैत। सर्दीमे face powder लगेबाक जरूरत नञि रहैत अछि ओ चेहराकेँ आर dry करैत अछि एहि द्वारे under eye पर आ ठोरक दूनू कोना पर loose powder लगा लिय। आब लगाउ contour, तकरा बाद लगाऊ blusher, blusherकेँ ऊपर highlighter लगाऊ आ अंत मे lipstick लगा कऽ makeup fixer लगा लिय।

नोटः– make up product नीक कम्पनीक लियऽ जौं चेहरा पर कोनो तरहक एलर्जी अछि तऽ चिकित्सकक परामर्शक बादे कोनो product use करू। जौं face oily अछि तऽ normal serum लगाऊ oil base नञि।

क्रमशः (पृष्ठ 8 सँ) ...

विकलांगता : स्वरूप आ समस्या

विकलांगक अधिकारकेँ सुनिश्चित करबा लेल भले भारत सरकार वा राज्य सरकार सैद्धांतिक तौर पर चाहे जतेक ढ़िंढ़ोरा पीटय, मुदा राजनीतिक आ प्रशासनिक तौर पर सर्वत्र उदासीनता देखल जा सकैत अछि। हमरा तऽ ई महसूस होइत अछि जे विकलांगकेँ **दिव्यांग** नामक झुनझुना पकड़ा देल गेल अछि। पिछला पाँच वर्षसँ मुख्य विकलांगता आयुक्तक कार्यालयमे मुख्य आयुक्त आ आन आयुक्तक पद लगातार रिक्त रहल अछि। ई सरकारक उदासीनता नञि तऽ आर कि अछि? जखन केंद्र सरकारे विकलांगक अधिकारक संरक्षणक प्रति प्रतिबद्ध नञि अछि।

विकलांगजन आ हुनक परिवारजनमे सेहो अपन अधिकार आ कर्तव्यक प्रति उदासीनताक अभाव अछि, हुनकामे जागरूकताक अभाव अछि। समाजसँ सेहो हुनका सम्यक् सहयोग नञि मिलैत अछि। सरकारी आ गैर-सरकारी संगठन दिससँ चलाओल जाएवाला विभिन्न योजना आ ओहिसँ मिलयवाला लाभसँ वो अवगत नञि छथि। हिनक समस्या पर आइ साहित्यिक अभिव्यक्ति भऽ रहल अछि। एकरा बेसी समृद्ध अओर व्यापक बनेबाक आवश्यकता अछि।

अंतर्मनमे उठल अविरल भावक अभिव्यक्तिः विमोह

❑ *डॉ. रत्ना बनर्जी*

अविरल भावक अभिव्यक्ति अछि विमोह। आठ कविताक एहि संग्रहमे कवयित्री महाभारतक विषय चुनलैन्ह आर अंतर्मनमे उठनयवाला भावसँ व्यक्तिक संघर्ष पर रचल रूपक-काव्य कथा अछि। ई मनोवैज्ञानिक अ आध्यात्मिक विश्लेषण अछि। ई विश्लेषण 'स्व'क स्वरूपक अछि, जतय अन्तःक द्वन्द अस ओहिसँ उत्पन्न विचारकेँ अलंकृत आ विस्तृत विवरण परिपक्वताक संग कएल गेल अछि। विमोहक कवितामे कवयित्री विचार-साहित्यकेँ नव आयाम दैत गीता आ महाभारतक कुछि प्रसंग पर विवरणात्मक चर्चा केलैन्ह अछि।

कवयित्री एहि पुस्तक क द्वारा आधुनिक मनुष्यक खिन्नताकेँ रूपकक जरिये वर्णित केलैन्ह अछि। कवितामे मनुष्यक आधुनिकता आ प्रचलित अवधारणाक मध्य जीवनमे संतुलन तलाशैत प्रतीत होइत अछि। एकर कवितामे सकारात्मक विचार, भावना आ उत्साहक संग अपन अंदरक व्यक्तित्वमे झाँकयकेँ लेल प्रेरित करैत अछि। सोच, भावना आ परिकल्पनाक संयुक्त अभिव्यक्तिक अतिरिक्त विमोहक कवितामे काव्य कौशलक अप्रतिम दर्शन मिलैत अछि।

कवयित्रीसँ विमोहक माध्यमे जीवनक गूढ़ अर्थकेँ समझयसँ विचार आबैत अछि जे प्रायः सब संघर्ष विमोहक नासमझीये सँ उत्पन्न होइत अछि आ एकर शाश्वत समझ हमरा बेहतर जीवन दिस लऽ जाइत अछि। 'विमोह' अज्ञानता आ भ्रमक कारण उत्पन्न होएवाला ओ मोह अछि जे मनुष्यकेँ स्व केर शाश्वत स्वरूपसँ दूर कऽ दैत अछि। एकर विपरीत पुस्तक विमोह पाठककेँ सशक्त करैत हुनक अंतर्ध्वनिक ओर आकर्षित करैत अछि।

विमोहक धारणा आ ओकर विस्तार बड़ु गूढ़ आ बृहत अछि। एहन धारणाकेँ काव्यक लेल चुननाय कवयित्रीक समझशक्तिक प्रमाण तऽ अछिये संगे हुनक संकल्प, साहस आ साधनाकेँ सेहो दर्शाबैत अछि। पोथीमे मनोवैज्ञानिक आधारक संगे अध्यात्मकेँ जोड़ैत विशिष्ट रचना अछि जे मानवताक विकासक लेल मीलक पत्थर साबित हेबामे सक्षम अछि।

एहि छोट काव्य संकलनमे कवयित्रीक भीतर नुकायल गंभीर मनोवैज्ञानिक अनुभव, आध्यात्मिक विचार, दार्शनिक सोच आ काव्य कौशलक समन्वय देखयकेँ मिलैत अछि। ओ कतेक निपुणतासँ हजारों वर्ष पूर्वक पौराणिक चरित्रक व्यक्तित्व, गुण-अगुण आ कर्मक विश्लेषणात्मक ढंगसँ समीक्षा करैत आजुक परिप्रेक्ष्यमे एकटा आधुनिक व्यक्तिक द्रष्टिमे ओ कतेक महत्वपूर्ण अछि ओकरा समझेबाक कोशिश केलैन्ह अछि।

कवयित्रीक आध्यात्मिक दर्शन पर गुरुदेव परमहंस योगानन्दजीक श्रीमद्भागवत गीता पर विचारक स्पष्ट प्रभाव अछि जे व्यवहारिक आ वैज्ञानिक तौर पर युक्तिसम्मत अछि। हमरा एहि कविताकेँ पढ़यमे बड़ु आनन्द आओल आ हमर कन्या-समान, स्नेह-भाजन छात्रा, कवयित्री आ चिंतक डॉ. दीप्ति प्रियाक लेल गर्वक अनुभव भेल। हम हुनक उज्ज्वल भविष्यक कामना करैत छी।

डेढ़ दशकसँ मनोविज्ञानक क्षेत्रमे सतत कार्यरत डॉ. दीप्ति प्रिया द्वारा लिखल एहि पुस्तकक प्रकाशन राजमंगल प्रकाशन द्वारा कएल गेल अछि। एहिमे आठ कविताक संग्रह अछि, एहि आठ कवितामे महाकाव्य महाभारत आ श्रीमद्भगवद्गीताकेँ रूपक पर विशिष्ट चर्चा अछि।

पोथीक रचना अनोखा अछि जतय महाभारत केर रूपकक वर्णन हिंदी कविताक रूपमे कएल गेल अछि। महाभारतक विषयकेँ लऽ कऽ लिखल गेल कवयित्री परंपरागत विषयकेँ मूलकेँ जीवित रखैत परिपक्वतासँ अपन विचारकेँ प्रस्तुत केलैन्ह अछि। महाभारतक विषय पर काव्य पोथीक संग दार्शनिक व्याख्या तऽ कतेको अछि, मुदा एहि सब धारणासँ फराँक काव्य पोथी 'विमोह'मे दृष्टांत आ अन्योक्तिक संग जे मनोवैज्ञानिक आ अध्यात्मिक दृष्टिकोण अछि वो प्रभावशाली अछि। ई रचनाकेँ विशेष बनाबैत हिंदी मे विचार साहित्यकेँ विशिष्टताक संग नव आयाम दैत अछि।

कतेको लोकक लेल मानसिक आ भावनात्मक पीड़ाकेँ व्यक्त करनाय कठिन होइत अछि आ मदति लेबामे झिझक सेहो रहैत अछि। मुदा, डॉ. दीप्ति प्रियाक अनुसारे विमोहक रचनाक लेल प्रेरणा इएह अछि जे एहिमे सँ किछु लोककेँ साहित्यक माध्यमसँ मदति मिल सकैत अछि। विमोहक धारणा आ महाभारतक विषय लऽ कऽ ओकर उन्मूलन पर स्पष्टताक संग विवरणात्मक चर्चा डॉ. दीप्ति प्रियाक क्षमता, संकल्प आ साधनाकेँ दर्शाबैत अछि। ओ विषयक संग सही मायनेमे न्याय करैत खुब सराहनीय ढंगसँ विशिष्ट दृष्टिकोण प्रस्तुत केलैन्ह अछि।

पोथी : विमोह (काव्य संग्रह),
कवयित्री : डॉ. दीप्ति प्रिया,
प्रकाशक : राजमंगल
मूल्य : 199 टाका

समीक्षक सेवानिवृत्त प्रोफेसर डॉ रत्ना बनर्जी, निर्मला कॉलेज, रांची

मैथिली रंगमंच मे नारीक भूमिकाकेँ नव आयाम दऽ रहल छथि

पूजा प्रियदर्शनी आ अंतरा कुमारी

मिथिलाकेँ सदति अपन ललना पर गर्व रहल अछि। आदिकालक सीता, गार्गी, मैत्रीय, भारती होइथ वा वर्त्तमानक प्रत्यक्ष प्रमाण हिमानी दत्त, भावना कंठ। मैथिलानी सदिखन अपन व्यक्तित्व आ कृतित्व सँ अपन समाज आ देशक नाम ऊँच करैत आबि रहल छथि। एहि स्तम्भक माध्यमे वर्तमान मे मिथिला आ देशक नाम ऊँच करयवाली मैथिल धियाक परिचय पाठक लोकनि सँ कराओल जाएत।

प्रकाश झाक निर्देशनमे विद्यापति कृत 'मणिमञ्जरी' सँ मैथिली रंगमंचक शुरूआत करयवाली पूजा प्रियदर्शनी आइ मैथिली रंगमंचक प्रतिष्ठित अभिनेत्रीक रूपमे जानल जाइत छथि।

मधुबनी जिलाक जानकी नगर गामक ब्रजेश्वर शर्मा आ पिंकी शर्माक सुपुत्री पूजा प्रियदर्शनी वणिज्य विषयसँ स्नातक छथि अओर प्रयाग संगीत समितिसँ कथक निपुण छथि। मध्यप्रदेश ड्रामा अकादेमीसँ अभिनय मे प्रशिक्षण प्राप्त कऽ राष्ट्रीय नाट्य विद्यालय, दिल्ली मे द्वितीय वर्षक छात्रा छथि।

मैलोरंग रेपर्टरी, बारहमासा आ विभिन्न हिन्दी नाट्य संस्थासँ जुड़ि लगभग 16 गोट नाटकक 20टा मंचन कऽ चुकल छथि। हिन्दी आ मैथिली रंगमंचमे सक्रिय हिनक अभिनीत मुख्य नाटकमे अछि- मणिमञ्जरी, अंधेर नगरी, जानकी परिणय, अमली, आब मानि जाऊ, ननदि भाऊज, कठपुतलीया, गुण्डा, धुर्त्तसमसगम, ऊँच नीच के बाद, जट-जटिन, ललका पाग आदि।

पूजा प्रियदर्शनी अपन सशक्त अभिनयसँ मैथिली रंगमंचकेँ नव आयाम देबा लेल अग्रसर छथि।

बाबा नागार्जुनक कविता 'विलाप'क नाटककार-निर्देशक महेंद्र मलंगिया द्वारा नाट्य रूपांतरण 'बज्जर खसौ एहन जाइत पर'मे पहिल बेर नायिकाक भूमिकामे अपन अभिनयक प्रदर्शन केलैन्ह बी. ए. पार्ट टूक छात्रा आ वरिष्ठ रंगकर्मी प्रो. महेंद्र लाल कर्णक सुपुत्री अंतरा कुमारी।

नायिकाक अभिनय देख श्रीमान मलंगियाजी हठात बाजि उठलाह, "ई तऽ मैथिली रंगमंचक मीना कुमारी छथि।" अंतरा कुमारी जीकेँ रंगकर्म आ अभिनयक गुण मधुबनीमे रंगमंचक स्थापना करयवाला अपन रंगकर्मी पितासँ मिलल छैन्ह। हिनक पिता पेशासँ किरण टीचर्स ट्रेनिंग कॉलेजमे नाट्य प्राध्यापकक संग लोकहित रंगपीठ सेवा संस्थानक सचिव सेहो छथि।

शैलेस झाक निर्देशन मे भेल एहि नाटकक मंचन आ अंतरा कुमारीक अभिनयक एतेक प्रसंशा भेल जे एकर पुनः प्रस्तुति स्नातकोत्तर संगीत एवं नाट्य विभाग परिसर, दरभंगामे 24-26 जून 2016 'रंग-महोत्सव'मे; नेपाल संगीत एवं नाट्य प्रज्ञा प्रतिष्ठान, जनकपुरमे आयोजित 'अंतरराष्ट्रीय मैथिली नाटक महोत्सव-2073'मे; 'विलाप'क नामसँ 18 जून 2018केँ मधुबनीमे भेल। चेतना समिति, पटनाक आयोजन 'चेतना रंग-उत्सव-2019' कालीदास रंगालय पटनामे प्रस्तुत लेखक-निर्देशक श्याम भास्करक मैथिली लोकनाटक 'राजा सलहेस'मे अंतरा कुमारी 'कुसमा' नायिकाक भूमिकामे खूब प्रसंशा बटोरलीह।

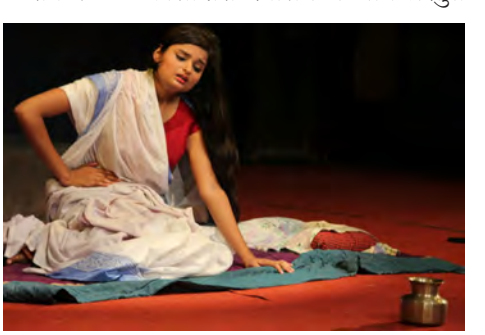

साइबर सुरक्षित राष्ट्र बनाऊ : अपन बच्चाकेँ साइबर योद्धा बनाऊ

❑ *कमाण्डर (रि.) कौशल किशोर चौधरी*

इंटरनेट अब हर घरमे अछि आ परिवारक लगभग हर सदस्य कम-सँ-कम स्मार्टफोनक जरिए इंटरनेटसँ जुड़ल छी। हालक सर्वेक्षणसँ पता चलैत अछि जे हर मिनट लगभग 13 लाख लोक फेसबुक पर लॉग इन करैत छथि, 47 लाख लोक YouTube वीडियो देखैत छथि, 41 लाख लोक Google पर किछु खोजैत छथि। एकर अलावे, एक्के मिनटमे लगभग 60 लाख संदेश भेजल जाइत अछि आ लगभग 4 लाखसँ बेसी ऐप डाउनलोड कएल जाइत अछि। इंटरनेट पर डेटाक एतेक तीव्रता इंटरनेटकेँ साइबर अपराधीक लेल सोनाक खान बना देलक अछि।

एहिसँ जौं हम प्रति दिन साइबर अपराधक खबर पढ़ैत वा सुनैत छी तऽ आश्चर्य नञि होइत अछि। जौं हम अपन स्वयंक मित्रमंडलीकेँ देखि तऽ हम सुनब जे कियो-नञि-कियो व्यक्ति साइबर अपराधक शिकार भऽ गेल छथि। दिलचस्प बात ई अछि जे एहिमे सँ कतेको पीड़ित पढ़ल आ योग्य होइत छथि।

बढ़ैत साइबर अपराधकेँ देखैत दुनियाभरक लगभग सभ सरकार साइबर अपराध पर लगाम लगाबय लेल नियम बनौने अछि। तैयो ई दिन-पर-दिन बढ़ैते जा रहल अछि। ई सोचय पर मजबूर करैत अछि जे कि अपराध पर अंकुश लगाबय लेल सरकारक नियमने काफी अछि? कि अपराध पर अंकुश नञि लगा पाबय लेल सरकारेकेँ दोष देनाय उचित अछि?

साइबर अपराधी सफल किएक होइत अछि

साइबर अपराधीकेँ इंटरनेटक अंतर्निहित तकनीकक, लोकक अज्ञानता, मुफ्त उपहार वा मुफ्त सेवाक प्रति लोकक लालच आ दोसर पर भरोसा करबाक लोकक भोला-भाला दिमागक बारे मे नीकसँ पता रहैत अछि। ओ भोला-भाला लोककेँ धोखा देबा लेल अओर हुनकासँ फायदा उठाबय लेल विभिन्न प्रकारक हथकंडा अपनाबैत अछि आ लोक ओकर चाल मे फँसि जाइत छथि। जखन आम लोक एहि बातसँ अनभिज्ञ रहैत छथि जे साइबर अपराधी हुनक कमजोरीक कोना फायदा उठाबैत छथि तऽ साइबर अपराधीक लेल ओकर नापाक प्रयासकेँ सफल करनाय आसान भऽ जाइत अछि। कि एहन मामल मे कानून वा शासनक प्रभावकारिताकेँ दोषी ठहराओल जा सकैत अछि?

साइबर अपराधीक मुख्य निशाना

साइबर अपराधीक समाजमे तीन मुख्य निशाना होइत अछि- बच्चा, महिला आ वरिष्ठ नागरिक। बच्चा बड्ड जिज्ञासु आ प्रयोगशील होइत छथि, हुनकामे चुनौती स्वीकार करनाय आ जोखिम लेनाय पसंद छैन्ह। ब्लू व्हेल जेहल खेलक बाद आत्महत्या वा टिक-टॉक - सेल्फी गेम मे आकस्मिक मौत काफी आम खबर अछि। स्कूल स्तर पर, साइबर बदमाशी आ साइबर फौलोकेँ कारणेँ बच्चाक पीड़ा ककरोसँ छिपल नञि अछि।

वरिष्ठ नागरिक, महिला आ आन सामान्य लोकसँ जुड़ल बैंकिंग लेन-देनक धोखाधड़ी काफी आम अरत अछि। ओ व्यक्तिगत डेटा आ एतय धरि जे ओटीपीकेँ सेहो साइबर अपराधीक संग किछु सेवा वा मुफ्त उपहार पेबाक उम्मीद मे साझा करनाय बंद नञि करैत छथि, किएक तऽ ओ दोसर पर भरोसा करैत छथि। हुनका लागैत अछि जे सेवा प्रदाता ओतबे नीक लोक छथि जतेक ओ स्वयं छथि। इंटरनेटक इस्तेमाल करयवाली महिलाकेँ धोखा देनाय आ परेशान करनाय सेहो काफी आम बात अछि।

एतय धरि जे सरकारी वेबसाइट अओर राष्ट्रीय महत्वपूर्ण बुनियादी ढांचाकेँ सेहो साइबर अपराधी नञि बख्शलक। संगठित आ राज्य-प्रायोजित अपराधी नियमित रूपसँ महत्वपूर्ण बुनियादी ढांचाक दुनिया मे प्रवेश करबाक प्रयास करैत अछि। ई कोनो देशक लेल एकटा बड्ड पैघ सुरक्षा जोखिम अछि।

निदान

लोककेँ ई समझबाक जरूरत अछि जे कोनो स्तर पर वा कोनो कीमत पर कोनो तकनीकी नियंत्रण साइबर अपराधकेँ नियंत्रित नञि कऽ सकैत अछि। ई जरूरी अछि जे सरकार आ आन संस्थान सूचनाक बुनियादी ढ़ांचाक सुरक्षा मे निवेश करैथ, मुदा ई बेसी महत्वपूर्ण अछि जे हमसभ सतर्क आ जागरूक होए। हमरा सबकेँ साइबर अपराधक बारे मे अपन जागरूकता बढ़ेबाक आ फिर जागरूकता फैलेबाक आवश्यकता अछि। लाकेँ अपन परिवारक भीतर एहि तरहक जागरूकता पैदा करबाक आवश्यकता अछि, जाहिमे साइबर अपराधक हर खबर पर चर्चा कएल जाए।

साइबर योद्धाक रूपमे बच्चा

साइबर अपराधीकेँ हताश करबाक सबसँ प्रभावी तरीका मे सँ एक अपन बच्चकेँ

साइबर योद्धा बनेनाए अछि। एहि बच्चा सबकेँ जौं साइबर अपराधीकेँ तौर-तरीकाक बारे मे जानबाक लेल प्रोत्साहित कएल जाए तऽ वो इंटरनेटक जहर आ अमृतक बीच अंतर कऽ पेताह। ई निश्चित रूपसँ सुनिश्चित करत जे वो खुद पीड़ित नञि भऽ सकताह। जखन वो अखबार मे प्रकाशित कोनो साइबर अपराधक बारे मे अपन निष्कर्षकेँ अपन माता-पिता आ दादा-दादीक संग साझा करैत छथि तऽ वो हुनका जागरूक करैत छथि। जेना-जेना ई बच्चा अपन मित्रमंडलीमे एहि तरहक धोखाधड़ीक बारे मे बात करैत छथि जागरूकता अओर बेसी फैलैत अछि।

जखन ई साइबर योद्धा बच्चा पैघ होइत छथि आ अपन पेशेवर सेवामे आबैत छथि तऽ ओ पहिले सँ साइबर जागरूक कर्मचारी वा अधिकारीक रूपमे शामिल होइत छथि। जेना कि हम जानै छी जे कॉरपोरेट वा सरकारी संस्थान मे अस्सी प्रतिशतसँ बेसी साइबर क्राइम अंदरूनी लोकक अनदेखीक कारण होइत अछि, तऽ कल्पना करू जे जौं अपना पास जागरूक आ सतर्क कार्यबल अछि तऽ ई साइबर क्राइम कतेक कम भऽ जाएत!

प्रभावी रूपसँ हमरा कि पता चलैत अछि जे आजुक साइबर योद्धा बच्च मे साइबर अपराधसँ समाज आ राष्ट्रकेँ सुरक्षित बनेबाक क्षमता अछि। जतेक जल्दी ओतेक बेहतर, जतेक बेसी ओतेक बेहतर।

बच्चाकेँ कि मिलत

बच्चाकेँ हुनक नीक कामक लेल सराहना आ पहचान पसंद अछि। एहिसँ, जौं हुनक योगदानकेँ मान्यता देल जाइत अछि अओर हुनक सराहना कएल जाइत अछि तऽ वो साइबर अपराध पर अंकुश लगाबय लेल समाज मे बदलावक एकटा प्रभावी एजेंट बनि सकैत छथि।

ई साइबर-जागरूक बच्चा इंटरनेट पर खुदक सकारात्मक फुटप्रिंट सेहो बनेताह, एहिसँ हुनका बेहतर रोजगार पेबामे मददि मिलतैन्ह। अज्ञात कॉलेजक छात्रकेँ उच्च पे-पैकेजक संग बड़ी कंपनिय जेनाकि माइक्रोसॉफ्ट, गूगल, अमेजन आदि द्वारा नियुक्तिक पेशकश आब काफी आम भऽ गेल अछि। आब नीक आ बहुराष्ट्रीय कंपनी इंटरनेट पर सकारात्मक पदचिन्हवाला छात्र पर नजर राखैत अछि अओर ऐहन छात्रकेँ आसानीसँ नौकरीक प्रस्ताव दैत अछि जिनक ब्लॉग वा पोस्ट बताबैत अछि जे वो कोनो-नञि-कोनो

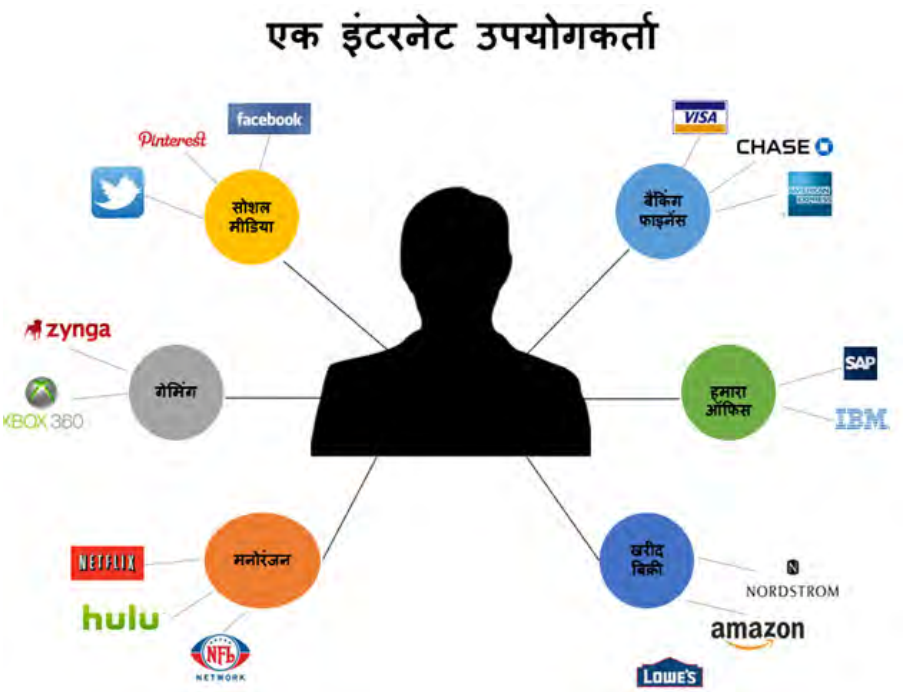

तरहसँ समाज मे योगदान दऽ रहल अछि। जौं ई योगदान साइबर सुरक्षाक लेल अछि तऽ जाहिर तौर पर ई सबसँ आकर्षक अछि किएक तऽ साइबर सुरक्षा सभ संगठनक लेल सिरदर्दक क्षेत्र अछि आ सभ नियोक्ता एकटा साइबर-जागरूक कर्मचारीकेँ पसंद करैत छथि।

निष्कर्ष

एहिसँ सरकारी आ गैर-सरकारी संगठनकेँ बच्चाकेँ एहन अवसर प्रदान करबाक चाही जतय वो साइबर सुरक्षासँ संबंधित मुद्दाकेँ सीखैथ आ मान्यता प्राप्त होथि, पुरस्कृत होथि। माता-पिताकेँ साइबर अपराध पर ओहि सभ समाचार पर चर्चा करबाक चाही जे वो पढ़ैत वा सुनैत छथि आ हुनका एहि बारेमे अओर बेसी जानकारी प्राप्त करबा लेल प्रोत्साहित करबाक चाही। हुनका एहन अपराधक मूल कारणक पता लगेबाक लेल प्रोत्साहित करक चाही, ओहिसँ बचय लेल रोकथामक उपाय करबाक चाही।

कतेको संगठन, सरकारी आ गैर सरकारी, साइबर जागरूकताक महत्वकेँ महसूस करैत एहन अवसर पैदा कऽ रहल छथि। WeSeSo Learning Foundation (www.weseso.org) एकटा एहन गैर-लाभकारी संगठन अछि जे साइबर-सुरक्षाक प्रति उत्साही पेशेवर द्वारा चलाओल जाइत अछि। प्रत्येक माता-पिता आ स्कूलक बच्चकेँ ई देखबाक लेल प्रोत्साहित करबा चाही जे आन साइबर योद्धा एतय कि सीखलैन्ह। हुनका साइबर योद्धा बनय आ साइबर अपराध-सुरक्षित समाज आ राष्ट्र बनाबय लेल बदलावक एजेंट बनय लेल प्रोत्साहित करल जेबाक चाही, तखने हमरा परिवार, स्कूल, समाज आ सबसँ बढ़िकऽ हमरा राष्ट्र साइबर-सुरक्षित होएत।

बौआ-बुच्ची लोकनि,

अहाँ सभहक रूचिकेँ देखैत एहि स्तम्भक आरम्भ कएल गेल, अहाँक सहभागिता सराहनीय अछि। अहाँ सब अपन-अपन प्रश्न आ एहि स्तम्भ मे पुछल प्रश्नक उत्तर मिथिलांगनक ईमेल mithilangan@gmail.com वा मो. न. 9910952191 पर व्हाट्स अप भेज सकैत छथि। चुनल प्रश्न/उत्तर केँ अहाँक नाम आ पताक संग मिथिलांगनक विशेषज्ञक उत्तरक संग पत्रिकाक अगिला अंक मे प्रकाशित कएल जाएत। - सम्पादक

1. सर्दी मे लोकक हाथ-पएर वा होंठ किएक फटि जाइत अछि?

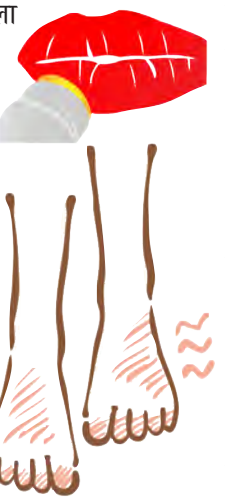

उत्तर :- त्वचामे पाओल जाएवला स्वेद ग्रंथीसँ होएवला स्रावक कारणेँ त्वचा मुलायलम बनल रहैत अछि। सर्दीक मौसम मे हवाक नमीक कमी कारणेँ त्वचा अपन कोमलता शीघ्रे खो दैत अछि। नमीक एहि कमीसँ त्वचा शुष्क भऽ फटय लागैत अछि जकर विशेष प्रभाव शरीरक होठ, हाथ आ पएर पर बेसि देखाय दैत अछि। ताहिसँ त्वचाक नमीकेँ बनाय राखय लेल सर्दीमे कोल्ड क्रीम, वैसलीन आदि आ त्वचाकेँ चिकन बना राखय लेल उबटन आदिक प्रयोग कएल जाएत अछि।

(प्रभाकर झा, मुम्बई)

2. डकार किएक अओर कोना आबैत अछि?

उत्तर :- डकार एकटा अनैच्छिक प्रतिवर्ती क्रिया अछि, जाहिमे अमाशयमे जमा फालतुक गैस मुँहसँ बाहर निकलैत अछि। खेनाय खाइत काल प्रत्येक कौरक संग किछु हवा अमाशयमे जाइत अछि। अमाशयमसँ ई गैस दू दिशामे बाहर जा सकैत अछि। पहिल खेनायक संग आंतमे जा कऽ बाहर जा सकैत अछि। अमाशयमे भोजन नीकसँ पकय एहि लेल आमाशय आ आंतक मध्यक वाल्व (पाइलोरिक वाल्व) किछु समय लेल बन्द भऽ जाइत अछि, तखन गैस आंतमे किछु समय लेल नञि जा सकैत अछि। जखन गैसक दबाव अमाशय मे बढ़ि जाइत अछि आ ओतय गैस बेसी मात्रामे बढ़ि जाइत अछि तऽ ओ अचानक मुँहसँ बाहर आबैत अछि जकरा डकार कहल जाइत अछि।

ई कोनो बिमारी नञि एकटा सामान्य प्राकृतिक प्रक्रिया अछि। एहि पर नियंत्रण लेल खेनाय धीरे-धीरे खेबाक चाही।

(कुसुम कुमारी, पटना)

3. उबालल अण्डाक पीयर भाग पर कारी परत किएक जमि जाइत अछि?

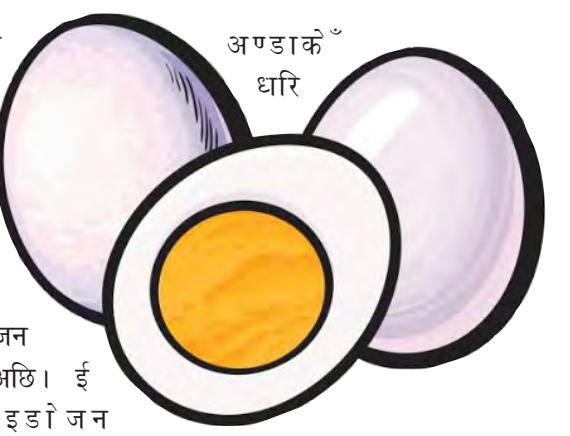

उत्तर :- जखन अण्डाकेँ बेसी देर धरि उबालल जाइत अछि तऽ ओकर भीतार छीपल कार्बनिक यौगिकक रसायनिक अभिक्रियासँ हाइडोजन सल्फाइड बनैत अछि। ई हाइडोजन सल्फाइड अण्डाक जर्दीमे रहल लौहतत्वसँ अभिक्रिया कऽ कऽ गाढ़ा रंगक आयरन सल्फाइड बनाबैत अछि। सड़ल अण्डासँ गन्ध सेहो एहिये सँ आबैत अछि अओर अण्डाकेँ ठीकसँ नञि उबालयसँ ओहि पर पड़ल धब्बाक रंग हरियरसँ कारी पड़य लागैत अछि।

(सिद्धार्थ कर्ण, दिल्ली)

आहाँ लोकनिक लेल प्रश्न

1. **पानीक पाइपक आकार तिकोना वा आयताकार नहि भऽ गोल किएक होइत अछि?**
2. **लोक सपना किएक बिसरि जाइत छथि?**
3. **बाँसुरी मे बनल छिद्रकेँ आँगुरसँ दबेला पर बाँसुरीक ध्वनि बदलैत किएक रहैत अछि?**

स्वप्निल रंजन

आशुतोष कुमार दास

अनुष्का

रित्विक रंजन दास

बाल गीत

बनु नवाब

❑ *सोगारथ सोम*

खेलब कुदब बनब खराब,
पढ़ब गुणब बनब नवाब।
कहबि जे छल फुसि भेल आब,
खेल-खेल मे बनु नवाब।

पढु खेलु चलु संगहि संग,
बढु अहुँ लाऊ मिथिला मे रंग।
धौनी, कोहली, सचिन आ शिखर,
हिनकेँ संग चढु नव शिखर।

टेस्ट, IPL वा होए विश्वकप,
खेलु जीतु आनु सबटा कप।
बेटी सब दिन रहत कि ओहिना,
देखु साक्षी, सिंधु आ सायना।

राष्टमंडल, एशियाई वा हो ओलंपीक,
कांस्य, रजत वा जीतु स्वर्ण पदक।
खेलहिं खेल मे बनु नवाब,
बढ़ब कहिया संग दिय जवाब?

बौआ-बुच्ची लोकनि!

जौं अहाँ मैथिली मे अपन लिखल खिस्सा, कविता, गीत, चुटकुला इत्यादि मिथिलांगन पत्रिकाक बाल मचान मे छपाबऽ चाहैत छी तऽ कागत कलम उठाऊ आ फुलस्केप पेज पर साफ-साफ नीक सँ लिखि कऽ मिथिलांगनक पता पर पठाऊ। संगहि जौं अहाँ सब चित्र वा कार्टुन बनबैत छी तऽ सेहो बना कऽ पठा सकैत छी।

हँ! अपन मूल रचना वा चित्र इत्यादिक संग अपन पूरा नाम, माँ-बाबूजीक नाम, निवासक पता, अपन कक्षा आ विद्यालय केर नामक संग अपन हालक खिंचल पासपोर्ट साइज फाटो अवश्य पठाबी। - *संपादक*

पद्मश्री दुलरी देवी

❑ *रविन्द्र कुमार दास*

54 वर्षीय दुलारी देवीक संघर्ष गाथा सचमुच प्रेरणादायक अछि। मिथिला कलासँ जुड़ल लोक हुनका प्यारसँ दुल्ला कहैत छथि। मैथिली भाषा बालयमे सहज, हिंदी कम्मे बाजैत छथि। दैनिक मजदूरी कऽ अपन पेट पालयवाली महिला सँ लऽ कऽ आइ देशकेँ गौरवान्वित करयवाली एकटा कुशल चित्रकार पद्मश्री दुलारी देवीक रूपमे पहचानय जाएवाली महिलाक जीवनक कलायात्रा रोचक अछि। अपनी मेहनत आ प्रशिक्षणक बदौलत ओ अपन भाग्य बदललैन्ह, किएक तऽ हुनक परिवारमे कियो चित्र नञि बनाबैत छल।

जीवनक शुरूआत - दुलारी देवी अपन जिनगीक शुरूआत बेहद गरीबीसँ केलैन्ह। हिनक जन्म बिहारक मधुबनी स्थित राँटी गाम मे एकटा मल्लाह परिवारमे 27 दिसम्बर, 1967 केँ भेल। दुलारीक पिता मुसहर मुखिया मछली पकड़बाक काम करैत छलाह आ माए खेत-खड़िहानमे मजदूरी करैत छलीह। गरीबीक कारण हिनक पढ़ाई-लिखाई नञि भऽ पेलैन्ह, इएह वजह अछि जे हुनका झाड़ू-पोछा कऽ कऽ अपन जीवन गुजारबाक विवश होमय पडलैन्ह। भोर-साँझ अपन माएक संग लोकक घरमे झाड़ू-पोछा आ दिनमे खेतमे मजदूरी करैत छलीह। धान कटनीक समय दूसराक घर धान कुटय सेहो जाए पड़ैत छलैन्ह। तखन 20 किलो धान कूटय पर आधा किलो धान मजदूरीक रूपमे मिलैत छल। मुदा एतेक कठिन परिश्रमक बावजूदो कहियो काल हिनका भूखे पेटे सुतय पड़ैत छल। 12 वर्षक वयषेमे दुलारीक विवाह मधुबनी जिलाक बेनीपट्टी प्रखंडक बलाइन कुसमौल गाममे भऽ गेलैन्ह। मुदा हिनक दामपत्य जीवन सुखद नञि रहल, पतिसँ अनबन चलैत रहल। दू साल ससुरालमे रहलीह, आब ससुरालसँ सम्बन्ध नञि छैन्ह, ओ दोसर विवाह कऽ लेलैन्ह, हुनक एकटा 6 मासक पुत्री सेहो अचानक चल बसलीह। ओकर बाद दुलारी नैहर लौटि एलीह आ फेर ओतहिये के भऽ कऽ रहि गेलीह। आइ ई भातीज लग रहैत छथि। मिथिला पेंटिंगक ई सुप्रसिद्ध कलाकार महासुन्दरी देवी अओर कर्पूरी देवीक ओहिठाम मात्र 6 रू. मासिक पर झाड़ू-पोछाक काम कऽ अपन गुजर-बसर करैत छलीह। गीता वुल्फ द्वारा लिखित आ तारा बुक्स द्वारा प्रकाशित 'फॉलोइंग माइ पेंट ब्रश'क बत्तीस पृष्ठक हुनक चित्रात्मक जीवनी मे सेहो एहि बातक उल्लेख अछि। एहि पोथीक पहिल पेंटिंग मे हम दुलारीजीकेँ एकटा छोट लड़कीक रूपमे देखैत छी जे अपन माएक संग धानक खेतमे काम करैत छथि।

कलाक शिक्षा - घर सबमे काम करबाक दौरान ओ प्रख्यात मिथिला कलाकार पद्मश्री महासुंदरी देवी आ कर्पूरी देवीक संपर्कमे एलीह, एतयसँ हुनक नव जीवनक शुरूआत भेल। दूनू कलाकारकेँ चित्र बनाबैत देखि कऽ उत्साहित होइत छलीह आ हुनका सबकेँ देखलाक बाद जखन अपन निपन-पुतल आँगन मे जाए पातर लकड़ीसँ चीर-फार कऽ आकृति बनाबैत छलीह तऽ माए डाटैत छलथीन जे 'भिखमंगी भऽ जेबै, ऐना नञि कर'। भाग्य हुनका हुनक गुरु कर्पूरी देवीक आँगन लऽ आयल, ओ हिनका बेटीक सदृश्य प्यार आ सम्मान तऽ देबे केलैन्ह संगहिं प्रशिक्षण सेहो देलैन्ह। एक दिन बड्ड हिम्मत जुटाकऽ ई महासुंदरी देवीसँ पूछलैन्ह जे कि ऊहो ई कला सीख सकैत छथि। संयोगवश, ओहिये समय भारत सरकारक वस्त्र मंत्रालय द्वारा महासुन्दरीजीक आवास पर मिथिला पेंटिंगमे 1 मासक प्रशिक्षण शुरू कएल गेल। महासुन्दरी देवीक पहलसँ दुलारी जीकेँ सेहो प्रशिक्षण मे शामिल कऽ लेल गेल। जखन गौरी मिश्राक सेवा मिथिला खुलल तखन हुनका ओतय 16 साल काम केलैन्ह। ओहिये समय कलाकारक सहयोगसँ हिनक जीवन बदलल आ आइ ओ देशक गौरव बनलीह।

कलाकारक रूपमे पहचान - जखन ओ मिथिला आर्ट इंस्टिट्यूट मे पढ़य-लिखय बच्चाकेँ पेंटिंग सिखौलैन्ह तऽ बड्ड गौरवान्वित महशुस केलैन्ह। तारा बुक्स वाला हिनका मद्रास बजौलक आ हिनक चित्रात्मक आत्मकथा प्रकाशित केलक जाहिसँ हिनका पहचान मिललैन्ह। आइ हिनका ओकर रॉयल्टी सेहो मिलैत अछि। आइ ई पेंटिंगकेँ पूजा मानैत कहैत छथि जे हम एक्को दिन पेंटिग नञि बनाऊ तऽ मन नञि मानैत अछि। देशक दोसरो राज्यसँ हिनका बुलावा आबय लागल अछि। कला माध्यम नामक संस्थाक माध्यमे बंगलोरक विभिन्न शिक्षण संस्थान, सरकारी आ गैर-सरकारी भवनक दीवार पर 5 साल धरि चित्रण केलैन्ह। फेर मद्रास, केरल, हरियाणा, चेन्नई आ कलकत्तामे मिथिला पेंटिंग पर आयोजित कार्यशालामे शामिल भेलीह। दिल्ली स्थित ओजस आर्ट गैलरी द्वारा आयोजित सतरंगी प्रदर्शनीमे सेहो हिनक चित्र शामिल कएल गेल छल।

पुरस्कार अओर सम्मान - मिथिला पेंटिंगमे छह पद्मश्री पुरस्कार मिल चुकल छल, दुलारी देवीकेँ मिलाकऽ ई सातम पुरस्कार अछि। गैर-सवर्ण कलाकारक लेल ई दूना खुशीक बात अछि। किएक तऽ आइ धरि ई पुरस्कार ब्राम्हण वा कायस्थ परिवारसँ आयल कलाकारेकेँ मिलैत छल। पहली बेर ई पुरस्कार कोनो गैर-सवर्ण कलाकारकेँ मिलल अछि। एहिसँ हमर माननाय अछि जे एहि घोषणाकेँ ऐतिहासिक सेहो कहल जा सकैत अछि। हिनका देशक सर्वोच्च सम्मान मिलय केर बाद आब एकटा आशा तऽ बनैते अछि। ललित कला अकादमीसँ वर्ष 1999 मे मिलल सम्मान आ उद्योग विभागसँ वर्ष 2012-13 मे बिहार सरकारक प्रतिष्ठित राज्य पुरस्कार मिललाक

बाद दुलारी देवीक उत्साह और बढ़ल अछि।

हिनक चित्रक विशेषता - कोनो-नञि-कोनो थीम पर आधारिते चित्र बनाबैत छथि, जेना- गाछमे सेहो स्त्री-पुरुष होइत अछि, एक फलैत अछि एक नञि फलैत अछि। मल्लाह जातिक विभिन्न कथा-कहानी पर आधारित चित्र सेहो बनाबैत छथि। जखन लोकडाउनमे मोदीजी मिथिला गेल छलाह ओहि अवसर पर एकटा पेंटिंग बनौलैन्ह जाहिमे माछकेँ हवाई जहाजक रूपमे चित्रित केलैन्ह, ओहिमे मास्क लगौने मोदीजी बैसल छथि। बेटी बचाओ पर खुब बनौलैन्ह। बोध गयाक नौलखा मंदिरक दीवाल पर दुलारी देवी द्वारा बनाओल गेल मिथिला पेंटिंग आइयो लोकक ध्यान आकर्षित करैत अछि। अखन धरि 10 हजार पेंटिंग बना चुकल छथि। प्रति मास करीब 30-35 हजार टाका कमाइत छथि। पारम्परिक विषयक अपेक्षा समाजमे देखल गेल विषयकेँ चित्रित करैत छथि। दुलारी देवीक स्त्री पात्रक साड़ी बड्ड कलात्मक आ रंगबिरंगा होइत अछि। कपड़ा आ मुकुटमे जे अलंकरण अछि वो बारीकीसँ चित्रित कएल गेल अछि। हिनक चित्रमे रंगक परत-दर-परत इस्तेमाल देखाइत अछि। हिनक चित्रक संयोजनमे बेसी फिगरक इस्तेमाल अछि, जखनकि बेसी कलाकार एहिसँ बचैत छथि। हिनक कामक दक्षता देखि कियो ई बात आसानीसँ कहि सकैत छथि जे ई बेसी संख्यामे चित्रक रचना केलैन्ह अछि, बैकग्राउण्ड उज्जर छोड़ैत छथिन।

पटना मे बिहार संग्रहालयक उद्घाटनक मौका पर मुख्यमंत्री नीतीश कुमार दुलारी देवीकेँ विशेष तौर पर आमंत्रित केने छलाह। ओतय कमला नदीक पूजा पर हिनक बनाओ एकटा पेंटिग 10ग9 केँ जगह देल गेल अछि। श्वेत-श्याम रंगमे बनल कचनी शैलीक चित्र लेल चर्चित राँटी गांम सँ एलाक बादो ई भरनी शैलीक लेल चर्चित छथि। अपन कल्पनाशीलताक लेल सेहो चर्चित छथि। मनीषा झाक संग्रहमे एकटा चित्र अछि जे मल्लाहक जीवन पर आधारित अछि। कागत आ कैनवास दूनू पर काम करैत छथि। धार्मिक विषयक सेहो ओ चित्रण करैत छथि, जखन कि पूजा-पाठ हिनका ओतय केर परंपरा नञि छल। गणेशजी हिनका बेसी नीक लागैत छथिन, जखन कखनो ई गणेश बनौलैन्ह वो अवश्ये बिकल। कचनी आ भरनी दूनू शैलीमे काम करैत छथि, परञ्च कत्तौ-कत्तौ रंग अवश्य भरि दैत छथि। कर्पूरी देवीक भरनी शैलीसँ प्रभावित भेल हेतीह, मुदा हिनक चित्रमे हुनकर अपेक्षा बेसी रंगक इस्तेमाल देखाइत अछि। चटकीला ग्राउंड रंगक इस्तेमाल फेर ओहि पर लाइन वर्क। कम-सँ-कम व्हाइट स्पेस छोड़ैत छथि एहिसँ चेहराकेँ सफेदे राखैत छथि। आइसक्रीम खरीदयवाला बच्चाक चित्रण होए वा कोनो आर। सबसँ पहिले ओ मछुआरक जीवन पर पेंटिंग बनौलैन्ह। मल्लाह जातिक लोक, हुनक संस्कार आ हुनक उत्सवकेँ अपन विषय बनौलैन्ह, फेर खेतमे काम करैत किसान आ मजदूरक चित्रण केलैन्ह। बाढ़-सुखाड़क समय गरीबक तकलीफ आ दुःखडाक चित्रभाषा देलैन्ह। एहि तरहेँ घरेलू दुःख-दर्दक अबूझ समझ आ प्रकृतिसँ आत्मीय लगावक चलते पोखर, गवंई-गाम आ सम-सामयिक विषयकेँ मिथिला चित्रमे जगह दऽ कऽ दुलारीजी एकटा नव आकर्षण पैदा कऽ देलैन्ह। मिथिला चित्रकलाक कलाकार सबमे दुलारी देवीक एकटा अलगे पहचान बनैत गेलैन्ह।

नूतन बालाकेँ बिहार सरकार द्वारा राज्य पुरस्कार

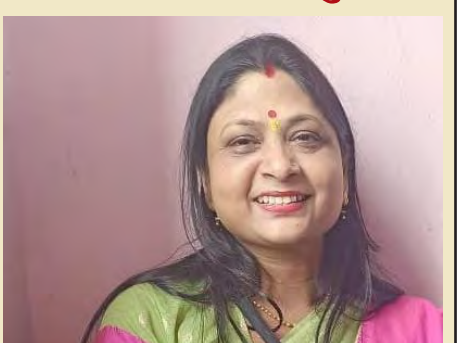

मधुबनी चित्रकलाक क्षेत्रमे उत्कृष्ट काज करबा लेल मधुबनी जिलाक सिमरा गामवासी नूतन बालाकेँ बिहार सरकार द्वारा राज्य पुरस्कारसँ सम्मानित कएल गेल। नूतन बाला संप्रति लोक कलाति संस्थाक माध्यमे नवोदित कलाकार सबकेँ प्रशिक्षण दऽ रहल छथि

साइकिल गर्ल ज्योति कुमारीकेँ प्रधानमंत्री राष्ट्रीय बाल पुरस्कार 2021

कोरोना कालमे गुरुग्रामसँ अपन बीमार पिता मोहन पासवानकेँ साइकिल पर गाम लऽ जेबाक बाद चर्चामे आयल ज्योति कुमारी दरभंगा जिलाक सिंहवाड़ा प्रखंडक सिरहुल्ली गामक रहयवाली छथि।

साइकिल गर्ल ज्योतिकेँ एहि बेर प्रधानमंत्री राष्ट्रीय बाल पुरस्कार 2021 सँ नवाजल गेलीह। एहिसँ मात्र हुनक गाम सिरहुल्लीये नञि अपितु सम्पूर्ण मिथिलांचल मे खुशीक लहर अछि। हुनक परिवारक सभ सदस्य खुशीसँ आत्मविभोर छथि।

ज्योतिक अनुसार ओ मात्र श्रद्धाभावसँ अपन बिमार पिताक सेवा केलैन्ह आ हुनक जान बचाबय लेल साइकिलसँ घर पहुँचयक निर्णय लेलेन्ह, जाहिमे ओ सफल सेहो भेलीह। हुनका हुनक साँच सेवा आ साहसिक कर्मक ईनाम मिललैन्ह।

पिता खुशीसँ बताबैत छथि जे हुनक बेटीक सौभाग्य, ओकर पितृभक्तिक संग ओकर साहसिक निर्णये सँ हुनका, हुनक परिवारकेँ आ ज्योतिकेँ देशमे सम्मान मिलल।

मिथिलांगनक अध्यक्ष कमलेश कुमार दास जीकेँ मातृशोक

मिथिलांगनक यशस्वी अध्यक्ष कमलेश कुमार जीक पूज्यनीया माताजी श्रीमती रूक्मणी देवीक असामयिक निधन 10 जनवरी2021केँ भऽ गेल। एहि दुखद घटनासँ समस्त मिथिलांगन परिवार अत्यंत शोकाकुल आ मर्माहत अछि। ईश्वर कमलेश जी, अर्चना जी आ हुनक समस्त परिवारकेँ एहि दारूण दुःखकेँ सहन करबाक शक्ति प्रदान करथि।

एहि दुःखक घड़ीमे समस्त मिथिलांगन परिवार हुनक संग अछि।

मिथिलांगनक सचिव निर्भय कुमार जीकेँ पितृशोक

मिथिलांगन केर ऊर्जावान सचिव निर्भय कुमार जीक पूज्य पिताजी श्री महेश्वर लाल दास जीक असामयिक निधन 11 सितम्बर 2020केँ भऽ गेल। हुनक स्वर्गारोहनसँ समस्त मिथिलांगन परिवार अपन एकटा कुशल अभिभावकसँ विमुक्त भऽ गेल।

दुःख-दारूणक एहि घड़ीमे समस्त मिथिलांगन परिवार निर्भय जीक संग अछि आ ईश्वरसँ कामना करैत अछि जे ओ हुनका एहि दुःखकेँ सहन करबाक शक्ति दैथ।

युवा प्रगतिशील कवि प्रणव नर्मदेय जीक निधन

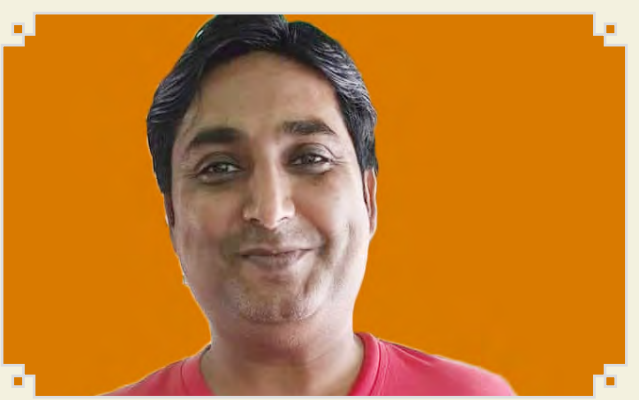

मधुबनी निवासी मैथिलीक लेखक, कवि आ समीक्षक प्रणव नार्मदेयक बनारस मे असामयिक निधन भऽ गेल। नवोदित पीढ़ीक महत्वपूर्ण नाम छलाह प्रणव नार्मदेय। हिनक मैथिली साहित्य मे संक्षिप्त जीवन यात्रा रहल, जे मैथिली साहित्य लेल अत्यंत दुखद अछि।

हिनक निधनसँ सम्पूर्ण मैथिली साहित्यकेँ अपूर्णीय क्षति भेल।

मिथिलांन परिवार दिवंगत आत्माकेँ विनम्र श्रद्धांजलि अर्पित करैत अछि।

वरिष्ठ रंगकर्मी मनोज मनुजकेँ मातृशोक

प्रसिद्ध वरिष्ठ रंगकर्मी मनोज मनुज जीक माताजी आदरणीया मीरा देवी धर्मपत्नी श्री दयानन्द झा केर निधन विगत 04 फरवरी 2021केँ पटना मे भऽ गेलैन्ह।

मधुबनी जिलाक कोइलख ग्रामवासी मनोज मनुज जीक 79 वर्षीय वयोवृद्ध माताजी किछु मासँ दुखित छलीह आ सघन चिकित्सीय देखरेख मे छलीह।

मिथिलांन परिवार एहि महान आत्माकेँ विनम्र श्रद्धांजलि अर्पित करैत अछि।

महाकवि पंडित लालदासक 165म जयंतीक आयोजन

ग्राम निर्माण परिषद खड़ौआ द्वारा सिमरा ग्राम स्थित दुर्गा मंदिरक प्रांगण मे महाकवि पंडित लालदासक 165म जयंतीक आयोजन हर्षोल्लास पूर्वक मनाओल गेल। कार्यक्रममे उपस्थित विशिष्ठ अतिथि लोकनि द्वारा महाकविक तैलचित्र पर पुष्प अर्पण आ विधिवत दीप प्रज्वलनक कार्यक्रमक शुभारंभ कएल गेल। तत्पश्चात महाकवि रचित लक्ष्मी गीत जय जय कमल निवासिनी कमले कमल मुखी श्री करुणेक प्रस्तुति आकाशवाणीक ख्यातिलब्ध गायिका कुमकुम झाक सुमधुर स्वर मे गाओल गेल संगहि कविकृत गोसाउनी गीत जय जय कुलक गोसाउनी पुरु मन भाउनी हे गीतक सुमधुर प्रस्तुति कंचन कुमारी, ज्योती कुमारी आ नन्दनी कुमारी समवेत स्वरमे भेल। तत्पश्चात उपस्थित विशिष्ठ अतिथि लोकनिकेँ परिषदक महामंत्री श्री भागीरथ सहित सब सदस्य द्वारा फूलक माला ओ दोपटासँ स्वागत आ सम्मान कएल गेल। सिमरा पंचायतक मुखिया प्रतिनिधि धीरज झा द्वारा स्वागत भाषण भेल। कार्यक्रमक अध्यक्षता पूर्व प्रखंड प्रमुख आ समाज सेवी अनुप कुमार कश्यप केलैन्ह अपन अध्यक्षीय भाषण मे जनौलैन्ह जे महाकविक जन्म, मृत्यु ओ विवाहक तिथि एकहिं छलैन्ह जे एकटा संयोग छल। एहि पुण्य अवसर पर श्रद्ध सुमन अर्पित कऽ ओ अपनाकेँ धन्य आ गौरवान्वित छलाह। कार्यक्रमक अगिला भागमे महाकवि पर बृहत परिचर्चा भेल, जाहिमे पार्वती कन्या लक्ष्मी उच्च विद्यालयक शिक्षक अनील ठाकुर महाकविक व्यक्तित्व-कृतित्व ओ पोथीसँ संबंधित विषय पर प्रकाश

देलैन्ह। विशिष्ठ वक्ताक रूपमे समाजसेवी सह शिक्षाविद राघवेंद्र लाल दास रमण, गया शोध संस्थानक पूर्व निदशक डॉ. नरेश झा, मिथिला विश्वविद्यालयक पेंशन पदाधिकारी डॉ. सुरेश पासवान आदि महाकविक विषय मे सारगर्भित आ समाजिक चेतनाक अक्षुण्ण रखबा मे महाकविक महत्वपूर्ण भूमिका पर प्रकाश देलैन्ह आ बतौलैन्ह जे महाकवि साहित्याकारक देदिप्यमान नक्षत्रक रूपमे छलाह।

सैकड़ोक संख्यामे उपस्थित साहित्य प्रेमीक आगाँ एकल काव्य पाठ केलैन्ह ख्याति प्राप्त कवि उमेश नरायण कर्ण 'कल्प कवि'। अंतमे सात वर्षिय बालिका विदिशा दास द्वारा कविकृत महेशवाणी प्रस्तुत कएल गेल, जन्त्व्य जे कवि कृत प्रस्तुत सब गीतक संगीत आ सम्पूर्ण कार्यक्रमक संचालन केलैन्ह डॉ संजीव शमा। जयंतीक संयोजक संदीप कुमार दासक धन्यवाद ज्ञापनक पश्चात कार्यक्रम समापन भेल।

*रिपोर्ट : **अजय कुमार दास, नवानी***

कर्णक संगी-साथी मिथिलानी महिला समूह मनोलक ऑनलाइन बर्षगाँठ

बित्तल साल जतय दुनिया आपदाग्रस्त छल, ओतय मिथिलानी सभ एकरा अवसर रूपमे लेलौंह आ अपन पौराणिक कलाकृति सबकेँ उजागर करबाक प्रयास केलौंह। मिथिलाक पारम्परिक भोजन, पेंटिग, गीत-नाद आदिक साल भरि विभिन्न स्तर पर ऑनलाइन कार्यक्रम कएल गेल। संगहिं कतेको दुखीतजन केर मदति सेहो कएल गेल।

समूहक संस्थापिका वन्दना दत्त (डॉली)जी सदिखन महिलाकेँ हुनका मे नुकायल प्रतिभाक उजागर करबा लेल तत्पर रहैत छथि।

एहि क्रममे समूह द्वारा अपन वर्षगांठ 16 दिवसीय ऑनलाइन कार्यक्रमक आयोजन कएल गेल। जाहिमे महिलाक स्वास्थ्य, अधिकार, बच्चाक लालन-पालन, समाजमे महिलाक स्थिति आदि विषय पर विशेष चर्चा कएल गेल।

अर्जना राजक संचालनमे महिला कलाकार सब अपन प्रतिभाक प्रदर्शन केलीह। मुख्य अतिथिक रूपमे डॉ. नीरजा दास, डॉ. पूनम कर्ण, डॉ. दर्शना, राजेन्द्र कर्ण आदिक गरिमामयी उपस्थिति एहि मंचकेँ सुशोभित केलक।

*रिपोर्ट : **अर्चना राज***
मिथिलानी महिला समूह

दिल्ली विश्वविद्यालय मे मैथिलीक पढ़ाई केर अनुमति

दिल्ली विश्वविद्यालय मे मैथिलीक पढ़ाई केर अनुमति मिल गेल। एहि लेल सामाजिक, साहित्यिक अओर सांस्कृतिक संस्था मिथिलांगनक आजीवन सदस्य आ दिल्ली विश्वविद्यालय विद्वत परिषदक सदस्य प्रोफेसर डॉ. राजीव कुमार वर्मा, सांसद प्रभात झा आदि कतेका लोक अपन-अपन स्तर पर गंभीर प्रयास केलैन्ह। सभहक कठिन परिश्रमक परिणामस्वरूप दिल्लीमे रहयवाला लाखों मैथिलक आकांक्षा फलीभूत भेल। सभ धन्यवादक पात्र छथि। दिल्ली विश्वविद्यालय प्रशासन संग सभहक बहुत-बहुत आभार।

प्रोफेसर डॉ. राजीव कुमार वर्मा बताबैत छथि जे दिल्ली विश्वविद्यालयमे मैथिलीक पठन-पाठनक लेल Under Secretary, Higher Education केर 31.12.2020 कें दिल्ली विश्वविद्यालयक Joint Registrar द्वारा लिखल गेल पत्र जाहिमे Committee द्वारा विचार-विमर्शक बात कहल गेल अछि। माननीय सांसद आदरणीय प्रभात झाजी 03.12.2019कें एहि मुद्दाकें राज्यसभामे उठेने छलाह। एहिसँ पुर्व हम DU Vice Chancellor कें DU मे मैथिलीक अध्ययनक शुरूआत करबाक लेल एकटा लंबा पत्र 21 सितंबर 2019कें लिखने छलौंह आ एहि मुहिमे हमरा DU Court Member, EC Members, AC Members, DUTA पदाधिकारी अओर कार्यकारिणी सदस्य आ आन बुद्धिजीविक संग मिलल। National Education Policy 2020कें कार्यान्वित करयवाली Committeeक सदस्य सबसँ हमर विनम्र अनुरोध अछि जे वो यथाशीघ्र एहि पर निर्णय लऽ कऽ दिल्ली विश्वविद्यालय मे एकर पठन-पाठनक प्रक्रियाक शुरूआत करैथ। भाषाई समृद्धताये सँ देश विकसित आ समृद्ध भऽ सकत।

मैथिली मे विज्ञान पत्रिकाक प्रकाशन

विगत 05 फरवरी मैथिलीक लेल ऐतिहासिक दिन रहल। मैथिली भाषा-भाषीक लेल आब विज्ञानक पोथी सहज आ सरल मैथिली भाषामे प्रकाशित होएत। समृद्ध पुस्तकक प्रकाशन, सोशल मीडिया पर मैथिलीमे विज्ञानक कार्यक्रम, मैथिलीमे विज्ञान विषय पर आधारित ब्लॉग लेखन, लघु फिल्म, वेब सिरीजक निर्माण, इंडिया साइंस वायर पर उपलब्ध विज्ञान सामग्रीक मैथिलीमे अनुवाद आ विज्ञान प्रसारमे उपलब्ध खिलौना एवं किट्सक मैथिलीमे रूपान्तरण आदि प्रस्तावित अछि।

हुनक लेल पत्रिका, ब्लॉग लेखन, टीवी-रेडियो कार्यक्रम आदिक निर्माण होएत। एहि लेल केंद्रीय विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी मंत्रालयक अंतर्गत कार्यरत स्वायतशासी संस्था विज्ञान प्रसार बीड़ा उठौलक जे मिथिला नञि वरन् देश-विदेशमे रहयवाला समस्त मैथिल भाषी लेल स्वागतयोग्य अछि।

पृथ्वी भवनमे विज्ञान प्रसारक मैथिली कोर कमिटीक पहिल बैठक केंद्रीय विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी मंत्रालयक मुख्य लेखा नियंत्रक अखिलेश झाक अध्यक्षता मे भेल जाहिमे विज्ञान प्रसारक निदेशक डॉ नकुल पराशर सेहो उपस्थित छलाह। श्री अखिलेश झा प्रस्ताव देलैन्ह जे विज्ञान प्रसारक ओर से जे पत्रिका प्रकाशित होएत ओकर नाम 'विज्ञान रत्नाकर' राखल जाए।

बैठककें संबोधित करैत विज्ञान प्रसारक निदेशक डॉ नकुल पराशर कहलैन्ह जे हुनक योजनानुसार, विज्ञान तकनीक एवं नवाचार पर केन्द्रित न्यूजलेटरक प्रकाशन, मौलिक रचनासँ

बैठकमे विज्ञान प्रसारक कपिल त्रिपाठी, मानवर्धन कंठ आ आकाशवाणीक दिलीप झा संग संजीव सिन्हा, प्रकाश झा, रोशन झा आदि अपन-अपन विचार राखलैन्ह।

मणिपद्म जयंती 2020

चारिम बाबू ब्रह्मदेव लाल दास व्याख्यानमाला

रवि दिन 27.12.2020केँ 'बाबू ब्रह्मदेव लाल दास व्याख्यानमाला'क श्रृंखला मे चारिम आयोजन एहि कोरोना संकटक कालमे मिथिलांगन फेसबुक लाइवक माध्यमसँ डिजिटली कएल गेल। एहि व्याख्यानमालाक मुख्य वक्ता छलाह मिथिलाक युवा वर्गक आइकन आ प्रेरणास्रोत आन्ध्र प्रदेशक मुख्य सचिव श्री आदित्य नाथ दास जी आ कार्यक्रमक संचालन केलैन्ह प्रख्यात पत्रकार आलोक कुमार। कार्यक्रमक आरंभमे कनकपुरा निवासी, समाजसेवी प्रेमकांत दास जीक आत्माक शांति लेल दू मिनटक मौन धारण कएल गेल।

मिथिलांगनक यशस्वी अध्यक्ष श्री कमलेश कुमार दास कार्यक्रमक शुभारंभ करैत बाबू ब्रह्मदेव लाल दास जीकेँ पुण्य स्मरण केलैन्ह आ मुख्य अतिथि श्री आदित्य नाथ दास जीक मिथिलांगनक मंच पर स्वागत केलैन्ह।

मुख्य वक्ता श्री आदित्य नाथजी भारतीय सिविल सेवाक तैयारी करबाक विषय-वस्तु केँ एक-एक बारिकी कऽ विस्तारपूर्वक सरल आ सहज शैलीमे श्रोताक सम्मुख प्रस्तुत केलैन्ह। हुनक व्याख्यानक मूल बात छल जे कोनो विषयकेँ मात्र याद करबा लेल नञि पढ़ी वरन समझय लेल पढ़ी। विषय-वस्तुक पूर्ण अध्ययन करी, जे पढ़ी तकरा कागत पर लिखी ली, रणनीति बना कर पढ़ी। कखनो निराश नञि होए। परीक्षाक समय आत्मविश्वास पूरा राखी आ आत्मविश्वास बढ़त मेहनत आ निरंतर अध्ययनसँ। मेहनतक आगाँ कोनो विकल्प नञि अछि। सिविल सेवामे पैसा आ पावर लेल नहि सेवा हेतु आऊ।

बड्ड सुंदर आ सारगर्भित व्याख्यान छलैन्ह आदित्य बाबूकेँ। एहि व्याख्यानसँ निश्चित रूपसँ छात्रगण लाभान्वित भेल हेताह। जतबे सुंदर व्याख्यान ततबे सुंदर आलोक जीक संचालन।

ततपश्चात् सुंदरम जी आ राखी जी द्वारा हमर गुरुदेव बाबू ब्रह्मदेव लाल दास जीक गीतक सुमधुर स्वरमे गायनसँ कार्यक्रम आनंद-आनंद भऽ गेल। हमर पसंदीदा गीत- 'कनी ताकू हे गोरिया नयनमा के ओर, हवा करै मह-मह वसंतक भोर। हँसि रहल चंपा, चमेली चकोर। कनी ताकू हे...'क गायन सुंदरम जीक मधुर स्वरमे सुनि मन प्रफुल्लित भऽ उठल। सब वक्ता द्वारा बाबू ब्रह्मदेव लाल दास जीकेँ बेर-बेर याद कएल गेलैन्ह। रविन्द्र 'सुमन'जी द्वारा आगत अतिथि, संचालन कर्ता आलोक जी, गायक-गायिका आ समस्त श्रोतावृंदकेँ कार्यक्रममे शामिल होएबाक लेल धन्यवाद देल गेल।

पर्दाक पाछासँ संजयजीक संयोजन बेजोड़ रहल। धन्यवाद के पात्र छथि संजय जी।

मिथिलांगन डिजिटल मंच 'मिथिलांगन सुर संग्राम'क शुरूआत

अखन मिथिलांगनक सांस्कृतिक विभाग अपन डिजिटल टीमक सहयोगसँ फेसबुक लाईभ द्वारा रातुक आठ बजेसँ डेढ़ घंटाक भव्य आ विराट रंगारंग कार्यक्रम प्रस्तुत कऽ रहल अछि। ई कार्यक्रम आन मनोरंजक कार्यक्रमसँ सर्वथा भिन्न अछि, एकर मुख्य उद्देश्य मिथिलाक पारंपरिक लोक गायनकेँ जन-जन धरि पहुँचेनाय अछि।

मिथिलामे सभ संस्कारमे महिला द्वारा लोक गायनक समृद्ध परंपरा रहल अछि, मुदा ई गायन मिथिलाक आंगने धरि समटी गेल। ई कार्यक्रम ओहि प्रतिभावान महिला लोकगायक कलाकारकेँ घरक देहरीसँ बाहर निकालि एकटा पैघ फलक पर प्रस्तुत केलक। एहि कार्यक्रमक माध्यमसँ कतेको गायिका आइ देश-विदेशमे रहयवाला मैथिलभाषीक बीच अपन पहचान बनेबामे सफल भेलीह।

मिथिलांगन सुर संग्राम मिथिला मे महिला सशक्तीकरणक एकटा बड्ड पैघ कार्यक्रम बनि चुकल अछि। एकर मुख्य श्रेय कार्यक्रमक मुख्य संचालक संजय चौधरी अओर मिथिलांगन सांस्कृतिक विभागक प्रभारी सुंदरमजीक संग राजेश कर्ण, सरिता दास, विनीता मल्लिक आ हिनक समस्त टीमकेँ छैन्ह। हिनक दिन-रातिक अथक परिश्रम एहि भव्य कार्यक्रम का निर्माण केलक। कतेको अभिनव प्रयोग भेल।

तीन समूह (कोशी, कमला आ बागमती) मे बँटल एहि कार्यक्रममे लोक संगीतक मुर्धन्य कलाकार सुंदरम जी, विनीता जी, मानवर्द्धन जी, पूजा जी, विद्या चौधरी, रामश्रेष्ठ पासवान जी, मनोज झा आदि निर्णायक भूमिका निभा रहल छथि अओर संचालनमे क्रमशः कल्पना मिश्रा, सुष्मिता आनंद आ छवि दास अपन सुंदर उद्घोषणासँ कार्यक्रममे चार चाँद लगा रहल छथि। एहि कार्यक्रमक प्रायोजक आदित्य बिड़ला ग्रुप अछि।

समस्त समाचार

शंभू शंकर, मीडिया प्रभारी, मिथिलांगन

'विज्ञान मंच' मे हमर सहभागीता

मिथिलांगन पत्रिकाक 'विज्ञान मंच' स्तम्भ किछ प्रश्नक जवाब माँगल गेल छल, हमहुँ ओहिमे सँ किछ केर जवाब भेजने रहि। बिछल उत्तरकेँ आगामी अंकमे छानल जएबाक छल।

हमर उत्तरकेँ एहि लेल चुनल गेल, एहि लेल समस्त सम्पादक मंडलकेँ धन्यवाद। आशा अछि अहाँ सब एहिना हमरा प्रोत्साहित करैत रहब।

एकटा विचार छल जे एहि पत्रिका मे विज्ञान मंच स्तम्भ के अओर बृहद करी आ विज्ञान समाचार सेहो प्रकाशित करी। जाहिसँ हमसभ ओकर लाभ उठा सकी।

प्रसुन गौरव
पटना

नव प्रयोगक संग समसामयिक विषय पर विशेषांक राखी

माननीय संपादक जी,

मिथिलांगनक नव अंक ई रूपमे नव-नव स्तम्भक संग उपयोगी लागल। समसामयिक विषय पर आधारित ई अंक नीक लागल।

मिथिलांगन सदति अपन श्रेष्ठ कलेवर आ रचनाक समावेशसँ सदिखन पाठकगण कें आकर्षित करैत रहल अछि। हमर विचार छल जे जौं संपादक मंडलकेँ उचित लागय तऽ विचार कएल जा सकैत अछि जे एहि नव प्रयोगक संग समसामयिक विषय पर वा विभिन्न साहित्यिक विधा पर सेहो आगाँ विशेषांक निकाली।

पोथी प्रकाशनमे मे सेहो मिथिलांगन नियमित रूपसँ सक्रिय अछि तऽ विभिन्न साहित्यिक विधा पर सेहो पोथी प्रकाशन करय से आग्रह। संपादक मंडलकेँ एहि बातक ध्यान राखैत से आग्रह।

रूपेश रौनक
वैनी, पुसा रोड

बच्चा लोकनि मे मातृभाषा दिस लगाव बढ़ल

आदरणीय संपादक जी,

अहाँक मिथिलांगन पत्रिकाक अंक 44-45 ई रूपमे देखल। पत्रिकाक स्वरूप, रचना, प्रस्तुति आदि बड़ु नीक लागल।

एहिमे शुरू कएल गेल बाल उपयोगीक नव स्तम्भ बाल-गोपाल लेल बड़ु उपयोगी लागल। एहिसँ प्रेरित भऽ हमर बच्चो सबकेँ अपन मातृभाषा दिस लगाव बढ़ल, एहि लेल हम मिथिलांगनक आभारी छी।

एकटा आग्रह जे बाल रचना सबकेँ सेहो प्रकाशित करी।

शुभाशीष

अरविन्द नाराण दत्त
नवी मुम्बई

सम्मान

किरण अओर यात्री पुरस्कारक घोषणा

मैथिल समाज, रहिका द्वारा प्रदान कएल जाएवाला किरण अओर यात्री पुरस्कारक घोषणा कएल गेल।

एहि बेर किरण पुरस्कार **विभा रानी** जीकेँ हुनक कथा संग्रह 'रहथु साक्षी छठ घाट' लेल अओर यात्री पुरस्कार **अजीत आजाद** जीकेँ हुनक काव्य संग्रह 'अनभुआर होइत समय' लेल देल जाएत।

मिथिलांगन परिवार दिस सँ दूनू गोटेकेँ हार्दिक शुभकामना।

श्रद्धेय पाठकगण,

अपनेक पत्र, मेल अओर व्हाट्स अप द्वारा मिलल सुझाव आ विचार पत्रिकाकेँ उत्कृष्ठ बनेबा मे सदति सहायक होएत रहल अछि। जकर परिणामस्वरूप अहाँ सभहक सुझाव पर कतेको नव स्तम्भक शुरूआत कएल गेल अछि, आशा अछि अहाँ सबकेँ नीक लागत। ओहि स्तम्भ सभ पर अपन विचार आ टिप्पणी सँ पत्रिकाक सम्पादक मण्डलकेँ अवश्य अवगत कराबी, जाहिसँ एहिमे छुटि गेल त्रुटि कें अगिला अंक मे सुधारल जा सकय।

कोनो विषय पर अपनेक कि सोचब वा कहब अछि, एहि प्रसंग पर अपन मंतव्य, अपन विचार सँ अन्य पाठक लोकनिक ज्ञान अओर जानकारीकेँ बढ़यबाक लेल शीघ्र कागत-कलम उठाऊ आ अपन विचार लिखि मिथिलांगनकेँ **संपादक, मिथिलांगन, ए-40, कैलाश अपार्टमेन्ट, प्लाट नं-2, सेक्टर-4, द्वारका, नई दिल्ली-110078** भेजु। अपने लोकनि अपन मंतव्य कें मिथिलांगनक **ई-मेलः mithilangan@gmail.com** पर सेहो प्रेषित कऽ सकैत छी।

नव स्तम्भ मे अपन भागिदारी बनाबय लेल ओहि स्तम्भसँ जुड़ल प्रश्न, जिज्ञासा मंतव्यकेँ लिखि भेजु, बीछल मंतव्यकेँ मिथिलांगनक आगामी अंक मे अपनेक नामक संग प्रकाशित कएल जाएत।

- संपादक

की अपने अपन धीया-पूताक संग मैथिली मे बतियाइत छी, जौं नहि तऽ आइये सँ शुरू कऽ दीयौ। मातृभाषाक रक्षाक जिम्मा अपनेक कर्तव्य अछि। - संपादक

मिथिलांगन

मैथिली पारिवारिक त्रैमासिक पत्रिका

नई दिल्ली सँ प्रकाशित तथा सम्पूर्ण भारत आ नेपाल मे वितरित

दाम - एक प्रति 20 टाका, वार्षिक 100 टाका मात्र

मिथिलांगनक पोथी प्रकाशन

मैथिली शुभ संस्कार-विधि विधान व गीत (तृतीय संस्करण)	(ब्रह्मदेव लाल दास एवं विन्देश्वरी दास)	200/- टाका मात्र
वट सावित्रि व्रत कथा	(ब्रह्मदेव लाल दास)	20/- टाका मात्र
मैथिली गीता	(डॉ. जनक किशोर लाल दास)	205/- टाका मात्र
गिरिजा गीत	(गिरिजा देवी)	75/- टाका मात्र
अहिं जकाँ	(बिनीता मल्लिक)	75/- टाका मात्र
मोहपाश	(डॉ. शेफालिका वर्मा)	150/- टाका मात्र
आउ बढ़ि चलू	(विनिता मल्लिक)	200/- टाका मात्र
कोईली	(डॉ. उमा शंकर चौधरी)	150/- टाका मात्र
नागफांस (अंग्रेजी)	(डॉ. शेफालिका वर्मा)(अनुवाद : राजीव वर्मा एवं जया वर्मा)	200/- टाका मात्र
नागफांस (मैथिली)	(डॉ. शेफालिका वर्मा)	200/- टाका मात्र

अपन प्रति प्राप्त करबाक लेल सम्पर्क करू :

साहित्यिक, सांस्कृतिक एवं सामाजिक संस्था

मिथिलांगन (पंजी.)

ए–40, कैलाश अपार्टमेंट, प्लॉट नं0 2,
सेक्टर 4, द्वारका, नई दिल्ली–110078
फोन : 9312301160, 9810450229
ई–मेल : mithilangan@gmail.com

साहित्यिक, सांस्कृतिक एवं सामाजिक संस्था

मिथिलांगनक पोथी प्रकाशन

200/- टाका मात्र

20/- टाका मात्र

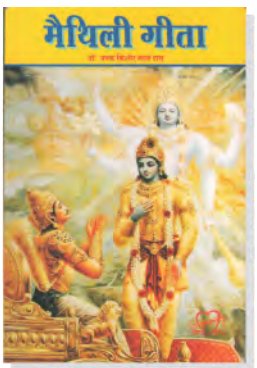

205/- टाका मात्र

75/- टाका मात्र

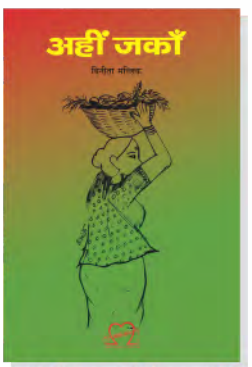

75/- टाका मात्र

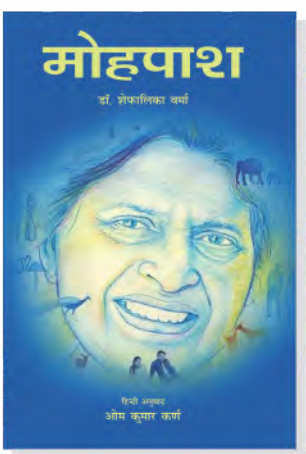

150/- टाका मात्र

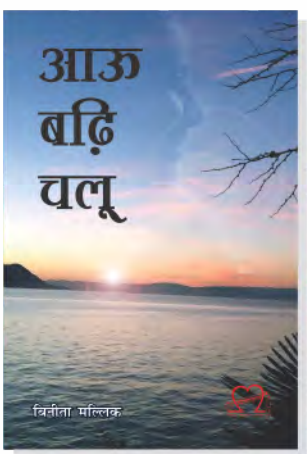

200/- टाका मात्र

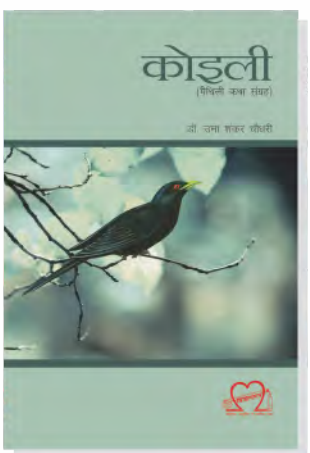

150/- टाका मात्र

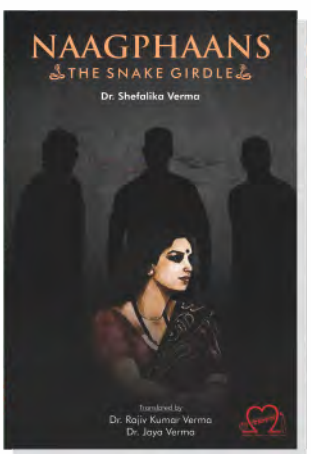

200/- टाका मात्र

नई दिल्ली सँ प्रकाशित अओर सम्पूर्ण भारत आ नेपाल मे वितरित

अपन प्रति प्राप्त करबाक लेल सम्पर्क करू

मिथिलांगन (पंजी.)

ए-40, कैलाश अपार्टमेंट, प्लॉट नं. 2, सेक्टर-4,

द्वारका, नई दिल्ली-110078

सम्पर्क: 9312301160, 9810450229

ईमेल : mithilangan@gmail.com, वेबसाइट : www.mithilangan.org

नोट: 'मैथिल शुभ संस्कार - विधि विधान व गीत' www.amazon.com पर उपलब्ध अछि

Published and Printed by Abhay Kumar Lal Das for and on behalf of Mithilangan, A-40, Kailash Apartment, Plot No.-2, Sector-4, Dwarka, New Delhi-110078, at Anand Sons (India), C-87, Ganesh Nagar (Pandav Nagar Complex), Delhi-92